दिनांक	सदस्य संख्या	दिनांक	सदस्य संख्या

भक्तमाल सटीक॥

بهگت مال سٹیک

श्रीनाभादास कृत॥

जिसमें

रामानन्द कबीरदास नामदेव ध्रुव मीराबाई रैदास सुलतानबादशाह सधनकसाई इत्यादि भगवद्भक्त महात्माओं की कथा अत्युत्तम वर्णित है॥

और

परमभक्त श्री महाराज नाभादास जीने टीकामें अनेक अनेकग्रंथोंके श्लोकादिकोंसे दृष्टान्त दिये हैं॥

वही

सम्पूर्ण भगवद्भक्त साधु महात्माओंके उपकारार्थ बड़ी शुद्धता पूर्वक

प्रथम बार

स्थानलखनऊ

मुंशीनवलकिशोरकेछापेखाने में छापीगई

फरवरी सन्१८८३ ई०॥

बिज्ञापन ॥

इस महीने अर्थात् फरवरी सन् १८८३ ई० पर्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तैयार हैं वह इस सूचीपत्र में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर नियत हुआहे परंतु ब्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको ब्योपारकी इच्छाहो वह छापेखाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम ख़तभेजकर क़ीमत का निर्णय करलें ॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
भाषा (इतिहास)	हरिबंश पर्ब	रामायण कबितावली
महाभारत	म०भा०पर्बअलेहदाभीहैं	रामायणगीतावलीसटी
१ पहिले हिस्सामें	रामायणरामबिलास	बिनयपत्रिका बा० मो०
आदिपर्ब, सभापर्व	रामायण तुलसीकृत	बिनयपत्रिका बा० शि०
बनपर्ब	रामायण सटीक मय	लिङ्गपुराण
२ दूसरे हिस्सामें	मानसदीपिकाकोषआदि	बिष्णु पुराण
बिराटपर्ब, उद्योगपर्ब	तथाजिल्दबंधी	गरुड़पुराण प्रेतकल्प
भीष्मपर्ब, द्रोणपर्ब	तथामोटेअक्षरोंकी	ब्रह्मोत्तर खण्ड
३ तीसरे हिस्सामें	मयतसवीर व क्षेपक	**वैद्यक भाषा**
कर्णपर्ब, शल्यपर्ब	रामायण तुलसीकृत	निघंटु
गदापर्ब, सौप्तिकपर्ब	सातोंकाण्ड	अमरबिनोद
ऐषिकपर्ब, बिशोकपर्ब	१ बालकांड	वैद्यजीवन
स्त्रीपर्ब, शान्तिपर्बमें	२ अयोध्याकांड	औषधिसंग्रहकल्पवल्ली
राजधर्म आपदधर्म,	३ आरण्यकांड	अमृतसागर बड़ा
मोक्षधर्म	४ किष्किन्धाकांड	तथा छोटा
४ चौथे हिस्सामें	५ सुन्दरकांड	वैद्यमनोत्सव
शान्तिपर्ब, दानधर्म	६ लंकाकांड	माधवनिदानसंस्कृत
अश्वमेध, आश्रमबासिक	७ उत्तरकांड	**नाटक**
पर्ब, व मौशलपर्ब	रामायण शब्दार्थ कोष	प्रबोधचंद्रोदय
महाप्रस्थान पर्ब	रामायणका इतिहास	रामाभिषेक
स्वर्गारोहण पर्ब	रामायणमानसदीपिका	आनन्द रघुनन्दन

श्रीगणेशायनमः ॥

अथ भक्तमाल सटीक ॥
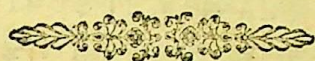
अथ टीकाकर्त्ताको मङ्गलाचरण लिख्यते ॥

श्री मन्निरञ्जना चार्य्यायनमः ॥ तहां अर्थ भक्तमाल में लिख्योहै भक्तभक्ति भगवन्त गुरु चार रूप लिखेहैं तहां हरिकोस्वरूप नहीं लिख्योजाय तापैराजा को चित्रकारकोदृष्टांत ॥दोहा॥ लिखन बैठिजाकीछबी गहिगहि गर्व गरूर ॥भये न केतेजगत के चतुर चितेरे क्रूर १ चित्र चितेरो जो लिखै रचिपचि मूरतिलाल । वहचितवनि वह मुरि चलनि कैसे लिखै जमाल २ दृग पुतरीलौं श्यामवह लिख्योकौन पै जाय।जग उजियारी श्यामता देखोजीय लगाय । कोटिक्षानुजोकगबैतकुउआसनहोय॥तनकश्याम की श्यामता जोदृग लगी न होय । मोहन जग व्यौहार तजिबणिज करोयहिहाट। पीवपदारथ पाइये जियकौड़ी के साट ५ छबि निरखत अति चकित ह्वै दृग पुतरी ब्रज बाम।किरम उठी बैठी चुहट कियो गौरतनश्याम॥पद॥ मैयादाऊजीमोहिं बहुत खिझायो॥ मोसों कहत मोल कोलीयोतू यशुदानहिं जायो॥ नंदहुगोरो यशुदहुगोरी तू कित श्यामशरीर। तारी दैदै ग्वाल नचावैं सिखवत हैं बलबीर। सिखवन दै बलबीर चवाई मिथ्यावादी धूत ।सूरदास मोहिं गोधनकी सौं मैं जननी तू पूत ६ संभोहर्गोतंघे॥ फुल्लेन्दीवरकांतिमिन्दुवदनं बर्हावतंसप्रियं श्रीवत्सांकमुदारकौस्तुभधरंपीतांबरंसुंदरं॥गोपीनांनयनोत्पलार्चिततनुं गोगोपसंघावृतं गोविंदंकलवेणुवादनपरं

दिव्यांगभूषंभजे ७ ॥ दोहा॥ प्रेम चितेरे की सुमति कापै बरणीजाय॥मोहन मूरतिश्यामकी हियपटलिखीबनाइ ८ तीक्ष्ण बरुनी बाण सों वेध्यो हियो दुसार ॥ जालरंध्र कीन्हों मनों प्रेमीघट अँधियार ९ लिखिस्वरूप चित को दियो लियोहियेसोंलाइ ॥ चित्र कार परवारितन रह्यो पाइलपटाइ १॥कवित्त॥श्यामताउज्यारी मुखमुरलीअधर धारी रूपमतवारीआखैं रूपतांकि रहीहैं। केशखैंचि बां-ध्यो जूड़ा वेसमनमांझचूड़ा प्रेमछबिपूराद्युति चंद्रिकासुब-हीहै॥अलकैं कपोलनिपै कुटिलआईंपुटमानों घटलेत हिये कछुवैसियेबहीहै। श्रीगोविंदचन्द जूको चित्रलिखि चित्र दियो बड़ई विचित्रनिकी मति अति गहीहै १॥पद॥नमो नमो श्रीभक्ति सुमाल । जाकेसुनतमहा तम नाशत उर झलकत राधानँदलाल। गद्गदसुरपुलकित अँगअंगन लो-चन बरषत अँसुवनजाल। उतरिजात अभिमान व्यालवि-ष लेतनिवाइ सुरसतिहि काल । होति प्रीति हरिभक्त जनन सों लेतसीतहठि चरणप्रक्षाल । तजतकुसंग लेतसत संगति भाग जगत कोउ अद्भुतभाल। निशिवासरसोवत अरुजागत रोम रोमहू करत निहाल। श्री अग्रन रायन दास प्रिया प्रिय प्रगटी जीवनि रसिकरसाल ३ हरिको स्वरूप प्रेम रूपी चित्रकार सों लिख्योजाइ और सों नहीं महाप्रभुविशेष काहेते जीवहरिसों विमुख सन्मुख आवैजय प्राप्तहोइ १ ॥ गीतायां॥ दैवीह्येषागुणमयीमम मायादुरत्यया ॥ मामेवयेप्रपद्यंतेमायामेतांतरंतिते२ ॥ चैत-न्यभागवते॥ एतेचांशकलापुंसःकृष्णस्तुभगवान्स्वयं॥इंद्रा-दिव्याकुलंलोक मृडयंतियुगेयुगे ३ मनहरन अक्षर सो कामधेनुहै॥ राधाचरणदीपिकायां ॥ दृष्टःक्वापिचकेशवो व्रज वधूमादायकांचिद्गतः सर्वाएवविमोचितासखिवयं सोन्य पणीयोयदि ॥ द्वौद्वौगच्छतमित्यदीर्घसहसाराधांगृहीत्वा करे॥गोपीवेषधरोनिकुंजभवनं प्राप्तोहरिःपातुवः ३ सखी मनहरण॥ कवित्त ॥ आजु मनमोहनसोंमोसों ऐसी होड़

परी और इनआखिनसों कहाधौंविशेषिये। दर्पण निहारि कान्ह कही मेरे बड़नैन हांकही इनजुतव बोलीहैं हृतेषिये। दीरघ ठरोर हग मेरो राधा कुंवरिके हैं कैसा करि जानोंबलौढिगलाइपेषिये। आयेहैं हरावोइन्हैं अहोयेहोबलिगई एकवार आंखिन सों आखैं माहिंदेखिये ४ जैसीनित रहतिहै तैसी अखियाहैं मेरी इनकी अनैसी अरु नईभयेतेषिये। चित्तजेचढ़ीहैं प्यारी दीसत न उजियारी ताहीकेनलअहोमांहि अवरेषिये। होंहूं जानति हौंदोऊसम कैसे ह्वैहैं हैतें वारि किये प्रेमसों विशेषिये। जितघट ह्वैहै तित जोर है सुजान कान्ह कैसे ऐसीआंखिनिसों आंखैं माहिं देखिये ५ मीनसम रघरात उघर हुर कछुपात बामन मनहरि बेतैंनिह्वैकेहेरे हैं। नेकुन निहारै हिय फारे वाराहसम अरिबेते परसुराम फिरतन फेरे हैं तीछण नृसिंह नखबोधक अबोलिबेतैंतारिबेतैं राघवगुलाब चि त्तनेरेहैं। मोहिबेतें मोहन अकलंक बिन निहकलंक दशौ अवतार किधौं प्यारी नैन तेरे हैं १ वृन्दावन मनहरणपै ॥ श्लोक ॥ कृष्णोन्योयदि संभूतो यस्तु गोपेन्द्र नंदनं। वृंदावनं परित्यज्य पादमेकं न गच्छति बर्हापीडंनटवरवपुःकर्णयोःकर्णिकारं बिभ्रद्वासः कनककपिशंवैजयंतींचमालां ॥ रंध्रान्वेणोरधरसुधयापूरयन्गोपवृंदैर्वृन्दारण्यंस्वपदरमणंप्राविशद्गीतकीर्त्तिः ३ ब्रजबासी मनहरणपै॥ भागवते ॥ अहोभाग्यमहोभाग्यं नन्दगोपब्रजौकसां ॥ यन्मित्रंपरमानंदं पूर्णंब्रह्मसनातनं ४ साधमनहरणपै ॥ भागवते ॥ निर्पेक्षंमुनिंशांतं निर्वैरंसमदर्शनं ॥ अनुब्रजाम्यहंनित्यं तेपूयत्यंघ्रिरेणुभिः ५ ॥

अज्ञानरूपन कवित्त ॥ महाप्रभुकृष्णचैतन्यमनहरणजूके चरण को ध्यानमेरे नाममुखगाइये । ताही समय नाभा जीने आज्ञादई लईधारि टीका बिस्तारिभक्तमा-

ल की सुनाइये। कीजियेकवित्तबंद छंदअतिप्यारो लगै जगै जगमाहिं कहिबाणी बिरमाइये। जानों निजमति येपैसुनोभागवतशुकद्रुमनप्रवेशकियोऐसेईकहाइये १ ॥

टीका को नाम स्वरूप वर्णन ॥

भगवान कह्योमैंभक्तनको ऋणियांहौं यातेइनकी चरण रेणु मैं शिरपरधारोंहौं क्योंकि मेरो अपराधमिटै ६ ॥ गीतायां ॥ येयथामांप्रपद्यन्ते तांस्तथैवभजाम्यहं ॥ छेदारागारपुत्राप्तान् १सो कहीपै बनीनहीं क्योंकि इन्होंनेघर-बार पतिपुत्रादिकुल धर्म सबछोड़ अरमोते कछू न छूयो यातेश्रौं इनकोऋणियांहौंयातेबिचारो इनहीं की चरण रेणुशिरपरधारोंतबमेरोअपराध मिटैगोसोयातेधारोहौं ८ ध्यानमेंरेनामसुखगाइये९ तहांदोऊकैसेबनैं॥श्लोक॥ इंद्रियाणांलयोध्यानः तापैदृष्टांत सिद्धके हैंरूपइन्द्रिनको १०ताहीसमय॥ दोहा ॥पायलपाइलगीरहैलगैअमोलकलाल॥भोडरहूकीभासिहै बेंदीभामिनिभाल १सुनाइये॥ सनत्कुमारवाक्ये ॥ सर्वापराधकृदपि मुच्यतेहरिसंश्रयः॥ हरेरप्यपराधन्यं कुर्याद्द्विपदपांसनः २॥ आगमे ॥ यानैर्वापादुकाभिर्वा गमनंभगवद्गृहे ॥ देवोत्सवाद्यसेवाच अप्रनामस्तदग्रतः ३ उच्छिष्टेवाप्यशौचेवाभगवद्वन्दनादिकं ॥ एकहस्तप्रणामश्चतत्पुरस्ताप्रदक्षिणं ४ यादप्रसारणंचाग्रे तथापर्यंकबंधनं॥ शयनंभक्षणंचापिमिथ्याभाषणमेवच ५ उच्चैर्भाषामिथोजल्पो रोदनानिचविग्रहः॥ निग्रहानुग्रहौचैव न्हणुचाक्रूर भाषणम् ६ कंबलावरणंचैव परनिंदापरस्तुतिः ॥ अश्लीलभाषणंचैव अधोवायोर्विमोक्षणं ७ शक्तौ गौणोपचारश्चअनिवेदितभक्षणं ॥ तत्तत्कालोद्भवानांच फलादीनामतर्पणं ८ विनियुक्तावशिष्टस्य प्रदानंव्यजनादिके ॥ पृष्टीकृत्वासनंचैव परेषामभिवादनं ९ गुरौमौनंनिजस्तोत्रं देवतानिंदनंतथा ॥ अप-

राधास्तथाविष्णोर्द्वात्रिंशत्परिकीर्तिताः १० नामाश्रयः कदाचित्स्यात्तरत्येवसनामतः ॥ नाम्नोपिसर्वसुहृदोह्य पराधात्पतत्यधः ११ ॥ नाभाछप्पै ॥ गुरुअवज्ञाकरैसाधु निंदाविस्तारै। शिवको निंदाकरैब्रह्मभेद बिचारै ॥नाम बल करि अपराध नाम परतीपनजानै। वेदनिशास्त्रउलंघि आप मनको मतठानै ॥बिनश्रद्धा उपदेश औरठगिआयो पोषै। निजद्रुंहिन के हेत चेत परि पिरडहु सोषै ॥ ये दश अपराध तजिदेहते साध संगति मेरलिमिलै। ततवेत्तातिहुं लोकमें राम नाम तोको फलै १२ ॥ गीतायां ॥ मूकंकरोतिवाचालं पंगुंलंघयतेगिरिम् ॥ यत्कृपातमहंवंदे परमानंद माधवं १ कहाइयेपै ॥ दोहा ॥ संत कृपा रवि उदयते मिटै तिमिरअज्ञान ॥ हृदयसरोवर विमलह्वैफूलैहित बुधज्ञान २ श्रीभागवतकी सुबुधि कही कीरकलगान ॥ भक्तमाल अभिप्राय जो जानैसंतसुजान ॥३ ॥

रचिकविताईसुखदाईलगैनिपट सुहाईऔसंचाईपुनि रुक्तलैमिटाईहै। अक्षरमधुरताई अनुप्रासजमकाई अति छबिछाई मोदझरीसिलगाईहै। काव्यकीबड़ाईनिजमुख नभलाईहोतिनाभाजूकहाई यातेप्रौढ़कैसुनाईहै। हृदय सरसाई जोपैसुनियेसदाई यहभक्तिरसबोधिनीसोनाम टीकागाईहै ॥

रचिकविताईपै॥श्लोक॥ तद्ब्रह्मास्त्रवधपातकमन्मथारी चापांतकारिकरसंगमपायभीत्यारोपंधनुर्निजपुरप्रचरणाय नूनं देहंसुमोचरघुनंदनपाणितीर्थे ४॥ दोहा ॥ पियलखि सियकीमाधुरीत्वरतोरनकेचाइ॥ भोरैंधनुषउठाइकैतोरयो सहज सुभाइ ५ श्लोक ॥ कमठपृष्टकठोरमिदंधनुर्मधुरमूर्तिर सौरघुनंदनः॥ कथमधिज्यमनेनविधीयता मह्हतातपणस्तव दारुणः६ रचिबोनामरंगकोहै कविताकोकहारंगिबोची-

नकाढ़िलैबो यही कविताको रँगिबोहै१ सुखदाईसुहाई पुनरुक्त भई नाहीं सो कविता तीनि प्रकारकी शब्दचित्र अर्थचित्र शब्दार्थचित्र ॥सवैया॥ हटकेनरहैं भटके पलओट भइ मेरे नैननि सों बसिके। अटके उतही सटके मनलै नट के सेवटाटटकेरसके। लटके लट छोरनि सों लटके पटके न कटाछनकेकसके। मटके न छुटा छबिके झलकै न लगे दून चाहन के चसके ८ पीसौं भुकी रसना लै काज लखे गुणनाम समान तिहारे। नयनचले अति रूपरहे तुमता-हीतेनैनये नाम धरारे। संत विरुद्ध बच्यो अतिही जिय ते दुख नेकु टरै नहिंटारे। पाइ सुलच्छन राग अरे करकाहे को नंदलला भिझकारे १ दृगही तुम दाई अदाई बड़े अरु घूंघट माहिं रहे फँसिकै। रसना रस जानति तूनकछू मुखबैन कहेनहिंतें हँसिकै। भुजहौतुमभूलकरीदूतनोपिय प्यारेसों क्यौंन मिले गँसिकै। मन तू न मिल्योमनमोहन सों सबही के समान गये नँसिकै २ दोहा ॥ चष उपमा कमलासन आसन निज तन कीन ॥ बिमलज हृदय कमलकमलन को धूरि कमल मुखदीन३ वारों बलि तो दृगनि पर अलि खंजन मृगमीन ॥ आधो दृष्टि चितौनजि-मि कियेलाल आधीन ४ ॥कवित्त॥ कारेभपकारे रतनारे अनियारे सोहै सहज ढरारे मनमथ मतवारेहैं। लाज भरि भारे जो चपल अँनियारे तारे सांचेकेसे ढारे प्यारे रूपके उज्यारे हैं। आधी चितवनिही मैं आधीन कियेते हरिटोने सेवसीकरके लोने पनियारे हैं। कमल कुरंग मीन खंजन भँवर वृषभानुकी कुंवरि तेरे दृगनिपैवारेहैं ५ सचाईश्लोक॥ हरोहिमालयेशेते हरिश्शेतेचवारिधौ॥ आकाशेभ्रमतेसूर्याजानेमत्कुनशंकया ॥ वायसाःकिन्नभ चंतिकवयोनवदंतिकिम् मद्यपाकिन्नजल्पंति किन्नकुर्वंति योषितः ६ मृषागिरस्ताह्यसतीरसत्कथा नकथ्यतेयद्भगव न्नधोक्षजः॥ तदेवसत्यंतदुहैवमंगलं तदेवपुण्यं भगवद्गुणोदयं ७पुनिरुक्त दोहा। दोषनहीं पुनिरुक्तकी एककहतकपि

राज ॥ अर्थगहै पुनि अर्थको येकविगणके साज ॥ वारण
को तारण अहो बार न लागीतोहिं ॥ बार नकीजैहेप्रभो
वारण भटकन मोहिं ८ मनकी सचाई पाइकै उठिआये
प्रभुपास ॥ मनबांछितफलपाइकै हियमेंअधिकहुलास ९
मुखघटमेंतौहरिसदाबासकरैहैं ताकोचिंताकौनमधुकीहै
मधुरताईपै ॥ कबित्त ॥ करत कबित्त तुक दौरैमनदौरैज
हांऔरैऔरैऔरैजहांरसुठसांकरै॥ सौनैकीसी सांकरैये
मिश्रीकीसीकांकरैयेआकरसआकरैसुहाकरै निसाकरै।
सोंठिकीसी गांठैतुकगांठैतेऊगाठिको न सांठसोंलैआनी
काहू आकनिकोराकरै। दोऊते समान ऐसी जहानको
जमानोदेख्यो भोरभये बीत्यो षटपद पद्माकरै १ अंग
अंग औघटन घाटहै मनाबेको लालको लुभाहै याअधर
रसपानको। भौंहकीमरोरनिमें मोरसे परतजात त्यौरी
कीतरंगनि में निठुरता निदानको। जगन गहर मौन उ-
त्तर न याहहैकिहू ऐसीगरबीलीहै हठीलीवृषभानकी।
रिसकेप्रवाह रसकूलन बिदारैंजात नदीसी उमड़िचली
मानिनीके मानकी २ ॥अनुप्रास॥मदनतुकासीकिधौंराजैं
कुंदकासी मानोंकंजकलिकासी कुचनारीकेविकासीहै।
गांसीभरीहांसी मुखभासी मोहफांसीमद यौबनउजासी
नेहदियेकी शिखासीहै। जाकी रतिदासी रसरासीहै
रमासीकोकहै तिलोत्तमासी रूपसरनप्रकासीहै। काम
की कलासी चपलासी कबिनाथ किधौं चंपलतिकासी
चारुचंद्रचंद्रिकासी है ३ सोईमेरोबीर जोलैआवै बल-
बीर ताहिदेहौं दोऊचीर मेरो बिरहबटाइलै। अंजन
रूपाकेपीर रूपैनरूपायेपीर रूपाकरिरूपैतौ रूपाकर
रूपाइलै। मदनलग्यो हैघाइघाइसोकहौंरीघाइये रीमेरी
धाइ नेकमोहूतन धाइलै। देहरी घरधराइदेहरीचढ्योन
धाइ देहरीतनकहाथ देहरीलँघाइलै ४ काव्यकीबड़ाई
कबित्त॥यहैकबिताई जामें भरीसरसाईन्हु पदसुखदाई
अंकरचनासुहाईहै। जाकेढूंढ़िबेकोबड़ेरसिकप्रवीन मन

लीन भये रसमांझजवैजाइपाईहै। जैसेतीरगरडर निपट एकाग्रकरि आंधिआंखिमूंदिलखै तीरकुटिलाईहै। ऐसे वह बकाई निज प्रगटदिखाईदेति ताको न बड़ाई वा बकाईकी बड़ाई है॥ १॥

भक्तिस्वरूप॥श्रद्धाईफुलेलऔउबटनौंश्रवणकथामैलअभिमानअंगअंगनिछुटाइये।मननसुनीरअन्हवाइअंगुछाय दयानवनवसनपनसोंधौलैलगाइये । आभरणनामहरि साधुसेवाकरणफूल मानसीसुनथसंगअंजनबनाइये। भक्तिमहारानीकोशिंगारचारुवीरीचाहरहै जोनिहारिलहै लालप्यारीगाइये ॥

श्रद्धाईफुलेल भक्तिमहारानी को शृंगार आगमे॥ हरिभक्तिमहादेव्याः सर्वामुक्तादि सिद्धयः। भुक्तयश्चाद्भुतास्तस्याश्चेटिकावदनुव्रताः २ भागवते तत्सर्वं भक्तियोगेन मद्भक्तो लभतेऽञ्जसा॥ स्वर्गापवर्गं मद्धाम कथंचिद्यदि वांछति ३ तापैदृष्टांतरांकावांकाको ॥आगमे॥ आदौ श्रद्धा ततः साधुसंगोथ भजन क्रिया॥ ततोनर्थ निवृत्तिश्च ततो निष्ठारुचिस्ततः ३ अथा सक्तिस्ततोभावस्ततः प्रेमाभ्युदंचति॥ साधकानामिदं प्रेम्णः प्रादुर्भावे भवेत्क्रमात् ४ मैलअभिमान यातिविद्यामहत्वंच रूपयौवनमेवच यत्नेनपरितस्त्याज्याः पंचैतेभक्तिकंटकाः ५ पांचकांटेसोई पांचौमैल॥भागवते॥ नालंद्विजत्वंदेवत्वं ऋषित्वंवासुरात्मजाः॥ प्रीणनायमुकुंदस्यनवृत्तंनबहुज्ञता ६ नदानंनतपोनेज्या नशौचंनव्रतानिच प्रीयतेऽमलयाभक्त्याहरिरन्यद्विडंबनं ७ मननसुनीर न्हायवेमेंआनंदजैसेहीमननमें अंगौछादयामेंतीनगुणतेंछुटावै उबटनो अरुमैल श्रद्धाकथामनन॥नारदपंचरात्रे॥वैष्णवानांचयंकर्मदयाजीवेषुनारद॥श्रीगोविंदे पराभक्ति स्तदीयानां समर्चनंकर्णफूलपांचजातिके

जड़ाऊसोने के रूपेके रांगके काठके पै सुहाग पांचोही
में रहैं यातेकरैतौ दोऊकरै साधुसेवानबनिआवै तौप्रभु
कीसी उठाइधरै॥पद्म। अर्चयित्वातुगोविंदं तदीयान्नार्चयं
तिये॥नतेविष्णुप्रसादस्य भाजनंदांभिकाजनाः २ सतसंगपै
भागवते॥नरोधयतिमांयोगो नसांख्यंधर्मएवच॥नस्वाध्याय
स्तपस्त्यागो नेष्टापूर्तंनदक्षिणा ३ व्रतानियज्ञश्छंदांसिती
र्थानिनियमायमा यथावरुंधेसतसंगः सर्वसंगापहोहिमां ४
अथवाभक्तिके अंगभक्तिमालहीमें हैं श्रद्धासेवामेंगदाधर
भट कथा में परीक्षित मननसुचोरचतुरभुजदासकी कथा
सुनी ५ दयाकेवलरामसाटोघोटिमें उपड्यो ६ नवनगो-
पालदासजोवनेरी पनरामाआप्रवारन नामआभरणअंत
रूनिष्ट ७ हरिसेवारत्नावतीरानी ८ साधुसेवासदाव्रती
मानसीरघुनाथगुसाईं सतसंगग्वालभक्तः ९ चाहवारीम
धुगोसाईं १० ॥

भक्तिपंचरस ॥ शांतदास्यसख्यवात्सल्यऔशिंगा
रुचारुपांचौ रससार विस्तारनीकेगाये हैं टीकाको
चमत्कारजानौंगे विचारिमन इनकेस्वरूप मैंअनूपलै
दिखाये हैं । जिनकेनअश्रुपातपुलकितगातकहूंतिनहूं
कोभावसिद्धबोरेसोछकायेहैं । जौलौंरहैदूरिरहैविमुखता
पूरिहियौंहोयचूरिचूरिनेकुश्रवणलगायेहैं ४ पंचरससोई
पंचरंगफूलथाकिनीके पीकेपहराइबेकोरचिकैबनाइहै ।
बैजयंतीदामभाववतीअलिनाभानाम लाईअभिरामश्या
ममतिललचाईहै । धारीउरप्यारीकिहूंकरतमन्यारीअहो
देखौगतिन्यारीढरियाइनिकौआईहै ॥ भक्तिछबिभारता-
तैंनमितशिंगारहोत होतबशलषैजोईयातैंजानिपाईहै ५॥

भक्तिपंचरसपै॥ सोभक्तिकोस्वरूपक्रियात्मकहै सोक्रिया

हीतेजानीजाइहै ॥ भागवते ॥ देवानांगुणलिंगानामानुश्र विककर्म्मणां ॥ सत्वएवैकमनसोवृत्तिः स्वाभाविकीतुया १ अनिमित्ताभागवतीभक्तिः सिद्धेर्गरीयसी ॥ जरयत्याशुया कोशं निगीर्णमनलोयथा २ जैसेरसनमें इंद्रीस्वाभाविकी हीच लेहै ऐसेही समस्तइंद्री भक्ति में स्वाभाविकी लगैं याक्रियाते भक्तिजानीजाइहै सोभक्ति पंचप्रकार की जैसे ईषको रसखांड़बुरी मिश्री कंद औरास्वाद न्यारेन्यारे तत्व एक ३ शांतरस ॥ दोहा ॥ यमकरिमुहतरहठि परयो यहधरिहरिचितलाइ ॥ विषयतृषापरिहरिअजौंन रहरिकेगुणगाइ ४ दास्यरस ॥ दासनदासतिहारोस्वामी प्रभुमोतेनहीं कछुवैबनिआई । तेदुखठावनि मोदबढ़ावनि मोहित भोगकीनोंमदिराई । आपुहीमेंबिसरयो तिनमें पगितातेतहांतुम्हरीकोचलाई।पैआपअपनोजानिगहोन हिंजातिअहोतुम्हरीयेबड़ाई५ ॥कवित्त॥गुणनगहैहौंमन ठ्यारमैंबहैहौं तेरीढीलनदहैहौं पंचरंगकोपतंमें ।जितही कन्यावतहौ तितहीमैंआवतहौं ऐयैभुकिधावतहौं पवन केसंगमें। गयोभरिवाइ हरिउपरनरह्योआइ तातेथिन थांभयम्योथिरकनिकेरंगमें । हरैहरैऐचिनाथ कीजियेजू अपनीधानातरूअनाथ जातअनँगकीतरंगमें ६ सख्यरस करुणाभरनाटके ॥ एककहै असयत्नहिंकीजै । कृष्ण हारिकाजाननदीजै॥एककहैहौंलेहौंदांव ।कह्याभयोहुवै आयोरावर्एककहै आवनतौदेऊ।तबतुमदांवआपनोलेऊ वात्सल्य पद ॥ जोपै राखतहौ पहिंचानि। तौ वै बालक मोहन मूरति मोहिं मिलावो आनि। भली करी कंसा-दिक मारे सुरमुनि काजकियो। अब इन गाइन कौन चरावैभरि भरिलेत हियो। तमरानी वसुदेव गेहनी हम अहीरव्रजवासी। पठैदेऊमेरेलाल लड़ैते वारौं ऐसी हां-सी खानपान परधान विविधि सुख जो कोउ लाड़ लड़ा-वै तदपिसूर मेरो कुंवर कन्हैया गोरसही सुखपावै १ शृंगार रसकवित्त॥ सीखे रसरीति सीखे प्रीतिके प्रकार

सब सीखे केशवराइ मन मनको मिलाइबो। सीखे सोहैं खान नटिजान मुसकान सीखे सीखे सैनबैननि में हँसिबो हँसाइबो। सीखेचाह चाहसों जु चाह उपजाइबोकि जैसीकोऊ चाहै चाह तैसी चाह चाहिबो। जहां जहां सीखे ऐसी बातैं घातैं तातैं तब तहां क्यों न सीखे नेकु नेहको निबाहिबो २ ऊधौकहा कहिये जियकी तियकी न सीजान सँभारति हैं। परतासभलौ नहीं या जग में हमतौ अपने दिनटारतिहैं। मुखमीठो महाहिरदै कपटी बतियां छतियां नित जारतिहैं। हौं दास निदास तिहारौ रटणी येई बोल गुपालके शालतहैं ३ गहिबो आकाश पुनि लहिबो अथाह थाह अति बिकराल काल व्यालहि खिलाइबो। शैल शलघोर धारसहिबो प्रहार बान गज मृगराज लै हथेरिनि लराइबो। गिरिते गिरनपंथ अगिनिमें जरनि काशीमें करवटतन बरफलौंगराइबो। पीबौ बिष बिषम कबुल कबि नागरजू कठिन कराल एक नेहका निबाहिबो ४॥ दोहा ॥ नैनमूंदिमुखमूंदिकोधरौत्रिकुटी मधि ध्यान ॥ तब आपहि में देखिहौं पूरण आतम राम ५॥कवित्त॥ओढिबेको कंथाऔ रमाइबेकोभस्म अंग काननिमेंमुद्रा शिरटोपियांधरावैंगी। करमें कमंडल कर खप्पर भराइबे को आदेश आदेश करि शृंगीह्न बजावैंगी। कुबिजाको रिद्धिदईगोपनिकोसिद्धिदई फिरैंगी मसाननि मेंगोरखै जगावैंगी।एकबार ऊधवजू फेरि समझाइ कहौएती ब्रजबाला मृगछाला कहां पावैंगी १योगी जग तजै हम योगजग दोऊ तजैं योगी भषैं पौन हम पौनह्न तेहटहैं। योगीकर सींगी हम सींगी भईं श्याम बिन योगी लावै धूरिहमधूरिह्नतेलटिहैं। योगीछेदैंकान हमछेदैं हियोबेधे प्राण योगी ढूंढैदंडहमहरिदंडठटिहैं॥ आवनकीआश सुधिबीतिगईऊधोजोतोयोगीकीजुगतिते बियोगीकहाघटिहैं२सुखाइ शरीरअधीनकरैहगनीर की बूंदसौं माल फिरावै। नेहकोसैलोबियोग जटालिये आह

What a bad lesson for women

की सींगी संपूट बजावै। प्रेमकी आंचमें ढाढ़ीजरें सुधि आरालै आपनी देहधिरावै। सुजानकहैं कलाकोटि क-रौपै बियोगीके भेदको योगी न पावै ३ श्याम तन श्याम मन श्यामही हमारो धन आठौयाम ऊधौयहां श्यामही सों कामहै। श्यामहियश्यामजिय श्यामबिन नाहिंतिय आंधरेकी लाकरी अधार नामश्यामहै। श्यामगति श्या-मनति श्यामही प्रतापपति श्याम सुखदाई सो भुलाये घरधामहैं। तुमभयेबौरेयहां पाती लिये आये दौरे योग कहां राखैं हमरोम रोम श्यामहैं ४ रूसिरहौ हमसों तौहमैंनितही परि पाइंनि पाइंमनाइबो। बोलोन बोलौ हमैंनित बोलिबो चाहकरौनकरो हमैं चाहिबो। देखो न देखेदयाकरिप्यारे हमैंनितनैननितैंदरशाइबो। मानो न मानो हमैं यह नेम नयोनित नेहको नातो निबाहिबो ५ बिचार सन॥ तापै दृष्टान्त चित्रकी पुतरी को अरु खान-खानाको १ होइ चूरचूर॥ कवित्त॥ बेलै ते बिछुरिपान पर पाटिल ह्वैकै कसन कसाइ अंग छायनि नचतु है। बेशुमार दागिल ह्वै परत कतरनीमें पाइकै मरोरी बङ्क बिकनि बिकतुहै॥ सरस मसाले अनुमानके लै दियेबीच धरिकै चितौनी रस सचिकै पचतु है। एते परसखी सुख रसिक छायआये कहाचूरचूर भयेबिनारंग क्योंरचतुहै१॥

सतसंगप्रभाव ॥ भक्तितरुयोघाताहिबिघ्नडरछेरीहू कोबारदेबिचारबारसींचोसतसंगसों। लाग्योईबढ़नगोदा चहुंदिशिकढ़नसो चढ़नअकाशयशफैल्योबहुरंगसों॥ सं-तउरआलवालशोभितबिशालछाया जियेजीवजालताप गये योंप्रसंगसों। देखौबढ़बारिजाहि अजहूकीशंकाहुती ताहीपेंड़बांधेझूलैंहाथीजीतेजंगसों ६ ॥

सतसंग॥ भागवत॥ सतांप्रसंगान्ममवीर्यसंबिदोभवंति

हृतकर्णरसायनांकथाः। तज्जोषणादाश्वपवर्गवर्त्मनिश्रद्धा रतिर्भक्तिरनुक्रमिष्यति १ दोहा॥ दृष्टमिलैअरुमनमिलैमिलै भजनरसनीति॥मिलियैतहांनिशंकह्वै कीजैतिनसों प्रीति १ एककहैजागे लोचन घूमघुमारे॥ दूसरोकहै एकनिरंजनहै अविनाशी॥ दोहा॥ बहता पानी निर्मला बंधा गँधीला होइ॥ साधू जनरमता भला दाग न लागै कोइ २॥ वृं-न्दावन सतके॥मिलंतुचिन्तामणि कोटि कोटियः। स्व-यंवहिर्द्दष्टिसुपैतुवाहरी। तथापि वृन्दावन धूरिधूसरं न देह मन्यत्र कदापि यातुमे ३॥ कवित्त॥ वचन विलास में मिठास आइ बास करै हरै हृदय रोग भोग मानै जे जियारी के। नयेई जे जातजाति बातन सुहत नेकु पुलकत गात हग धारा जल न्यारी के॥ रूप गुण माते देह नाते जिते हातें होत सोतज्यों सलिल मन मिलत जियारीके। और सब संग हम संग के समान किये सोई सतसंग रंग बोरै लाल प्यारीके ४ सबहीतैं बड़ी छिति छितिहू ते बड़े सिंधु सिंधुहूते बड़े मुनि बारिध अचैरहे। तिनहूं ते बड़े नभतामैं मुनिसेअनेक तारा अरु दारायेन सबयन अ-छवैरहै॥ तिनहूं ते बड़े पगवावन बढ़ाये जब ताही की उचाई देखितीनोंलोक नैरहे। तिनहूं तें बड़ेसंत साहिब अगमें गम ऐसेहरि बड़े ताके हृदय घर कै रहे ५॥

नाभाजूकोवर्णनं॥ जाकोजोस्वरूपसोअनूपलैदिखाइ दियोकियोयों कबित्तपटमिहीमध्यलालहै।गुणपैअपारसा धुकहैआंकचारिहीमेंअर्थविस्तारिकविराजटकसारहै।सुनि संतसभाझूमिरहीअलिश्रेणीमानौं घूमिरहीकहैंयहकहाधौं रसालहै। सुनेहेअगरअबजानेमैंअगरसही चोवाभयेनाभा सोसुगंधभक्तिमालहै ७॥

चारहीमें॥ छप्पै॥ कहान सज्जननवत कहा मुनिगोपी

मोहित। कहादासकोनाम कवितमें कहियतकोहित॥ कोप्यारो जगमाहिं कहाचितलागैआवै। कोबासरही करै कहासंसारहिभावै॥ कहिकाहि देखि कायर कँपत आदिअंतकोहैशरन। यहउत्तर केशवदासदिय सबैजगत शोभाधरन १॥ कवित्त॥ चतुरबिहारीजूपै मिलिआई बालासात मांगतिहैं आजुकछु हमको दिवाइयै। गोद लैहौफूल दैहौनाकहि पहिराइमोती पोननकीपातरिझ ताथनहूंलाइयै। ऊंचेसेअवासके भरोखा बैठाइयेजू मेरी सेजप्यामआजु रतिपति ध्याइयै। ग्वालसमझाइबेको छ-त्तरसब दीन्होंएक उक्तिविशेषभांति वारीनहीं आइयै २ श्लोक॥ कोदुराशस्यमोहाय काप्रियाभुरविद्विषः। पदं प्रस्नवितर्कंकिंकोदंतः छदभूषणं॥ कोसुध्येहिविद्वन्सर्वेषा मथीनांरामानुरागइंदिरालोकमाता। मानुप्रस्नेचवितर्कं व्रजसवंतसिंघकोंरानीनेसिंगरफ कोमालिख्यो॥ तामें लालसाबांच्यो जैसेव्रजसुंदरीने पातीलिखी॥दोहा॥ तर भुरसी ऊपरगरी कज्जलजल छिरकाइ। पिय पातीबिन हीलिखी बांचीबिरह बलाइ ३ दृष्टांत गुलाब कौ औगु-लालाको ४॥

भक्तमालस्वरूप॥ बड़ेभक्तमाननिशिदिन गुणगान करैं हरैंजग पापजाप हियो परिपूरहै। जानिसुखमानि हरि संतसन मानसचैं बचेऊजगत रीतिप्रीति जानीमूर है। तऊदुराराध्यकोऊकैसेकैअराध्यसकैसमझोनजातमन कंपभयोचूरहै। शोभिततिलकभालमालउरराजैऐपैबिना भक्तिमालभक्तिरूपअतिदूरहै॥मूलमंगलाचरण॥ दोहा॥ भक्तभक्तिभगवंतगुरु चतुरनामबपुएक॥ इनकेपदबंदन करैनाशैबिघनअनेक १

भक्तिरूपअतिदूरिहै॥भागवते॥तत्कथ्यतांमहाभागयदि

कृष्णकथाश्रय: अथवास्यपदांभोजमकरंद लिहां सतां १ भक्तभक्ति मंगलाचरन तीनि प्रकार वस्तुनिर्देशात्मक गीतगोविंदे ॥ मेघैर्मेदुरमंबरं वनभुव: श्यामस्तमालद्रुमै र्नक्तं भीरुरयंत्वमेव तदिमंराधे गृहंप्रापय इत्थं नंदनिदेशतश्चलितयो: प्रत्यध्वकुंजद्रुमं राधामाधवयोर्जयंतिय-मुनाकूलेरह:केलय: ॥ नमस्कारात्मकं॥किरातहूणांध्रपुलिंदपुल्कसाश्चाभीरकंकायमनाखसादय: । येन्येचपापायदुपाश्रयाश्रयात् शुद्ध्यंतितस्मैप्रभविष्णवेनम: २ आशीर्वादा-त्मकं।नृसिंहपुराणे॥यस्तंभाद्गर्जमानोगगडगडगड ज्वालचंद्राद्धिदंष्ट्रोव्यालोद्भुव्योप्यमानोजजडजड्डजडत्साध्यमान: सटाभि:दंष्ट्राभि:खाद्यमानं ककटकटकटत्तर्ज्जमानोसुरेंद्रं॥ निष्क्रांतोहं।स्ययुक्तोगगहगहगहत्पातुव: श्रीनृसिंह: ३ वपुएक श्लोक॥ वैष्णवोममदेहस्तु तस्मात्पूज्यामहामुने॥ अन्ययत्नंपरित्यज्य वैष्णवान्भजसुव्रत ४ भक्तिकैसे तैसेफूल मेंसुगंध ॥

टीकाविशेषलक्षण॥हरिगुरुदासनिसोंसांचोसोईभक्त सहीगहीएकटेकफेरिउरतेनटरीहै।भक्तिरसरूपकोस्वरूप यहैछबिसारचारुहरिनामलेतअँशुवनिझरीहै॥वहीभगवंत संतप्रीतिकोबिचारकरै धरैदूरिईशताहू पांडवनसोंकरी है ॥ गुरुगुरुताईकीसचाईलैदिखाईजहां गाई श्री पैहारी जूकीरीतिरंगभरीहै २ मूल ॥ मंगलआदिबिचारिरह्योव स्तुनऔरअनूप । हरिजनकोयशगावतेंहरिजनमंगलरूप २ सबसंतनिनिर्णयकियोमथिश्रुतिपुराणइतिहास । भ जिबेकोदोऊसुघरकैहरिकैहरिदास ॥श्रीगुरुअग्रदेवअज्ञा दईभक्तनिकोयशगाइ । भवसागरकेतरनकोनाहिनऔरुउ पाइ ४ ॥

हरिगुरु दासनिसों सांचो। पट्टनाकी बाईसे रंगटको आमिल लाहौर को सुदर्शन खत्रीको दृष्टांत॥ कवित्त॥ शोच रूप सागरमें सने रघुराई कहैं लंक यह देन कौन लगै कछु घात है। कौन या विभीषणको राखैगोंकि रावण सों जीवनाल माझरीलौं परगौ पछितात है॥ लछमण पाछैं मैंहूं मरन परन लीनों जस राम बरन्यौत बूड़ी बुधि जात है। जीवको न लालच वचनको विशेष उरजीव गये वचन बचैतो बड़ी बात है १ भक्ति रस रूपको एकादशे वाग्गद्‌गदाद्रवते यस्य चित्तं हसत्यभीक्ष्णं रुदति क्वचिच्च विलज्ज उद्गायति नृत्यतेच मद्भक्तियुक्तो भुवनं पुनाति २॥ भवसागर॥ निमज्ज्योन्मज्जतां घोरे भवाब्धौ परमायणं संतो ब्रह्म विदःशांता नौर्दृढे विष्णु मज्जता ३॥

टीका आज्ञासमयकी॥मानसीस्वरूपमेंलगेहैंअग्रदास जबैकरतबयारनाभामधुरसँभारसों। बड्यौहोजहाजपैजु शिष्यएकआपदामें करउध्यानखिच्योमनछुट्योरूपसार सों। कहतसमरथगयोबोहितबहुतदूरि आवो छबिपूरि फिरिढेरेताहीढारसों॥ लोचनउघारिकैनिहारिकह्योबोल्यौकोनवहीजोनपाल्योसीतदैदैसुकुवारसों १०॥

मानसीस्वरूप मैं॥ तामेंभूतकोदृष्टांत॥ दोहा॥ यहमन भूतसमानहै दौरै दांत पसारि॥ बांसगांठि उतरै चढ़ैसब वलजावैहारि १ चल दल पत्र पताक पट दामिनि कच्छ पमाय॥भूत दीप दीपकशिखायों मन दृत्य अनाथ २॥ सवैया॥ चंचलजोमनकी गतिहै अलिरूप सुबन बनमें फिरियै।कुण्डललोल कपोलन मैं अलकनि भलकनि चितमैं धरियै॥ बरबेंदी भालरसाल दियेअधरनिमैं मोतीयरहरियै। अलबेलीलाल बिहारिनि कोंदिन रैन निहारनिहीं करियै ३ मनहैतौ भली थिरकै रहितू हरिकेपद पंकज मैं

गिरितू। कवि सुन्दर जौन सुभाव तजै फिरिबोईकरै तौ इहां फिरितू॥ मुरली पर मोरपखा परहै लकुटीपरहै भकुटी भ्रमितू। इन कुण्डल लोल कपोलनिमें घनसेतन में घिरिकैं रहितू ३ करत बयारि नाभा जूनै बिचारीयह सुख कैसे मिलै॥ टहलतेमिलै दृष्टांत मरजियाको ४॥ स-भारसौ क्योंकि मानसी ऐसी कोमलहै सो बयारि की चोट लगै ५ सारसौ॥ कवित्त॥ कंचन जटित भूमि सुरतरु रह्यो झूमि तापर सिंहासन सुखासनबिछायो है। अष्टदल कमल अमल रघुनाथ तहां अंगअंग मानोकोज रंग भर-लायो है॥ कुण्डल करणकर कंकनमुकुटकटि किंकिणीकि धुनि सुनि मन भरमायोहै। चंपे के चमेलीके अरु कुंद मं-दार के सुहारनि मैं हारिके बिचारि बिसरायो है ६॥

अचरजदयोनयोयहांलौंप्रवेशभयो मनसुखछयोजा-न्योसंतनप्रभावको। अज्ञातबदईयहभईतौपैसाधकृपाउन हींकोरूपगुणकहोहियेभावको॥ बोल्योकरजोरियाकोपा वतनओरछोरगाऊंरामकृपानहींपाऊंभक्तिदावको। कही समुझाइबोईहृदयआइकहैंसब जिनलैदिखाइदईसागरमें नावको ११ श्रीनाभाजीकीआदिअवस्था॥हनूमानवंशही मेंजन्मप्रसिद्धिजाकोभयो दृगहीनदीनसोनवीनबातधारि यै।उमरिबरषपांचमानिकैअकालआंच मातावनछोड़िगई बिपतिबिचारियै॥ कील्हाऔअगरताहीडगरदरशदियो लियोयोंअनाथजानिपूंछीसोउचारियै॥ बड़ेसिद्धजललैक मंडलसोंसींचेनैनचैनभयोखुलेचषजोरीकोनिहारियै १२॥

रूप गुण॥ श्लोक॥ येकंठलग्नतुलसीमलिनाक्षमाला येबाहुदंडपरिचिन्हितशंखचक्राः॥ तितिक्षवः कारु-णिकासुहृदःसर्वदेहिनां। अजातशत्रवःशान्ताः साधवःसाधु

नाभाजी बन्दर वीर्य २६

भूषणाः१माता॥ सवैया॥ बारिधतातकुतै बिधिसे सुत आदित सोमसहोदर दोऊ। रंभारमा तिनकी भगिनी मघवामधुसूदन से बहनेऊ॥ तुच्छ तुसार इतौ परिवार भयो घरमध्य सहायनकोऊ।सूकिसराज रह्यो जलमें सुख संपति में सबको सबकोऊ २ पिता कोऊ कहैअरु कोऊकहै सुतकोऊकहै नाना बाबा तन तीनि तापलयो है। प्रभुकोऊकहै जन कोऊ कहै मोल लयो तुम अवकहौयेजू काहि काहि दयो है॥ अहाभने जित तित चलिचलि होइरही सुख नहीं कहूंबकु हाथ मेदभयो है। कियोहू तिहारो अरु पारयोहू तिहारोहीहौं दून बीचकी लोगन ने बांटो बांट लियो है॥ सोंचे नैन॥ एकादशे॥ संतोदिशंति चक्षुषिबहिरर्कः समुत्थितः॥देवता बांधवाः संतः संतआत्माहमेवच १॥

पाइँपरिआंशुआयेकृपाकरिसंगल्यायेकीन्हअज्ञापाइमंत्रअगरसुनायोहै। गलतेअगटसाधुसेवासोबिराजमान जानिउनमानताहिटहललगायोहै॥ चरणप्रछालिसंत सीतसोअनंतप्रीतिजानीरसरीतिताहेहृदय रंगछायोहै। भईबढ़वारिताकोपावैकौनपारावारजैसोभक्तिरूपसोअनूपगिरागायोहै १३॥

मंत्र अगर आगमे॥ तापः पौंड्रंयथानाम मंत्रोयाग अपंचमः एतेपंचसंस्काराश्चपुरमैकांतहेतवः २ जन्म नाजायतेशूद्रः संस्काराद्दिजउच्यते बेदाभ्यासी भवेद्विप्रः ब्रह्म जानातिब्राह्मणः ३ संतसीत नारद बाक्यं॥ उच्छिष्टलेपाननुमोदितो द्विजैः ४ छायो है॥ कवित्त॥ कोऊयह कहै संस्कारहीसों भक्तहो तबिना संस्कार भक्तिकैसे करिपाइयै। जान्यो हम सारसब ग्रंथ अनुसार पुनि एपैहै बिचार गूढ़ कहिकै सुनाइयै॥ महिमा अगाध साधुरसिक

प्रबीननि को नेकु चितवत काम बन्धु उलटाइये। अंग अंग रंग सतसंग को प्रभाव अहो जैसे दत्तात्रेय बार सुखोहित छाइये ५ भईबढ़वारि॥ दोहा॥ मृत्तकचोर जूंठनिवचन काग बिष्टिजन मित्र॥ शिवनिरमायल आदिदैयेसबवस्तुपवित्र ६ शुकवाक्यं॥ किरातहूणांध्रपुलिंदपुल्कसा आभीरकंकाय वनाखशादय:॥येन्येच पापा: मदु पाश्रयाश्रया शुध्यंति तस्मै प्रभु विष्णवे नम: ७॥

मूल॥जयजयमीनबराहकमठनरहरिबलबावनापरशुरामरघुबीरकृष्णकीरतिजगपावन। बुद्धकलंकीव्यासपृथूहरिहंसमन्वंतर। यज्ञऋषभहयग्रीवध्रूववरदैनधन्वंतर। बद्रीपतिदत्तकपिलदेवसनकादिककरुणाकरो। चौबीसरूपलीलारुचिर श्रीअग्रदासपदउरधरो५ टीका॥ जितेअवतारसुखसागरनपारावार करैविस्तारलीलाजीवनउधारको। जाहीरूपमांझमनलागैजाकोपागैतहीं जागैहियेभाववहीपावैकोनपारको। सबहीहैनित्यध्यानकरतप्रकाशैचित्त जैसेरंकपावैवित्त जोपैजानैसारको। केशनकुटिलताई ऐसेमीनसुखदाई अगरसुरीतिभाई बसौउरहारको १४॥ मूल॥ चरणचिन्हरघुबीरके संतनिसदासहाइ॥ काअंकुशअंबरकुलिश कमलजबधुजाधेनुपद। शंखचक्रसुस्तकजंबूफल कलशसुधाहृद॥ अर्द्धचंद्रपटकोनमीनबिंदुऊर्द्धरेखा। अष्टकोनत्रैकोन इंद्रधनुपुरुषविशेषा॥ सीतापतिपदनितबसत एतेमंगलदायका। चरणचिन्हरघुबीरके ६॥

जैजैमीनबराह॥मीनबाराह क्यों गाये राम कृष्ण क्योंड़ि कैसबजातिकेस। धु गाये जाहिंगे कोऊ नीका चढ़ावै याते प-

हिले हरिही की जाति कहौहैंक्योंकि कोऊनाक चढ़ा वै सोअबहीं चढ़ावो कृष्ण कीरति को विषयिहिसुने १ तिते अवतार कोऊ कहै गुरुनने आज्ञादई संतनिको इ-न्होंने प्रथम अवतार क्योंधरे बटुवापहिले आवे साधुपाछे आवै २ नाहीरूप जापै फकीर को औ लरिकाको दृष्टांत कोऊ कहै मीन बाराह कैसे सुखदाई सुंदर केसंगतेसुंदर होइ कैसन के संगते कुटिलता ३॥

टीका॥ संतनिसहाइकाजधारेनृपराजरामचरणसरोज निमें चिन्हसुखदाइयें। मनहींमतँगमतवारोहाथआवैनाहीं ताकेलियेअकुशलेधारेउहियेघाइये । ऐसेहीकुलिशपाप पर्वतकेफोरिबेको भक्तिनिधिजोरिबेकोकंजमनलाइये । जोपैवुधवंतरसवंतरूपसंपतिमें करिलेविचारसबनिशिदि नगाइये १५॥

मनमतंगचहुर्थे॥ अयंत्वत्कथामृष्टपियूषणाद्यांमनोवारणः क्लेशदावाग्निदग्धः॥ तृषार्तोवगाढंनसस्मारदावंननिष्क्रामति ब्रह्मसंपन्नवन्नः १ छप्पै॥ सदारहतनवरंगमेंमनमतंगबिचरयोबुरो। धरनाधर्मउखारिसरमसांकरगहि तोरत। तरु णिकरावललखतशीलसालहिगहिमोरत। विनयबाणनहिं बदतज्ञानचंकुशनहिंमानत। गुरूमहावतताहिचाहिडारन उरआनतखिलेहुनो बबारुणविषयकुन्दनमदयौ बनजु रयो। सदारहतनवरंगमें मनमतंगबिचरयोबुरो २ कवित्त॥ जनमजनमतोहिं नद्यांतहांचेरेफिरयो मनमुटमरद गनीम तेरीपागीहै। कलह प्रसंगी पंचरंगीजंगी जोरावर अलख अनंगीसुउपाधिअनुरागीहै। कैदकरिपायोमनीराम नर काया बीच अबकैजो चूकैगो तो बड़ोतूअभागीहै। सुमिरि कोऊ सारपाँचभूतनिकोमिरदार मारिऐसीमारतेरी भलीघात लागीहै ३ अबको हेतसुनो सदादातासबविद्या

की सुमतिको संपतिको सुखकोनिवासहै । चरणमें सभीत होतकलिकीकुचालिदेखि छत्रजासो विशेषजानों अभयको विश्वासहै। गोपदसुह्व है भवसागर सुनागर जन जोपै नेकु हिये को लगावै मिटैचाह है। कपट कुचालि माया जाल सबजीतिवे को अंबर को दरश कियो जोपै अनायासहै १ कासह्व निशाचर के मारिवे को चक्रधरयो मंगलकल्याण हेतस्वस्तकह्वमानिये। मंगलीकजंबूफल फलचारुह्वकोफल मनकामनाअनेक पूरणहोध्यानियै॥ कलशऔसुधाकोसर सहीरेभक्तिभरयो नैनपुटपानकीजैजीजैमनआनियै। भक्ति कोबढ़ावैऔघटावैतीनितापनिको अर्द्धचंद्रधारणयेकारण ह्वंजानिये २ विषयभुवंगवलमीकतनमाहिंवसै दासकोन डसैतातैयतनअनुसरयौहै । मीनविंदुरामचंद्रकीनोंवशोक- रणमायताहीतैं निकायजनमनजातहरयोहै ॥ अष्टकोनचै- कोनयंत्रकियेजीतिबेकौं जियेजोईजानैजाकेध्यानउरभरयो है। संसारसागरकोपारावारपावैनाहिं ऊर्द्धरेखादासनि- कोसेतबंधकरयोहै ३ धनुषपदमाहिंधरयौहरयौशोकध्या- निनको मानिनिकौमारयौमानरावणादिशाषिये। पुरुष जोविशेषपद कमलबसायोराम हेतअभिरामसुनौश्याम अभिलाषिये॥ सूधेमनसूधेवैनसूधीकरतूतिसबऐसोजनहोइ मेरोयाहीतेजुराखियै। जोपैवुधवंतरसवंतरूपसंपतिमें करि लैबिचारसवनिशिदिनभाषिये ४॥ दोहा॥ दुखमेंतौसब कोभजै सुखमेंभजैनकोइ॥ जोसुखसेंहरिकोंभजै तौदुख काहेकोहोइ ५ कबहुंनसुखसेंहरिभजे दुखमेंकीनेयादि॥ कहिकबीरवाजीवकोकैसेलगैफिरादि ६ जोसाहिबसोंतू मिलै साहिबमिलैतौताहिं॥ बिनाभजनमिलतानहीसुख काहेकोहोहि७ बसतिहृदयजाकेदया रामहिंजानतजोइ दयारामपावैतबै दयारामकीहोइ ८॥

मूल॥ विधिनारदशंकरसनकादिककपिलदेवमुनिभू- प।नरहरिदासजनकभीषमबलि शुकमुनिधर्मस्वरूप॥

अंतरंगअनुचरहरिजूके जोइनकोयशगावै। आदिअंतलौं मंगलतिनकोश्रोताबक्तापावै॥ अजामीलप्रसंगयहनिर्णय परमधर्मकेजान। इनकीकृपाऔरुपुनिसमझै द्वादशभक्त प्रधान॥टीका॥द्वादशप्रसिद्धिभक्तराजकथाभागवत अति सुखदाईनानाबिधिकरिगायेहैं। शिवजूकीबातएकबहुधान जानैकोऊ सुनिरससानैंहियोभावउरझायेहैं। सीताके बियोगरामबिकलबिपिनदेखि शंकरनिपुणसतीबचनसु-नायेहैं। कैसेयेप्रबीणईशकौतिकनवीनदेखो मनैहूंकरत अंगवैसेहूबनायेहैं १६ सीताहीसोरूपबेषलेशहूनफेरफार रामजूनिहारिनेकमनमेंनआईहै। तबफिरिआइकैसुनाइ दईशंकरको अतिदुखपाइबहुबिधिसमुझाईहै। इष्टको स्वरूपधार्योतातेतनपरिहर्यो पर्योबड़ोशोचमतिअति भरमाईहै। ऐसेप्रभुभावपगेपोथिनमेंजगमगे लगेमोको प्यारेयहबातरीझिगाईहै १७॥

अनतरंग॥ बाणासुर के युद्धमें महादेव कृष्णसोंलरे॥ भागवते॥ स्वयंभूर्नारदःशंभुःकुमारःकपिलोमनुः प्रह्लादो जनकोभीष्मोबलिर्वैयासकिर्वयं २ निपुणपरमेश्वरका प्रेम कोस्वादनहीं जैसे पादशाहको फकीरी को नहीं॥ नाटके॥ पूर्यवदनाथ नाथ किमिदं हासो स्मितं लक्ष्मणः कोऽहं वत्सनु आर्यराव भगवान् आर्यश्च कोराघवः किंकुर्मोविजने वने तत इतोदेवी भृशं विद्यते। कादेवीजनकाधिराजतन याहाहाप्रियेजानकी ४॥ मनैहूंकरत॥ दोहा॥ ज्योंजगके राजानिको भेदनजानैकोइ॥ तासुअन्तक्यौंपाइये सबको दरतासोइ ५ ॥

चलेजातमगउभैपेरेशिवदीठिपरे करैपरनामहिंपभक्ति

लागीप्यारियै। पारवतीपूछैंकियेकौनकौजूकहौमोसों दी-सतनजनकोऊतबसोउच्चारियै। बरपहजारदशबीतेतहांभ क्तभयो नयोश्रौरुह्वैहैदूजीठौरबीतेधारियै। सुनिकैप्रभा-वहरिदासनिसोंभावबढ्यो रढ्योकैसेजातचढ्योरंगअति भारियै १८ टीका अजामीलकी ॥ धर्योपितुमातनाम अजामीलसांचभयोअजामलरह्योछुटीतियाशुभजातकी। कियोमदपानसोसमानगहिदूरडार्यो गार्योतनवाही सोंजोकीन्होलैकैपातकी। करिपरिहासकाहूदुखनैपठाये साधु आयेघरदेखिबुद्धिआइगईसातुकी । सेवाकरि-सावधानसंतनिरिझाइलियोनारायणनामधर्योगर्भबाल बातकी १९ ॥

बरष हजार बाबा नानक अरमरदाने चेलाके। दृष्टांत भागवते ॥मुक्तानामपिसिद्धानां नारायणपरायणः।सुदुर्लभ प्रशांतात्मा कोटिष्वपिमहामुने १ नीतौ ॥ गिरौगिरौ न माणिक्यं मौक्तिकंन गजे गजे। साधवो नहिं सर्वत्र चंदनं नवनेवने २ रंगबढ्योभागवते॥वरमेकंदृष्टणेयापि पूर्णात्का-माभिवर्षणात् भगवत्युत्तमां भक्तिं तत्परेषु तथात्वयि ३ दोहा सबान तनकनरहै निरक्षिता लगै दृगनिकी घाप काऊ पूजामाला कहूंकहूं वटुवा काऊंआय ४ करि पर-हास ताप्रै शिवजीको दृष्टांत ५ सातुकी भागवते ॥ नह्यं मयानि तीर्थानि नदेवामृच्छिलामयाः तेपुनंत्युरुकालेनद र्शनादेव साधवः ६ सावधान नीते॥ आत्मनो मुखदोषे नवद्धंते शुकसारिकाः वकास्तत्र न बद्धंते मौनं सर्वार्थ साध कः ७ मोहजाल श्लोक ॥ अंगंगलितं पलितंमुडंजातं दशन विहीनं तुंडं वृद्धोयाति गृहीत्वादंडं तदपिनमुंचत्या शपिंडं १॥

आइगयोकालमोहजालमेंलपटिरह्यो महाविकरालय मदूतदीदिवाइये। वहीसुतनारायणनामजोकृपाकैदियो लियोसोपुकारिसुरआरतसुनाइये।सुनतहीपारषदआयेता हीठौरदौरि तोरिडारेपाशकह्योधर्मसमुझाइये। हारेलैबि डारेजाइपतिपैपुकारेकहीसुनोंबजमारमतिजावोहरिगाइ- ये २० मूल ॥मोचितवृत्तनित्ततहांरहों जहांनारायणपद पारपद ॥ विष्वसेनिजयबिजयप्रबलबलमंगलकारी। नंदसुनंदसुभद्रभद्रजगआमैहारी ॥ चंडप्रचंडविनीतप्र- णीतकुमुदकुमुदाक्षकरुणालय। शीलसुशीलसुसेनभाव भक्तनप्रतिपालय ॥ लक्ष्मीपतिप्रीननप्रबीनभजनानंद भक्तनिहद। मोचितवृत्तनिततहांरहोजहांनारायणपद पारपद ८॥

आरत भागवते॥ सांकेत्यंपारिहास्यंवा स्तोभंहेलनमेव वा॥ वैकुंठनामग्रहण मसेषाघ हरंबिदुः १ धर्मसमुझाइपै। एतेनैवह्य घोनोस्य कृतंस्यादगनिःकृतिः पदानारायणायेति जगाद चतुरक्षरं २ स्तेनःसुरापोमित्रधुकब्रह्महागुरुतल्पगः स्त्रीराजपितृगोहं तायेचपातकिनोपरे ३ सर्वेषामप्यघवता मिदमेवसुनिःकृतं ॥ नामव्याहरणंविष्णोर्यतस्तद्विषयामि तिः४ अहावतःश्वपचोगरीयान्यज्जिह्वाग्रेवर्ततेनामतुभ्यंतेपु स्तपस्तेजुहुवुःसस्नुरार्याब्रह्मानूचुर्नामग्रहणीतियेते४ कृपपै॥ कहाव्रतनेमगजेंद्रकियो कहावेदपुराण पढ़ीगणिका अजा मीलनेकौन अचार कियो निशिवासर पान सुरापपिका कहा जपजाप वधिक कियौसोकृतौघनजीवनकौहनिका तुलसी अघपर्वत कोटिजरे हरिनाम कृतागनकोकनिका ६ हरिगाइपै दूतनिवृति नामोच्चारण माहात्म्यं हरेः पश्यत पुत्रकाः अजामिलोपियेनैव मृत्युपाशाद च्यत ७॥

टीका॥पार्षदमुख्यकहेसोरहसुभावसिद्धिसेवाहीकीरिद्धिहियेराखीबहुजोरिकै। श्रीपतिनरायणकेप्रीननप्रवीण महाध्यानकरैजनपालैभावदृगकोरिकै। सनकादिकदियो श्रापप्रेरिकैदिवायोआपप्रगटह्वैकह्यो पियोसुधाजिमिघोरिकै। गहीप्रतिकूलताईजोपैयहैमनभाई यातेरीतिहदगाईधरीरंगबोरिकै २१ मूल॥ हरिवल्लभसबप्रार्थौंजिनचरणरेणुआशाधरी ॥ कमलागरुड़सुनंदआदि षोड़शप्रभुपदरति । हनूमंतजामवंतसुग्रीवविभीषणसिवरीखगपति ॥ ध्रुवउद्धवअंबरीषविदुर अक्रूरसुदामा। चंद्रहासचित्रकेतग्राहगजपांडवनामा॥ कौषारवकुंतीबधूपट ऐंचतलज्जाहरी । हरिवल्लभसबप्रार्थौंजिनचरणरेणु आशाधरी ६ ॥

प्रेरिकैदिवायो॥नीति॥लक्ष्मीवंतोनजानंति प्रायेणपरवेदनां शेषेधराभराक्रांतेशेतेलक्ष्मीपतिस्स्वयं १ पियोसुधाजिमि दोहा॥ तुम मति भूल्यो भूलनो सुनि मनमोहन मित्त। भूलेपरभूलोंनहीं ताहीसुमिरोंनित्त २ कवित्त॥ प्रतिकूलताई॥नरक जो देहि तौननिदरिविमुख ह्वैजैस्वर्ग जोदेहि तौन हर्ष सराहिये। रहकरि डारैतौनकोजिये कलेशजिय करै जो कबूल तौन फूलिकै उमहिये। जिहीअंग रंगहो इतिही अंग रंगह्वैजै ये दिल सनेही नेही नीकेकै निबाहिये। चित्त क्योंन चाह मरो आपु चाह चूल्है परोप्रीतम जो चाहै चाह सोई चाहचाहिये ३ दोहा॥ दियोसुशीश चढ़ाइले अच्छी भांति अपेर॥ जासोंसुखचाहतलयोताके दुखहि न फेर ४ चरणरेणु॥श्लोक॥ रहूगणेतत्तपसानयाति नचेज्यया निर्वपणाद्गृहाद्वा नच्छंदसा नैवजलाग्निसूर्यैर्विनामहत्पादरजोभिषेकं ५ लज्जाहरी॥दोहा॥ पट ऐंचत

मटकी नहीं भुजबल भई अनाथ ॥ तुलसीकीन्हीं ग्यार-हौंबसनरूपरघुनाथ ६ ॥

टीका ॥ हरिकेजेबल्लभहैंदुर्ल्लभभवनमांझ तिनहीं कीपदरेणुआशाजियकरीहै। योगीयतीतपीतासोंमेरोकछु काजनाहिंप्रीतिपरतीतिरीतिमेरीमतिहरीहै।कमलागरुड़ जामवानसुग्रीवआदि सबैस्वादरूपकथापोथिनमेंधरीहै। प्रभुसोंसचाईजगकीरतिचलाईअतिमेरेमनभाई सुखदाई रसभरीहै २२ टीकाहनूमानजूकी॥ रतनअपारक्षीरसागर उधारकियेलियेहितचायकैबनाइमालाकरीहै । सबसुख साजरघुनाथमहाराजजूके भक्तसोबिभीषणजूआनिभेंटध रीहै । सभाहीकोचाहअवगाहहनूमानगरेडारिदईसुधि भईमतिअरबरीहै। रामबिनकामकौनफोरिमणिदीनोडारि खोलितुचानामहौदिखायोबुधिहरीहै २३ ॥

डारिदई॥रामायणे॥ कंकणेनैवजानामि नैवजानामिकुं डले ॥ नूपुरावेवजानामिसदापादाभिवंदनात् १ छप्पै॥ रामचरणतजिआनरति गनतजिमनुगदहैचढ़ौ ॥ वहैनीच वहैपोचवहैआतमबड़पापी। वहैअविद्यामूलवहैगुरुद्रोहि सुरापी । वहैदीनमतिहीनवहैनरकनिमेंनामी। वहैक्षत मींकुटिल वहैबड़लोनहरामी । अगरकहैंताहिगतिनहीं तीनिताप सो हियदढ़ौ । रामचरणतजि २ । फोरि मणि दीनी । किकंठभूषणं३ खोलित्वचा॥ कवित्त। न्यारीन्यारी दीसैं जैसेकागदकी चीरीपर मसीकोडँडीरी ऐसी मजनू कीपांसुरी । गरिगयोगातयेरी पातसोपुरानोह्वैकै पान पानरही परोलेतहै उसासरी । तेरीयेतलबतेरेताल वदिवानेकोहै देखतहवालवाको आवतहै आंसुरी।तेरी

अब लैलै उरलाइ लेरी अपनीसों फेरिपछितै है जबमाटी मिलै मांसुरी ४ ॥

टीकाबिभीषणजूकी ॥ भक्तिसोंविभीषणकीकहैऐसो कौनजनऐपैकछुकहीजातिसुनोचितलाइकै। चलतजहाज परअटकिविचारिकियोकोऊअंगहीननरदियोलैबहाइकै। जाइलग्योटापूताहिराक्षसिनिगोदलियो मोदभरिराजा पासगयेकिलकाइकै। देखतसिंहासनतेकूदिपरेनैनभरे याहीकेअकाररामदेखैभागपाइकै २४ रचिसोसिंहासन पैलैबैठायेताहीक्षणराक्षसनरीझिदेत मानीशुभघरीहै। चाहतमुखारविंदअतिहीअनंदभरि ढरकतनैननीरटेकि ठाढ़ीछरीहै। तऊनप्रसन्नहोतक्षणक्षणक्षणज्योतिन्हजि- येकृपालमतिमेरीअतिहरीहै। करौसिंधुपारमेरेयहीसुख सारदियेरतनअपारलायेवाहीठौरफरीहै २५ रामनाम लिखिशीशमध्यधरिदियोयाको यहीजलपारकरैभावसां- चोपायोहै। ताहीठौरबह्योमानोनयोऔररूपभयोगयो जोजहाजसोईफेरिकरिआयोहै। लियोपहिचानिपूंछेउस बसोंबखानकियोहियोहुलशायोसुनिबिनयकैचढ़ायोहै। पर्‌योनीरकूदिनेकुमायानेप्रवेशकियो हर्‌योमनदेखिरघु- नाथनामभायोहै २६ ॥

दियोलैबहाइ। नीति। वनानिदहतोवन्हि सखाभवति मारुत: सयेवदीपनाशाय कृशेकस्यास्तिसौहृदं १ अश्वंनै वगजंनैवसिंहंनैवचनैवच। अजापुत्रंवलिंदद्यात् दैवोदुर्बलघा तक: २जाइलग्यो ॥दोहा॥ कबिरातेरेनामपद कियो सुरा ई लौन ॥ जिन्हैचलाओपंथतुम तिन्हैभुलावैकौन ३ राम

नाम श्लोक ॥ रामत्वत्तोधिकंनाम इतिमेनिश्चितामतिः त्वयंकातारितायोध्या नाम्नाचभुवनत्रयं४ रामनामकेलिखे तरेपाषाणरे।दुष्टअजामिलतरयोनामतेजानरे।सबतजिभजि हरिनामसुनोसबजंतरे।नामबिनाहै नरकसुनोभाईसंतरे५॥

सवरीजीकीटीका॥ बनमेंरहतिनामसेवरीकहतसबबा हतढहलसाधुतनन्यूनताईहैरजनीकेशेषऋषिआश्रम प्रवेशकियोलकरीनबोझधरिआवैमनभाईहै । न्हाइबेको मगझारिकांकरनिबीनिडारि बेगिउठिजाइकोऊजानत न लखाईहै। उठतसवारेंकहैंकौनधोंबहारिगयोभयोहियेशोच कोऊबड़ोसुखदाईहै २७ बड़ेईअसंगवेमातंगरसरंग भरे धरेदेखिबोझकह्योकौनचोरआयोहै । करैनितचोरीअहो गहो वाहिएकदिनबिनायापै प्रीतिवाकीमनभरमायोहै। बैठेनिशिचौकीदेत शिष्यसबसावधान आइगईगहि लई कापैतननायोहै। देखतहीऋषिजलधाराबहीनैननितेबैननिसोंकह्योजात कहाकछुपायोहै २८ ॥

बनमेंरहत दोहा ॥ लोल पनन सोंजे भरे उघरेडांकल गाइ॥ करणफूल भूलतरहैं काननहीं में आइ १ सवैया ॥ जाइये न जहांतहांसंगतिकुसंगतिहै कायरके संगशूरभागिहैपैभागिहै । फूलनि के बास बस फूलनि की बासहोति कामिनीके संग कामजागिहैपै जागिहै ।घरबसेघरबसेघरमें वैराग कहा मायामोहममतामें पागिहैप्रैपागिहै । काजर की कोठरीमें कैसोहू सयानो बैठै काजरकीएकरेखलागिहैपैलागिहै२ निशिबासरवस्तु बिचारि करै सुख सांचहिये करुणाधनहै। अघनिग्रहसे ग्रहधर्म कथा सुपरिग्रह साधनकोगनहै ।कहिकेशवभीतरयोगजगै अतिऊपर भोगनि में

तनहै। मनछायसदा जिनके तिनको बनहीघरहै घरहीबन है ३ रसरंगभरे ॥ रसंवैसःरसंह्येवायंलब्ध्वानंदी भवति इति श्रुते। कोइकहै विरक्तहैकैरसरंगमें कैसेभरेजैसे शुकदेवजी नैरहरण की लीला दुलराइकै गाई ४ ॥

डीबिहूनसोंहीं होतिमानितनगोतछोत परीजाइशोच सोतकैसेकैनिकारिये । भक्तिकोप्रतापऋषिजानतनिपट नीकेकैऊकोटिबिप्रताईयापैवारिडारिये । दियोबासआश्र ममेंश्रवणमैंनामदियो कियोसुनिरोपसबैकीनीपांतिन्यारि ये।सबरीसोंकह्योतुमरामदरशनकरौमैंतौपरलोकजातआ ज्ञाप्रभुपारिये २६ गुरुकोवियोगहियेदारुणलैशोकदियो जियोनहींजाततऊरामआशलागीहै । न्हाइबेकोघाटनि- शिजातिहीबुहारिसब भईयौंअवारऋषिदेखिव्यथापागी है। छुयोगयोनेककहूंखीजतअनेकभांति करिकैविवेकग- योन्हानयहभागीहै । जलसोंरुधिरभयोनामाक्रमभरिग- योनयोपायोशोचतौहूजानैंनअभागीहै ३० लावेबनबेर लागीरामकीऔसेरभल चाखैधरिराखैफिरमीठेउनयोग हैं। मारगमेंरहैजाइलोचनबिछाइकभूंआवैंरघुराइदृगपा वैंनिजभोगहैं । ऐसेहीबहुतदिनबीतेमगजोवतही आइ गयेऔचकासुमिटे सबशोगहैं । अँयैतननूनताईआईसुधि छिपीजाइ पूछैंआपसेवरीकहांठाढ़ेसबलोगहैं ३१ ॥

भक्तिकोप्रतापइतिहास॥ शिवलिंगसहस्राणिशालिग्रा मसतानिच॥द्वादशकोटियःविप्राःस्वपचमेकवैष्णवं१ हरिभ क्तिलतिकायां॥ व्याधस्याचरणंध्रुवस्यचवयोविद्यागजेंद्रस्य का।कुब्जायाकिमुनामरूपमधिकंकिंतत्सुदाम्नोधनं॥ वंशः

कोबिदुरस्ययादवपते रुग्रस्यकिंपौरुषः भक्त्यातुस्यतिकेवलंनतुगुणैर्भक्तिप्रियोमाधवः२नामदियो॥पंचरात्रे। यावद्गुरुर्नक्रियतेसिद्धिस्तावत्नलभ्यते ॥ तस्मात्गुरुर्हिकर्त्तव्यं नैवसिद्धिगुरुविना ३ अभागीहै॥ छप्पै ॥ मत्सरक्रोधमिलिरह्यो गर्बगिरिपरयोजुगाजै । क्रोधशोदहियमध्यद्वंद मदमदनविराजै॥ लोभभँवरहृदकमल कोशभीतररतिहि आसन। कपटझूठझिलिमिलै भिष न मानतविश्वासन ॥ मनमोहकोहकंदरपरयो अपरसह्वै भीटनडरै। भनिलाल बालहरिबंशहित बिनप्रसादतमकोहरै॥

पूंछिपूंछिआयेतहांसबरीअस्थानजहां कहांवहभागवतीदेखौंदृगप्यासेहैं। आइगईआश्रममेंजानिकैपधारेआप दूरहीतेशाष्टांगकरोचषभासेहैं। रवकिउठाइलईब्यथातन दूरिगईनई जैंननीरझरीपरेप्रेमपासेहैं। बैठेसुखपाइफल खाइकैसराहेवेइ कह्यौकहाकहौंमेरेमगदुखनाशेहैं ३२ करतहैंशोचसबबैठेऋषिआश्रममें जलकोबिगारसोसुधारिकैसेकीजियै। आवतसुनेहैंबनपथरघुनाथकहूं आवैंजब कहैंयाकोभेदकहिदीजियै । इतनेहीमांझसुनीसबरीके बिराजेआनि गयोअभिमानचलोपगगहिलीजियै। आये खुनसाइकहीनीरकोउपाइकहो गहौपगभीलिनीकेछुवौ स्वच्छभीजियै ३३॥

इतनेही॥नीति॥राज्यहीनानरासर्वे बुद्धिहीनाभवंतिहि। बुद्धिहीनानरासर्वेराज्यहीनाभवंतिहि१खाइकै॥पद॥ मीठेमीठेचाखिचाखिबेरलाईभीलनी। कौनसीअचारवती नहींरूपरंगरती जातिह्नमेंकुलहीनबड़ीहैकुचीलनी॥ जूठे फलखायेरामसकुचेनभावजानि हुलसतौप्रभुऐसीकीनी रस कीशीलनी। कौनसीतपस्याकीनीबैकुंठपदवीदीनोबिमान

मेंचढ़ीजातऐसीहैसुशीलनी ॥ सांचीप्रीतिकरैकोई अ-
मरदासतरैसोईप्रीतिहीसोंतरिगईगोकुलअहीरनी२क-
हीनीरनीर॥नीति। शठंप्रतिशठंकुर्यात् दादरंप्रतिचादरं ॥
त्वयाचलुञ्चितपचेमयातिमुंडतश्शिर: ३ तापैतोताको अरु
वेश्याकोदृष्टांत ४ स्वच्छभोजियै ॥ दोहा ॥ अधिक बढ़ावत
आपतें जनमहिमारघुवीर ॥ सवरीपदरजपरशते सुध भयो
सरितानीर ५ हरिभगतनिकोमिलतहैंभगवतकेयशहाय॥
हृदयबीच कोफलतहै समुभो आपहिआप ६ अभिमानी
ऋषिछोंड़िसवरीकेगये ॥

जटायुकीटीका॥जानकीहरणकियोरावणमरणकाजगु
निसीताबाणीखगराजदौरेउआयोहै।बड़ीपैलड़ाईलीनींदे
हवारिफेरिदीनीराखेप्राणरामसुखदेखिबोसुहायोहै॥आये
आपगोदशीशधारिदृगधारसींच्यो दईसुधिलईगतितनहूं
जरायोहै।दशरथवतनानकियेजलदानयहअतिसनमान
निजरूपधामपायोहै३४ अंबरीषजूकीटीका॥अंबरीषभक्त
कीजुरीसकोऊकरैऔर बड़ोमतिबौरकिहूंजातनहिंमाषि
ये। दुर्बाशाऋषिशिषसुनीनहींकहूंसाधुमानिअपराधशिर
जटाखैंचिनाखिये ॥ लईउपजाइकालकृत्याविकरालरूप
भूपमहाधीररह्योठाढ़ोअभिलाषियै। चक्रदुखमानिलैकृशा
नुतेजराखकरीपरीभीरब्रह्मणकोभागवतसाखिये ३५ ॥

गोद शीश ॥ सवैया ॥ श्रीरघुनाथजूलैखगहाय निहारैं
औ नैननितेजलडारैं । टूकह्वैजात हैं सीता वियाकै सो
याकी सनेह कथा कै बिचारैं ॥ तजि मोहिंचले लगिनी-
को तुम्हैं हमैंसौंहतिहारीहै संगतिहारैं। यौंकहिराम
गरोभरिफेरि जटायुकी धूरि जटानसों झारैं १ लईगति
दोहा ॥ मुये मरत मरिहैं सकल घरी पहर के बीच ॥

लही न काहू आजुलौं गीधराज की मीच२ ॥ दईसुधि ॥ रघुबर विकल विहंग लखि सो बिलोकि दोउवीर ॥ सिय सुधि कहि सियराम कहि देह तजी मतिधीर ३ ॥ घरी जनाबतहीरहैं घरी भजे नहिंराम। घरी भई सब पुण्यकी खरी सुमति बेकाम ४ ॥ रीषकोज ॥ नवमे॥सवै मनः कृष्ण पदारविंदयोर्वचांसि वैकुंठगुणानुवर्णने ॥ करौ हरेर्मंदिरमार्जनादिषु श्रुतिंचकाराच्युतसत्कथोदये ५ मुकुंदलिंगालयदर्शनेदृशौतद्भृत्यगात्रस्पर्शेंगसंगमं॥ घ्राणंचतत्पाद सरोज शोरभे श्रीमतुलस्यारसना तदर्पिते ६ पादौ हरेः क्षेत्रपदानुसर्प्पणे शिरोहृषीकेशपदाभिवंदने॥ कामंच दास्येनतुकामकाम्यया यथोत्तमाश्लोकगुणाश्रयारतिः ७॥

भाज्योदिशादिशासबलोकलोकपालपासगयोनयोतेंजच क्रचूनकियेडारहैंब्रह्माशिवकहीयहगहीतुमटेवबुरीदासनि कोभेदनहींजान्योवेदधारेहैं। पहुंचबैकुंठजाइकह्योदुखअकुलाइहायहायराखोप्रभुखरोतनजारेहैंमैंतोहौंअधीनतीनिगुणकोनमानमेरेभक्तवात्सल्यगुणसबहीकोढारेहैं ३६ मोकोअतिप्यारेसाधुउनकीअगाधमतिकरौअपराधतुमसह्योकैसेजातहै। धामधनवामसुतप्राणतनत्यागकरेढरेंमेरीओरनिशिभोरमोसोंबातहै॥ मेरेउनसंतबिनुऔरुकछुसांचीकहौंजाओवाहीठौरयातेमिटैउतपातहै। बड़ेईदयालसदादीनप्रतिपालकरैंन्यूनतानधरैंकहूंभक्तिगातगातहै ३७॥

ब्रह्माबाक्य ॥ लक्ष्मीप्राणाधिकाशश्वत् नास्तिकोपितोधिका ॥ भक्तानहंटीस्वयंसाचेत् तूर्णंत्यजतितांविभुः १ ॥ शिवबाक्य ॥ महतिप्रलयेब्रह्मन्ब्रह्मांडोपजलप्लुतः ॥ नतन्नाशोभक्तानांसर्वेषांच विशिष्यति२॥ हायहाय॥ पद॥हरिभक्तनिसोंगर्भन करिबो। यह अपराध परमपद हूते उतरि

नरक में परिबो ॥ गज सिंहासन छत्र ऊंट चढ़ि भवभा-
गर नहिं तरिबो । इस कुलवंत धनीये भिक्षुक बीचवन-
नमें धरिबा ॥ यहमत भलो नहीं आपुन वड नरकूकार
अनुसरिबो । हरि से बीनस गाइक को लघुमानतनेकुनड
रिबो । अपनेदोष निपटआधेपर दोषकुतकनि जरिबो ॥
इधा चातुरी बांह जनम ते भलोगर्भमें गरिबो । खानपान
ऐड़ान भले जो बदनपसारि न मरिबो ॥ श्री कृष्णदास
हित धरि विवेक चित साधन संग उबरिबो ३ ॥ आधीन
नमले ॥ अहं भक्तपराधीनःह्यस्वतंत्रइवद्विजः ॥ साधुभिर्ग्रस्त
हृदयोभक्तैर्भक्तजनप्रिया: ४ श्रीमद्भागवते ॥ येदारागार
पुत्राप्तान्प्राणान्वित्तमिमंपरं ॥ हित्वामांशरणंयाताःकथं
तांस्त्यक्तुमुत्सहे ५ नाहमात्मानमाशासेभक्तैःसाधुभिर्विना
श्रियंचात्यंतिकींब्रह्मन् येषांगतिरहंपरा ६ ॥ तीनत्राससार
स्वागतपालक आरतनाशनवक्षसयदेस ॥ भलोगर्भमेंगरिबो ७ ॥

ह्वैकरिनिराशऋषिआयोनृपपासचल्योगर्भसौंउदासप
गगहैदीनभाष्योहै । राजालाजमानिमृदुकहिसनमानक-
र्योढरयोचक्रऔरकर जोरिअभिलाष्योहै । भक्तिनिशिका
मकहूंकामनानचाहतहै चाहतहैविप्रदूरिकरो दुखचाख्यो
है । देखिकैबिकलताईसदासंतसुखदाईआईमनमांझसबै
तेजढांपिराख्योहै ३८ एकनृपसुतासुनिअंबरीषभक्तिभाव
भर्योहियभावऐसोबरकरिलीजिये । पितासोंनिशंकह्वै
केकहीपतिकियोमैंहीं विनय मानिमेरी वेगिचिट्ठी लिखि
दीजिये । पातीलैकैचल्योविप्रछिप्रवाहिपुरीगयोनयोचाव
जान्योऔपकैसे तियाधीजिये । कहौतुमजाइरानीबैठीसत
आइमोको बोल्योनसुहाइप्रभुसेवामांझभीजिये ३९॥

गर्भसोंउदास॥पद॥हमभक्तनिसोंभूलिबिगारी। जान्यो

नहीं इतौबल इनको येहरिके अधिकारी। कमल पराग भँवरभल जानैं वहैबासना बिहारी। निपट नालके निकट भडुका भयो कीचकोचारी। काम क्रोध मद अतिशय लह मतितपबलबल्यो बिकारी। अंगीकारकिये हरिइनकोयह कछु हमन विचारी। दुर्वाशा अंबरीष आगे करीदीनता भारी। अग्रदास अभिमान पोटरी ऋषिशिरते तबडारी १ निशंक ह्वै कै॥ सवैया॥ चंदनपंकगुलाबको नीरसरोज कीं सेज उठाइधरौरी। तूलभयो तनजात नरेश यहबैरी दुकूल उतारि धरौरी। सिंधुजू कुंडसबै उपचार्यो माह तुसारके भारपरौरी। लाजको ऊपर गाज परै ब्रजराज मिलैं सबलाज करौरी २ जरिजाऊ जोलाजसो काजबिगारै ३ तिया धीजिये तियाधीजेयसै सरानी कीलौंडी पंडितकोदृष्टांत॥ चोर साहूकारको दृष्टांत॥ दोव्याहाका न्याय॥ नखीनांचनदीनांच शृंगिणांशस्त्रपाणिनां।बिश्वासोनैवकर्त्तव्यंस्त्रीषुराजकुलेषुच ४ दृष्टांत नानकशाहको४

कहीनृपसुतासोंजोकीजियेयतनकौनपौनजिमिगयोआयोकामनाहींवियाको। फेरिकैपठायोसुखपायोमैंतौजान्योयहबडोधरमझ्नवाकेलोभनहींतियाको। बोलीअकुलाइमनभक्तिहीरिझाइलियो कियोपति मुखनहींदेखो औरपियाको। जाइकैनिशंकयहबात तुममेरीकहौचेरीजोनकरौतौपैलेवौपापजियाको ४० कहीबिप्रजाइसुनि चाइभहराइगयोदयोलैखड्गयासोंफेरिफेरिलीजिये। भयोजूबिवाहउतसाहकहूंमातनाहींआईपुरअंबरीषदेखिछबिभीजिये। कह्योनवमंदिरमैंझारिकैबसेरा देवोदेहुरावभोगबिभवनानासुखकीजिये। पूरवजनमकोऊमेरे भक्तिगंधहुतियातेसनबंध पायोयहै मानधीजिये ४१ रजनीकशेषपतिभवनमें प्रवेशकियो लियोप्रेमसाथ ढिगमंदिरके आइये। बाहरी

टहलपात्रचौकाकरिरीझिरही गहीकौननजाइजामेंहोतनल खाइये । आवतहीराजादेखिलगैननिमेषकहूंकौनचोरआ योमेरीसेवालैचुराइये। देखीदिनतीनिफिरि चीन्हिकै प्र वीनकही ऐसोमनजोपै प्रभुमाथे पधराइये ४३ ॥

बाखी अकुलाइ ॥ ऋषभदेववाक्यं ॥ गुरुर्नसः स्यात्स्व जनोनसस्स्यात्पितानसस्स्यात् जननी नसास्यात् ॥दै-वंन सस्स्यात्नपतिश्चसः स्यान्नमोचयेद्यः समुपेतमृत्युं १ पति भवनमें ॥ लक्ष्मीबाक्य ॥ सर्वैपतिः स्यादकुतोभयः स्वयं समंततः पाति भया तुरंजनं । सयेकयेवेतरथामिथोभयं नै-वात्मलाभादधि मन्यतेपरं २ विनाटहलतौभक्ति प्राप्ति नहीं होइहै अनेकउपाइ करौविनाहरिकोकृपाकहौ क हांते आवै जैसे रसयनोकी रसायनिविनाटहलनहींपावै जबटहलकरिकै प्रसन्न करै तबमिलै ३॥

लईबातमानिमानोमंत्रलैसुनायोकान होतहीबिहान सेवानीकीपधराईहै। करतिशिंगारफिरिआपहीनिहारिरहै लहैनहींपारदृगझरीसीलगाईहै॥भईबढ़वारिरागभोगसों अपारभावभक्तिबिस्तारंरीतिपुरीसबछाईहै । नृपहूसुनत अबलागीचोपदेखिबेकीआयोततकालमतिअतिअकुलाईहै ४३ हरैहरैपावधरैपौरियानमनेकरैंखरैंअरबरैं कबदेखों भागभारीको । मयेचलिमंदिरलौंसुंदरनसुधिअंगरंगभी जिरहीदृगलाइरहेझरीको॥ बीणालैबजावैगावैलालनरि-झावैत्योंत्योंअतिसनीभावैकहैधन्ययहघरीको । द्वारपैन रह्योजाइगयेललचाइढिग भईउठिठाढ़ीदेखिराजागुरुह रीको ४४ वैसहीबजाओबीनतानननिनवीनलैकैंझीनसुर कानपरैंजातमतिखोइये । जैसैरंगभीजिरहीकहीसोन

जातिमोपैआयेमननैनचैनकैसेकरिगाइये ॥ करिकैअलाप चारोकेरिकैसँभारीतानआइगयोध्यानरूप ताहीमांझभोइ ये। प्रीतिरसरूपभईरातिसबबीतिगईनईकछूरीतिअहो जामेंनहींसोइये ४५ ॥

लईबात मानि ॥ गीतायां॥ जन्मांतरसहस्रेषुतपोध्यान समाधिभिः॥ नराणांक्षीणपापानां कृष्णेभक्तिःप्रजायते १ ॥ रोक्तिश्च॥पंचरात्रे ॥ नाहंबसामिवैकुंठेयोगिनांहृदयेनच मद्भक्तायत्रगायन्ति तत्रतिष्ठामिनारद २ ॥ भई उठि ठाढ़ी न्याये ॥ नराणांचनराधिपः ३ ॥ एक उपदेश कर्तागुरु ॥ एक पति परमेश्वर सोतीन नातेजानिकै उठीनहींसो इये रागी भोगीजोगिया वपुजेहीपरकाज ॥ शसनहूनको हगन से नींदै आवैलाज ॥ नासकेत॥एकाक्षरप्रदातारंयो गुरुंनैवमन्यते। श्वानजन्मशतगत्वा चांडालेष्वपिजायते४ ॥

बातसुनोरानीऔरराजागयेनईठौर भईशिरमौरअब कौनवाकीसरिहै। हमहूलैसेवाकरैंपतिमतिवशकरैधरैनि तध्यानविषयबुद्धिराखीधरिहै ॥ सुनिकैप्रसंन्नभयेअतिअ बरीपईशलागीचौफूफैलगई भक्तिघरघरहै।बढ़ैदिनदिन-चावऐसोईप्रभावकोईपलटैसुभावहोतआनंदकोभरहै४६। टीका बिदुरजीकी ॥ न्हातिहीबिदुरनारिअंगनिपखा रिकरि आइगये द्वारकृष्ण बोलिकै सुनायोहै। सुनत हीसुर सुधिडारी लैनिदरिमानों रास्योमदभरिदौरि आनिकैचितायोहै। डारिदियोपीतपटकटिलपटाइलियो हियोसकुचायोवेसबेगहीबनायोहै। बैठीढिगआयकेरा-छीलिछीलकाखवायआयो पतिखिज्योंदुखकोटिगुनोंपा-ये है ४७॥

पलटै॥ तापै दृष्टांत राजाकी बेटीको अरु फकीर को १ बीसइक्कीस अधिक ह्वैजैहैं॥ पालपरैंज्यों आव मिटैहैं १ आइ गये॥ श्लोक इंद्रप्रस्थं यमप्रस्थं अवंतिवारणः व्रतं॥ देहिमांचतुरोग्रामांपंचमोहस्तिनापुरः २ बिनायुद्धेनदातव्यंसुईअग्रनकेशव३ यद्वाक्ष्ययंमंचकद्रोभगवान्नः खिलेश्वरः॥ पौरवेंद्रगृहंहित्वाप्रविवेशात्मसात्कृतं ४॥ कवित्त॥ नहीं नाहीं करैं थोरो लागैं सबहीन कहैं मंगन को देखिपट देत बारबार हैं। जिनके मिलेते भली प्रापति की घरीहोति ऐसे करतार किये ऐसनिरधारहैं॥ भोगी ह्वै रहत बिलसत अवनी के मध्य कनकन जोरेदान पाठ परिवार हैं। सेनापति समझि बिचारिदेखौ चार दाता अरु सूम दोनों किये राक सारहै ५ दुर्योधनघर त्यागतभये॥ अपनोमानि बिदुरकेगये ६ बोलिकै॥ दोहा॥ सुधि सुरताल अरु तान की रह्योन सुरठहराइ। बेरीराग बिगारिगयो बैरीबोल सुनाइ ७ रही दहेंड़ी ढिगधरी भरी मथनियां बारि। फेरत कर उलटी रई नई बिलोवन हारि ८॥ कवित्त॥ सोवत समाधित जगाइदिये मुनिगण पशुहू चकित चित्त करै नाचरनको। गाइनिते बछरा छुटायेज पिवत छीर अद्भुत कथा तेरी कहांलौं बरनको॥ आन रूपकरी गोपी सबै है डरनि डरीतज तहांपरीते गई धरा धरनको। बांसुरी मैं तोहिपूछौं बारबार तू है लागी लाल के अधर मैं अधर मैं करनको ९॥ कवित्त॥ फूली सांझ के सिंगार सूहो सारी जुहीहार सोने सी लपटी गोरी गौने कोसी आईहै। आलस न फेरफंद जाने कछू चंदमुखी दीपक बरावन को नंदभवन लाईहै। ज्योति के जुरत हीमेंजुरे नैनाढुरे जाइ चातुरी अचेतभई चितयो कन्हाईहै। बाती रहीहाती छबि छाती रस मातीपर पागुरी भईहैसति आंगुरीलगाईहै १ गीतायां॥ पत्रंपुष्पंफलंतोयं योमेभक्त्या प्रयच्छति। तदहं भक्त्युपहृतम श्नामिप्रयतात्मनः॥ सवैया॥सहीसीसारीसुहाईहैसांझमेंनैननमांझमिलानमई

है।कोहैकहांकीहै कौनकीहैघर कौनकेआईनवेलीनईहै।
ठौरठगेउँमगेसेमसारप रीझिरहेआलीभेंटभईहै। कोब-
लियागलियामेंगई सुदियालैगई सोजियालैगईहै ३ प्रेम
कोविचार॥ तत्सुखस्वसुख॥ दोहा॥ पूजिभवानीभाईसों
मांगतयहवरदेऊ॥ व्रजमेंसुंदरसांवरो हमसोंकसनेऊरै ४
सवैया॥ हमकूंतुमएक अनेकतुम्है उनहींकेविवेकवनाइ
बहौ। इतचाहतिहारी तिहारीउतै घरबाहरप्रेमसदा
निबहौ। मनभावेसुमारपसोईकरौ अनुरागलताजिनवो
यदहौ। घनश्यामसुखीरहौआनंदमें रहौनीकेरहौउन-
हींकेरहौपूनाकचढ़ैसीवीकरै जितैछवीलोछैल॥ फिरिफि
रिभूलवहैगहैपियककरीलीगैल ६ ततबेतातिऊंलोकमेंभो
ननकियेअपार॥केसिवरीकेबिदुरघरकचिमानीहैवार १॥

प्रेमकोविचारिआपलागेफलसारदैन चैनपायोहिये
नारिबड़ीदुखदाईहै। बोलेरीझिश्यामतुमकीनोबड़ोकाम
ऐपैस्वादअभिरामवैसीवस्तुमैंनपाईहै। तियासकुचाइकर
काटिडारौंहाइप्राण प्यारेकोखवायछीलिछीलकानभाईहै
हितहीकीबातदोऊकोऊपारपावैनाहिं नीकेलैलड़ावैसोइ
जानैंयहगाईहै ४८टीका॥सुदामाजूकी॥ बड़ोनिशिकामसे
रचूनहूंनधामढिगआईं निजबामप्रीतिहरिसोंजनाईहै।सु
निशोचपरेउहियोखरोअरबरेउ मनगाढ़ोलैकैकरेउबोल्यो
हांजुसरसाईहै । जावोएकबारवहबदननिहारिआवोजो
पैकछुपावोलावोमोकोसुखदाईहै।कहीभलीबातसबलोक
मेंकलंकहवैहैजानीपतियाहीलियेकीनोमित्रताईहै ४६॥

मित्रताई॥ कवित्त॥ बोल्योमुसिकाइ नारिबावरी
कहांधौआई मोतनिपैमांगे सोकपूतनिकोरावहै। गिरि

हूंतेमारे ऐसेदारिदहमारेभागदई फिटकारे तिन्हेंकहौ कहांडारमहै,खैरकोनटाटोऐसोआपदाहैमाटोसात थेग-रीकछाटोसोसुदामानेरोनामहै । नौलौंगावैंध्यासबन मांगेपावैंभीषकन तौलौंमानिलोजैभिरछचनकोछामहै २ आवतिहैलाज भारीजातव्रजराजजूपै बसनसमाजदेखि खरोमरिजाइये । एकहीपिछौरासोतौठौरठौरफाटि रही आोढ़िये निशाकोजासोंप्रातउठिन्हाइयै। भेंटऐसी नाहिं जोलैजाइयेभगवंतजूपै अंतअभई हैनारिकौलौंसम-भाइये । देहपरमांसजौलौंनाभिकाउँश्वासतौलौं बड़ो उपहासमांगि मीतनसताइयै ३॥

तियासुनिकहैकृष्णरूपकयोंन चहै जाहिदहैदुखआप-होसोंबचनसुनायेहैं। आईसुधिप्यारेकीबिचारैमतिटारैतब धारेपगमगझूमिद्वारावतीआयेहैं। देखिकैबिभूतिसुखउप ज्योअभूतकोऊ चल्योमुखमाधुरीकेलोचनतिसायेहैं। डर पतिहियाड्योढ़ीलांघिमनगाढ़ाकियो लियोकरचाहतब तहांपहुँचायेहैं ५० देख्योश्यामआयोमित्रचित्रवतरहेनेकु हितकोचरित्रदौरिशेयगरेलागेहैं। मानोएकतनभयोल-योऐसेलाइछाती नयोयहप्रेमछुटैनाहिंअंगपागेहैं। आई दुवराईसुधिमिलनिछुटाईताते आनँजलरानीपगधोये भागजागेहैं । सेजपधराइगुरुचरचाचलाइसुख सागर बड़ाइआइअतिअनुरागेहैं ५१

आईसुधि॥ सवैया॥ हेकरतारहौं तोसोंकहौं कबहूं जनिदोजिये काहूकेटोटो। औरलिखौनिनिकाहूकेभाग में भालकेकाजैं महीपनिपोटो। तूहूतौजानतहै अपनेजिय मांगिबेतैं कछुऔर न खोटो जागयो मांगन तूबलिद्वारतौ याहीते ह्वैगयो बावनछोटो १ मतिमांगि मतिमांगि ना-

कोनाम मांगना २ मनगाढ़ोकियो ॥ दोहा ॥ मोंमरनैं कोनेमहै मरौंतौ हरिकेद्वार ॥ कमहूंतौ हरिबूमिहैं कौन मरौदरबार ३ ॥ सवैया ॥ कैसेबिहाल बिंवाइनसोंपग कंटकजाल गड़ेपुनिजोये । हायमहादुखपायोसखातुमआये इतैन कितैदिनखोये । देखिसुदामाकीदीनदशा करुणाकरिकै करुणानिधिरोये । पानीपरातकोहाथछुयोनहीं नयननके जलसोंपगधोये ३ ॥

चिरवाछिपायेकांखपूछेंकहालायेमोकों अतिसकुचाये भूमितकैंदगभीजेहैं । खैंचिलईगांठिमुठीएकमुखमांझदई दूसरीहूलेतस्वादपायोआपरीझेहैं । गह्योकररानीसुखसानीप्यारीबस्तुयहै खावोबांटिमानोश्रीसुदामाप्रेमधीजेहैं । श्यामजूबिचारिदीनीसंपतिअपारबिदा भयेपैनजानीसारबिछुरनछीजेहैं ५२ ॥

दियोसुखसांझ ॥ कबित्त ॥ हूल हियरा में कामकामी न परीहै रीरभेंटतसुदामैं प्यामैंबलैना अघातही । शिरोमणि ऋद्धिनमें सिद्धिनमें शोरपरेउ काहिधौं बकसिठाढ़ी कांपैकमलातही । नरलोक नागलोक नगलोक नाकलोक थोकथोक कांपैंहरि देखिमुसकातही । हालोपरेउहालन में लालो लोकपालनमें चालोपरेउ चक्रनिमें चिरवा चबातही १ रमा कर पकरेउहो याहीते सुदामाकहै कहां तुच्छतंदुल कहँ जगत गुसाईंहैं । यहून जानै दीनछीण तीनि पैसादैकै मुखतीनिलोक बिभव मिलि कि करिपाईहै । हरिसकुचाइकछुद्विजको मैंदियोनाहिंतातेयासोंकहैं मेरीबड़ी हीनताईहै । दीनोंहौं गुदानताकोबाम्हणी बिना न जानै आकिंचन यौवन पुलोमजा लजाईहै २ बिदाभये कबित्त ॥ बिदाकरिदीनो द्विजप्रकटनकीनोंकछु भेंटिभुज चल्यो मन में बिषाद भायोहै । याहीतेंउदास प्रभुपास न

रहनपायो याहीतेसुखीहौं मोहिंकछुनदिवायो है। एक दुखभारी मेरीब्राह्मणीहै खुटसारी ताहू कोतो उत्तरमें सरस बनायोहै। जैजुनिधिपाईही सोराहमेंछिनाई काहू मोबिनाहमारो सबकुटंबबुलायोहै ४ ॥

आयनिजग्रामवहै अतिअभिरामभयो नयोपुरद्वारका सोदेखिमतिगईहै। तियारंगभीनीसंगतरुन सहेलीलीनी कीनीमनहारियोंप्रतीतिउरभईहै। करैहरिध्यानरूप मा धुरीकोपानवहै राखेनिजप्राणजाकेप्रीतिनितनईहै। भो गकीनचाहऐसेतननिरबाहकरैढरैसोईचालसुखजाल र- समईहै ५३ ॥

मतिगईहै॥ कवित्त ॥ याहीतेजनमभरिगयोनहीं धाम जपै मेरोकह्यो बचन पँडाइनि नहिंमानै हो। जाऊजाऊ जै रहो न मानति अनाजखाइ ऐंड़ी मैंड़ी बातैं ऐंतो गो- विंद की जानैं हो। द्रौपदीको चीरदये गोपिन के छीनि लये ग्राहते बचायो गजरंगभूमि भानैहो। ब्राह्मणी समेति काहू खेततें उबारो घरयाते हूं बचायो वाको कह्यो मैंन मान्योहै १ चौतरा उजारि काहू चामीकर धामकोन्हों छानितो छवाय डारी छाई चित्तसारीजू। जोहूं होतो घरतोपै काहेको बननदेतो होनहार ऐसीखोटी दशाही हमारीजू। होतो होतो काहल हलाहल दिखाय करि जाहल उठाइ देतो देइ सुखगारीजू। लोभकी सवारी दुखभूखकी दलनहारी भैयाबनवारी काहू सोऊ मारि- डारीजू २ तियारंग भीनी ॥ आलिनके यूथ ज्यों ज्यों आ- दर सों बोलै आइ त्योंत्यों डरपाइ पग आगे कोनदेतहै। पंडित न ज्योतिषी न वैद्यवान कौतिकीहौं रानी जू बुला वति है कहो कौन हेतहै। द्वारका के राजाते मिलेते घर छीनों गयो रानी कहा छीनैंगी फल्यो न मेरो खेत है।

मोसों कहा नातोतुम जाइकहौ वातें मोहिं भूलि न सुहातो कोऊ ऐसे परलेतहै ३ नईहै॥दोहा॥ जे गरीब सों हितकरैं धनि रहीम वे लोग। कहासुदामा बापुरो कृष्णमिवतायोग४भोगकीनचाह॥गीतायां॥ युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्यकर्मसु॥ युक्तस्वप्नाववोधस्ययोगोभवतिदुःखहा ५

टीका चन्द्रहासकी ॥ हुतोनृपएकताकोसुत चन्द्रहास भयोपरीयोंबिपतिधाइलाईऔरपुरहै । राजाकोदिवान ताकेरहीघरआनिवाल आपनोसमानसंगखेलेरसटरहै । भयोब्रह्मभोजकोई ऐसोईसंयोगबन्यो आयेवैकुमारजहां बिप्रणिकोसुरहै । बोलिउठेसबैतेरीसुतकोजुपतिहैयहवो चाहैजानीसुनिगयोलाजघुरहै ५४ परयोशोचभारी कहा करोयोंविचारीअहोसुतजोहमारीताकोपतिऐसोचाहिये । डारोंयाहिमारियाकोयहैहैविचारतबबोलेनीचजन कहयो मारोहियेदाहिये। लैकैगयेदरिदेखिबालछबिपूरहमजौन परोधूरिदुखऐसोअवगाहिये । बोलेअकुलाइतोहिंमारेंगे सहाइकोनमांगोएकबातजबकहौंतबचाहिये ५५ ॥

कवित्त आदिपुराणे॥ यस्यतुष्टोह्यहंपार्थवित्तंतस्यहराम्यहं।करोमिबंधुविच्छेदंसर्वकष्टेनजीवितं १ तस्यापिसंतुष्टो येनददाम्यव्ययंपदं २ दोहा॥ तुलसीजा हो तव्यताप्रगटै तैसी तौन। करणायलके सींगको कहौअमैंठैकौन ३ वाहिपै आदिपुराणे॥ यदिवातादिदोषेन मद्भक्तोमांचविस्मरेत्॥तर्हिस्मराम्यहंभक्तंसयातिपरमांगतिं ४ गीतायां॥ ओमित्येकाक्षरंब्रह्मव्याहरन्मामनुस्मरन्॥ यःप्रयातित्यजंदेहंसयातिपरमांगतिम् ५ अंतकालेचमामेवस्मरन्मुक्त्वाकलेवरं॥ यःप्रयातिसमद्भावं यातिनास्त्यनसंशयः ६ यंयंचापि स्मरन्भावंत्यजत्यंतेकलेवरं॥ तंतमेवेतिकौंतेयसदातद्भावभा-

वित: ७सहाय ॥ जिन राखोऋषि यज्ञ जनकन्पकोपनरा-
खो। जिनराखो पितबोलकाक कपट जिनराखो। जिनरा
खेऋषिसकल विकल दंडकवनबासी। जिनराखो सुग्रीव
बसत गिरिचसतउदासी। अनुज बिभीषण पगपरत लंकद-
ईसनमानिकै॥सुप्रेमसखापतिराखिहैंदीनबंधुजनजानिकै॥

मानिलीन्होंबोलिसोकपोलमध्यगोलएकगंडकीकोसु
तकाटिसेवानीकीकीनीहै। भयोतदाकारयोनिहारिसुख
भारभरिनैननिकोकोरहीसों अज्ञाबधदीनीहै। गिरेमुर-
झाइदयाआइकछूभाइभरेढरेप्रभुओरमतिआनँदसों भीनी
है। हुतीछुठीआँगुरी सुकाटिलईदुखनहीं भूपणाहीभयो
जाइकहीसांचचीन्हीहै ५६ वहैदेशभूमिमेंरहतलघुभूप
औरऔरसुखसबैएकसुतचाहभारीहै।निकस्योविपिनआ-
निदेखिपाहिमोदमानिकीनीखगछांहघिरी मृगीपांतिसा-
रीहै। दौरिकैनिशंकलियोपाइनिधिरंकजियो कियोमन
भायोसोबधायोश्रीवारीहै। कोऊदिनबीतेभयेनृपचित
चीतेदियोराजकोतिलकभावभक्तिविस्तारीहै ५७ रहे
जाकेदेशसोनरेशकछुपावैनाहिंबांहबलजोरिदियो सचि
वपठाइकै॥ आयोघरजानिकियो अतिसनमानसोंपिछा
नि लियोवहेबालमार्योछलछाइकै। दईलिखिचिट्ठीजा
हुमेरेसुतहाथदीजै कीजैवहिबातजाकोआयोलैलिखाइकै।
गयेपुरपासबागसेवामतिपगकरीभरीदृगनींद नेकुसोयो
सुखपाइकै ५८॥

अज्ञाबध॥ दोहा॥ तुलसीतेरहसैबरष यद्यपिलगीस-
माधि॥ तदपिभांड़कीनागईदुष्टबासनाव्याधि१बाङ्कवल॥

नीते॥ उत्खातान्प्रतिरोपयन्कुशमितांश्चिन्वन्लघून्वर्द्धयन्।उत्तुङ्गान्नमयन्नतान्समुदयन्विश्लेषयन्संघतान्। चुद्रान्कंटकिनोबहिर्निरसयन्म्लानानान्समुत्सेचयन्मालाकारइवप्रयोगनिपुणाराजाचिरंनंदति२॥ कवित्त॥ छोटेछोटे गुलनिकोभूरनिकी वारिकरोपातरसे योधातिन्हैंपानी दैदैपालिबो। नीचेगिरिगये तिन्हैं दैदैटेक ऊचेकरो ऊंचे बढ़िजाइते जरूरकाटिडारिबो। फूलेफूलेफूलसबबीनिइक ठोरेकरो घनेघने रूखएकठौरते उखारिबो। राजनिको माळनीको नितप्रतिदेवीदास चारिबरीरातिरहैं इतनो बिचारिबो ३ तापैराजाको अरगाड़ेको दृष्टांत ४ माथो काटिबेते अंगुलीकटी ५॥चिट्ठी॥ श्लोक॥ विषमस्मैप्रदातव्यंत्वयामदनप्रचवे॥ कार्याकार्यंनकर्त्तव्यं कर्त्तव्यंकिलमेप्रियं १

खेलतिसहेलिनिमोंआइवाहीबागमांझ करिअनुराग भईन्यारीदेखिरीझिये। पागमतिपातीछविमातीझुकिखें- चलईबांचीखोलिलिख्यो विषदैनपिताखीझिये विषिया सुनामअभिरामदृगअंजनसो विषियाबनाइमनभाइरस भीजियेआइमिलीआलिनमें लालनकोध्यानहियेखियेमद मानोंगृहआइतबधीजिये ५६॥

नामअभिराम॥मैंजानों मेरो नाम सबते बुरोहै क्योंकि काहूकोकनकमंजरी काहू को रूपलतापरिसैं अबजाती विषियाहीअभिरामहैं याते यहबात बनी घरी एक॥ कुंडलिया॥हरिसन्मुखसुख पाइये विमुख भये दुख होय। विमुखभयेदुखहोइदेखिदशग्रीवबिभीषण। देखिसुरुचिसुनीतदेखिप्रह्लादपिता।तन देखिदचकोयज्ञ देखिप्रयुवेणुबिनीता।कंसजनकसुतअंधदेखिपांडवजगनीता। अगरमुकरप्रतिविम्बमेंअपनोआननजाइ हरिसन्मुख सुखपाइये १॥

श्लोक ॥ यस्यास्तिभक्तिर्भगवत्यकिंचनासर्वैर्गुणास्तत्रसमासतेसुरा:॥ हरावभक्तस्यकुतोमहद्गुणामनोरथेनासति धावतोबहि: २ताप्रैदृष्टांत इमसीकैंदरपमणको ३ ॥

उठ्योचंद्रहासजिहिपासलिख्योलायोजायो देखि मनभायोगाढ़ेगरेसोंलगायोहै । दईकरपातीबातलिखी मोंसुहातीबोलिविप्रघरी एकमांझ ब्याहउघरायो है ॥ करीऐसीरीतिड़ारेबड़ेनृपजीति श्रीदेतगईबीतिचावपार पैनपायोहै । आयोपितानीचसुनिघूमिआईमीचमानों बानोलपिदूलहकोशूलसरसायोहै ६० बैठ्योलैइकांतसुत करीकहाभ्रांतयहकरेउसोंनितांतकरपातीलैदिखाईहै ॥ बांचिआंचलागीमैंतोबड़ोईअभागीत्रैयेमारौमतिपागीबेटी रांड़हूसुहाईहै । बोलिनीचजातिबातकहीतुमजावोमठ आवैतहांकोऊमारिडारौमोहिंभाईहै ॥ चंद्रहासजूसोंभाष्योदेवीपूजिआवोआजु मेरीकुलपूजिसदारीतिचलिआई है ६१ चलेईकरनपूजादेशपतिराजाकहीमेरेसुतनाहिंराजवाहीकोलैदीजिये । सचिवसुवनसोंजुकह्योतुमलावोजा. वोपावोनहींफेरिसमयअबकामकीजिये ॥ दौरेउसुखपाइ चाइमगहीमेंलियोजाइदियोसोपठाइनृप रंगमाहिंभीजिये । देवीअपमानतेनडरोसनमानकरोजातमारिड़ारेउया सोंभाष्योभूपलीजिये ६२ ॥

शूलसरसायो ॥ कवित्त ॥ भावनि बनाये जे बधाये ते सुनाये सुनि अतिही रिसाये दुख सागर बुड़ायोहै। नगर नगारेनगह्नते गूजैं भारेसुनि याकेशिर मानो काहू आरासो फिरायो है॥ आंगनमें जातिहि सुअंगनि में आगि

लागी अंगना के करसों सुकंकना खुलायोहै । पाती लेत हाथही सुमारी शिर माथही सुबिबिया केवांचे बिषियाके लपटायो है १ ॥

काहूआनिकही सुतमारेउतेरो नीचनिनेसींचनशरीर जलद्गगझरीलागीहै । चल्योततकालदेखिगिर्योह्वैबिहालशीशपाथरसोंफोरिमर्योऐसोहीअभागीहै । सुनिचंद्रहासचलिबेगिमठपासआयो ध्यायेपगदेवताकेकाटेअंगरागीहै ॥ कह्योतेरोदोषीयाहिक्रोधकरिमारेउमैंहींउठैदोऊदीजैदानजियैबड़भागीहै ६३ कर्योऐसोराजसबदेशभक्तराजकरेउढिगकोसमाजताकीबातकहाभाषिये । हरिहरिनामअभिरामधामधामसुनै और कामनाहिं सेवाअतिअभिलाषिये ॥ कामक्रोधलोभमदआदिदैकैदुरिकरैजि यैनृपपाइऐसोनैननिमेंराखिये । कहीजितीबातआदिअंतलौंसुहातिहिये पढ़ैउठिप्रातफल जैमुनिसेंसाषिये ६४ टीकासमुदाइकी ॥ कौषारवनामसोबखानकियोनाभाजूनेमैत्रैअभिरामऋषिजानिलीजैबातमें । अज्ञाप्रभुदईजाहुबिदुरहैभक्तमेरोकरौउपदेशरूपगुणज्ञातगातमें ॥ चित्रकेतप्रेमकेतभागवतख्यातजाते पलट्योजनमप्रतिकूलफूलघातमें । अक्रूरआदिध्रुवभयेसबभक्तभूपउद्धवसेप्यारेनुकीख्यातपातपातमेंद ६५ ॥

बेटोरांड़ह्व सुहाइ॥दोहा॥ अगर दुष्टताजीवकी शिर तजिअपयशलेइ॥ सनतन खालकढ़ाइकै पर तन बंधन देइ २ ॥ बड़भागी है ॥ दोहा ॥ दुष्टन छांड़ैदुष्टता सज्जन तजै न हेत ॥ कज्जल तजैन श्यामता मोती तजैन श्वेत १ सज्जन ऐसो कीजिये जैसो ब्याको दूध ॥ औगुणऊपर गुण करै

तौजानै कुल शुद्ध २ ॥ भक्तराज॥राजनीते॥ अभ्वायांजायते वत्स: मिथ्यावदतिभूपति:॥वस्त्रंजलाग्निनादग्धंयथाराजा तथाप्रजा ३ पलथ्योजन्म ॥ दोहा ॥ जामरने सों जग डरै सोमेरे आनंद ॥ कब मरिहौं कब भेंटिहौं पूरणपरमानंद ४ वत्रासुरवधोकेतेयदि भागवत मिस्यति ५ ॥

कुन्तीकरतूतिऐसीकरैकौनभूतप्राणीमांगतबिपतिजासोंभाजैसबजनहैं।देख्योमुखचाहौंलालदेखेबिनहियेशालहूजियेकृपालनहींदीजैबासबनहैं। देखिबिकलाईप्रभुआंखिभरिआई फेरिघरहीकोल्याई कृष्णप्राणतनधनहैं। श्रवणबियोगसुनितनकनरह्योगयो भयोवपुन्यारोअहो यहीसांचोपनहैं ६६ ॥

मांगतबिपति॥भागवते॥ बिपद:शंतुन: सस्वत्ततत्रजगद्गुरो। भवतोदर्शनंयत्स्यादपुनर्भवदर्शनं १ जन्मैश्वर्यसुतश्रीभिरेधमानमद:पुमान् ॥ नैवार्हत्यभिधातुंवैत्वा मकिंचनगोचरं २ दोहा ॥ प्रीतमनहींबजारमें सोइयजाररुजार ॥ प्रीतम मिलैउजारिमें सोईउजारिबजार ३ कहाकरौंवैकुंठलै कल्पवृक्षकीछांह ॥ अहमदढाकसुहावने जाप्रीतमगलबांह ४ ॥ घरहीकोलाइये ॥ गमनसमयअंचलगह्यो छांड़नकह्योसुजान ॥ प्राणपियारेप्रथमहीं अंचलतजौंकिप्रान५ वपुन्यारा॥ जासोंमिलिसुखभिलिरहे दीनोंदुखबिसराइ फिरिजोताकेबिछुरतै क्योंनछरकहिहाइ६ मनचढ़कतन जामगी हियरंजकजियसाज ॥ प्रेमपलीतादगिगई निकसीआहिअवाज ७ ॥

द्रौपदीसतीकीबातकहैऐसोकौनपटुखैंचतहीपटपटकोटिगुनेभयेहैं। द्वारकाकेनाथजबबोलीतबसाथहुतेद्वारकासोंफेरिआयेभक्तबाणीनयेहैं।गयेदुर्बाशाऋषिबनमें पठा

येनीचधर्मपुत्रबोलेबिनयआवैपनलयेहैं । भोजननिवारि त्रियाआइकहीशोचपर्योचाहैंतनत्याग्योकह्योकृष्णकहूं गयेहैं ६७ सुन्योभागवतीकोबचनभक्तिभावभर्योकर्यो मनआयेश्यामपूजेहियेकामहैं । आवतहीकहीमोहिंभूख लागीदेवोकछूमहासकुचायेमांगैंप्यारोनहींधामहैं । विश्व केभरणहारधरेहैंअहारअजूहमसोंदुरावो कहीबाणीअभि रामहैं लग्योसाकपत्रपत्र जलसंगपाइगयेपूरणत्रिलोकी बिप्रगनैकौननामहैं ६८ ॥

पटकोटिगुनैं॥ बसंतऋतुयाचककभईरीभिदियेद्रुमपात॥ यातेनवपल्लवभयेदियोदूरिनहिंजात ८॥ कवित्त ॥ दुश्शा सनदुमनदुकूलगह्योदीनबधुदीन ह्वैकै द्रुपददुलारीयोंपु- कारीहैं। छांड़ैंपुरुषारथकोठाढ़ेपियपारथसेभीसमहाभी समग्रीवानीचेकानिहारीहै। अंबरजोअम्बरअमरकियेबंशी धरभीषमकरणद्रोणशोभायोंनिहारीहै। सारीमध्यनारी हैकिनारीमध्यसारीहै किसारीहै किनारीहै किसारिही कीनारीहै९ नयेहैं ॥ भारतेयदिगोविंदेतिचुक्रोशकृष्णामां दूरिबासनं ॥ ऋणमेतत्प्रवृद्धंमे हृदयान्नापसर्पति: १ आयेश्याम ॥ पद ॥ तौहूंपावनबिरदलजाऊं॥ जोजनकेसंक टमेराजा सुमिरणसमयनआऊं। सुनौअजातशत्रुकरुणामय करुणासिंधुकहाऊं।अनघअनाथनिदीनजानिकैगरुड़ासन बिसराऊं। शीघ्रसुकाजभक्तअपनेके जहांतहांउठिधाऊं। लघुभगवानप्रतिज्ञामेरे यशत्रैलोकबढ़ाऊं १ कौननामहै॥ षष्टे॥ यथाहिस्कंधशाखानां तरोर्मूलनिसेचनं ॥ एवमा राधनंबिष्णो सर्वेषामात्मनश्चहि ३ यथातरोर्मूलनि षेचनेनतृप्यंतितत् कन्धभुजोपशाखा:॥प्राणोपहाराच्चयथें- द्रियाणांतथैव सर्वार्हणमच्युतेज्या ४ कोऊअगस्तकोसंचउ चारै। कोउचूरणकोहाथपसारै॥ कोऊअमलवेतकोयांचौ

कोऊपेटपीटिकैनांचै ५ एकभगवतनाम औषधिबिनारोग नहींकटै कोटियतन करौ ६

मूल॥पदपंकजबंदौं सदाजिनकेहरिनितउरबसैं। योगेश्वरश्रुतिदेवअंगमुचकंदप्रियव्रतजेता। पृथुपरीक्षितशेषसूत सौनकपरचेता। सतरूपात्रयसुतासुनीतसतीसबहीमंदालस। यज्ञपत्नीब्रजनारिकियेकेशवअपनेबश। ऐसेनर नारीजितेतिनहींकेगाऊंयसैं। पादपंकजबदौंसदाजिनके हरिनित उरबसैं ११॥ टीकासमुदायकी। जिनहींके हरि उरनितबसैं। जिनहींकेपदरेणुबैनदैनआभरणकीजिये। योगेश्वरआदिरसस्वादमेंप्रवीणमहावीणाश्रुतिदेव ताकी बातकहिदीजिये। आयेहरिघरदेखिगयोप्रेमभरिहियो ऊंचोकरकरिपटफेरिमतभीजिये जितेसाधुसंगतिन्हेंबिन यनप्रसंगकियो कियोउपदेशमोसोंबाढ़िपांबलीजिये॥ ७० मूल॥ अंघ्रीअंबुजपांशुकौजनमजनमहौंयाचिहौं। प्राचीनवर्हिसत्यव्रतरघुगणसगरभागीरथ। बालमीकिमिथलेशगयेजेजेगोबिंदपथ। रुकमांगदहरिश्चंदभरतदधीच उदारा। सुरथसुधन्वाशिवरसुमतिअतिबलकीदारा। नीलमोरध्वजताम्रध्वजअलरककीरतिराचिहौं। अंघ्रीअंबुज पांशुकौजन्मजन्महौंयांचिहौं १२॥

प्रेमभरि दशमे॥ धन्योहं कृतकृत्योहं पुण्योहं पुरुषोत्तम॥ अद्यमेसफलं जन्म: जीवितं सफलंचमे १ कोपि संगकटषी श्लोक॥ दारापुत्रोन्नरणांस्वजन परिकरो बंधुवर्ग: प्रियोवा। माताभ्राता पिता वा श्वशुरसुधजनोज्योतिरैश्वर्यवित्तं। विद्यानीतिविपुलसुहृदोयौवनंमानगर्वं। मिथ्या

भूतंमरणं समये धर्ममेकः सहायः १ कुंडलिया॥ कोऊकाहू को नहीं देखो ठोंकि बजाइ॥ देख्यो ठोंकि बजाइ नारि पट भूषण चाहै। सुतसोषै नित प्राण सुता प्रत्यक्ष अवगाहै॥ तात मातकरै घैरु वधूनितचित्तबिगारी। स्वारथता के सजनदास दासी हैगारी॥ अगरकामहरिनामसों संकट होतसहाइ। कोऊ काहूको नहीं देखोठोंकि बजाइ २॥

टीका उभयबालमीकि की ॥ जनमपनिजनमको न मेरेकछुशोचअहोसंतपदकंजरेणुशीशपरधारिये। प्राचीन वहैआदिकथाप्रसिद्धिजगउभैबालमीकऋषिबात जियतैं नटारिये। भयेभील संगभीलऋषिसंगऋषिभयेभयेराम-दरशनलीलाबिस्तारिये। जिन्हैंजगगाईकहूंसकैनअघाइ चाइभाइभरिहियोभरिनैनभरिढारिये ७१ ॥ टीकासुपच बालमीकिकी ॥ हुतोबालमीकएकसुपच सुनामताकोश्या मलैप्रगटकियोभारतमेंगाइये। पांडवनिमध्यमुख्यधर्मपुत्र राजाआपकीनोयज्ञभारीऋषिआयेभूमिछाइये। ताकोअनु भावशुभशंखसोप्रभावकहैजोपैनहींबाजैतौ अपूरणताआ इये। सोईबातभईबहुबाज्योनाहिंशोचपर्यो पूछेंप्रभुपा सन्नाकीन्यूनता बताइये ७२ ॥

तिन्हैंजगगाइ ॥ छप्पै॥ सुक्तिसुवनिताअवणआभरण अयइकहि॥ सुनिसनपच्छीपच्छिदासव्है रामतासगहि। जगतसमुद्र अपारतीरभुवनैन वेहभल। कलिपातक तमप्रबल हरणको रवि शशि मंडल। विपरीति नाम उच्चार किय बालमीक ऋषि भयेतदा। जिहितिहि प्रकार सब काम तजि रामनाम सुमिरौं सदा १ रामायण॥चरितं रघुनाथ स्यसत कोटिप्रविस्तरं। एकैकमक्षरं पुंसांमहापातकनाश नं २ बालमीक बुधवंत सदा सीता पतिगावैं। रामायणमत

कोटि रामराघव मन भावैं। तेंतीसकोटितेंतीसजापतेंतीसहजारा। तोनसत बङ्करि औरश्लोक तेंतीस बिचारा दश दश अक्षर और भक्ति भजिबेको कीना॥ रामनाम दोउ अंक मांगि शंकर तब लीना। ततबेता तिहुं लोकमें रामचरित बिस्तरि रह्यो। एकनाम सुमिरतसदा महा पाप परलै गयो ३ दोहा तुलसी रघुबरनामको रीझि भजोकैषीझि। उलटो सुलटाजामिहै परखेतमेंबीज॥

बोलेकृष्णदेवयाको सुनौसबभेवऐपैनीकेमानिलेबो बातदुरीसमझाइये। भागवतसंतरसवंतकोऊजैयौनाहिं ऋषिन समूहभूमिचहूंदिशिछाइये। जौपैकहौंभक्तिनाहीं नाहींकैसेकहौं गहौंगासएकऔरकुलजातिसोबहाइये। दासनिकोदासअभिमानकीनबासकहूं पूरणकीआसतौपै ऐसोलैजिमाइयै ७३ ऐसोहरिदासपुरआसपासदीखे नाहिंबासबिनकोऊलोकलोकनिमेंपाइये। तेरेईनगर मांझनिशिदिनभोरसांझआवैजाइ ऐपैकाहूबातनलखाइये॥ सुनिसबशोचपरेभावअचरजभरेहरमननैनअजू बेगिहीजताइये। कहानामकहांठामजहांहमजाइदेखैं लखैंकरिभागधाइपाइलपटाइये ७४ जितमेरेसाधुकभू घहैंनप्रकाशभयोकरौंजोप्रकाशमानैमहादुखदाइये। मोकोपर्योशोचयज्ञपूरणकीलोचहिये लियेवाकोनामजिनि गामतजिजाइये॥ ऐसेतुमकहौजामेंरहौन्यारेप्यारेसदा हमहांलिवाइलावैंनीकेकैजिमाइये। जावोबालमीकिघरबड़ोअबलीकसाधुकियोअपराधहमदियोजोबताइये ७५॥

बासबिन॥ सवैया॥ नखबिन कटा देखे योगी कनफटा देखे शीशभारी जटा देखे छारलायेतनमें। मौनीअनबोल देखे जैनी शिरछोल देखे करत कलोलदेखेबन खंडीबनमें।

गुणी अरु क्रूर देखे कायर औ शूर देखे मायाके अपूर देखे परि रहे धन में। आदि अंत देखे सुखी जनमके दुखी देखे ऐसे नहीं देखे जिन्है लोभ नाहिं मनमें १ नावोबालमी-किघर ॥भागवते॥ नमेप्रियश्चतुर्वेदीमद्भक्तःश्वपचप्रियः तस्मै देयंततोग्राह्यंसचपूज्योयथाह्यहं २ अवलोक॥ दोहा ॥ पेट कपट जिह्वा कपट नैना कपट लिलाट। तुलसी हरि कैसे मिलैं घटमैं औघट घाट ४ अहमद या मन सदनमें हरि आवैं किहि बाट। बिकट जुरैं जौलौं निपट खुटै न कपट कपाट ५ भक्ताहमेकयाग्राह्यश्श्रद्धयात्माप्रियःसतां। भक्तिःपुनातिमन्निष्टाश्वपाकानपिसंभवात् ६ ॥

अर्जुनऔभीमसेनचलेईनिमंत्रणको अंतरउघारिकही भक्तिभावदूरिहै। पहुंचेभवनजाइचहुंदिशिफिरिआइपरे भूमिझूमिघरदेख्योछविपूरहै ॥ आयेनृपराजनिकोदेखि तजेकाजनिकोलाजनिसोंकांपिकांपिभयोमनचूरहै। पावनकोधारियैजूजूंठनिकोडारियै जूपापग्रहटारियेजूकीजै भागभूरिहै ७६ जूंठनिलैडारोंसदाद्वारकोबुहारोंनहींऔर कोनिहारोंअजूयहांसांचोपनहै। कहौकहाजैवोकछूपाकै लैजिमाओहमजानिगयेरीतिभक्तिभावतुमतनहैं ॥ तबतौ लजानोंहिय कृष्णपैरिसानोनृपचाहौसोईठानौमेरेसंगको ऊजनहै। भोरहीपधारौअबयहीउरधारौऔरभूलिनबिचा रौकहीभलोजोपैमनहै ७७ कहीसबरीतिसुनिधर्मपुत्रप्री तिभईकरीलैरसोईकृष्णाद्रौपदीसिखाईहै। जेतिकप्रकार सबव्यंजनसुधारिकरोआजुतरेहाथनिकी होतिसफलाई है ॥ लायेजालिवाइकहैबाहिरजिमाइदेवोकहीप्रभूआप लावोअंकभरिभाईहै। आनिकेबैठायोपाकशालामेंरशाल ग्रासलेतबाज्योशंखहरिदंडकीलगाइहै ७८ ॥

पापग्रहटारिये ॥ प्रथमे ॥ येषांसंस्मरणात्पुंसांसद्यःशुद्ध्यंतिवैगृहाः। किंपुनर्दर्शनस्पर्शपादशौचासनादिभिः १ साधुजगमें तीरथहैं जा घरलैंग्रावैं सब तीर्थलीग्रावैं २ सफला हूजै॥एकादशीभङ्गक्तपूज्यम्यदिका ३ कृष्णद्रौपदीसिखाई॥ नैवेद्यंपुरतोन्यस्तंचक्षुषागृह्यतेमया रसंचदासजिह्वायामश्नामिकमलोद्भव ४ नष्टप्रायेसुभद्रेषुनित्यंभगवतसेवया भगवत्युत्तमश्लोकेभक्तिर्भवतिनैष्टिकी ५ अंकभरिभक्तिको नातो दुनियाको मिलाप छोटो तुच्छजानिये व्याधि उत्पत्ति करै याते परिहरिये ६ ॥

सीतसीतप्रतिकयोंनबाज्योकछुलाज्योकहाभक्तिकोप्रभावनहिंजानतयोंजानिये। बोल्योअकुलाइजाइपूंछोअजूद्रौपदीको मेरोदोषनाहींयहआपमनआनिये । मानिसांचिबातजातिबुद्धिआईदेखियाहिसबहीमिलाइमेरीचातुरीबिहानिये । पूंछेतेकहीहैबालमीकमेंमिलायोयातेआदिप्रभुपायोपाऊंस्वादउनमानिये ७६ ॥

सीतसीतप्रति ॥ श्लोक ॥ प्रासेग्रासे कृतेनादे कृष्णाताड़तिप्रष्टके। लोपितोभक्तिः प्रतापसिकथे सिकथेन नादितः १ जातिबुद्धि आई॥पाद्मे॥ अर्चावतारोपादानंवैष्णवोत्पत्त्यचिंतनः॥ मातृयोनिपरीक्षायां तुल्यमाहुर्मनीषिणः ॥ २ ॥ उनमानिये॥ ऊंचनीचमानेनहिंकोइ। हरिकोभजैसोहरिकोहोइ ॥ ३ ॥ याधंकाहूकछुपजीमनमें। अर्जुनकहेउकृष्णसों छनमें। कोटिनयज्ञ ब्राह्मणजैये। पूरेउनहींसुकौनेहेत ४ ॥ कहेंयोकृष्ण सुनौहोपाण्डव कोउन संतआयो तिहारेवार ता।जैयेजग पूरोहोतो बाजैदेवद्वार प्रभुहम ऊंच ऊंचकुलपूजे हमजान्यो यह निर्मलभाइ इनह्वैसों कोऊ निर्मलह्वैहै ताहमभूले देऊबताइ। बालमीकिहै जातिसरगरो जाकेराजा आयेधाइ। वाजैयेजग पूरोह्वैहैमनसापूरण

कार्यसँवारि। अर्जुनभीमनकुलसहदेवाराजासहितसुपङ्क्तिचे जाइ। करिदंडवतचरणगहि लीन्हेवालमीकिको लागेपाइ। तुमतोऊंचकुल जनमे हमतो नीचमहाकुलमाहिं। ऊंचनीच की शंकाआवै तातेतिहरे आवैनाहिं ॥ ७ ॥ तुमतो याजग सकलशिरोमणि तुम समतूल और नहिंकोइ ॥ कृपाकरौ अरु भवन पधारौ तुम्हैं चले यज्ञ पूरण होइ ॥ ८ ॥ जब बालमीकि राजा के आयो प्रेमप्रीति सों लियो अहार जितनेग्रास जेंवतलीने शंखजुबाज्यो तितनीबार ॥ ९ ॥ भूदरकहैं हाथसोंभाजों खंडखंड करिहौं चकचूर। हमरो साधु जेंवतग्रासजुकणिकणिकाहेनबाजाज्योपूर ॥ १० ॥ देवदेव मोहिं दोष न दीजै दोषजुकोई द्रौपदी मोहिं ऊंचनीचकी शंकाआई यातेकणिकणि बाज्योनाहिं ११॥ परख्योसाधु पारखाआई जगमें ज्योतिजिमायोसोइ। जानेयें जगपूरण हुवो नामदेवकहैं शिरोमणि सोइ॥ १२ ॥

टीकारुक्मांगदराजाकी॥ रुक्मांगदबागशुभगंधफूलपागिरहयोकरिअनुरागदेवबधूलेनआवहीं। रहिगईएक कांटाचुभ्योपगबैंगनको सुनिनृपमालीपासआयोसुखपावहीं। कहोकोउपाइस्वर्गलोककोपठाइबीजैकरैएकादशी जलधारैकरजावही। व्रतकोतौनामयहग्रामकोऊजानै नाहिंकीनोहींअजानकालिहलावोगुनगावही ८० फेरीनृप डौंड़ीसुनिवनिककीलौंड़ी भूखीरहीहीकनौड़ीनिशिजागी उनमारिये। राजाढिगआइकरिदियोव्रतदानभइतियायों उड़ानिनिजलोककोपधारिये। महिमाअपारदेखिभूपनै विचारियाको कोऊअन्नखाइताकोबांधिमारिडारिये। याहीकेप्रभावभावभक्तिविस्तारभयोनयोचोजा सुनौसबपुरी लैउधारिये ८१ एकादशीव्रतकीसचाईलैदिखाई राजा

सुतकीनिकाईसुनौंनीकेचितलाइकै । पिताघरआयोपति भूषनैंसनायोअतिमांगे तियापासनहींदियोयहभाइकै ॥ आजुहरिवासरसोतासरखापूजै कोऊडरकहांमीचकोयोंमानीसुखपाइकै । तजेउनप्राणपायेवेगिभगवानवधूहियेसरसानभईकह्योपनगाइकै ८२ ॥

याहीकेप्रभाव। ब्रह्मवैवर्त्तै॥ सर्वपाप प्रशमनंपुण्यंमात्यंतिकं यथा। गोविंदस्मरणं नृणांयदेकादश्य पारणं॥ १ ॥सबहीको कर्तव्यहै ॥नीति॥कष्टाधिकष्टं सततं प्रवासीततोधि कष्टं पर ग्रेहवासी॥ततोधिकष्टं कृपणस्यसेवाततोधिकष्टंधनहीनसेवा २॥ अपनको सेवाते भूखीरही एकादशीके महात्ममें इतिहासकी कथाहै एकराजाकीस्त्री देखिकै मगनभये पूछी महाराज आपकैसे मगनभये तबकही एकादशीके प्रताप सों राज्यपायो याते मगनभये ॥२ ॥ नृगराजा शिकारको गये देखलऋषि सों पूछीभद्रश्यखंड अगस्त्यजीगयेहैं ३ ॥

टीका समुदायको ॥सुनौहरिचंदकथा व्यथाबिनद्रव्य दियो तथानहींराखी बेंचिसुततियातनहै । सुरथसुधन्वा जूसों दोषकेकरतमरे शंखऔलिखतबिप्रभयोमैलोमनहै॥ इंद्रऔअगिनिगये शिवीपैपरिक्षालेन काटिदियोमांसरीझिसांचोजान्योपनहै । भरतदधीचआदिभागवतबीचगायेसबनिसुहाये जिनदियोतनधनहै ८३ टीका विंध्यावलीको॥ बिंध्यावलीतियासीन देखीकहूंतियानैन बांध्यो प्रभुपियादेखिकियोमनचौगुनो । करिअभिमानदान दैन बैठ्योतुमहींको कियोअपमान मैंतोमान्योसुखसौगुनो । त्रिभुवनछीनिलिये दियेवैरीदेवतानि प्राणमात्ररहेहरि अन्यानहिंऔगुनो । ऐसीभक्तिहोइजापै जागोरहौसोइ

अहोरहेभवमांझ ऐपैलागेनहींभौगुनो८४टीकामोरध्वज राजाजूकी॥ अर्जुनकेगर्बभयो कृष्णप्रभुजानिलयो दियो रसभारीयाहिरोगयोंमिटाइये। मेरोएकभक्तआइ तोकोलै दिखाऊंताहि भयेबिप्रवृद्धसंगबालचलिजाइये। पहुंचत भाष्योजाइ मोरध्वजराजाकहां बेगिसुधिदेवो काहूबात योंजनाइये। सेवाप्रभुकरौ नेकरहौपावधरौंजाइ कहौतु-मबैठौकहीआगिसीलगाइये ८५॥

दियोतनधन है॥ भागवते॥ नहोयुवेवमलवदुत्तमश्लोक लालसः १ करि अभिमान॥ दोहा॥ नारी काहू रंक की अपनी कहै न कोइ॥ हरिनारी अपनी कहै क्यौंन कजी हत होइ २॥ नहींभौगुनो॥ साधूजन जग में रहैं ज्यों क-मला जलमाहिं। सदा सर्बदा सँगरहै जलको परसत ना-हिं॥ गर्वभयो॥भागवते॥ तपोविद्याचविप्राणां निश्श्रेयोरा करेउभे। तेएवदुर्बिनीतस्यकल्पतेकर्त्तुमन्यथा ४ सैनयोरु भयोर्मध्येरथस्थापयमेच्युत ५ ॥ दोहा॥ तिमिर गयोरवि देखिकै कुमति गई गुरुज्ञान॥ सुमति गई पर लोभ ते भक्तिगई अभिमान ६॥

चलेअनखाइपाइँगहिअटकाइजाइ नृपकोसुनाईततकालबौरेआयेहैं। बड़ीकृपाकरीआजुफरीबेलिचाहमेरीनिपटनवेलिफलपायोयातेपायेहैं। दीजेअज्ञामोहिंसोइकीजेसुखलीजैवही पीजेबानीरस मेरेनैनलैसिरायेहैं। सुनिक्रोधगयोमोदभयो सोपरिक्षाहिये लियेचितचाव ऐसेबचन सुनायेहैं ८६ देवकीप्रतिज्ञाकरोंकरीजूप्रतिज्ञाहम जाही भांतिसुखतुम्हैं सोईमोकोभाईहै। मिल्योमगसिंहयह बालककोखायेजात कहीखावोमोहिं महींयहीसुखदाईहै।

काहूभांतिछांड़ौनृप आयोजोशरीरआवै तौहीयाहितजो कहिबातमोजनाईहै। बोलीउठितिया अरधंगीमोहिं जाय देवो पुत्रकहैमोकोलेवो और सुधिआईहै ८७ सुनो एक बातसुततियालैकरौतगातचीरैधीरैंभीरैनाहिं पीछउनभाषिये। कीनींवाहीभांति अहोनासालगिआयोजबढरेउ दृगनीरक्षीरवाकरनचाषिये। चलेअनपाइगहिपाइँसोसुनायेबैन नैनजलवायोअंग कामकिहिनाखिये। सुनि भरिआयोहियो निजतनश्यामकियो दियोसुखरूपठ्यथा गईअभिलाषिये ८८॥

कीन्हों वाही भांति॥ दोहा॥ कांचकथीर अधीरनरकसेन उपजै प्रेम॥ परखा कसनी साधुसहैंकैहीराकैहेम १॥ कवित्त॥ अगिनि कनक जारै चंदनखंडित आरैंघिसा घसेशीतलता बासना घटातिहै। चीरमथे माखन वटुरिआवै येदिलह्वै सुकर मलिन माजैं सरति दिखातहै॥ तोरेहूं सरस अरु मोरेहू सरस रस छोलैं छाटैं काटैंओटै अधिक मिठाति है। रचिबेकी कहा कहौ बिरचैं सहस गुनो सज्जन सनेह काहू बातनि सिठातु है १ सुनायेबैन॥ नाटके॥ अहणाल्लेषरिया भिरंप्रतिपदंग्रहणाल्यसौवाजिनं। नीत्वाचर्मधनुश्चयातिपुरतःसंग्रामभूमावपि। द्यूतंचौर्य्यपरिच्छियच्चशपथंजानातिनायंकरो। दानानुद्यमतांनिरीक्ष्यविधिनाशौचाधिकारीकृतः १॥

मोपैतौनदियोजाइनिपटरिझाइलियो तऊरीझिदिये बिना मेरेहियेशालहै। मांगौवरकोटिचोट बदलोनहूकत है सूकतहैमुख सुधिआयेबहांहालहै। बोल्योभक्तराजतुम बड़ेमहाराजकोऊथोरोईकरतकाजमानोंकृतजालहै। एक

मोकोदीजैदाव दीयोजूबखानोवेगिसाधुपैपरिक्षानिनिक रोकलिकालहै ६० ॥

कलिकालहै॥ दोहा॥ चारिसवैरी चारिअवैरी द्वतनी देगोपाला। द्वतनीमेंतिएकघटै तौयहलेअपनीमाला २अब अर्जुनकोगर्भगयोतबबोले॥ पद॥ कहौकहांलौंकृपातिहारी। कुलकलंकसबमेटिहमारे कियेजगतयशपावनकारी। द्विजकानीनहमारोआजा गोलकपिताबंशकोगारो। हम तौकुंडसबैजगजानैं ताहूमेंऔरैगतिन्यारी। महाकष्टकरि ब्याहजुकीनों ह्वैगईतियापंचभतारी॥ बड़ेव्यसनदूषणयुत रानाहमतेअधिकजुअग्रजुवारी। याकुकर्मकीअवधिकहा लौंजोतियराजसभामेंहारी। हतेपितामहबंधुबिप्रगुरलो भीनीचहारचीभारी। सबक्षतनहींकौनबिधिरीझेहमतौ ऐसेअधमबिकारी। अतिआतुरह्वैरचाकीनी असनवसन कीसबैसँभारी। यहतौसाधनकोफलनाहीं बारबारहम यहैबिचारी। बीरभद्रकेबलकृपातेसुबिगरतिगईसोसबै सुधारी३॥

टीका अलरककी॥ अलरककीकीरतिमें राच्यो नितसांचोहिये कियेउपदेशहून छूटैविषयवासना। माता मंदालसाकीबड़ीये प्रतिज्ञासुनो आवैजोउदरमांझ फेरि गर्भआसना। पतिकोनिहारोताते रह्योछोटैकोरोताकोलै गयेनिकासिमिलि काशीनृपशासना। मुद्रकाउघारिऔ- निहारिदत्तात्रेयजूको भयेभवभार करिप्रभुकीउपासना ६१ मूल॥ तिनचरणधूरिमोभूरि शिरजेजेहरिमायातरे॥ रिभुइक्ष्वाकुअरुऐलगाधि रघुरैगैशुचिसतधन्वा। अमू- रतिअरुरंतदेवउतंग भूरिदेवलवैवस्वतमन्वा। नहुषयया तिदिलीपपूरियदुगुहमानधाता। पिप्पलनिमिभरद्वाज

दक्षसभीगवैसंघाता ॥ संजयसमीकउत्तानपात याज्ञवल्क्ययशजगभरे।तिनचरणधूरिमोभूरिशिरजेजेहरिमायातरे १२ टीकारंतिदेवकी ॥ अहोरंतदेवनृपसंतदुसकंतवंशअतिहीप्रशंस सोअकाशवृत्तलईहै। भूखेकोनदेखिसकैआमैसोउठाइदेत नेतनहींकरैभूखेदेहक्षीणभईहै। चालीसऔआठदिनपाछेंजलअन्नआयो दियोबिप्रशूद्रनीचश्वानयहनईहै।हरिहीनिहारे उनमांझतबआयेप्रभुभायेजगदुखजितेमोगौंभक्तिछईहै ६२ ॥

शुद्धकानि ॥ मंदालसावाक्यं ॥ संगःसर्वात्मनात्याज्यःयदित्यक्तुंनशक्यते सद्भिरेवप्रकर्त्तव्यंसत्संगोभवभेजनं १ हरिहीनिहारे॥गीतायां ॥ विद्याविनयसंपन्ने ब्राह्मणेगविहस्तिनि। शुनिचैवश्वपाकेच पंडिताःसमदर्शिनः ॥ सवैया ॥ अहौसौरहजारमें लाखकरोरमैं एकघटेटिकैनौहीसही॥ इहांधैसहीहरुयप्रपंचकोमाहिंगहैअविवेकरहैसुवही। पुनि लोनमें एकमिलाइ लिखैहोइ औरकीऔर सुभाइचही। यहीब्रह्म सबैसुअबोधहिपाइ भयोभवसोधकबोधयही ३ दुर्लभावैष्णवोनारी दुर्लभोविप्रवैष्णवा ॥ दुर्लभोवैष्णवोराजा अतिदुर्लभदुर्लभः ४ ॥

राजागुहकीटीका ॥ भिलनिकोराजा गुहराम अभिरामप्रीति भयोबनवासमिल्योमारगमेंआइकै। करौयहराजजूबिराजिसुखदीजैमोको बोलेचैनसाजि तज्योआज्ञापितुपाइकै। दारुणबियोगअकुलाइदृगअश्रुपात पाछेंलोहूजाततबसकैकौनगाइकै। रहेनैनमूंदि रघुनाथबिनदेखैकहा अहाप्रेमरीतिमेरेहियेरहीछाइकै ६३ ॥

भयो बनबास॥ रामचन्द्रका ॥पढ़ैनिरंचित्रदसौन जीव

सोंन छंडिरे। कुबेर वेरकैकही न यच्चधीर मंडिरे। दिनेश दूरिजादूबेठिनारदादि संगही। न बोलबंदनंदबुद्धिइंद्रकी सभानहीं१ ॥ सवैया॥ नामसंथरामंदमतिचेरिकैकयीकेरि। अयशपिटारी ताहिकरि गईगिरा मतिफेरि ॥ २ ॥ इन्द्र कैयुद्धकेईवर ॥ कुंडलिया ॥ पुत्रप्राणसवतेबड़े चारोंयुगपरमान। तेराजा दोजतजे वचन न दीनेजान। वचन न दीने जान बड़ेकी यहैबड़ाई। वचनरहैसो कार्य औरसर्वसजिन जाई। कहिगिरिधरकविरायभयेदशरथन्पऐसे। प्राणपुत्र परिहरे वचन परिहरे न तैसे॥ ३ ॥ रही न रानीकैकयी अमरभईयहबात। काहूपूरव योगतेवनपठये जगतात। वन पठये जगतात पिता परलोक सिधारे । जिहिहितसुतके कार्यकेरिनहिंवदननिहारे। कहिगिरिधरकविराइलोक मेंचलीकहानी। अपकीरति रहिगई कैकयीरही न रानी ३ ॥ सवैया॥ अहोपूतकहांचलिहौअबहीं तुमसांचीकहौ किनमोसोलला। सुनिनयननये जलसोंभरिकै जैसेबोभ्रूपरे नइजातपला ॥ छियकेमुखकीछबि योंनघटै मनोहै नसोंलै द्विजराजकला। सुधिराखनहेत सियाबरकी पलव्योंकनकी अँगुरीको छला ॥ ४ ॥ जानकीतिहारेसंग जानत न एकौ दुखयाके लाइडेबेटा तुमवनह्वसे सहियो। पायँनकोचलिबोहै भौलौंपांयचलोजाइ आगेजनिचलौ याहिसंगले निबहियो॥ लछमणको मनरूखो भूखोजनिदेखिसकौआवै कोऊ उतते संदेशोताहि कहियो। उतरतनाऊ काहूग्रामनके बीचपूतमेरेवनवासीमेरीसुधिलेत रहियो॥५॥हनूमान नाटके ॥सद्यःपुरःपरिसरेपि शिरीसमृद्वी सीताजवाच्चिचतुराणिपदानिगत्वा । गंतव्य मस्तिकियदि त्यसकृद्ब्रुवाणा रामाश्रुणः कृतवती प्रथमावतारं ॥ १ ॥ सवैया ॥ पुरते निकसी रघुबीरबधू करिसाहसधीर दईडगद्वै । भरिभाल कनी निकसीश्रमकी पटसूखिगये अधरामतद्वै ।पुनिपूछत योंचलनोंबकितौ कहँपर्णकुटी करिहौ कितवै। तुलसी सियकीलखि आतुरता पियके युगनयन चलेजलचवै॥ २ ॥

भोरहीके सूखेह्वैहैं प्यासमुख सूखेह्वैहैं चलैंपग दुखह्वैहैं
फिरैंमग रातको । रविकी किरनिलागे लालकुम्हिलाने
ह्वैहैंबारलपटाने भाँगा फाटेह्वैहैं गातके ।अबतौ भईहैसांझ
ह्वैहैं बनमांझ हमरही क्यों न बांझ हियेफटे क्योंनमातके ।
सेरी देखौना गयेतजिकै घरौना होंगेसदके तरौना सो
बिछौना कियेपातके ॥ ३ ॥ मगमेंपरतपग सुंदरभरतडग
कोमल बिमलभूमि छोड़तहैंमनको ।जिन्हिठौर कांटेकाठ
कांकर परतआइ तिन्हिठौर धरतहैं आपने चरन को ।
जितछांह सीरी तितै कीजत हैं प्यारी नीरो जितैघाम
तितै कीजैनीरदसे तनको । गहेरघुनाथ निजहाथनसों
हाथऐसेजानकी को लियेसाथ चलेजात बनको ॥ ४ ॥
मुख सूखिगये रसनाधर मंजुल कंजसे लोचन चारुचितै ।
करुणानिधि कंततुरंत कहेउ कि दुरंतमहाबन भूरिअवै ।
सरसीरुह लोचननीरचितै रघुनायकही सियसोंजुतवै ॥
अबहीं बनभामिनि पूछतिहौ तजि कौशलराज पुरी
दिनद्वै ॥ ५ ॥ जासुकेनाम अजामिलसेखल कोटिनदीभव
बूड़तकाढ़े । जोसुमिरे गिरिमेरु शिलाकनहोत अजाखुर
वारिध बाढ़े । तुलसी जिन्हिके पद पंकजसों प्रगटी तटनी
जुहरैअघगाढ़े । तेप्रभुहैंसरिता तरिबेकहँ मांगतनावक-
रारिपैठाढ़े २ इहिघाटते थोरिकदूरि अहो कटिलों
जलथाह बताइहौंजू । परसेंपगधूरितरैतरणीघरणीघरक्यों
समुझाइहौंजू । बरुमारिये मोहिंबिनापगधोये हौंनाथन
नावचढ़ाइहौंजू । तुलसीअवलम्बन औरकछूलरिकाकि-
हिभांतिजिवाइहौंजू ४ रावरेदोषनि पाइनिको पगधूरि
कोभूरिप्रभावमहाहै । पाहनते बनदाननकाठको कोमल
हैजलखाइरहाहै । तुलसीसुनिकेवटकेबरबैनहँसे प्रभुजान
की ओरहहाहै । पावनपांवपखारिकैनाव चढ़ाइहौंआय
सुहोतकहाहै ५ प्रभुरुखपाइकैबुलाइबालघरणि कूं बंदिकै
चरणचहूंदिशिबैठेघेरिघेरि । छोटोसोकठौवाभरिआन्यो
पानीगंगाजूकोधोइपाइंपीवतपुनीतवारिफेरिफेरि । तुल-

सोसराहैं ताकोभागसानुराग सुरबरपैं सुमनजयगयकहैं टेरिटेरि। बिबुधसनेहसानी बानीसुसयानीसुनिहँसे राम जानकीलपणतनहेरिहेरि(ईलक्ष्मणसों हमसांइकसाथसि या पुनिसाथहि छांड़िनदेहैं। बानरऋक्षजितेकहिकेअवते सबऋदरखोहसमैहैं। छोड़िकैआनिमिल्यो हमसोंतिन कोयहसंगकहाकरिएहैं। औरसबै घरकेबनके काजकौनके भजनविशेषणजैहैं १॥

चौदहबरषपाछेआयेरघुनाथनाथ साथकेजेभीलक हैंआयेप्रभुदेखिये। बोल्योंअबपाऊंकहांहोतनप्रतीत क्योंहूं प्रीतिकरिमिलेराम कहोमोकोपेखिये। परसपि-छानेलपटानैंसुखसागरसमानैंप्राणपायेमानो भालभाग लेखिये। प्रेमकीजुबातक्योंहूं बानीमेंसमातनाहिं अति अकुलातकहौकैसेकैविशेषिये ६४ मूल॥ निमिअरुनव योगेश्वरा पादत्राणकीहौंशरण॥ कबिहरिकरिभाजन भक्तरत्नाकरभारी। अंतरिक्षअरुचमस अनन्यतापधत उधारी॥ प्रबुधप्रेमकीराशि भूरिदाआविरहोता। पिप्प-लद्रुमलप्रसिद्धभवाब्धिपारकेपोता॥ जयंतीनंदनजगति के त्रिबिधितापआमेहरण। निमिअरुनवयोगेश्वरापाद त्राणकीहौंशरण १३ पदपरागकरुणाकरौ जेनियंतान बधाभक्तिके॥ श्रवणपरीक्षितसुमति व्याससावककरि-तन। सुठिसुमिरणप्रहलादपृथु पूजाकमलाचरननामन बंदकसुफलकसुवन दासदीपतिकपीश्वर। सख्यत्वेपार्थ समर्पनआत्मावलिधर॥ उपजीवीइननामके रातेत्राताअ गतिके। पदपरागकरुणाकरौजेनियंतानवधाभक्तिके १४॥

दोहा॥ थानपुष्पमयएकलियचढ़ेलषणसियश्याम॥ क-

रतस्तुतिसबदेशमुनि चलेअवधपुरराम १ रघुबरआगम
सुनिअवधि घरघरबुरतनिशान ॥ मिलेभरतपरिजनप्रजा
प्रथमहिंगुरुसनमान १ पादचारणकीहैमरण॥वेदाचार्य
वाक्यं॥ कर्मावलंबका: केचित्केचित्ज्ञानावलंबका: वयंतु
हरिदासानां पादचारणावलंबका: २ भक्तिकेभागवती॥ श्री
विष्णोःश्रवणेपरीक्षदभवद्वैयासकिःकीर्तने प्रह्लादस्मरणेत
दंघ्रिभजनेलक्ष्मीःपृथु: पूजनेअक्रूरस्त्वभिवंदनेकपिपतिर्दास्ये
चसख्येर्जुन:।सर्वस्वात्मनिवेदनेबलिरभूत्कृष्णाप्तिरेषांपरा॥

श्रवणरसिककहूं सुनेनपरीक्षितसे पानहूंकरतलागे
कोटिगुनप्यासहैं । मुनिमनमांझक्योंहूं आवतनध्यावत
हू वहीगर्भमध्य देखिआयोरूपरासहै । कहीशुकदेवजू
सोंटवमेरीलीजैजानिआगलागैकथानहींतक्षककात्रासहै।
कीजियेपरीक्षाउरआनीमतिसानीअहो बानीविरमानीज
हांजीवननिरासहै ६५ ॥ शुकदेवकीशंका ॥ गर्भतेंनिक
सिचले बनहींमेंकीनोंबास व्याससेपिताको नहींउत्तरहू
दियोहै । दशमश्लोकसुनि गुणमतिहरिगई नईभईरीति
पढ़िभागवतलियोहै । रूपगुणभरसह्यो जातकैसेकरिआ
ये सभानृपढरिभीज्यो प्रेमरसहियोहै । पूछैंभक्तभूपठौर
ठौरपरैं भौरजाइगाइउठैंजबै मानोंरंगझारिकियोहै६६ ॥

व्यासहै ॥ पारनो ॥ मत्सराज्ञालक्ष्मीहंस: शुकोर्भ.नादय
स्तथा ॥ अवराष्टकभूरंडहयोष्ठाद्यप्रकीर्तिता: १ ॥ छप्पै ॥
अन्य सनाहगलोलपदछेदकअसमंजस । स्थितअधीर स्तुति
मंद पलकअपक्वैनिद्रावस ।प्रश्नमसंगति मिलै मधुरअनुमो-
दन अक्रिय ॥ बादररिट सक छहर अभिनज्ञ अलापत
प्रियाप्रिय । रसिक अनन्य विशालमति बातकहत अनु
भौसुक्त ॥ दश दोषरहितश्रोतामिलैतौउज्जलरसबरषै

अमृत २ इमम्श्लोक॥ इमलै॥अन्योवकोवंशलनकाखक्लटंजि ज्ञांसयापाययद्यथसाऽजी। लेभेगतिंधात्रचितांततोऽन्यंवं बाद्याणुश्रवणंवजेम ३ परिनिष्टितोपिनैर्गुण्यउत्तमश्लोक लीलया॥ ग्रहीतचेताराजर्षेआख्यानंतदधीतवान् ४ परैम वरजाद्॥ कवित्त॥ सूझत न वारापार खिरयो प्रेमहैअपा- र मिलन अथाह देखि धीरज हिरातुहै॥ पालीको अधार पाइ पैरत सनेह सिंधु बिरह की लहरि मांझ हियराहि रात है। नवल गुनबंधीबृढि डूंढतरतन औधी मूरति मर- जियाकी नेकन थिरात है॥ एक बेरबांधिपुनि फेरिखोलि फेरिबांधि बांधि बांधि प्राण प्यारी बूडि बूड़िजाति है ५॥

प्रह्लादकीटीका ॥ सुमिरणसांचोकियोलियोदेखि सबहीमें एकभगवानकैसेकाटैतरवारहै। काटिबोखड्ग जलबोरिबोसकतिजाकोताहीको निहारैचहूंओरसोअपार है। पूछतेबतायोखंभतहांहीदिखायोरूप प्रगटअनूपभक्त वाणीसाँसोप्यारहै। दुष्टडारयोमारिगरैआंतैलईडारित- ऊ क्रोधकोनपारकहाकियोयोंबिचारहै ६७॥

पूंछते॥ श्लोक॥ तत्साधुमन्येसुरवर्य्यदेहिनांसदासमु- द्विग्नधियासदग्रहात्॥ हित्वात्मपातंगृहमंधकूपंवनंगतो यद्धरिमाश्रयेत १ श्रवणंकीर्तनंविष्णोःस्मरणंपादसेवनं॥अर्चनं वंदनंदास्यंसख्यमात्मनिवेदनं॥ कवित्त॥ पानिसोंबांधिकै अगाधजलबोरि राखे तीर तरवारनि सों मारि मारि हारे हैं। गिरिते गिराय दिये डरपे न नेकु तबमतवारे परवत से हाथीतरडारेहैं॥ फेरेशिर आरालैअगिनिमांझ नारेपुनिपूंछि मीडिगातमु लगाये नाग कारे हैं। भावतिकै प्रेममें मगन कछू जानै नाहिं ऐसे प्रह्लाद पूरे प्रेममतवारे हैं ३॥ व्याल कराल महा बिषपावकमंत गयंदनि केरद तोरे। ताते निशंक चले डरपे नहीं किंकरते करनी मुख

मोरै। नेक विषाद नहीं प्रह्लादहि कारण के हरि केवल हारे॥ कौनको चास सहै तुलसी जोपै राखिहै राम तौ मारिहै कोरे ४॥ छप्पै॥ गगन गूंजगुंजरत घोर दशहूं दिशि पूरण। हरत धरतिकलमलत धाकधांकर विषचूरण। उस रसंक सकपकत धीर धक पकत धमक सुनि॥ अगत भीर भहराइखंभ फहराइफटितपुनि। अति विकट दंतकट कट करतचट पटाइ नखकरत तप। लकलकतजीभदुर्जन दलन सुजयजयश्रीनृसिंह वपु ५ अति भक्तिके काज सुधारनको अद्भुत अवतार मुरारि धरे ६॥

हरशिवआदिकहुं देख्योनहींक्रोधऐसो आवतनढिग कोऊ लक्ष्मीहूंत्रासहै। तबतौपठायोप्रहलादप्रहलाद महा अहाभक्तिभावपग्यो आयोप्रभुपासहै। गोदमेंउठा इलियो शीशपरहाथदियो हियोहुलशायो कहीवाणी विनयराशहै। आईजगदयालगि परउप्रोनृसिंहजूकोअ-र्यायों छुटावो करौमायाज्ञाननाशहै ६८॥

बाणीविनयराशिहै॥पाद्मे॥कुलंपवित्रंजननीकृतार्थावसुंधरासावसतीचधन्या॥स्वर्गेस्थितातत्पितरोपिधन्यायेषांकुलेवैष्णवनामधेयं१ छप्पय॥ मनोरथ मनकेभावअसत्तकहतअधिकारीसों हमनिपट अमलमनआतहिदेखिसुपनेतियसंग म:सोजभूठजोहोयतजननहिंकामसतावै। जामनकेअनुभा-व जासुतिहि जगन डरावै॥ सुपनोंहूंहै सांच पुनजगत मिटै पहिंचानिये। योंहीविषय निवेसता गये सांचसो जानिये २ श्लोक। विषयान्ध्यायतिश्चित्तं विषयेषुविसज्जते॥ माम-नुस्मरतश्चित्तमय्येवप्रविलीयते ३ कवित्त॥ उबटि अन्हाइ लालधोतीझमकाइ पट पीतांबर छोरन भुराइ झमकाइ कै॥ मेलिकै अतरुवह चतुरकिशोर बर बांध्यो केशजूरा करचूरा चमकाइकै॥ पहिरिखराउंमणिरचित खचित

तान बानमुसकान पानखात उठ्यो गाइकै। ठाढ़ोचिंद पौरिकर चन्दनकी खौरि चित्तकरयो मनकोरतनगिरयो भौंर खाइकै ४॥

अक्रूरकीटीका॥ चलेअकरूरमधुपुरीतेविसूरनैनचली जलधारा कबदेखौंछबिपूरको। सगुनमनावैएकदेखिबो-ईभावै देहसुधिबिसरावै लोट्योलखिपगधूरिको। बंदन प्रधीनचाह लिपटनवीनभई दईशुकदेव कहिजीवनकी मूरिको। मिलेरामकृष्णझिलेपाइकैमनोरथकों हिलेद्दग रूपकिये चूरिचूरिचूरिको ९९॥ टीकाबलिजूकी॥ दियो सरबसुकरि अतिअनुरागबलि पागिगयोहियो प्रहलाद सुधिआईहै। गुरुभरमावें नीतिकहिसमुझावें बोलउरमें नआवैंकितीभीतउपजाईहै। कह्योजोईकियोसांचो भाव-पनलियोअहो दियोडरहरिहूनेमतिनचलाईहै। रीझेप्रभु रहेद्वारभयेबशहारिमानी श्रीशुकबखानी प्रीतिरीतिसोई गाईहै १०० मूल॥ हरिप्रसादरसस्वादके भक्तइतेपर-वान॥ शंकरशुकसनकादि कपिलनारदहनुमाना। वि-ष्वकसेनप्रहलाद बलिरुभीषमजगजाना॥ अर्जुनध्रुव अंबरीष बिभीषणमहिमाभारी। अनुरागीअक्रूरसदाउ द्धवअधिकारी॥ भगवंतभुक्तअवसिष्टकी कीरतिकहनसु जान। हरिप्रसादरसस्वादके भक्तइतेपरवान १५॥

चूरिचूरि चूरिको॥ कवित्तवाधिकै सुकेसीचोटीकलंगी जटितहीराबुरी ढिगगोचपें चलभितहीसंवार्यो है। झंगा एकलमकाम कांचन बदरंगहोत एक छोर पटका कोछैल तासों ढार्योहै। धुकधुकी कंठमध्यहीरानग मोतीजरिशो भितगलमाल आजुलालहैं निहार्योहै॥ पञ्चनिमेंपहुंची

संदररतन जरी अमैट करेननैअमेटि मनडारयोहै १ कह्यो जोई॥श्लोक॥असंतुष्टाद्विजानष्टासंतुष्टाचमहीपतिः सलज्जा गणिकानष्टा निर्लज्जाचकुलांगना २ हरिप्रसाद॥पाझे॥बलि र्विभीषणोभीष्मः कपिलोनारदोऽर्जुनः प्रह्लादोजनकोव्यासोअंबरीषः पृथुस्तथा ३ विश्वकसेनोध्रुवोक्रूरोसनकाद्याशुकादयः। वासुदेवप्रसादान्नसर्वेग्रहणातुवैष्णवाः ४॥

ध्यानचतुर्भुजचितधर्‌यो तिन्हैंशरणाहौंअनुसरौं॥ अगस्त्यपुलस्त्यपुलह चमनवशिष्टसौभरऋषि। कर्दमअत्रिरिचीकगर्गगौतमव्यासासिषि॥ लोमशभृगुदालभ्यअंगिराश्रृंगीप्रकाशी। मांडवविश्वामित्र दुर्बासासहस्त्रअठासी॥ याबलियामदग्निमयादर्श कश्यपपरचतपाराशरपदरजधरौं। ध्यानचतुर्भुजचितधर्‌यो तिन्हैंशरणहौंअनुसरौं १६॥

चतुर्भुज॥ छप्पै॥ क्रीटमुकुटअरुतिलकभाल राजतछबिछाजत। पीतवसनतनश्याम कामकोटिकलखिलाजत॥ कंठत्रिवलीश्रीवत्ससुभगशोभितमनमोहत। वैजंतीवनमालकौनउपमाकबिटोहत॥ करशंखचक्रगदापद्मधर रूपअमितगुणगरुड़ध्वज। गोविंदचरणबंदतसदा जयजयजयश्रीचतुर्भुज १॥

साधनसाध्यसत्रहपुराणफलरूपीश्रीभागवत॥ ब्रह्मविष्णुशिवलिंग पदमस्कंधबिस्तारा। बावनमीनबराहअग्निकूरमउदारा॥ गरुड़नारदभिविष्य ब्रह्मबैवर्त्तश्रवणशुचि। मार्कंडब्रह्मांडकथानानाउपजैरुचि॥ परमधर्मश्रीमुखकथित चतुरश्लोकीनिगमसत। साधनसाधिसत्रापुराणफलरूपीश्रीभागवत १७ दशअाठस्मृतिजिनउच्चा

री तिनपदसरसिजभालभो ॥ मनुस्मृतिआत्रैवैष्णवीहा
रितिकजामी। याज्ञवल्क्यअंगिरासनैश्चरसाम्मृतकनामी॥
कात्यायनिसांखिल्यगौतमीवसिष्ठीदाषी। सुरगुरुआशा
ताप पराशरकृतमुनिशाषी ॥ आसापासउदारधी पर
लोकलोकसाधनसो। दशआठस्मृतिजिनउच्चरीतिनपद
सरसिजभालभो १८ मूल ॥ पावैंभक्तिअनपायनीजेराम
सचिवसुमिरणकरैं। सृष्टिबिजयीजयंत नीतिपरशुचिर
विनीता। राष्ट्रबिवर्द्धननिपुणसुराष्ट्रपरमपुनीता॥ अशोक
सदाआनंदधर्मपालकतत्ववेता। मंत्रीबरज्यसुमंतचतुर्जग
मंत्रीजेता॥ अनायासरघुपतिप्रसन्नभवसागरदुस्तरतरैं।
पावैंभक्तिअनुपायनीजेरामसचिवसुमिरणकरैं १६ ॥

फलरूपीश्रीभागवत ॥ मंगलरूपअनूप निगमकल्पद्रुम
कोफल। बीजवक्कलतैंरहित मधुररससहितबिमलकल॥
कहतसुनतसुखदेतअधिकहरिभक्तिबढ़ावत। सबसारनिको
सार व्याससुतशुकमुखगावत ॥ तिमिरहरणकोसूरसम
श्रीगुबिंदजगजगमगत। पूरनपुराणपतिप्रगटनित जयजय
जयश्रीभागवत २ प्रथमे ॥ निगमकल्पतरोर्गलितंफलं शुक
मुखादमृतद्रवसंयुतं। पिवतभागवतंरसमालयं मुहरहोर-
सिकाभुविभावुका ३ छप्पै ॥ एकवेदकेचारिसहस्रशाखा
विस्तारी। साठिलाखइतिहास महाभारतकियोभारी॥
चारिलाखअरुअर्द्ध व्यासवेदांतबखान्यो। अष्टादशकिये
पुराण हृदयहरिनामनजान्यो॥ कहतपढ़तसीखतसुनत
दाहनहिंहृदयकोगयो।ततबेत्तानारदमिले तबव्यासहृद
यशीतलभयो ४ दशहजारब्रह्मपुराण इकतालीसहजार
बिष्णुपुराण छिहत्तरिहजारशिवपुराण ग्यारहहजार
लिंगपराण पचपनहजारपद्मपुराण एकसौइक्यासीहजार

स्कंदपुराण दशहजारबावनपुराण चौदहमीनपुराण चौवीशवाराहपुराण पंद्रहअग्निपुराण सत्रहकूर्मपुराण उनईसगरुडपुराण पचीसनारदपुराण चौदहभविष्य पुराण ब्रह्मवैवर्तअठारहपुराणनवमार्कंडेयपुराण बारह ब्रह्मांडपुराण अठारहहजारश्रीभागवत श्लोक एवंपुराणांसंदोहाश्चतुर्लक्ष उदाहृता१ छप्पतन॥ छप्पै॥ प्रथम दुतियदोऊवरणतृतीयेचतुर्थदोऊउरु। पंचमनाभिगंभीर हृदयषष्टमसुखपुरु॥ सप्तमअष्टमभुजानवमकंठविराजैदशम बदनमुखसदनभालएकादशराजै॥ द्वादशशिरशोभितसदा मंगलरूपीसुमिरमन। ततवेत्तातिहुंलोकमें कीतिरूपी छप्पतन२नवमे॥ मात्रास्वस्रादुहित्रावानविविक्तासनोभवेत्। बलवानिंद्रियग्रामो विद्वांसमपिकर्षति ३ तापैसन्यासीकोदृष्टांत॥

शुभदृष्टिवृष्टिमोपरकरौ जेसहचररघुवीरके॥ दिन करसुतहरिराजवालिवच्छकेशरीऔरस। दधिमुखदुविद मयंदऋच्छपतिसमकोपौरस॥ उल्कासुभटसुसेनदरी मुखकुमुदनीलनल। सरभंगवेगवाक्षपनस गधमादन अतिबल॥ पद्मअठारहयूथपाल रामकाजभद्रभीरके। शुभदृष्टिवृष्टिमोपरकरौ जेसहचररघुवीरके २० मूल॥ ब्रजबड़ेगोपपरजन्यकेसुतनीकेनवनंद॥ धरानंदध्रुवनंद तृतियउपनंदसुनागर। चतुर्थतहांअभिनंदनंदसुखसिंधु उजागर॥ सुठिसुनंदपशुपालनिर्मलनिश्चयअभिनंदन। करमाधरमानंद अनुजबिदितबल्लभजगबंदन॥ आसपास वावगरके जहांबिहरतपशुपशुछंद। ब्रजबड़ेगोपपरजन्य केसुतनीकेनवनंद २१॥

बालबच्छ॥ कबित्त॥ हरगिरिहाल हदनेरुगिरिहाल

पुनि उद्रगिरिहाल और रुद्रगिरि हालवी। सप्तपाताल हाल दशों दिग्पालहाल पलपलहाल उपर उभालवी केशवदास लंकको बिपुलदलबलहाल दशशीशहालउठो भुजबीश हालवो। लोकहाल और भूलोकहाल एकबार बलवंत सुतपग नहींहालवी ॥ १ ॥ पादरज भागवते ॥ तद्भूरिभाग्य मिहजन्म किमप्यटव्यायद्गोकुलेपिकतमांघ्रिरजोभिषेकं ॥ यज्जीवितंतुनिखिलं भगवान्मुकुंदस्त्वद्यापियत्पदरजःश्रुतिमृग्यमेव। अहोभाग्यमहोभाग्यं नंदगोपव्रजौकसां। यन्मित्रं परमानंदं पूर्णंब्रह्मसनातनं। आसामहोचरणरेणुजुषामहस्यां वृन्दावने किमपिगुल्मलतौषधीनां। यादुस्त्यजंस्वजनमार्यपथंचहित्वा भेजुर्मुकुंदपदवींश्रुतिभिर्विमृग्यां ॥ ३ ॥ यादोहनेवहनने मथनोपलेपप्रेंखेंखनार्भरुदितोक्षणमार्जनादौ गायंतिचैनमनुरक्तधियोश्रुकंठ्योधन्याव्रजस्त्रियउरुक्रमचित्तयानाः ॥ ४ ॥ षष्टिवर्षसहस्राणि मयातप्तंतपःपुरा॥ नंदगोपव्रजस्त्रीणां पादरेणूपलब्धये ॥ ५ ॥

बालवृद्धनरनारिगोपहों अरथीउनपादरज ॥ नंद गोपउपनंदध्रुव धरानंदमहरियशोदा। कीरतदावृषभान कुंवरि सहचरिबिहरतमनमोदा ॥ मधुमंगलसुबलसुबाहुभोजअर्जुनश्रीदामा। मंडलग्वालअनेकश्यामसंगीबहुनामा ॥ घोषनिवासनकीकृपा सुरनरबांछितआदिअज। बालवृद्धनरनारिगोपहों अर्थीउनपादरज २२ मूल ॥ ब्रजराजसुवनसँगसदनबनअनुगसदाततपररहैं॥ रक्तकपत्रकऔरपत्रि सबहीमनभावैं। मधुकंठीमधुवर्त्तरसालबिशालसुहावैं। प्रेमकंदमकरंद आनंदसदाचंद्रहासा। यादवकुलरसदानंशारदाबुद्धिप्रकासा ॥ सेवासमयबिचारिकै चारुचतुरबितकीलहैं। ब्रजराजसुवनसंगसदनबनअनुग सदातत्पररहैं २३मूल॥ सप्तद्वीपमेंदासजेतेमेरेशिरताज।

जंबूओरपलक्षिसाल्मलिबहुतराजऋषि । कुशपवित्रपुनि क्रौंचकीनमहिमाजानैंलखि ॥ शाकबिपुलबिस्तारप्रसिद्ध नामीअतिपुहकर । परबतलोकालोक ओकटापूकंचनधर हरिभृत्यबसतजेजेजहां तिनसोंनितप्रतिकाज । सप्तद्वीप मेंदासजेतेमेरेशिरताज २४ ॥

मनमोदा ॥ कबित्त ॥ कहाद्भुतलालजात अहोआलोक हैंबात सुनेमनकंठसूखगात न समाइगो, थोरैसभोरे भाइ चोरेलेत लकचित कुंडलअलकहेरि हियराहिरायगो॥ तुमकान्ह सांवरे पधारिदेखौ एकबार मेरोगोराकान्ह लखे मनललचाइगो। ग्रीवकोलटकमुरि भौंहकीमटकबीच बीराकी चटकमैं अटकिमन जाइगो ॥ १ ॥ दोहा ॥ राधा हरिहरि राधिका बनिआयेसंकेत । दंपतिरतिबिपरीतिरस सहजसुरति सुखलेत २ ॥

मध्यदीपनवखंडमें भक्तजितेममभूप । इलावर्त्तआधीशसंकर्षणअनुगसदाशिव। रमनकमत्स्यमनुदासहिरणयकूरमअर्जुनइव । कुरुवराहभूभृत्यवरिषहरिसिंहप्रह्लादा । किंपुरुषरामकपिभरतनारायनवीनानादा ॥ भद्रासुग्रीवहयभद्रस्त्रवकेतुकामकमलाअनूप । मध्यदीपनवखडमेंभक्तजितेममभूप २६॥ मूल॥श्वेतदीपमेंदासजेश्रवणसुनोंतिनकीकथा। श्रीनारायणकोवदननिरंतरताहीदेखैं। पलकपरैजोबीचकोटियमजातनलेखैं । तिनकेदरशनकाजगयेजहँबीणाधारी । श्यामदईतहँसेनउलटिअबनहिंअधिकारी। नारायणीअख्यानदृढ़तहांप्रसंगनाहिनतथा। श्वेतदीपमेंदासजेश्रवणसुनोंतिनकीकथा२७॥टीका ॥श्वेतदीपबासीसदारूपकेउपासी गयेनारदबिलासीउपदेश

आशलागीहै । दईअभुसेनजिनिआवोइहिअैनदगदेश
सहाचैनमतिगतिअनुरागीहै । फिरेदुखपाइजाइकहीअे
वैकुंठनाथसांथलियेचलेलखोंभक्तिअंगपागीहै। देख्योए
कसरखगरह्योध्यानवरिझपि पूछैंहरिकहीकह्योबड़ोबड़
भागीहै १०१ ॥

पलक परै जो बीच ॥ कवित्त ॥ मंजु मोर मुकुट लटकि
घुघुवारी लटैं झूमिझूमि कुंडल कपोलनि में झलकैं । वा
रिज वदन रस रूपको सदन लखि दसकै रदन अरिभरि
छबि छलकैं । कानन छुवत कोपि अैन मैन कोटि मो
शोभा सर लपि लपि मन मीन ललकैं । देखिबेको श्याम
शोभा देतो दृग रोम रोम सोन करोविधि औ अषिधि
करीपलकैं १ ॥ दोहा ॥ बड़ो मंद अरविंद सुत जिहिन
प्रेम पहिंचानि ॥ पियसुखनिरखनि दृगनि को पलकरची
बिच आनि २ ॥

बरषइजारवीतिनहींचितचीते प्यासोईरहत ऐपैपानी
नहींपीजिये । पावैजोप्रसादजबजीभसोंसवादलेतलेत
नहींओरयाकीमितिरसभीजिये । लीजैबातमानिजलपा
नकरिडारिदियोचौंचभरिदृगभरबुधिमतिधीजिये । अच
रजदेखिचपलगेननिमेषकहूं चहूं दिशिफिरयोअबसेवा
याकीकीजिये १०२ चलोआगेदेखकोऊरहैनपरेखो भाव
भक्तकरिलेखोगयेदीपहरिगाइये । आयोएकजनधायआर
तीसमयबिहाइखैंचिलियेप्राणफेरिबधूयाकीआइये॥ वही
इनकहीपतिदेखो नहींमहीपरयोचरयोयाकोजीवतनगि
रयोमनभाइये । ऐसेपुत्रआदिआयेसांचेहितमेंदिखाये फे
रिकैजिवायेऋषिगायेचितलाइये १०३ ॥मूल॥उरगअ

कुलद्वारपालसावधान हरिधामथिति॥इलापत्रमुखअनंत अनन्तकीरतिविस्तारत । पद्मसंकुपनप्रगटध्यानउरते नहिंटारतअश्रुकमलवासुकीअजितअज्ञाअनुबर्ती। करको टकतक्षकसुभटसेवाशिरधरती ॥ आगमोक्तशिवसंहिता अगरएकरसभजनरत। उरगअष्टकुलद्वारपालसावधानह रिधामथिति १७ ॥

उरग अष्ट ॥ दोहा ॥ दोइ जीभ तन श्याम हैं वाक्चलन विष खान ॥ तुलसी गुरुके संचपै शीश समर्पत आनि १ अनंत कीरति ॥ कवित्त ॥ दीननि कोहै दयाल दासनि को रक्षपाल सबको शिरोमणि है सदा अविकार है। धन धन हीन को है गुननि गुनीनको है रूपहै विरूप को अनूप है उदार है। आनंद कोकंद भवसिंधु को पगार दुख द्वंदको हरण हार महिमा अपार है॥ श्रीगुविंद हरिजू के नामको उचार चारु सारन को सार निरधारको अधार है २ ॥ दोहा ॥ मैं मानस सौचित्त ते मनदीनो रविसो ॥ मैंआवा जावा नित्त मैंतू नजरिन आवदा २ ॥

चौबीसप्रथमहरिबपुधरे त्योंचतुर्व्यूहकलियुगप्रगट। श्रीरामानुजउदारसुधानिधिअवनिकल्पतरु। विष्णुस्वामिवोहित्यसिंधुसंसारपारकर ॥माध्वाचारजमेघभक्तिसर ऊसरभरिया। निंबादित्यआदित्यकुहरअज्ञानजुहरिया। जनमकरमभागवतधरमसंप्रदायथापीअघट । चौबीसप्रथमहरिबपुधरेत्योंचतुर्व्यूहकलियुगप्रगट २६ ॥

चौबीस ॥ एकादशे॥कृतादिषुप्रजाराजन्कलाविंछतिसंभवं॥कलौखलुभविष्यंतिनारायणपरायणाः१गीतायां ॥ परित्राणायसाधूनांविनाशायचदुष्कृतां ॥ धर्मसंस्थापनार्थाय

संभवामियुगेयुगे २ ननुभागवतालोकेलोक तत्वविचक्षणाः ब्रजन्तिसर्वेसंदिष्टाद्दिष्टयतेनमहात्मना ३ भगवानेवभूतानांसर्वभक्तपथाहरिः ॥ रक्षणायचरेलोकान्भक्तरूपेण नारद ४ ॥ आदि पुराणे ॥ भक्तानन्वेवसेवन्नासिरस्येववसाम्यहं॥नाशौचप्रकाराद्देवः पदैर्गंधर्वकिन्नराः ५ ॥ दोहा ॥ दंभ सहित कलिधर्म लखि छलहि सहित व्यौहार॥ स्वारथ सहित सनेह सब सबै रुचितआचार ६॥ श्लोक ॥ घोरेकलियुगेप्राप्तेसर्वधर्मविवर्जिते ॥ वासुदेवपराभक्तास्तेकृतार्थानसंशयः७कलियुगप्रगट॥छप्पै॥दयास्वर्ग उठि गई धर्म धँसिगयो धरणिमें। पुन्य गयो पाताल पाप भयो बरण बरण में। प्रीति रीति सब गई बैर भयो घर घर भारी॥ आप आपनी परी जिते जगमें नरनारी। कबिराज कहत सांचो सबै निपट पलटि समयो गयो॥ रैनर निरंध सुनि कान दै अब प्रतक्षकलियुग भयो ८॥ दोहा॥ कलियुग काल करालकी बरणिनजाइ अनीति। बैर बढ्यो चारयौ बरन आप समय भयभीत ९ ॥

निंबादित्यनामजातेभयोअभिरामकथाआयोएकदंडआमन्योतोकरिआयेहैं । पाककोअबारभईसंध्यामानिलईजतीरतीहूनपाऊवेदबचनसुनायेहैं । आंगनमेंनीमतापैआदित्यदिखायोवाहिभोजनकरायो पाछेनिशिचिन्हपायेहैं। प्रगटप्रभावदेखिजान्योभक्तिभावजगदावयावनामपर्यो हर्योमनगायेहैं १०५ दोहा ॥ रमापद्धितरामनुज राजै विष्णुस्वामित्रिपुरारि ॥ निम्बादित्यसनकादिकामधुकरगुरुमुखचारि३०॥मूल॥ संप्रदायशिरोमणिसिंधुजारच्यो भक्तवित्तान । विष्वक्सेनमुनिवर्य्य सपुनषटको पपुनीता चोपदेवभागौतलुप्तउद्धर्योनवनीता। मंगलमुनिश्रीनाथ पुंडरीकाक्षपरमयश । राममिश्ररसरासप्रगटपरतापपरां

कुश। यामुनिमुनिरामानुजतिमिरहरणउदयभान। संप्रदायशिरोमणिसिन्धुजारच्योभक्तवित्तान ३१॥ मूल॥ सहस्रआस्यउपदेशकरिजगतउद्धरणयत्नकियो। गोपुरह्वै आरूढ़उच्चसुरमंत्रउचार्‌यो। सूतेनरपरेजागवहत्तरश्रवणनिधार्‌यो। तिननेंईगुरुदेवपद्धतिभइन्यारीन्यारी। कुरतारकशिष्यप्रथमभक्तिबपुमंगलकारी। कृपणपालककरुणासमुद्ररामनुजसमनहिंबियोसह ३२

वेदवचन॥ भागवते॥ संध्याकालेचसंप्राप्तेकर्मचत्वारिवर्जयेत्॥ आहारंमैथुनंनिद्रांस्वाध्यायंचविशेषतः१ आहारेजायतेव्याधिः गर्भदुष्टंचमैथुने॥निद्रायां हरतेलक्ष्मीःस्वाध्याये मरणंध्रुवं२ श्रादिव्यदिखायो॥समये॥ यस्यास्तिभक्तिर्भगवत्यकिंचनासर्वै र्गुणास्तत्र समासतेसुराः॥ हरावभक्तस्यकुतो महद्गुणः मनोरथेनासतिधावतोबहिः ३॥ एना पद्मिति॥ पाद्मे॥ कलौखलुभविष्यंतिचत्वारःसंप्रदायकः॥ श्रीब्रह्मरुद्रसनकाद्यावैष्णवाःक्षितिपावनः ४॥

टीका॥ आस्यसोबदननामसहसहजारमुखशेषअवतारजानोंवहीसुधिआईहै। गुरुउपदेशमंत्रकह्योनीकेराखोअंत्रजपतहीश्यामजूनेमूरतिदिखाईहै। करुणानिधानकहीसबभगवानपावै चढ़िदरवाजेसोपुकार्‌योधुनिछाईहै। सुनिसीखिलियोयों बहत्तरिहीसिद्धभये नयेभक्तिचौजयहरीतिलैहैगाईहै १०६॥ गयेनीलाचलजगन्नाथजूकेदेखिबेको देख्योअनाचारसबपंडादूरिकियेहैं। संगलैहजारशिष्यरंगभरिसेवाकरैं घरहियेभावगूढ़मतदरशायेहैं। बोलेप्रभुवेईआवैं करेअंगीकार मैंतोप्यारहीकोलेतकभूंऔगुणनलियेहैं। तऊदृढकीनीफिरकहीनहींकानकीनी

लीनीवेदवाणीविधिकैसेजातछियेहैं १०७॥ जोरावरभक्त सोंवसाइनहींकहीकितीरतीहूनलावैमनचोजदरशायोहै। गरुड़कोआज्ञादशेसोईमानिलईउनशिष्यनिसमेतनिजदेश छोंड़िआयोहै। जागिकैनिहारैठौरऔरहीमिगनभरो दये योंप्रगटकरगूढ़भावपायोहै। वेईसबसेवाकरैं श्याममनहरैं सदायरैंसांचोप्रेमहियेप्रभुजूदिखायोहै १०८॥

मूरति दिखाई है॥यहतोबड़ोआश्चर्य्यहै तत्काल मूर्ति कैसेदेखी तीन वस्तु शुद्धहोंहितो खेत में बीजजगै॥ बीज घुनौं भूनो न होइ खेतकरवंजर न होइ किसान को भाग होइ चेला निर्वासक होइ यह खेत शुद्ध गुरु निर्वासक यह बीजशुद्ध गुरुकेभाग॥ दोहा॥गुरुलोभी शिष्य लालची दोऊखेलैं दाव॥ दोऊबूड़ै बापुरे चढ़िपाथरकी नाव १ पाथरकी नावपै सवलाहू बूडै चढन हारोहू बूड़ै सबभग- वान पावै तापै कठारीजू वाको दृष्टांत॥ श्लोक॥अपिचेति दुराचारोभजतेमामनन्यभाक॥ साधुरेव सम्मंतव्यसम्यग्व्य वसितोहिसः २ ॥

मूल॥चतुरमहंतदिग्गजचतुरभक्तिभूमिदावैरहैं। श्रुति प्रज्ञाश्रुतिदेवऋषभ वपुहकरइभऐसे । श्रुतिधामाश्रुतिउ दधिपराजितवामनजैसे।श्रीरामानुजगुरुबंधुविदितजगमं गलकारी। शिवसंहिताप्रणीतज्ञानसनकादिकसारी।इंद्रा पद्धितउदारधीसंभासापिसारगकहैं। चतुरमहंतदिग्गज चतुरभक्तिभूमिदावैरहैं ३२॥ आचारजजामातकीकथा सुनतहरिहोइरति कोउमालाधारीमृतक बह्योसरितामें आयो। दाहकृत्यज्योंबंधुन्योंतिसवकुटुंबबुलायो नाक सकोचैंविप्रतवहरि पुरतेहरिजनआये। जेंवतदेखेसबनि

जातकोहूनहिंपाये। लालाचारजलक्षुधाप्रचुरभईमहिमा जगत। श्रीआचारजजामातकीकथासुनतहरिहोइरति३३ टीका॥आचारजकोजामातबाततासुनौंनीकेपायो उपदेशसंतबंधुकरमानिये। कीजैकोटगुणीप्रीत औपैनबनतरीतितातेइतिकरौयातेंघटतीनआनिये। मालाधारीतनसाधु सरितामेंबह्योआयोलायोघरफेरके विमानसबजानिये॥ गावतबजावतलैनीरतीरदाहकियो हियोदुखपायोसुख पायोसमाधानिये १०६॥

चतुरमहंत॥श्लोक॥ अद्यापिनोज्झतिहर:किलकालकूटं कूर्म्मोबिभर्तिधरणींखलुपृष्ठभागे॥ अंभोनिधिर्वहतिदु:सहवाडवाग्नीमंगीकृतंसुकृतिन:परिपालयंति१लालाचार्यपैस्कंधे॥तुलसीकाष्ठ जामालांकंठस्यावहतेतुय: अशौचप्रचाप्यनाचारोमामेवैतिनसंशय: १ केशरि कपूरमेंसोहोइ है सोरानाजैसिंहसवाई नेअमेरमेंलगाई सोनहींभई तबपूंछी काहेते न भई महाराज जल आवै तौहोइ जहां जलहु मगायो तऊ न भई महाराज माटी आवै तौहोइ माटीहु आई तऊना भई महाराज हवाआवै तौहोइ जैसेही प्रेम हृदयतेउपजे खैंचेते न आवै २॥

कियोसोमहोछोज्ञाति विप्रनिकोन्योतोदियोलियोआयेनाहिं आनीशंकादुखदाहिये। भयेइकठौरमायाकीनेसब बोरेकछूकहैबातऔरैमरोदेहवहीआहिहै। यातेनहींखातवाकीजानतनजातिपांति बड़ोउतपातघरलाइजाइदाहिये। मगअवलोकउतपरयोसुनशोचहिये जियेआइपूंछे गुरुकैसेकैनिवाहिये १२०॥ चलेश्रीआचार्य्यजूपैवारि जबदनदेखिकरीशाष्टांगबातकहीसोजनाइये। जावोजूनि

शंकवेप्रसादकोनजानेरंक जानैंजेप्रभावआवैवेगिसुख इये । देखेनभभूमिद्वारऐहैनिरधारजन वैकुंठनिवास पांतिढिगह्वैकैआइये । इन्हेंअबजानदेवोजिनकछूक अहोकरो हांसिजबैघरजाइनिजपाइयो १२१ ॥

आयेनाहिं॥आगमे। सालाधारकसाचोपि वैष्णवोभ वर्जिताः। पूजनीयंप्रयत्नेन ब्रह्मणाकिंतुमानुषैः १ प्रसा कोनजानैंरंक॥ स्कांदे ॥ महाप्रसादे गोविंदेनाम्निब्राह्म वैष्णवे॥स्वल्पपुण्यवतांराजन् विश्वासोनैवजायते २ घरजा खाइये॥ प्रतिमासंवतीर्थेषु भेषजेवैष्णवेगुरौ॥ यादृशीभा नायस्य सिद्धिर्भवतितादृशी ३ कवित्त ॥ मल्लजानैंकुलि नरेशनरजानैंपुनि नारीजानैंमीनकेतमूरतिरसालहै। गो जानैंखजन महीपजानैंदंडदेन यादवयौंजानैंइष्टदेवता पालहै। अज्ञानीविराटजानैं गोपीपरतत्त्वजानैं रंगभू रामकृष्ण गयेऐसेहालहै। नंदजानैंबालक गुविंदप्रतिपा जानैं ग्वालशत्रुवंशजानैं कंसजानैंकालहै २ ॥

आयेदेखिपारपदगयोगिरिभूमिसद हदकरीकृपाय जानिनिजजनको । पायोलैप्रसादस्वादकहिअहलाध यो नयोलयोमोदजान्योसांचोसंतपनको । विदाह्वैप रेनभमगमेंसिधारे विप्रदेखतविचारेद्वारव्यथाभईमनक गयोअभिमानआतमंदिरमगनभये नयेह्वैगलाजबीनबी लेतकनको १२२ ॥ पाइलपटाइअंगधूरिमेंलुटाये कहैं रौमनभायोऔरदीनवहुभाष्योहै । कहीभक्तराजतुमकृ मेंसमाजपायो गायोजोपुराननमेंरूपनैनचाष्योहै । छ ड़ोउपहासअबकरौनिजदासहमैं पूजीजियआसमनअ अभिलाष्योहै । कियेयेप्रशंसमानौहंसयेपरमकोऊ औ

सेजसलाखभांतिघरघरराख्योहै १२३ मूल ॥ श्रीमारग उपदेशकृतिश्रवणसुनौअख्यानशुचि गुरुगमनकियोपर देशशिष्यसुरधुनीदृढ़ाई । इकमंजनइकपानएकहृदयवंदना कराई । गुरुगंगामेंप्रवेशशिष्यकोवेगिबुलायो । विष्णुप दीभयजानिकमलपत्रनपरधायो । पादपदमतादिनप्रगट सबैप्रसन्नमनपरमरुचि । श्रीमारगउपदेशकृति श्रवण सुनौअख्यानशुचि ३५ ॥

गयोगिरिभूमिपद।संतचरणपरश्रीधरयो।राखिलियो बहुभांतिकृपाकरि मनतिसंशयशूलहरयो।हमरेश्रौगुणमेटि दूरिघटमैंहरिरसअमृतभरयो।कीटभृंगज्योंमृतकजिवायो जीवकागतेहंसकरयो ॥ दूरिकियाअज्ञानअँधेरो ज्ञानर तननवदीपबरयो । हरिहिदियाइकियोहरिहीसो दूरि सुखमायादुरिततरयो । प्रभुवशभयेसाधुकीसेवा साधुसंगते काजसरयो । रामदासकेहितभगवानैं साधुसंगकोअमल परयो १ ॥

टीका॥देवधुनीतीरसोकुटीरबहुसाधुरहें रहैगुरु भक्त एकन्यारोनहींह्वैसकै । चलेप्रभुगांवजिनितजोवलिजांव कही करौदाससेवागंगामेंहींकैसेह्वैसकै । क्रियासबकूप करैंविष्णुपदीध्यानघरैं रोषभरेसंतश्रेणीभावनहिंभैसकै। आयेईशजानिदुखमानिसोवखानिकियो आनिमनजानि बातअंगकैसेध्वैंसकै ११४ चलेलैकेन्हानसंगगंगमेंप्रवेश कियो रंगभरिबोलेसोअँगोछाबेगिलाइये । करतबिचार शोचसागरनवारापार गंगाजूप्रगटकह्योकंजनपरआइये। चलेईअधरपगधरैसोमधुरजाइ प्रभुहाथदियोलियोतीर

भीरछाइये। निकसतधाइचाइपाइलपटाइगये बड़ोप्र
तापयहनिशिदिनगाइये ११५ ॥

देवधुनी कैसी है॥तृतीये॥ यावैलसच्छीतुलसी विमिश्र
कृष्णांघ्रिरेण्वभ्यधिकांबुनेत्री ॥ पुनातिलोकानुभयत्रशेषान्
कस्मान्नसेवेतमरिष्यमाणः१ ॥ आदिपुराणे॥ दृष्टाजन्मसह
पापंस्पृष्टाजन्मसतद्वयं॥स्नात्वापीत्वासहस्राणि हंतिगंगा
कलौयुगे २ तापैदृष्टांत भूतकोअरुसिद्धको॥ भोदरिद्र
मस्तुभ्यंसिद्धोहंतवदर्शनात्॥ पश्यास्यहंजगत्सर्वंममापश्य
तिकप्रचन ३॥ कवित्त॥ कारौकुलकंटक डरारौ बोलभारे
जाको तीरथके तीरपगकबहूंन लैगयो।कहैं कविगंगका
कागऊ ते सरसआप आनियमप्रेरयो तबखाटमे कुंपैगयो
गंगाजीकी धोई चादरि बकुचामें धरी करीताको अं
लागतही तारागण लैगयो। वाहचौरठौरे सबदेवता नि
हारे वा गंगाजीकी चादरि सोंचत्रभुजह्वै गयो ४ ॥ ऐसो
गंगाको प्रताप ताको क्योंनउठिधाइये ५ ॥

मूल॥ श्रीरामानुजपद्धतिप्रतापअवनिअमृतह्वैअनुस
र्यो॥देवाचारजद्वितीयमहामहिमाहरियानँद। तस्यराघ
वानंदभयेभक्तनकोमानद ॥ पत्रावलंबपृथिवीकरिवकाशी
अस्थाई। चारिवरणआश्रमसबहीकोभक्तिदृढ़ाई ॥ तिनके
रामानंदप्रगटविश्वमंगलजिहबपुधर्यो। श्रीरामानुजपद्ध
तिप्रताप अवनिअमृतह्वैअनुसर्यो ३६ श्रीरामानंदरघु
नाथज्योंद्वितीयसेतजगतरनकियो॥अनंतानंदकबीरसुखा
सुरसुरापद्मावतनरहरि।पीपाभावानदरैदासधनासेनसुर
सुरकीधरहरि ॥ औरौशिष्यप्रसिष्यएकतेंएकउजागर।वि
श्वमंगलआधारभक्तिदशधाकेआगर ॥ बहुतकालबपुधारि
कैप्रणतजननिकोपारदियो।श्रीरामानंदरघुनाथज्योंद्विती

यसेतजगतरक्षकियो ३७ अनंतानंदपदपरशकैलोकपाल सेतेभये।योगानंदगयेशकरमचंद अल्हपैहारीसारी। रामदासश्रीरंगअवधिगुणमहिमाभारी॥तिनके नरहरिउदित मुदितमोहामंगलतन। रघुवरयदुवरगायविमलकीरतिसंचयोधन॥हरिभक्तिसिंधुवेलारचैपानिपद्मजाशिरदये। अनंतानंदपदपरशकैलोकपालसेतेभये३८॥

चारित्रस्य एकादशे॥ मुखबाहूरुपादेभ्यपुरुषस्याश्रमैसह। चत्वारोजज्ञिरेवर्णा गुणैर्विप्रादय:पृथक्॥ परावपुरुषंसाक्षादात्मप्रभवमीश्वरं। नभजंत्यवजानंतिस्थानाद्भ्रष्टा:पतंत्यध:२॥ वारैसिषयेवारैहीसेतरूपोहोतभये॥छप्पै॥ जगतसमुद्र अपारतासकैजेनमसरनतट। कामक्रोधमदलोभता सघनहरिंमैंमहाभट॥ मोहग्राहतन प्रबलनिगलिजावैसीसारा। तासैंगोताखात नाहिंकोउतनक अधारा॥ दुखपायेबूड़कलेतहैं सुखपायेउछरतजानि। दीनानाथरघुनाथबिन कौनछुटावैआनि॥

टीका॥धोसाएकगांवतहां श्रीरंगसुनामरहै बनिकसरावगीकीकथालैबखानिये। रहतोगुलामगयोधर्मराजधामवहां भयोबड़ोदूतकहीयेरेसुनिबानिये। आयेबनिजारेलैनदेखितदिखावैचैन बैलशृङ्गमध्यपैठिमार्योपहिंचानिये। बिनहरिभक्तिसबजगतकीयहीरीतिभयोहरिभक्तिश्री अनंतपदध्यानिये१२६ सुतकोदिखाइदेतभूतनितसूक्योजातपूछेंकहीबाततनवाहीठौरस्वायोहै।आयोनिशिमारबेकोधायोयहरोषभर्यो देवोगतिमोको उनबोलिकैसुनायोहै। जातकोसुनारपरिनारलगप्रेतभयो लयोतेरोशरणमें ढूंढ़जगपायोहै ।दीनोंचरणामृतलैकियो दिव्यरूप

वाकोअतिहीअनूपसुनो भक्तिभावगायोहै १२७॥ मूल॥ निर्वेदअवधिकलि कृष्णदासअन्नपरिहरियपयानकियो। जाकेशिरकरधरयोतासुकरतरनहिंआड्यो। अर्प्योपदनिर्वाणशोचनिर्भयकरिछांड्यो। तेजपुंजबलभजनमहामुनिऊरधरेता। सेवतचरणसरोजराइराणाभुबिजेता। दाहिनावंशदिनकरउदयसंतकमलहियसुखदियो। निर्वेदअवधिकलिकृष्णदासअन्नपरहरियपयानकियो १६॥

धर्मराजधाम॥ सवैया॥ जागत के हम पाहरू हैं पुनि सोवतकै गठिया सरकावैं। पटकोन करैं परकोधन चोरत दौरत चोरके शोरसुनावैं। हमही शिर भूत चढ़ाइसुजाइकै पाइधुवाइकै प्याइकुड़ावैं। याहीते नाथ बरोबरिहौ कछुधर्मअधर्मकीबातचलावैं१ चरणामृत॥ पाद्मे॥ गंगासागरसहस्राणिद्वारकायां सतैरपि॥ एकंतीर्थाधिकंपुण्यंसतांपादोदकंपिबेत् २ शिरकरधरयो॥ स्कान्दे॥ गुकारोरंधकारस्तुउकारोस्तैविनाशकृत्॥ अंधकारविनाशत्वाद्गुरुरित्यभिधीयते ३॥

टीका॥जाकेशिरकरधरयो तातरनऔड्योहाथदीनोबड़ोबरराजाकुल्हकोजुसाखिये। परवतकंदरामेंदरशनदीन्योआनिदियोभावसाधुहरिसेवाअभिलाखिये। गिरीजोजलेबीथारमांझतेउठाइबाल भयोहियेशालनिन अरपितचाखिये। लैकरिखड्गताहि मारणउपाइकियो जियोसंतओटफिरमौलकरिराखिये १८ नृपसुतभक्तबड़ोअबलौंबिराजमानसाधुसनमानमेंनदूसरोबखानिये। संतवधूगर्भदेखिउभयपनवारेदियेकहीगर्भइष्टमेरोऐसीउर आनियेकोऊभेषधारीसोव्योहारीपगदासनकोकहीकृपाकरोकहा

जानेऔरग्रानिये। ऐसैंतजिबोक्रियादेखिजगगुरोहोत जो तिबहुदईदामराममतिसानिये ११९ ॥ मूल ॥ पैहारीप रसादते शिष्यसबैभयोपारकर।कील्हअगरकेवलचरणव्र तहठीनरायन। सूरजपुरषापृथुतपूरहद्रिभक्तपरायन। प झनाभगोपालटेकटीलागदाधारी। देवाहेमकल्याणगंगा गंगासमनारी । विष्णुदासकन्हररंगाचांदमशिवरीगो विंदपर। पैहारीपरसादते शिष्यसबैभयेपारकर ४० ॥

विनअर्पित ॥ श्लोक ॥ विनार्पितंतुगोविंदे भोजनंकुरुते यदि ॥ श्वानोविष्टासमंचान्नतोयंचसुरपासमं १ भागवते ॥ येषांसंस्मरणात्पुंसांसद्यःशुद्ध्यन्तिवैगृहाः किंपुनःदर्शनस्प-र्शपादशौचासनादिभिः २ आगमे ॥ मालाधारक्षमाचोपि वैष्णवोभक्तिवर्जितः ॥ पूजनीयंप्रयत्नेनब्राह्मणाकिंतुमानुषैः३ मालातिलकसंचिन्हैसयुक्तोयःप्रदस्यते ॥ चांडालोपिमही पालपूजनीयोनसंशयः ४ साधुकेगुणअवगुणकछूनदेखैभगव तस्वरूपजानै ५ ॥

गांगेयमृत्युगंज्योनहीं त्योंकोल्हकरणनहिंकालबश। रामचरणचितवनरहतनिशिदिनलौलागी। सर्वभूतशिर नमितसूरभजनानँदभागी । सांख्ययोगमतिसुदृढ़कियो अनुभवहस्तामल। ब्रह्मरंध्रकरिगोनभयेहरितनकरणबि ल। सुमेरदेवसुतजगबिदित भुवविस्तार्योबिमलयश। गांगेयमृत्युगंज्योनहींत्योंकील्हकरणनहिंकालबश ४१

टीका सुमेरदेवकी॥श्रीसुमेरदेवपितासूबेगुजरातहुतेभये तनपातसोबिमानचढ़िचलेहैं।बैठेमधुपुरीकोमानसिंहरा-जाढिगदेखेनभतातउठिकहीभलेभलेहैं। पूछैंनृपबोलेका सोंकैसेकेप्रकाशोंकहोंकह्योहठपरेसुनअचरजरलेहैं।मान

सपठायेसुधिलायेसांचआंचलागी करोशाष्टांगबातमानी भागफलहैं ११६ ऐसेप्रभुलीननहींकालकेअधीनबातसु नियेनवीनचाहैरामसेवाकीजिये । धरीहीपिटारेफूलमा लहाथडारयो तहांब्यालकरकाट्योकह्योफेरिंकाढ़िलीजि ये । ऐसेहीकटायोबारतीनिहुलशायोहियोकियोनप्रभाव नेकसदारसपीजिये । करिकैसमाजसाधु मध्ययोबिराज- मान तजेदशैद्वारयोगीथकेसुनिजीजिये १२० ॥

चितवनि॥ दशमे॥मर्त्योमृत्युर्व्यालभीताःपलायन्लोकान् तेसत्युसर्वान्निर्भयंनाध्यगच्छन्॥ त्वत्पादाब्जंप्राप्ययदृच्छयाद्य खस्थःशेरस्मादपैति ॥ सप्तमे ॥तस्माद्रजोरोगविषादमन्यु मीनस्पृहाभयदैन्याधिमूलं ।। हित्वागृहंसंसृतिचक्रवालंन्र सिंहपादं भजताकुतोभयं ३ ज्ञानवैराग्ययुक्तेन भक्तियोगे नयोगिनः क्षेमायपादमूलंमे प्रविश्यंतिकुतोभयं३ ॥ दोहा॥ मारिबेमरिजाइये छूटिपरैसंसार । अहमदमरनोकोवदै दिनमेंसौसौवार ४ तापैदृष्टांतराजाके गुलाम ने विषकी गोलीखाई सोमरेउ नहीं ॥

मूल ॥ श्रीअग्रदासहरिभजनबिन कालवृथानहिंबि तयो । सदाचारज्योंसंतप्रीतिजैसेकरिआये । सेवासुमि- रणसावधानचरणराघवचितलाये । प्रसिद्धबागसोंप्रीति सुहथकृतकरतनिरंतर ।रसनानिर्मलनाममनोवर्षतधारा धर । श्रीकृष्णदासकृपाकरीभक्तदत्त मनबचक्रमकरिअट लदियो । श्रीअग्रदासहरिभजनबिनकालवृथानहिंबित यो ४२टीकाअग्रदासजीकी॥ दर्शनकाजमहाराजमान सिंहआयोछायोबागमाहिंबैठेद्वारद्वारपालहैं । झारिकैप तौवागयेबाहिरलैडारिबेको देखीभीरभाररहेबैठियेरसा

लहैं॥ आयेदेखिनाभाजूनेउठिशाष्टांगकरी भरीजलआरैं चले अँशुवनिजालहैं । राजामगचाहहारिआनिकैंनिहारे नैनजानीआपजातिभयेदासनिदयालहैं१२१॥

काल ष्थानहिं बितयो॥ कुण्डलिया॥ आगिलगं तेझोपरा जोनिकसै सोलाभ। जोनिकसै सोलाभदेखि मानुषतनचोरी। जैलोषिकी श्वासजातआवत न वहोरी ज्योंकरअंजलि माहिं घटतजल थिर न रहाई। करिआर तहरभजनसाधिकायावधगाई। अगरकहांलगियेगरीदीजै फाटेआभ। आगि लगंतेझोपरा जोनिकसै सोलाभ १ सो श्रीअग्रदास अष्टपहर भजनहीमें लगेरहैं सोतो कालदो नोहीको गयो अभजनीहूं को और भजनीहूं को गयो हाथ तौकाहूके न आयो एक ब्राह्मणने रुपइयासाधुनको खवायो एकके गैलमें लटिलि येऐसे एक कोतो माल ठि-कानेगयोएक को ष्घाहीं गयो ऐसे अग्रदास जीको माल ठिकानेजाय जैसेनाव बहुत भरीतो बूड़िही जाइ थोरी भरीहोइतो पारलगिजाइ ऐसेही व्योहारीथोरो व्यो-हार करैतो हरिको भजनकरि पार उतरि जाइ बहुत करैतो संसारमेंबूड़िजाइ २॥

मूल॥कलियुगधर्मपालकप्रगटेआचारजशंकरसुभट। उतश्टंषलअज्ञानजितेअनईश्वरबादी। बौधकुतर्कीजैनऔ रपाषंडहैआदी॥बिमुखनिकोदियो दंडऐंचिसनमारगआ नैं। सदाचारकीसीवबिश्वकीरतिहिंबखानैं ईश्वरअंशअ वतारमहिमर्य्यादामाड़ीअघट। कलियुगधर्मपालकप्रगट आचारजशंकरसुभट ४३॥ टीका संकराचार्यकी॥ बिमु खसमूहलैकेकियेसनमुख श्यामअतिअभिरामलीलाजग बिस्तारीहै। सेवराप्रबलवासेकेवराज्योंफैलिरहेगहेनहीं

जाहिवादीशुचिबातधारीहै । तजिकैशरीरकान्हनृपमेंप्रवेशकियो दियोकरिग्रंथमोहमुन्दरसुभारीहै । शिष्यनिसोंकह्योकभूंदेहमेंप्रवेशजानों तबहींबखानोंआनिसुनिकीजैन्यारीहै १२२ जानिकैप्रवेशतनशिष्यनेप्रवेशकियोरावलेमेंदेखिसोंश्लोकलै उचार्योहै। सुनतहीतज्योतननिजतनआइलियोकियोसोप्रनामदासपनपूरोपार्योहै। सेवराहरायेबादीआयेनृपपासऊंचीछातिपरबैठिएकमायाफंददार्योहै। जलचढ़िआयोनावभावलैदिखायोकहैंचढ़ोनहींबूड़ोआपकौतुकसोंधार्योहै १२३॥

कलियुग धर्म ॥ एकादशे ॥ कृतेयध्यायतेविष्णुं त्रेतायांयजतोमखैः ॥ द्वापरेपरिचर्य्यायांकलौतद्धरिकीर्त्तनात् १ हरेर्नामैवनामैवनामैवममजीवनं ॥ कलौनास्त्येवनास्त्येवनास्त्येवगतिरन्यथा २ प्राप्तेसन्निहितेनहिंनहिरक्षे नहिनहिरक्षतिडुकृञ्करणे॥ भजगोविंदंभजगोविंदंगोविंदंभजमूढ़मते ३ शिंगारशुचिउज्ज्वलइत्यमरः ४ नलिनीदलगतिजलवततरलं। तद्वतजीवनमतिशयचपलं॥ क्षणमपिसज्जनसंगतिरेका। भवतिभवार्णवतरणेनौका ५॥ कुण्डलिया ॥ मीया धरानि कासियैतरकसकाहा धरौं। तरकसकहांधरौं प्रथम जीवननिर्णय करि॥ पलकमाहिं प्रस्थानजीव पुनि चलिहै परिहरि। द्यावतगहरी नींव सदन नोहरावगीचा॥अस्व गजरथ परवानकोऊ ऊंचाअरुनीचा। अगर डरत ते मृत्युतै तिन ते अधिक डरौं। मीया धरानिकासियोतर्क०॥

आचारजकहीयों चढ़ावोइनसेवरानिराजानैंचढ़ायेगिरिढकउडिगयेहैं।तबतौप्रसन्ननृपपाइंपर्योभावभर्योकह्योजोइकह्योधर्मभागवतलयेहैं। भक्तिहीप्रवारपाछैमा-

पावादडारिदीनौंकीनोंप्रभुकह्योकितेबिमुखहूभयेहैं। ऐसे सोगम्भीरसंतधीरवहरीतिजानैंप्रीतिहीमेंसानेहरिरूपगु णनयेहैं १२४ ॥ मूल ॥ नामदेवप्रतिज्ञानिर्वहीज्योंत्रेता नरहरिदासकी। बालदशाबीठलयपानजाकेपयपीयो। मृ- तकगऊजिवाइपरचोअसुरनिकोदीयो। सेजसलिलतेका ढ़िपहलेजैसीहिहोती। देवलउलटोदेखिसकुचिरहेसब हीसोती। पंडुरनाथकृतिअनुगत्योंछानिसुकरछाईदास की। नामदेवप्रतिज्ञानिर्वहीज्योंत्रेतानरहरिदासकी४२॥

कीनो प्रभु कह्यो ॥ पद ॥ द्वापरादौयुगेभूत्वा कलया मानुषादिषु। स्वागमैकल्पितैस्त्वंहिजनान्मद्विमुखान्कुरु १ आससोगंभीर ॥ नमस्कृपाणेहरेवासुदेवेप्रभोतिभवारिमु- रारे मुकुंद ॥ नमस्तुभ्यमित्याळयंतंमुदामांकुरुश्रीपते त्वत्प दांभोजभृंगं २ ॥ प्रतिज्ञापद ॥ आये मेरे अंधरे घरके मद- नराइ। चांकी चाटैं चूनखाइ ॥ तुव गुरु गरूग प्रभुजूकी चालि। पूंछहलै ज्यौं जौकी बालि ॥ चूल्है माहिं जुप्रभु जू की सेज। छीकेकीनो अधिकै तेज ॥ कातिक मेंजु प्रभु जी को भोग। लैलै लकुट खिजावैं लोग। तीनि पाप प्रभु मेटन योग। नामदेवस्वामि बन्यो संयोग २ परजा पतिके चित न्हीं चढ़ै। संजारो के पुच अवां में उबारें ॥ आवलगैनत- पै तन बासन। राखिलये हरिनैं बिश्वासन ३ ॥

टीका नामदेवजूकी॥ छीपावामदेवहरिदेवजूकोभक्तव ड़ोताकीएकबेटीपतिहीनभईजानिये। द्वादशबरषमांझ भयोतबकहीपितासेवासावधानमननीकेकरिआनिये। तेरे जेमनोरथहैंपूरणकरनयेईजोपैदत्तचित्तह्वैकै मेरीबातमा नियेकरतटहलप्रभुवेगिहीप्रसन्नभये कीनीकामबासना

सुपोषीउनमानिये १२५ बिंधवाकोगर्भताकीबातठौरठौर चलीदुष्टशिरमौरनिकीभईमनभाइये । चलतचलतबाम देवजूककानपरीकरीनिरधारप्रभुआपअपनाइये। भयोजू प्रगटबालनामनामदेवधर्योकर्योमनभायो सबसंपति लुटाइये। दिनदिनबढ्योकछूऔरैरंगचढ्योभक्तिभावअंग मढ्योकढ्योरूपसुखदाइये १२६ खेलतखिलौनाप्रीति रीतिसबसेवाहीकी पटपहरावैंपुनिभोगकोलगावहीं। घंटालैबजावैंनीकेध्यानमनलावें त्योंत्योंअतिसुखपावैंनैननी रभरिआवहीं। बारबारकहैंनामदेवबामदेवजूसोंदेवोमो- हिंसेवामांझअतिहीसुहावहीं । जाऊंएकगांवफिरिआंवो दिनतीनमध्यदूधकोपिवावोमतिपोषोमोहिंभावहीं१२७॥

बिपति ॥ दोहा ॥ बड़ेबड़ेभोगैंबिपति छोड़ेदुखतेदूरि। तारेन्यारेह्वैरहै गहतचंद अरुसूर ॥ १ ॥ कामबासना॥ द्वितीयेअकाम: सर्वकामोवा मोक्षकामउदारधी: । तीब्रेण भक्तियोगेन भजेतपुरुषंपरं ॥ २ ॥ प्रीतिरीति ॥ छप्पै ॥ कठिन प्रीतिकोरीति कठिन तनमन बशकरिबो । कठिनहै कर्मनिकंद कठिनभवसागर तरिबो । कठिनसंकटमेंदान कठिन संभ्रमकोसमता । कठिनहै परउपकार कठिनमन मारनममता। बचननिबाहन अतिकठिन निधननेहपालन कठिन । मुनिईश्वरसिखवत चतुर नर ज्ञान युद्ध जीतन कठिन॥ ३ ॥

कौनवहबेरजिहिबेरदिनफेरिहोइफेरिफेरिकहैं वहोबे- रनहींआइहै । आईवहबेरलैंकराहीमांझहेरिदूधडार्यो युगसेरमननीकेकैबनाइये। चौंपनिकढेरलागीनिपटऔसे रहगआयोनीरघेरिजिनिगिरेघूंटिजाइये । माताकहैंटेर

करीबड़ीतेअबेरअबकरौमतिझेरेअजूचित्तदैऔटाइये १२८
चल्योप्रभुपासलैकटोराकबिरासितामेंदूधसोसु बासमध्य
मिश्रीमिलाइये। हियमेंहुलासनिजअज्ञताकोत्रासऐयेक-
रैजोपैदासमोहिंमहासुखदाइये। देख्यौमृदुहासकोटि
चांदनीकोभासकियोभावकोप्रकाशमतिअतिसरसाइये।
प्याइबेकीआशकरि ओटकछुभर्योश्वास देखिकैनिराश
कह्योपीवौजूअघाइये १२९॥

फेरिफेरि॥ कबित्त॥ दिनतोनघटत औ घटत प्राणपल
पल लालमुखचंदको बिरोधी पलनाटरै। कबकोनिहारि
रही रबिनतजतठौर बीतेयुगकोटि तऊनेकहू नहींटरै॥
तूतौरी कहतश्याम रजनी मिलायदैहौं मिलिबो न मेरे
बांट मरिबोइलैधरै। वानिपतिबरनिवानाईऊती बिधि
नेजुकेरिमनआई मेरे राचिदिनकोकरै १॥ चौपाई॥
कुंवरिकहै सखिया शशिराजै। राऊराउ क्योंगिलिगिलि
छाजै॥ सखिकहैराऊअमृतजबपियो। तेरेकांत खंडबिबि
कियो॥ उदरनहीं तौनैयहंपचै। निकसिनिकसि बिरही
जनतचै॥ कुंवरिकहै दोउखंडनिमाहीं। जराआनिकिनि
लेऊजुराहीं २॥ दोहा॥ कैअहरनि परधरिसुकरसुकर
लोहघनलेऊ। अबहींआनिपरैजहां तबहीं ता शिरदेऊ ३
कौनदिवसआयोहैसजनी। ढूंढुअनलजरधैहैरजनी॥ भलो
करैजो यादिनमाहीं। प्राणपियारो आवैनाहीं ४॥

ऐसेदिनबीतदोइराखीहिये बातगोइरह्योनिशिसोइये
पैनींदनहींआवही। भयोजूसवारौफेरिवैसेहीसुधारिलियो
हियोकियोगाढ़ौजाइधरयोपीवौभावही। बारबारपीयोक
हुंअबतुमपीवोनाहिंआवैभोरनानागरैछुरीदेंदिखावही। ग
हिलियाकरजिनिकरिऐसीपीवौमेंतो पीवेकोलगईनेकरा

खोसदापावही १३० आयेबामदेवपाछेपूछैनामदेवजूसों दूधकोप्रसंगअतिरंगभरिभाषिये। मोसोंनपिछानिदिन दोइहानिभईतब मानिडरप्रानतज्योंचाहौंअभिलाषिये। पियौसुखदियोजबनेकुराखिलियो मैंतौजियोसुनिबातैक हीप्यायोकौनसाखिये। धर्योपैनपीवैअर्योप्यायोसुख पायोनानायामेंलैदिखायोभक्तबशरसचाखिये १३१॥

सदापावही तबतौ भगवानने हंसिदियो॥भागवते॥ न देवोविद्यतेकाष्ठे नपाषाणेनमृण्मये। देवोहिविद्यतेभा- वात्तस्माद्भावोहिकारणं १ प्रतिमामंत्रतीर्थेषु भेषजे वैष्णवेगुरौ। यादृशीभावनायस्य सिद्धिर्भवतितादृशी २ जिवाइगाइ॥पद॥विनतीसुनुजगदीशहमारी॥ तेरौदास आशसोंहितेरी हूतकरोकानमुरारी। दीनानाथदीनहै टेरत गाइहि क्योंनहिं ज्यावो। आछेसबै अंगहैयाके मेरे सशहिबढ़ावो। जाकडुंयाकीकर्मभमेंनहिं जीवनलिख्योबि- धाता। तौनामदेवकी आयुर्दासों हाऊतुमहिं प्रभुदाता॥ ३ भक्तबछलभगवानहैं दृष्टांतव्यासको॥ शिशुपालजबव्या- सकी लेगये तबसरो॥ वेदशास्त्रप्रमाणंतुनकरोत्यधमोनरः। धर्म्मानीधमभक्तोहीनरकंयातिनित्यशः ४॥

नृपसेंमलेक्षबोलिकहीमिलसाहिबकोदीजियेमिलाइ करामातदिखराइये। होइकरामातितौपैकाहेकोकसबकरै भरैदिनऐसेबांटिसंतनिसोंखाइये। ताहीकेप्रतापआपइ- हांलोबुलायेहमैं दीजियेजिवायगाइघरचलिजाइये। दै लैजिवाइगायसहजसुभावहीमें अतिसुखपाइपाइपरौमन भाइये १३२ लेवोदेशगांवयातेमेरोकछूनामहोइचाहिये नकछूदईसेजमणिमईहै। धरिलईशीशदेउसंगदशबीसनर

नाहींकरआयेजलमांझडारिदईहैं । भूपसुनिचौंकिपर्यो लावोफेरिआयेकहौ कहीनेकुआनिकेदिखावोकीजैनईहैं । जलतेनिकासिबहुभांतिगहिडारीतट लीजियेपिछानिदेखिसुधिबुधिगईहैं १३३ आनिपर्यो पाइँप्रभुपासते बचाइ लाजै कीजै एकबात कभूंसाधुनदुखाइये । लेइ यहीमानि फेरिकीजिये नसुधि मेरी लीजिये गुणनि गाइ मंदिर लोंजाइये । देखी द्वारभीर पगदासी कटि बांधीधीर करसों उछीर करिचाहैं पदगाइयें । देखिलीनी वेईकाहू दीनीपांच सात चोट कीनी धकाधूकीरिस मनमेंनआइये १३४ बैठेपिछवारेजाइकीनीजुउचितयह लीनीजोलगाइचोटमेरेमनभाइये । कानदैकैसुनोअबचाहतनऔरकछूठौरमोकोयहीनितनेमपदगाइये । सुनत हीआनिकरिकरुणाबिकलभजे फेर्योद्वारइतेगहिमंदिर फिराइये । जेतिकवेसोतीमोतीआवसीउतरिगई भई हियेप्रीतिगह्योसबसुखदाइये १३५ ॥

साधुन दुखाइबेदोहा ॥ साधुसतायेतीनहानि अर्थ धर्म अरुबंश । टीकानीकेदेखिलै कौरव रावण कंस ॥ १ ॥ सुधि मेरी ॥ अतिशीतलता कहकरै कालूकेडैलागि । मथतमथत ही ऊपजै चंदनहूतेआगि ॥ २॥ घासबासना हियेबन ऊपर ते जरिजाइ । बिषयीबरषाके मिले ऊगैअंकुरपाइ ॥ ३ ॥ पदगाइये॥ पद ॥ हीनहोजातिमेरीयादवराइ ॥ कलिमें नामा हूंकाहेको पठायो तालपखावजबाजे पातुरिना चै हमरीभक्ति वोठल काहेकोराचै ॥ पंडवप्रभुजूबचनसुनी जै । नामदेवस्वामी दरशनदीजै ॥ ४ ॥ मंदिरके पिछवारे बैठिकै यहपदगायो तबप्रभुनेबिचारो यहभजन मेरेऊपर कहेउ प्रसन्न ह्वैकै तुरत आइमिलेअबतूकहैसोकरौं ५॥

मंदिरफिरायो॥पद ॥ उठिभाई नाम देवपरै ह्वै जाइ यहांदुबेतिवारी बैठेआइ। ब्राह्मणबनिया उत्तमलोग।यहां नहींनामदेवतुम्हरोसंयोग।नामदेवकमरीलई उठाइ मंदिरपाछेबैठेजाइ।पायँनघुंघरू हाथनिताल।नामदेव गावैगुण गोपाल।मंदिरऊपर छाजा फेरहरी उलटि द्वारनामातन करै।नामदेव नरहरि दर्शनपाये।बांह्पकरि ढिग लैबैठाये।दोऊ हिलिमिलिएकैभये।दासकबीर अचंभैरहे१॥

औचकहीघरमांझसांझहीअगिनिलागीबड़ोअनुरागी रहिगईसोऊडारिये । कहैआयोनाथसबकीजियेजूअंगीकार हँसेसुकुवारहरिमोहीकोनिहारिये । तुमरोभवन औरुसकैकौनआइयहां भयेधोप्रसन्नछानिछाईआपसारिये । पूछैंआनिलोगकौनेछाईहोछवाइलीजै दीजेजोई भावै तनमनप्राणवारिये १३६ सुनोऔरपरचैजेआयेन कवित्तमांझबांझभईमाताक्योंनजौनमतिपागीहै। हुतो एकसाहतुलादानकोउछाहभयो दयोपुरसबैरहोनामदेव रागीहै । लेवोजूबुलाइएकदोइतौफिराइदिये तीसरेसों आयेकहाकहौंबड़भागीहै।कीजियेजूकछूअंगीकारमेरोभ लोहोइ भयोभलोतेरोदीजैजोपैआशलागीहै १३७ जाके तुलसीहैऐसेतुलसीकेपत्रमांझ लिख्यौआधोरामनामयासोंतौलिदीजिये।कहापरिहासकरौढरौहवैदयालदेखिहो तकैसोख्यालयाकोपूरोकैरीझिये।लायोएककांटौलैचढ़ायोपातसोनासंग भयोबड़ोरंगसमहोतनाहिंछीजिये। लईसोतराजूजासोंतुलैमनपांचसातजातिपांतिहूंकोधनधरेउ पंनधीजिये १३८ परयोशोचभारीदुखपावैनरनारीनाम देवजूबिचारीएककामऔरकीजिये । जितेब्रतदानऔअ-

स्नानकियेतीरथमें करियेसंकलपयापैजलडारिदीजिये। करेहुउपाइपातपलाभूमिगाड़ेपाइ रहेदेखिसाइकह्योइत-नोहीलीजिये। लैकैकहांधरैंसरवरहूनकरैंभक्ति भावसों लैभरेहियेमतिअतिभीजिये १३६ ॥

कीजियेजू अंगीकार ॥ श्लोक ॥ जलेविष्णु स्थलेविष्णु र्विष्णु:पर्वतमस्तके। ज्वालामालाकुले विष्णु:सर्वंविष्णुमयं जगत् १ पूछैं आनिलोग बैठिपादियोतजाइ माई।लोग परो सिनपछैंरेनामा किनियहछानिछवाई। तातेअधिकमंजूरी दहौं वेगिछि देऊवताई। बैठियाप्रीति मंजूरी मांगै नो-कोईछानिछवावै। भाईबंधुसंगसोंतोरैबैठियाआपछिआवै। जूठफल शिवरीकेखायेंऋषिस्थान बिसरावै। दुर्योधनकेमेवा त्यागे शाकविदुरघरखावै। कंचनछानिपञ्चपटदीने प्रीतिकी गांठिजुराई। गोविंदकेगुण भनै नामदेव छिन यहछानिछ वाई॥जाकेतुलसीहैं॥दृष्टांत। कञ्चित्तुलसीकल्याणि गोविंद चरणप्रिये १ तापैस्कंधपुराणकी कथाहैहै इंद्रलोकते पा-रिजातलाये नारदजी यातेव्रतदानको बड़ो अभिमान हो ताके छोड़बे को यतनकियो। जैसे ऊपर को ज्वर गयो भीतर को विषम ज्वर खोयो चाहै व्रतदान धर वाये सो पूरे न भये॥ श्लोक॥ गो कोटिदानं ग्रहणे षुकाशी माघ प्रयागे यदि कल्पवासो। यज्ञायुतं मेरु सुवर्णदानं गोविंदनाम्ना नभवंतितुल्यं २॥ कवित्त॥ मेरुसम हेमदान रतन अनेक दान गज दान भूमि दान अन्नदान करैंहीं। मोतिनके तुलादान मकर प्रयाग न्हान ग्रहण में काशीवासचित्तमाहिंधरहीं।सेजदान कन्यादान कुरुक्षेत्रमें गोदान येते सै पापहु तौ नेकु नाहिं हरहीं। कृष्णके शरी रको नाम इकबार लियो ध्रुव पापी तीन लोक के सोच्यण माहिं तरहीं ३ ॥ गज दान कैसो है जैसे च्यवन ऋषी श्वरको ४ ॥

कियोरूपब्राह्मणकोदूबरोनिपटअंगभर्योहियेरंग ब्रतपरचेकोलीजिये। भईएकादशीअन्नमांगतबहुतभूखोआजतौनदेहोंभोरचाहैजितौलीजिये। कर्योहठभारीमिलिदोऊताकोशोरपर्योसमझावैनामदेवयाकोकहाखीजिये। बीतेयामचारिमरिरहेयोंपसारिपाइंभावपैनजानैंदई हत्यानहींछीजिये १४० रचिकैचिताकोविप्रगोदलैकैबैठेजाइदियोमुसुकायमैंपरीक्षालीनीतेरीहै। देखीसोसचाईसुखदाईमनभाईमेरेभयेअंतर्द्धानपरेपांइप्रीतिहेरीहै। जागरणमांझहरिभक्तनकोप्यासलागीगयेलेनजल प्रेतआनिकीनीफेरीहै। फंटतेनिकासितालगायोपदततकालबड़ेईकृपालरूपधर्योछविहेरीहै१४१॥

गायोपद ततकाल ॥पद॥ येआये मेरेलंबकनाथ। धरणीपाइस्वर्गलों माथा योजन भरिभरिहाथ। शिवसनकादिकपारनपावैंतेसेई सखाविराजत साथ। नामदेवकेस्वामीअन्तर्यामीकीनोंमोहिंसनाथ१नवरस ॥छप्पै॥श्रीवृषभानकुंवारिहेतशृंगाररूपभय।हास्य वास्यरस हरेमात बंधन करुणामय। केशीप्रतिअति रुद्रबीर मारयोवत्सासुर। भय दावानलपानकियो बिभत्सवकीउर। अति अद्भुतबच बिरंचमति शांत सुसंतति शोचचित। कहिकेशव सुमिरौं सदा नवरसमें ब्रजराजमित२॥कवित्त॥ बीरही को काम याते समर मनाइबेको करुणा दिखाइ दूती बिरह सुनाई है।उलटिबिहारसो अद्भुतको लखि सीखी सवर घांतहास्यरीतिपाईहै। गुरुजनको अहटभयानक बिभत्संअंतसंतह्म मनाइबो न आइवोरुदाईहै। औरनिको सदनमाहिंरसराजजानकैसेराजाकेसदनमाहिंसबकोसमाईहै॥३॥ जयदेव कविबड़ो भक्तराजहै ४।५।६॥

मूल॥ जयदेवकविनृपचक्कवैखंडमंडलेश्वरआनिकवि। प्रचुरभयोतिहूंलोकगीतगोबिंदउजागर। कोककाव्यनवरससरसशृंगारकोआगर। अष्टपदीअभ्यासकरैतिहिबुद्धिबढ़ावै। राधारवनप्रसन्नसुनतहांनिश्चैआवै। संतसरोरुहखंडकोपदमावतिसुखजनकनरबि। जयदेवकविनृपचक्कवैखंडमंडलेश्वरआनिकवि ४४ टीकाजयदेवकी॥ किंदुबिलुग्रामतामें भयेकविराजराजभर्‌यो रसराजहियेमनमनचाखिये। दिनदिनप्रतिरुखरूखतरजाइरहेगहेएकगूदरीकमंडलकोराखिये। कहीदेवैविप्रसुताजगन्नाथदेवजूको भयोयाकोसमयचल्यो देनप्रभुभाखिये। रसिकजयदेवनाममेरोई स्वरूपताहिदेवो ततकालअहोमेरीकहोसाखिये १४२॥

सुखजन॥ दोहा॥ जलजमीत जलरविनदिनखुलैनिवारणधाम॥ निशिको अमृत पीवयह जानिमुदैअभिराम १ रुखरूखतर॥ भागवते॥ सत्यांक्षितौ किंकशिपोप्रयासैर्वाहौस्वसिद्धे ह्युपबर्हणैः किम्॥ सत्यांजलौ किंपुरुधान्यपात्र्या दिग्वल्कलादौ सतिकिन्दुकूलैः २ चीराणिकिंपथिनसंतिदिशंति भिक्षांनैवांघ्रिपाःपरभृतःसरितोप्यशुष्यन्। रुद्धागुहाकिमजितोवतिनोपपन्नान् कस्माद्भजंतिकवयोधनदुर्मदांधान् ३॥ सवैया॥ शीतजोशीतसतोंवै शरीरतोचोरिलैपंथकेकंथाबनाइये। प्यासलगैवहतोजलपीजियेभूखलगैफलरूखकेखाइये। छांहचहैतोगुफागिरिकोगहिकानसोंआननरचकपाइये। क्योंधनअंधपैजाइसुहाइकितेहित आपनपैकोदिखाइये ४ जे कोई भक्तजनहैं ताको यही शिक्षाहै उपेक्षाहै जैसेजयदेव कविको सांचप्रभूको आयोहे। यपांवकट। ये पैमनमें विषादनआयो अपने शरीरहीको दोषल-

गावैं ऐसो सांचबिश्वास आवै अरु युगयुग के प्रणामप्रता पीकहावै जयदेवकविबड़े भक्त हैं ५ ॥

चल्योद्विजतहांजहांबैठेकविराजराज अहोमहाराजमेरीसुतायहलीजिये । कीजियेबिचारअधिकारविस्ताररंजाके ताहीकोनिहारिसुकुमारियहदीजिये । जगन्नाथदेवजूकीआज्ञाप्रतिपालकरौटरौमतिधरौ हियेनातोदोषभीजिये। उनकोहजारसांहैंहमकोपहारएकतात्तफिरिजावौतुम्हैंकहाकहिखीजिये १४३ सुतासोंकहततुमबैठीरहौयाहीठौरआज्ञाशिरमौरमेरेनहींजातटारिये । चल्यौअनखाइसमझाइहारेबातनिसोंमनतू समुझिकहाकीजैशोचभारिये। बोलेद्विजबालकीसोंआपनोबिचारकरौ धरौहियेध्यानमोपैजातनसँभारिये। बोलीकरजोरिमेरोजोरनचलतकछूचाहोसोईहोहुयहवारिफेरिडारिये १४४ जानीजबभईतियाकियोप्रभुजोरमोपै तौपैएकझोपड़ीकीछायाकरिलीजिये। भईतबछायाश्यामसेवापधराइलई नईएकपोथीमेंबनाउमनकीजिये । भयोजूप्रगटगीतसरसगोविंदजूको मनमेंप्रसंगशीशमंडनकोदीजिये । यहीएकपदमुखनिकसतशोचपर्‌यौधर्‌यौकैसेजातलालिख्योमतिरीझिये १४५॥

मनतूसमुझ ॥ कुण्डलिया ॥ बाप न मारी पोदनी बेटा तीरंदाज। बेटा तीरंदाज बिषैत्यागी तन कन मन। कहा इंद्रियनि सधै दुखनि में रधै इयातन॥ नफा आप नेकु सब और तौ मूल गवावै। यों मन के अनुसार चलै तनहूं सुख पावै ॥ यह बिचारि चित चेतिये नातरुहोइ अकाज। बाप न मारी पोदनी बेटातीरंदाज १ छायाकरिलीजिये॥ श्लोक॥द्वाविमौपुरुषौलोकेशिरशूलकरौपरौ। गृहस्थश्च

निरारंभोयतिनक्षपरिग्रहः २ श्रीमंभंडलस्मरगरल खंडनं मम्शिरसिमंडनं देहिपदपल्लवमुदारं ३ लिख्योमतिरी-भिये जयतिपद्मावतीरवन जपदेवकविभारतीभषितनति शांतंकंयोप्रबंधः ४ ॥

नीलाचलधामतामेंपंडितनृपतिएक करीवहीनामधरिपोथीसुखदाइये। द्विजनिबुलाइकहीवहीहैप्रसिद्धकरौ लिखिलिखिपठौदेशदेशनिचलाइये। बोलेमुसकाइविप्र क्षिप्रसोंदिखाइदई नईयहकोईमतिअतिभरमाइये। धरी दोउमंदिरमेंजगन्नाथदेवजूके दीनीयहडारिवहहारलपटाइये १४६ परयोशोचभारीनृपनिपटखिसानोभयो गयोउठिसागरमेंबूडोंयहबातहै। अतिअपमानकियोकियो मेंबखानसोई गोईजातिकेंसेश्रांचलागिगातगातहै। आज्ञाप्रभुदईमतिबूडैतूसमुद्रमांझ दूसरोनग्रंथवैसोव्रथातन पातहै। द्वादशश्लोकलिखिदीजेसर्गद्वादशमें ताहीसंग चलैजाकीख्यातपातपातहै १४७ सुताएकमालीकीजुबैंगनकीबारीमांझ तोरैबनमालीगावैकथासर्गपांचकी। डोलैंजगन्नाथपाछेकाछेअंगभिहीझंगा आछेकहिघूमेसुधि आवैबिरहआंचकी। फट्योपटदेखिनृपपूछीअहोभयोकहा जानतनहमअबकहौंबातसांचकी। प्रभुहीजनाईमनभाई मेरेवहीगायालायेवहबालकीकोपालकोमेंनाचकी १४८॥

बोलेमुसिकाईं॥दोहा॥ अकथ कहानी प्रेमकी कहीन मानै कोइ। कोइकाजानि वलककें जाहिर बीती होइ १ जैसे लैलैने मजनूको बुलायो अगिनि में तापै पोली को दृष्टांत अरुपतंग माखी को २ विरह आंचकी॥ श्लोक॥ धीरसमीरे यमुनातीरे वसतिबनेबनमाली गोपी पीनपयो

धरमर्दन चंचल कर युग शाली । पीनपयोधर भारभरेण हरिंपरिरभ्यसरागं । गोपवधूरनुगायतिकांचिदुदंचितपंचमरागं। कापिविलासविलोलविलोचन खेलनजनित मनोजं ३ ॥

फेरोनृपडोंड़ीयहओड़ीबातजानीमहा कहाराजारंक पढ़ैनीकीठौरजानिकै । अक्षरमधुरऔरुमधुरसुरनिहीसों गावैजबलालप्यारीढिगहीलैमानिकै । सुनोयहरीतिएक मुगलनेधारिलई पढ़ैचढ़ेघोरेआगेश्यामरूपठानिकै । पोथीकोप्रतापस्वर्गगावतहैंदेववधू आपुहीजोरीझेलिख्यौ निजकरआनिकै १४९ पोथीकीतौबातसबकहींमेंसुहात हियेसुनोऔरबातजामेंअतिअधिकाइये । गांठमेंमुहरमग चलतमेंठगमिले कहौकहांजातजहांतुमचलिजाइये । जानिलईआपखोलिद्रव्यपकराइदियो लियोचाहोजोईसोई सोईमोकोलाइये । दुष्टनिसमझिकहीकीनीइनबिद्याअहो आवैजोनगरइन्हैंवेगिपकराइये १५० ॥

श्यामरूपठानिकै ॥ मीरमाधवलाहौरके मुगलफकीर भये सो॥पद॥ दिल जानप्यारे श्याम टूकगली असाड़ी आवरे । सांवरे बदन ऊपर कोटि मदनवारे तेरी जुलफैं दिलदी कुलफैं दोऊ नैन हैं सितारे॥ तेरी खूबीके देखनेको नैन तरसैं हमारे। जलजो कठोर होवै मीनज्यों जीवै बिचारे । कृपा कीजै दर्शन दीजै मीरमाधौ को नंद केदुलारे १ ॥ पोथी को प्रताप ॥ राजाबीर बिक्रमाजीत की सभामें देवता आये तब राजाने सभा में गीतगोबिंद गवायो।देवताओंनेकही याकोतोहमारे सदा गावैहैं याको फलसुखकी उत्पत्तिकरैहै २॥ द्रव्यपकरायो॥श्लोक॥ लोभमूलानिपापानिरसमूलानिव्याधयः॥ स्नेहमूलानि

दुःखानितस्मादेतत्त्रयंत्यजेत् ३॥ समझिकही दुष्ट तीनि प्रकार के हैं। उत्तम मध्यम कनिष्ट सज्जन तीनि प्रकार केहैं। आगे गुणिन वेद निगुणार बिंद करि बतायेहैं ४॥

एककहैडारोमारिभलोहैबिचारयही एककहैमारोम-तिधनहाथआयोहै। जेपैलेपिछानिकहूंकीजियेनिदान कहाहाथपांवकाटिबड़ेगाढ़पधरायोहै। आयोतहांराजा एकदेखिकैबिबेकभयो छपोउजियारोऔप्रसन्नदरशायो है। बाहिरनिकसिमानौचंद्रमाप्रकाशराशि पूछोइतिहास कह्योऐसोतनपायोहै १५१ बड़ोईप्रभावमानिसकैकोब-खानिअहो मेरेकोऊभूरिभागदरशनकीजिये। पालकीबि ठायलियेकियेसबढूढ़िनीके जीकेभायेभयेकछुआज्ञामोहिं दीजिये। करोहरिसाधुसेवानानापकवानमेवा आवैंजोई संततिन्हैंदेखिदेखिभीजिये। आयेवेईठगमालातिलक बिलककियेकिलकिकैकहीबड़ेबंधुलखिलीजिये १५२ नृपतिबुलाइकहीहियेहरिभायभरठरेतेरेभागअबसेवाफ-लीजिये। गयोलैमहलमांझटहललगायेलोग लागेहो नभोगजियशंकातनछीजिये। मांगैबारबारबिदाराजान-हिंजानदेत अतिअकुलायकहीस्वामीधनदीजिये। दैकै बहुभांतिसोपठायेसंगमानसहू आवौपहुंचाइतबतुमपर रीझिये १५३॥

हाथ पावकाटे॥ भगवान में भलो सनेह कियो तहां टीकाकार ने लिख्यो है जयदेव मेरोही रूपहै सोहाथ पांव कटाइकै आपसों कियौ॥ फेरि ख्यात करिबे को आछे करिदिये कहैं नाम कौनको लोजै कोऊ काल

कोऊ ईश्वर कोऊ ब्रह्म येन जान्यौ साक्षात् धर्मही
हैं ऐसे परीक्षित लोकहोकी हियेहरि भाव भारेहीहृ
दयेबाहुहै ॥ इतिश्रीलोचारीताके अर्थ विषयकतेहै । तांते
समझौती सें समझाये हें ॥ श्री दामोदर नारायण वृंदा-
बन वासुदेव मधुसूदन मुरारी १ ॥

पूंछैनृपनरकोऊतुम्हरीनसरवरिहैजितेआयेसाधुऐसी
सेवानहिंभईहै । स्वामीजूसोंनातोकहाकहोहमखाहिंहा
हाराखियेदुराइयहबातअतिनईहै । हुतेइकठौरेनृपचाकरी
मेंतहांइनकियोईबिगारुमारिडारौआज्ञादईहै । राखेहम
हितूजानिलेनिदानहाथपांवयाहोके ईशानहमअबभरिल
ईहै १५४ फाटिगईभूमिसबठगवेसमाइगयेभयेयेचकित
दौरस्वामीजूपैआयेहैं । कहीजितीबातसुनिगातगातकां
पिउठेहाथपांवसोड़ेभयेज्योंकेत्योंसुहायेहैं । अचरजदोऊनृ
पपासजाप्रकाशकियेजियेएकमुनिआयेवाहीठौरधायेहैं ।
पूंछैवारबारशीशपायनमेंधारिरहेकाहिपैउघारिकैसेमेरेम
नभायेहैं १५५ ॥

भक्तिलई ॥ दोहा ॥ सिंह खाल गाडर पहिरि भेष सिंह
कौ धारि । बोलनि बोली भेड़की कूदनि डारी फारि १
फाटिगईभूलितौदंडक्योंनदियो भेषजानिदण्डनदियोभेष
मेंबड़ो नलगैजैसेअपरसगुरु सपरसचेला ॥ कोऊने वस्त्र
उठाइ कै मारे अपरस बनोर है राजाके प्यादेने जान्यौं
प्रह्लादयावलि होहिंगे सोइच्छाचारी सिद्धहोइंगे बैकुंठ
लोकते आये पातालखोकको गये जैसे दंडहू दियोउत्क-
र्षनराख्यौ २ ॥ दोहा ॥ घटिबढ़ि बातें भेषकी कीजै नाहिं
बनाइ गुरुको बानौ परशुरामलीजै कंठ लगाइ । साधन
कौं घर दूरिहै समझौ चित्त लगाइ ४ प्रगट अवगुण दी

सैं तौ जैसे नारद सनकादिकन सें अलोइ करै चेला सो कही कोऊ कैसोई बुरो कहै येतूमति कहै ऐसेहु वा समयमें फल होइ ऐसे हाथ पांउ पुण्य पापको फल सम प्राप्ति होय॥

राजाअतिअरगहीकहीसबबात खोलिनिपटअमोलय हसंतनकोभेशहै। कैसोअपकारकरौतऊउपकारकरैंढरैरी तिआपनोहीसरससुदेशहै। साधुतानतजैंकभूजैसेदुष्टदुष्ट तानयहीजानिलीजैमिलैंरसिकनरेशहै। जान्योजबनाम ठामरहौइहांबलिजांवभयोमैंसनाथ प्रेमभक्तिभईदेशहै १५६ गयोजालिवाइल्याइकबिराजराजतिया कियालै मिलायआपरानीढिगआईहै। मर्योएकभाईवाकोभईयौं भौजाईसतीकोऊअंगकाढ़िकोऊकूदिपरीधाईहै। सुनतही नृपबधूनिपटअचंभौभयोइनकोनभयो फेरिकहिसमुझाई है। प्रीतिकीनरीतियहबड़ीबिपरीतिअहो। छूटैतनजबैप्रिया प्राणछुटिजाईहै १५७॥

प्रीतिकीनरीति॥ सोरठा॥ मुख देखेकी प्रीति स-बकोऊ ऐसीकरै॥ अतौन्यारै रीतिजियें जिये मूयेमुरै १ कवित्त॥ सती कहैं येरी मेरी मतिहौं सुमति कहौं प्रेम हैं लजावै मति यहेपीव जोइये। साखिदै अगिनि नार हथलेवा हाथ जोरे जाके साथ दीजै ताके साथ जीव खोइये॥ कौन आगिकौन आंचबरै ताहिलियेबरै ताको कहा बरै काहूकहे काज रोइये। जाके संग घनेदिन सेज माहिं सोय खोये ताके संग एकदिना आगिहूमें सोइये॥ कवित्त॥ अंगराग अंग करि मोती माल ग्रीव धरि बैठी बाल सोहै अति चांदनी बिमल में। आगी अगप-हरै सुराग रंग गहरैऔ बारम्बार बलकैयौं यौवनके बल

में। त्योंहीं काहूश्राली नंदनंदन आगम कह्यौ सामुहौ निहारी मानों वारी है अनल में। मोतिन के हार को न छार रह्यो ऊपर अंगराग उड़ि गयो अबीरह्वैकै पल में २॥ दोहा॥ सुफल फलै मनकामना तुलसीप्रेम प्रतीति॥ तिरिया अपने कारणै लिखि पूजतिहै भीति ३ साधुता न तजै॥ जैसे शिष्य पैवेगार गुरु कही गारीदै ऐसे ६॥

ऐसीएकआपकहिराजासोंयहींलैकैजावौबागस्वामीने कुदेखौंप्रीतिको। निपटविचारीबुरीदेतमेरेगरेंछुरीतियाह ठमानकरीऐसेहीप्रतीतिको। आनिकहैंआपपायेकहीयाही भांतिआइबैठीढिगतियादेखिलोढिगईरीतिको। बोलीभ क्तबधूअजूवेतौहोंबहुतनीकेतुमकहाओचकही पावतहौंभी तिको १५८ भईलाजभारीपुनिफेरिकैसँभारीदिनबीतिग येकोऊतबतबवहीकीनीहै।जानिगईभक्तबधूचाहतपरीक्षा लियोकहीअजूपायेसुनितजीदेहभीनीहै।भयोमुखश्वेतरा नीराजाआयेजानीयहरचीचिताजरौंमतिभईमेरीहीनीहै। भईसुधिआपुकोजुआयेबेगिदौरिइहां देखीमृत्युप्रायनृपक हीमरीदीनीहै १५६ बोल्योनृपअजूमोहितरैईबनतअबस बउपदेशलैकैधूरिमेंमिलायोहै। कह्यौबहुभांतिएवेआव तनशांतिकिहूंगाईअष्टपदीसुरदियोतनज्यायोहै। लाजन केमारयोराजाचाहैअपघातकियो जियोनहींजातभक्तिले शहूनआयोहै। करिसमाधाननिजग्रामआयेकिंदुबिल्वजै सोकछूसुन्योंयहपरचौलैगायोहै १६०॥

रानाको जयदेवजी के संगको रंग क्यों न लग्यो १ हरिविलासकाव्ये॥ भवज्वरनिवृत्तये पतितपावनत्वत्पदं प्रवलमिद मौषधं हृदिसदात्सुधीर्द्धारयेत ॥ २ ॥ अपथ्य

मिहवर्जयेत् विषयवासनासंज्ञकं वसेतविजनेवने फलदलां वुससीलयं ३॥ गीतगोविंदे॥ वहतिमलयसमीरेमदनमुपनिधीयस्फुटतिकुसमनिकरे॥ विरहिहृदयदलनायतव विरहे वनमाली सखिसीदति ४ करिसमाधान॥ दोहा॥ गई मिचकी मिचता रहे उकथाकोभाव। तोहिं न वेटाभूलही मोहिंपूछकोघाव ५॥

देवधुनीसोतहौंअठारहकोसआश्रमतेसदाअस्नानकरैं धरैंयोगताईको। भयोतनवृद्धतऊछांडैनहींनित्यनेमप्रेम देखिभारीनिशिकहीसुखदाईको। आवौजनिध्यानकरोंक शैजनिहठऐसोमानीनहींआऊंमैंहींजानौंकैसेआईको। फूलेदेखौंकंजजबकीजियेप्रतीतिमेरीभईवाहीभांति सेवैंअबलौंसुहाईको १६१॥मूल॥ श्रीधरश्रीभागवतमेंपरमधर्मनिर्णयकियो। तीनिकांडएकत्वसानिकेउअज्ञवखानत। करमठज्ञानीऐंचिअर्थको अनरथवानत। परमहंससंहिताविदितटीकाविस्तार्यो। षटशास्त्रअविरुद्धवेदसंमतहिविचार्यो। परमानंदप्रसादतेमाधौसुकरसुधारिदियो। श्रीधरश्रीभागवतमेंपरमधर्मनिर्णयकियो ४५॥

छांडैंनहीं नित्यनेम॥ दोहा॥ उत्तम मध्यम अधमनर पाहन सिकतापानि। द्योतिअनुक्रम जानिये वैरव्यतिक्रम मानि १ सांचौ पनकै गंगाजी आपही पधारीं झूठे पनवारिनको मूठी वनाहू न मिलै जैसे छप्पनभोगीको दृष्टांत घोड़ाके मलींदाको अरु देखनहारेको २ साईं शक्करखोरको शक्करहू पहुंचावै। वेविश्वासीजीव एकापर ज्यों घिघावै॥ ३॥ श्रीधरगीतायां॥ सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणंव्रज। अहंत्वांसर्व पापेभ्यो मोक्षइष्यामिमाशुच ४॥ षटशास्त्रछप्पै॥ कर्ममिमांसाकहै देहवशकरैसु॥

पावै। कालाधीन वैशेषिन्याइकर तारवतावै॥ नित्यानि. त्यविचार सांख्यमत ऐसोभावै। पतांजली हठनोतियोग अष्टांगदिखावै॥ सबमेंव्यापक ब्रह्महैवेदांत शास्त्रऐसीकहै। षटशास्त्र सकलविरुद्धये हरिज्ञानी हृष्टाद्वैरहै ५॥ परंम धर्म॥प्रघमे॥ सवैपुंसांपरोधर्मोयतोभक्तिरधोक्ष जे। अहैतु. क्यप्रतिहतायथात्मासंप्रसीदति ६॥

टीका श्रीधरस्वामीजीको॥ पंडितसमाजबड़ेबड़ेभक्त राउ जितेभागवतटीकाकरिआपसमेंरीझिये। भयोजुविचा रकाशीपुरीअविनाशीमांझ सभाअनुसारजोवसोईलिखि दीजिये।ताकोतौप्रमाणभगवानबिंदुमाधवजूहैशोधोयही बातधरिमंदिरमेंलीजिये। धरेसबजाइप्रभुसुकरबनाइदि योकियोसर्बोपरिलैचल्योमतिधीजिये १६१ मूल॥ कृष्ण कृपाकोपरप्रगटबिल्वमंगलमंगलस्वरूपकरुणामृत सुक वित्तउक्तिअनुविष्टउचारी। रसिकजननिजीवनिहृदयजेहा रावलिधारी।हरिपकरायोहाथबहुरितहँलियोछुटाई। कहा भयोकरछुटेंबदौतौंहियेतेजाई। चिंतामणिसंगपाइकैब्रज बधूकेलिबरणीअनूप। कृष्णकृपाकोपरप्रगटबिल्वमंगल मंगलस्वरूप ४६॥

कांडकरंडे कर्पूरकपासधरीदोऊ॥ श्लोक॥ वागीशा यस्यवदने लक्ष्मीर्यस्यतुवक्षसि। यस्यास्तेहृदयेसंवित्तंनृ- सिंहमहंभजे १॥ दोहा॥ श्रीधरस्वामीतासनौश्रीधर प्रगटेआन॥ तिलकभागवतकोकियो सबतिलकन परमा न २॥ अघनाशी॥ सोरठा॥ मुक्तिजन्ममहिजानिज्ञान खानि अघहानिकर। जहंवस शम्भुभवानिसोकाशीसेइय कसन ३ कहाभयो॥श्लोक॥ हस्तमुत्क्षिप्ययातोसिबला- त्कष्णकिमद्भुतं॥ हृदयाद्यदिनिर्यासिपौरुषं गणयामिते४॥

चिंतामणिपाइकै ॥ दोहा ॥ पण्डित पूजापाकदिन बेदि-
साकमतिनाव ॥ लगै जरब अखियानको सनैगरब उड़ि
जाव ५ सांभगोलनि हसनिचलनि बानैतनि लै मदहूब
जधाया। धीरनधरम सरमसमझ कादर अरगोलमगाया।
भँरभरवासा कियोअकेला इस्केलिये ठहराया। वल्लभर-
सिक इनइश्क दुमागो यागोमन पकराया ६ ॥ दोहा ॥
तानैतानतरंगकी बेधन तनमनप्रान। कलाकुसुमशर शरन
की अतिशयान तनत्रान ७॥

टीकाबिल्वमङ्गलकी॥कृष्णावैनातीरएकद्विजमतिधीर
रहै ह्वैगयोअधीरसंगचिंतामणिपाइकै । तजीलोक
लाजहियेवाहीकोजुराजभयो निशिदिनकाजवहैरहैघर-
जाइकै । पिताकोसराधनेकु रहयोमनसाधिदिनसेसमें
अवेशचल्योअतिअकुलाइकै। नदीचढ़िरहीभारीपैयेनअवा
रीनावभावभरयोहियोजियोजातनंघिजायकै१६२ करत
बिचारवारिधारमेंनरहैप्राणातातेभलीधारमित्रसम्मुखको
जाइये। परेकूदिनीरकछूसुधिनाशरीरकीहैवहीएकपीरक
बदरशनपाइये। पावतनपारतनहारिभयोबूड़िबेकोमृतक
निहारिमानीनावमनभाइये। लगेईकिनारेजाइचल्योपग
धाइचाइआयेपटलागेआधीनिशिसोंबिहाइये १६३अज
गरघूमिझूमिभूमिकोपरसकियोलियोईसहाइचढ़ो छातप
रजाइकै । ऊपरकेंवारलगेपरयोकूदिआंगनमेंगिरयोयों
गरतरागीजागीशोरपाइकै। दीपकबरायजोपेदेखेंबिल्वमं
गलहैंबड़ोईअमंगलतूकियोकहाआइकै । जलअन्हवाय
सूखे पटपहराय हाइ कैसेकरिआयो जलपार द्वारधाइ
कै १६४॥

हियेवाहीको जराउयभयो ॥ कवित्त ॥ मरकतकेसुत किधौं पन्नगकेपूत किधौं राजतअभूत तमराजकेसेतारहैं। मखतूल गुणग्राम शोभित सरसश्याम कामसृगकानन कुहूके येकुवारहैं। कोपकीकिरणि जलनीलकि जराकेतंतउपमा अनंत चारुचमर शृंगारहैं। कारेसटकारे भीनेसोंधेते सुगंधवास ऐसेबलभद्र नवबालातेरे बार हैं १ ॥ भूलना ॥ गुलौंविचौं गुलचन्यो सेघुल्यानही परखुलसी। लखौंगुल कलंमतआसो वाकुकसन तेरीवुलसी। दानेदेखिदिवाने घासी अकलतिनादाभुलसी। अबभीपाकन जरिकै देखन वारे छुचतिना भिरहुरसी २॥ दोहा॥ तनकनकहैविरक्त ता लगै दृगन की थाप। कछु गीता मालाकछुकछु बटुवा कछु आप ३॥

नौकापठाइद्वारनावलटकाईदेखि मेरेमनभाईमैंतौत-बैलईजानिकै। चलौदेखैंअहोयहकहाधौंप्रलापकरैदेख्यो विपधरमहाखीजीअपमानिकै। जैसोमनमेरेहाड़चामसों लगायोतैसो श्यामसोलगावेतौपैजानियेसयानकै। मैंतौ भयेभोरभजौंयुगुलकिशोरअबतेरीतुहीजानैचाहौकरौमन मानिकै १६५ खुलिगईआंखैंअभिलाखैंरूपमाधुरीको चाखैंरसरंगओउमंगअंगन्यारिये। बीणलैबजाईगाईविपिननिकुंजक्रीड़ाभयोसुखपुंजजापैकोटिविषैवारिये।बीतिग-ईरातिप्रातचलेआपआपकोजु हियेवहीजायदृगनीरभरि डारिये। सोमगिरिनामअभिरामगुरुकियोआनि सकैको बखानिलालभुवननिहारिये १६६ ॥

प्रलापो नर्थकंवाच:इत्यमर: १ हाड़चामसों ॥ कवित्त॥ देह तौ मलीन मन बहुत बिकार भरे ताहू मांझजरावात पित्त कफ खांसी है। कबहुंक पेटपीर कबहुंक शिरबाउ

कबहूं क आंखि कान मुख में बियासी है॥ औरहू अनेक रोग मल मूत्र भरे सदा हरि तजि औरै भजै साधु करै हांसी है। ऐसा जो शरीर ताहि अपनो करि मानि रहे सुन्दर कहत यामें कौन सुखरासी है १ मांसकी गरैंयी कुच कंचन कलश कहै मुख कहै चंद जो शशिउपमा को घरु है। दोऊ भुज कमल मृणालनाभ कूपकहै हाड़हीके खंभा तासों कहै रंभातरु है। हाड़ही के दशन आहि हीरा मोती कहै तासों चामको अधर तासों कहै बिम्बा फरु है। ऐसी भूठी युगति बनावैं वे कहावैं कबिता पर कहत हसैं शारदा को बरु है २ ओस कोसा मोती और पानी को बबूला जिमि सांचोकरि जान्योसोई बूड्यो मंझधार है। एक स्त्रीको पुत्र शुरु पायसो साधुपै छुटाया ऐसे चिन्ता सखिकही भोर मैंतो जाऊंगी तेरातू जानै॥

रहेसोबरसरससागरमगनभयेनयेनयेचोजकेश्लोक पढ़िजीजिये। चलेवृंदाबनमनकहैकबदेखौंजाइआयेम गमांझएकठौरमतिभीजिये। पर्योबड़ोशोरहगकोरकै नचाहैकाहूतहांसरतियान्हातदेखिआंखैंरीझिये। लगे वाकेपाछेकाछकाछेकीनसुधिकछू गईघरआछेरहेद्वारतन छीजिये१६७आयोवाकोपतिद्वारदेखेभागवतठाढ़ेबड़ेभा गवतअतिपूछीसोजनाइये।कहीजूपधारोपाँवधारोंगृहपा- वनकोपावनिपखारोंजलधारोंशीशभाइये। चलेमौनमां झमनआरतमिटाइबेको गाइबेकोजोईरीति सोईकोवता- इये। नारिसोंकह्योहोतूशृंगारकरिसेवाकीजे लीजैयोंसु हागजामेंबगिप्रभुपाइये १६८ चलीहैशृंगारकरिथार मेंप्रसादलैकेऊंचीचित्रसारीजहांबैठेअनुरागाहैं। झनक मनकजाइजोरिकरठाढ़ीरही गहीमतिदेखिदेखिनूनचक्य

भागहिं। कहीयुगसुईलावौलाइदईगहीहायफोरिडारी आखैंअहोबड़ीयेअभागहिं। गईपतिपासश्वासभरतनबोलिआवैबोलीदुखपाइआयेपांयपरेरागहिं १६९ ॥

लागेवाके पाछे ॥ भागवते ॥ पठकापाठकाश्चैवयेचान्ये शास्त्रचिंतकाः ॥ सर्वेव्यसनिनोमूढ़ाःयःक्रियावान्सपंडितः१ कुंडलिया ॥ कूकरचौका चढ़ाइये चाकीचाटनजाइ। चाकी चाटनजाइआदिअभ्यास न छाड़ै। बरजतवेद पुराण विषै पकरत हठि हाड़ ॥ बच्छ पयोधर पान कहौ तेहि कौन सिखावै। अनभोजनसअनेकअविद्यालीको धावै॥ अग्रदास को बसकहापरै कूपतन धाइ। कूकर चौकाचढ़ाइयेचाकी चाटनजाइ२ नून हत्यभागी हैं ॥ नारीस्तनभरजघन निवेशं दृष्ट्वा मायामोहावेशं ॥ एतन्मांस विषादविकारं मनसि विचारय बारंबारं । भजगोविंदं भजगोविंदं गोविंदंभज मूढ़मते ॥

कियोअपराधहम साधुकोदुखायोअहो बड़ेतुमसाधु हमसाधुनामधर्योहै । रहौअजूसेवाकरैं करौतुमसेवा ऐसीतैसीनहींकाहूमांझमेरोउरहर्योहै। चलेसुखपाइदृग भूतसेकुटाइदिये हियेहीकीआंखिनसोंअबैकामपर्योहै। बैठेबनमध्यजाइ भूखेजानिआपआये भोजनकराइचलो छायादिनढर्योहै १७० चलेलैगहाइकरछायाघनतरुतर चाहतकुटायोहायछोड़ैकैसेनीकोहै। ज्योंज्योंबलकरैत्यों त्योंतनतनयेऊअरे लियोईछुड़ाइगह्योगाढ़ोरूपहीकोहै। ऐसेहीकरतवृन्दाबनघनआइलिये पियोचाहैरससबजग लाग्योफीकोहै । भइउतकंठाभारीआयेश्रीबिहारीलाल मुरलीबजाइकैसुकियोमायोजीकोहै १७१ ॥

हमनामसाधु ॥ दोहा ॥ गलियनिमेंहर्षंतफिरैंसाधुकहैं सबकोइ॥प्रज्ञान नाम बाघा धर्यो खोजी बाघन होइ १ रूपहीक।है॥ हाय छुड़ाये जातहो निबलजानिकैमोहिं ॥ हियमेंतेजबजाउगे सबल बदौंगो तोहिं २ ॥ कवित्त ॥ प्रीतम सुजान मेरे हितके निधान कहौ कैसेरहैं प्राणजो-पै अनखि रिसाइहौ। तुमतौउदार दीनहीनआइपर्यो द्वार सुनिये पुकार याहिकौलौं तरसाइहौ। चातिक हौं रावरो अनाखो मोहिं आवरो सुजान रूपबावरो बदन दरशाइहौ। विरह नशाइ दयाहिय में बसाइ आइ हा-इ कबआनँदको घनबरसाइहौ ३ तापै सूरदासजी अरु साहूकार की स्त्रीको दृष्टांत ४ ऐसे जनकही जनकरुणा-निधान हंसे प्रीतिके बशभये ५ ॥

खुलिगयेनयनज्योंकमलरविउदयभयेदेखिरूपराशि बाढ़ीकोटिगुणीप्यासहै। मुरलीमधुरसुरराख्योमदभरि मानोंढरिआयोकाननमेंआननमेंभासहै। मानियेप्रताप चिंतामणिमनमांझभई चिंतामणिजैतिआदिबोलेरसरा शहै। करुणामृतग्रंथयहदेशदेशकोविदारिझारें बांधेरसग्रंथ पंथयुगलप्रकाशहै १७२ चिंतामणिमुनीवनमांतरूपदे ख्योलाल ह्वैगईनिहालआईदेहनातोजानिकै। उठिवहु मानकियोदियोदूधभातदोनादै पठावैनितहरिहितूजन मानिकै। लियोकैरेजायतुम्हैंभाइसोंदियोजोप्रभु लैहो नाथहाथसोंजोदैहैंसनमानिकै। बैठेदोऊजनकोऊपावैन हींएककनरीझेश्यामघनदीनोंदूसरोहूआनिकै १७३ ॥

चिंतामणिजयतिआदि ॥ श्लोक ॥ चिंतामणिर्जयति सोमगिरिर्गुरुर्मेशिक्षागुरुश्चभगवान्शिखिपिच्छमौलिः॥ यत्पादकल्पतरुपल्लवशेखरेषु लीलास्वयंवररसंलभतेव य

श्लो: १ करनाटतग्रंथ॥ अद्वैतवीथीपथिकैरुपास्याः स्वानंदसिंहासनलब्धदीक्षा।। शठेनकेनापिवयंहठेन दासीकृतागोपवधूवठेन २ कोऊपावै॥ दोहा॥ निकट न देख्या पारधी लग्यो न देख्योबाण॥ मैंतोहिं पूछौंहेसखी केहि बिधि निकसे प्राण ३ जलथोरो नेहाघनो लगप्रीतिकेबाण। तूपी तूपी करिमरे इहिबिधि छाड़ेप्राण ॥ पुसन आवमांगै ४ आनन देखाज्ञानकर्म नाससों शुद्धहोइअरु गीतामें भक्ति योग चित्त शुकनेलिख्यो ज्ञान कर्म आशा पाश शुद्ध होई बीचमें भक्तियोग भास्य में लिख्यो है भक्ति रत्न के दोऊ ढकनाहैं चक्रवर्तीने लिख्यो है दोऊ लरैंगे नहीं बीच में भक्ति योग रोकैहै दोउनको ५॥

मूल॥कलिजीवजंजालीकारणौ विष्णुपुरीबड़निधिसची॥भगवतधर्मउतंगआनधर्मआननदेखा। पीतरपटितरबिगतनिषकज्योंकुंदनरेखा॥कृष्णकृपाकरिवेलफलतसंगदिखायो।कोटिग्रन्थकोअर्थतेरहबिरंचनमेंगायो॥महासमुद्रभागवततेभक्तिरतनराजीरची। कलिजीवजंजालीकारणौ विष्णुपुरीबड़निधिसची ४७ टीका॥जगन्नाथक्षेत्रमांझबैठे महाप्रभूजवेचहूंओरभक्तभूपभीरअतिछाईहै । बोलेविष्णुपुरीपुरीकाशीमध्यरहैंयातेंजानियतमोक्षचाहनीकीमनआईहै।लिखीप्रभुचीठीओपमणगुणमालएकदीजियेपठाइमोहिलागतसुहाईहे।जानिलईबातनिधिभागवतरतनदामदईपठैआदिमुक्तिखोदिकैबहाईहै १७४ मूल॥ बिष्णुस्वामिसंप्रदायदृढ़ज्ञानदेवगंभीरमति॥ नामतिलोचनशिष्यसूरशशिसदृशउजागर । गिरागंगउनहारिकाव्यरचनाप्रेमाकर॥ आचारजहरिदासअतुलबलआनँददाइन । तिहिमारगबल्लभविदितपृथुपधितपराइन ॥नवधाप्रधानसेवासु

दृढ़मनबचक्रमहरिचरणरति । विष्णुस्वामिसंप्रदायदृढ़
ज्ञानदेवगंभीरमति ४८ ॥

खोदिके बहाइ हनुमान्नाटके ॥ भवबंधछिदेत स्मैनस्पृह
यामिमुक्तये । भवान्प्रभुरहंदास इतियत्रविलुप्यते १ सा-
लोकसार्ष्टि सामीप्य सारूप्यैकत्वमप्युत । दीयमानंनगृह्णं
ति विनामत्सेवनंजना: २ विष्णुपुरीवाक्यं ॥ येमुक्तावपि
निस्पृहाप्रतिपदं प्रोन्मीलदानंददां यामास्थाय समस्त
मस्तकमणीं कुर्वंतियंस्वेवसे । तान्भक्तानपितांचभक्तिमपि
तंभक्तिप्रियंश्रीहरिंवंदेसंततमर्थयेनुदिवसं नित्यंशरण्यंभजे
मुक्तिनिस्पृहाकथाएक पुराणकी एक समय श्रीनारदजी
श्रीवृंदावनमेंआये श्रीलालजीकोलीलादेखिकैबहुतप्रसन्न
भये पीछेते रोवनलगे यहबड़ो आश्चर्यहै ५ ॥

ज्ञानदेवजूकीटीका॥ विष्णुस्वामिसंप्रदायबड़ेईगँभिर
मतिज्ञानदेवनामताकीबातसुनिलीजिये। पितागृहत्यागि
आइग्रहणसन्यासकियोदियोबोलिरूठतिया नहींगुरुकी
जिये। आईसुनिबच्छपाछेकह्योजान्योमिथ्याबादभुजनप
करिमेरेसंगकरिदीजिये। आईसोलिवाइजातिअतिहीरि
साइदियोपांतिमेंतेडारिरहेदूरिनहिछीजिये १७५ भये
तीनिपुत्रतामेंमुख्यबड़ोज्ञानदेवताकीकृष्णदेवजूसों हिय
कीसंचाईहै। वेदनपढ़ावैकोईकहैसबजातिगईलईकरिस
भाअहोकहामनआईहै। विनसोंब्रह्मत्वकहीश्रुतिअधिका
रनाहिंबोल्योयोंनिहारिपढ़ैभैंसालैदिखाइये। देखिभक्ति
भावचावभयो आनिगहेपाव कियोईसभाववहीगहीदीव
ताईहै १७६ ॥

काव्यरचनापद ॥ माईआजु हो निशान बाजे दशरथ
राइके। रामजन्मसुनि रानीगावति आनंदवधाइके। उमंगे

ऋषिविश्वामित्र पढ़त वशिष्टतंत्र चैत्रमासनौमी शुक्लपक्ष पाइ के। उमंगे टलह किधौंगजउमंगे मत्तगज उमंगमहल सबकंचनजराइके। उमंगे पौरी पगार उमंगेनौबी बजार उमंगीअयोध्यापुरी रह्यो सुखछाइके। उमंगे सूरज कुल धरमअसुरकुलखंडके कंगूरा ढये अगम जनाइके। उमंगेत्रय सब सुख हरेभये अबै उमंग्यो बन दंडक अधिक जिवाइके। उमंगे वृद्ध बाल सुर मुनि जेते ईश उमंगे गौतम जानि त्रि-या मोक्षदाइके। उमंगे वानर रीछ हनुमान पूजाईशसुग्री व रिपुको नाशकरि हानिये नशाइके। उमंग्यो सरयूको नीरमज्जन करिहैं रघुबीर उमंगे सब जीव जन्तु कोउ न सकै सताइके। उमंगी सभा विराजै अपनै समाजै उमंगे तिलक जब मस्तक चढ़ाइके। उमंगे उघटत संगीत उमंगे ट्वट गीत मृदंगी मन मृदंगबजाइके। उमंगे मुनि समाजैं बहुविधिबाजे बाजैं महाराज दानदीजै सजिकैतुलाइके। उमंगे ढाढ़िया गावैं ढाढ़ेबजावैं उमंगि अशीश देत ब्रूप माथो नाइके। उमंगे नाचैं लागदाट तालसांचै रीझि व-स्तु देत जो जाइलाइके। उमंगी कौशल्या रानी सुतना-यो शारंगपानी उमंगे जन ज्ञानदेव सीताराम गाइके १ सुताख्या ब्रह्मणकला सोपानदेव महानदेव ज्ञानदेव ऐसे तीन जैसे धाय पुत्र परोसी साखी ऐसे मखनमें ब्रह्म-ण साखीयह जानि लीजै सोभैंसापढ्यौप्रमाण कौन॥

टीकातिलोचनजूकी॥ भयेउभैशिष्यनामदेवश्रीति-लोचनजूसूरशशिनाईकियौजगमेंप्रकाशहै। नामीकीतौ बातसुनिआयेसुनोदूसरेकी सुनेईबनतभक्तकथारसराश है॥ उपजेबाणककुलसवैकुलअच्युतकोऐयेनहींबनैएक तियारहैपासहै। टहलुवानकोउसाधुमननिकोजानिलै यहीअभिलापसदादासनिकोदासहै १७७ आयेप्रभुटह लुवारूपधरिद्वारपर फटीएककामरीपन्हैयांटूटीपाइहै।

निकसतपूछैंअहोकहातेपधारेआप बापमहतारीऔरदेखि येनगाइहैं।बापमहतारीमेरेकोऊनाहिंसांचीकहौंगहोजोट हलतौपैमिलनसुभाइहै।अनमिलबातकौनदीजियेजनाथ वहखाऊंपांचसातसेरउठतरिसाइहै १७८ चारिहीबरन- कीजुरीतिसबमेरेहाथ साथहूनचहौंकरौंनीकेमनलाइकै। भक्तनकीसेवासोतौकरतहीजनमगयोनयोकछूनाहिं डारे बरषबिताइकै॥ अंतर्यामीनाममेरोचेरोभयोतेरोहोंतोबो- ल्योभक्तभावखावोनिशंकअघाइकै। कामरीपन्हैंयांसबन ईकरिदईऔरुमीडिकैन्हवायोतनमैलकोछुड़ाइकै १७९॥

अनमिलपै॥ सवैया॥ अरसात जम्हात लगे नख गात कितौ ततरात सुबोलत हूं। कविसुन्दर जलटि औरसुनौं इतनै परसौंह करै अजहूं॥ तिनसोंवकहा कहिये जिनकै सुपनैंहूं न लाज भई कबहूं। जग में सबी औषधिहै सब कोपै सुभावकी औषधि नाहिंकहूं १ मनलाइकै॥ दोहा॥ चारि बरण की चातुरी सरै न मेरो काम॥ भक्त सेव जो जानिहैं। तो रहौ हमारे धाम २ भक्तनकीसेवा॥ गीता- यां॥ यद्यदाचरतिश्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः ३ बाप मह- तारीनहीं॥नयतिजगनिवासोदेवकीजन्मवादो यादवजन्म गावैंअजनमगावैं दोऊ सन्तःभक्ति बेटा मित्र साखा ऐसे जानिये॥

बोल्यौघरदासीसोंतूरहै याकोदासीहोइदेखियोउ- दासीदेतऐसोनहींपावनो। खाइसोखवावोसुखपावो नितनित्तहियेजियेजगमाहिं जौलौंमिलिगुनगावनो। आवतअनेकसाधुभावतटहलुहिये लियेचावदाबैपांवसब निलड़ावनो। ऐसेहीकरतमासतेरहव्यतीतभये गयेउठि

फल ॥ दर्शयतेतिनयनेनराणां लिंगानिविष्णोर्ननिरीक्षितोवे ५ ॥

खुलिगईआंखैंअभिलाखैंपहिंचानिकीजै दीजैजुबताइ मोहिंपावैनिजरूपहै । कहीजाइवाहीठौरदेखौप्रेमलेखौ हियेलियेभावसेवाकरोमारगअनूपहै । देखिकैमगनभयो लयोउरधारिहरिनयनभरिआयेजान्योभक्तिकोस्वरूपहै। निशिदिनलग्योपग्योजग्योभागपूरणहो पूरणचमतकार कृपाअनुरूपहै १८६ मूल ॥ संतसाखिजानैंसबैप्रगटप्रेमकलियुगप्रधान।भक्तदासइकभूपश्रवणसीताहरकीनो। मारिमारिकरिखड्गबाजसागरमेंदीनो॥ नृसिंहकोअनुकरनहोइहरणाकुशमार्यो । वहेभयोदशरथरामबिछुरेतनडार्यो ॥ कृष्णदामबांधेसुनेतिहिक्षणदीनेप्रान । संतसाखिजानैंसबैप्रगटप्रेमकलियुगप्रधान ५० टीका ॥ संतसाखिजानैंकलिकालमेंप्रगटप्रेमबड़ोईअसंत जाकेभक्तसों अभावहै।हुतौएकभूपरामरूपततपुरमहाराममहीकीलीला गुणसुनैंकरिभावहै । बिप्रसोसुनावैसीताचोरीकोनगावै हियेखरौभरिआवैवहजानतसुभावहै ॥ पर्योद्विजदुखी निजसुवन पठाइदियो जानैं न सुनायो भरमायो कियो घावहै १८७॥

कलियुगप्रधान ॥ प्रेमते दर्शन प्रेमते वाको स्वरूप प्रेमते वाके स्वरूपको बाप प्रेमते स्वरूपके बाप कोशिक्षाकार याते प्रधान १ धावहै ॥ कुंडलिया ॥ धोबीबेटा चांदसासीटी और पटाक।सीटीऔर पटाक प्रेमहरि भक्तिनजानै अन कनरहै न टांक छालनीसों मनछानै ॥ श्वास धवनि

ज्यों धरै अंग असा ज्यों दाढ़ै। ऐसो सहा अचेत धौस कूकर ज्योंकाढ़ै॥ अगर कहैं निर फलगई सेमरि फूली पाक। धोबीबेटा चांदसा सीटी और पटाक २॥ दोहा॥ कबहुंनसुखमें हरिभजे भक्तन मिले न दौरि॥ तीनों पनयों हीगये फिरत पराई पौरि ३॥

मारिमारिकरिकरखड्गनिकासिलियोदियोघोरसागरमेंसोअवेशआयोहै।मारौंयाहीकालदुष्टरावणबिहालकरौंपावनकोदेखौंसीताभावदृढ़छायोहै॥ जानकीरमणदोऊदरशनदीनोआनिबोलेविनप्राणकियेनीचफलपायोहै। सुनिसुखभयोगयोशोकसबदारुणजो रूपकीनिहारिनयेफरिकैजिवायोहै १८८ नीलाचलधामतहांलीलाअनुकरणभयोश्रीनृसिंहरूपधारिसांचेमारिडारयोहै।कोऊकहैदोसकोऊकहतअवेशतापै करौदशरथकियोभावपूरोपारयोहै॥ हुतीएकबाईकृष्णरूपसोंलगाईमतिकथामेंनआईसुतसुनीकहेउधारयोहै॥ बांधेयशुमतिसुनिऔरभईगतिकरिदईसांचीरतितनतज्योमानौवारयोहै १८९॥

सोये समस्त भाव प्रेमसों होतभये जैसे श्रीगोपिकान के प्रेमसों भाव होतभये १ तापैदृष्टांत एकप्रेम के द्वै स्त्री एकतो आनंदिता एक व्याकुलता तिनके एकएकपुत्र आनंदिताकेतो सुनन्द व्याकुलताके बिरह ताबिरह की स्त्री तदात्मकको स्वरूप२॥ सवैया॥ बैर बढ्यो सुबढ्यो अति ही अबके कहिको लरिकौनको सूझै। कैसी भई हरिहेरतही अबकोहियके जियकी गतिबूझै। बाहरहूघरहू सें सखी अंखियांनिवहैछबि आनिअरूझै। सांवरोरूपरम्यो उरमें सगरोजग सांवरो सांवरो सूझै ३॥ब्रह्मवैवर्त्तपुराणे॥ यास्यामितीर्थमद्यैव कंठकत्वात्तुवालकं॥ अथमातंगृहाज्ञ

न्हूतयामेकिंप्रयोजनं ४ ऐसे नन्दजी में बैठिकै सो बाई ने कह्यो तदात्मकको पुच तद्दल् तद्दल्कोस्वरूप सोकहैं ५॥

कवित्त॥ श्यामको जपतिजूती श्यामाजू सरूप भरी पगीप्रेमपूरणते ह्वै गईकन्हाईहै। सुरतिलिखी जोचिट्ठी प्यारीपियततकाल भामिनी बियोगभयो अतिदुख दाई है। व्याकुलबिहाल अति प्यारीके बिरहतन राधेराधेरटिपुनि भई राधिकाईहै। चकित सचेत कहै बेरबेर हेरि पाती पथिक न आयो यह पाती कैसे आईहै १॥ पद॥ दुहूं दिशि को अति बिरह बिरहिनी कैसेकैजुसहै। सुनो सखीयह बात श्यामसों को समुझाइकहै। जबराधा तबहीमुख माधोमाधो रटतिरहै। जबमाधो ह्वैजाति चणक में राधा बिरह दहै। पहले जानि अगिनि चंदनसी सती होन उमहै। समाचारतातेसीरेकै पाछे कौनकहै। उभय दारुह्वै कीटमध्यज्योंशीतलताहिचहै। सूरदास प्रभु व्याकुल बिरहिनि क्योंहूंसुखनलहै २॥दोहा॥ पियके ध्यान गहीगहीरहीवहीह्वैनारि॥ आयआपही आरसीलखि रीझत रिझवार ३॥ श्लोक॥ तटिभुवितरलाचोलचतो यासमंतात् इवसतिसधूर्त्तःशीघमायातुयूयं॥ असकृदिति वदंतिकामिनीकामिवालं कपिकिमपितमालं गाढमालिंगतिस्म ४ तापै एक दृष्टांत लंका में त्रिजटा अरु सीताजी के ५॥ चौपाई॥ भृंगीभयतेभृंगहोइ वहकीटमहाजड़। कृष्णप्रेमतेकृष्णहोइकछुअचरजनहिंबड़ ६ प्रेमहिपीवहि अंतरुपै तो। बीसीतीनि साठिहैं जेतो ७ एकसिद्ध अमली के नीचे बैठ्यो तप करतरह्यो तामग श्रीनारदजीआये सो पूछी हरि मिलैंगे सोपरमेश्वर ते पूछी नारदजी कहोअमली के पत्ता इतने युग तब नाच्यो मिल्यो तापै राजाकी बेटीको अरुदै मित्रन को दृष्टांत ८॥

मूल॥ प्रसादअवज्ञाजानिकै पाणितज्योएकैनृपति॥ हौंकहाकहौंबनाइ बातसबहीजगजानै। करतैंदोनोभयो

श्यामसौरभरुचिमानै ॥ छप्पनभोगतेयहलखीचकरमा
कोभावै । सिलिपिल्लेकेकहतकुंवरिपैहरिचलिआवै ॥
भक्तनिहितसुतबिषदियो भूपनारिप्रभुराखिपति। प्रसाद
अवज्ञाजानिके पाणितज्योएकैनृपति ५१ ॥ पुरुषोत्तम
काशीराजा ॥ प्रसादकीअवज्ञाततज्योनृपकरएक करिकै
विवेकसुनोजैसीभांतिभईहै। खेलैनृपचौपरिकोआयोप्रभु
भक्तमेश दाहिनेंसेफासेबांयोछुयौमतिगईहै । लैगयेरिसा
इकैफिराइमहादुःखपाइ उठ्योनरदेवगेहगयोसुनिनईहै।
लियोअनसनहाथतज्योयहीछिनतव सांचौमेरोपनबोलि
बिप्रपूछिलईहै १६० काटैहाथकौनमेरोरहैगहिमौनयाते
पूछतसचिवकहाशोचयोंबिचारिये । आवैएकप्रेतमोदिखा
ईनितदेतनिशि डारि कैझरोखाकरशोरकरिमारिये। सोऊ
ढिगआइरहौआपकोछिपाइतबडारैहाथआनितवहींकाटि
डारिये । कहीनृपभलेचौकीदेतमैंघुमायोभूप डार्योउठि
आनिकेदन्यारौकियोवारिये १६१ देखिकैलजानोकहा
कियोमैंअयानोनृप कहीप्रेतमानोनहींप्रभुसोंबिगारिये।
कहीजगन्नाथदेवलैप्रसादजावोवहां लावोहाथबोवोबाग
सोईउरधारिये। चलेतहांधाइभूपआगेमिल्योआइ हाथ
निकस्योलगाइहियेभयोसुखमारिये । लायेकरफूलताके
भयेफूलदोनाके नितहीचढ़तअंगगंधहरिप्यारिये १६२॥

प्रसादअवज्ञा॥श्लोक॥ प्रसादंजगदीशस्यअन्नपानादि
कंचयत्॥ ब्रह्मवन्निर्विकारंहियथाविष्णुस्तथैवतत् १ पूछि
लई है॥ दोहा॥ बाम बाजू फरकत मिलै ज्यों प्रीतमरस
भूरि॥ त्योंतोहीसोंभेटिहौं राखि दाहिनोदूरि २॥

करमाबाईकीटीका ॥ हुतीएकबाईताकोकरमासुनाम जानि बिनारीतिभांतिभोगखीचरीलगावही । जगन्नाथ देवआइभोजनकरतनीके जितेलागैंभोगतामेंयहअतिभावही । गयोतहांसाधुमानिबड़ोअपराधकरे भरैवहश्वास सदाचारलैसिखावही । भईयोंअबारदेखैखोलिकैकिवार तौपैजूंठनिलगीहैमुखधोयेबिनआवही १६३ पूछीप्रभुभयोकहाकहियेप्रगटखोलि बोलिहूनआवैहमैंदेखिनईरीति है। करमासुनामएकखीचरीखवावैमोहिं मैंहूनितपाऊंजायजानीसांचीप्रीतिहै । गयोमेरोसंतरीतिभांतिसोसिखाइआयो मतमोअनंतबिनजानेयोंअनीतिहै । कहीवाहीसाधुसोंजुसाधिआवौवहीबात जाइकैसिखाईहियआईबड़ीभीतिहै १६४ ॥ सिलपिल्लेउभैबाईकीटीका ॥ सिलिपिल्लेभक्तउभैबाईसोईकथासुनो एकनृपसुताएकसुताजिमीदारकी । आयेगुरुघरदेखिसेवाढिगबैठीजाइ कहीललचाइपूजाकीजेसुकुवारकी । दियोशिलटूकएकनामकहिदियोवही कीजियेलगाइमनमतिभवपारकी । करत करत अनुरागबढ़िगयौभारी बड़ीयेबिचित्ररीतियहीशोभासारकी १६५ ॥

वैष्णवप्रेमकोसमझै नहीं॥वेदसमझै यातेकरमाबाईको वेदही सिखायो॥ दोहा॥ लकरी धोवै ज्योंसनै करै कुतीसौ पाक॥ जाको षट षटकरम हैं ताको भावैछाक १ सो प्रेमकोसमुझै । नट गोपाल कपट ज्योंभावै कोटिक स्वांग बनावै २ बडोभीति है॥ साधुको फेरिआयो देखिकै डरी। आप कहा सिखाइगयो तब साधबोले रीतूडरै मतिरी॥ यह क्रिया ब्राह्मण की है तेरी नहीं तब पोथी

देखी तब जानी तू वैसेही करयो करि तब साधुहंसेकही खलबाइ ३॥

पाछिलेकबित्तमांझदुहुनिकीएकैरीति अबसुनोन्यारी न्यारीनीकेमनदीजिये। जिमीदारसुताताकेभयेउभैभाईर हैंआपसमेंबैरगासमारयोसुबेढीजिये। तामेंगईसेवाइनब डोईकलेशकियोतियोनहींजातखानपानकैसेकीजिये। १ हेसमुझाइयाहिककुनसुहाइतबकहीजायलावोंतेरेदोऊस मधीजिये १६६ गईवाहीगांवजहांदूसरोसुभाईरहैबैठ्यो हैंअथाईमांझकहीवहीबातहै। लेहुजूपिछानीतहांबैठ्यो इकठौरेप्रभुबोलिउठेउकोऊबोलिलीजेप्रीतिगातहै। भई आंखिरातीलगीफाटिबेके.छातीसोपुकारीसुरआरतसोमा नोतनपातहै। हियेआइलागेसबदुखदूरिभगेकोऊबड़भा गजागेघरआईनसमातहै १६७॥

भई आखिराती॥ कवित्त॥ कंचनमेंआंचदई चुनीचिन गारीभई दूषणभयेरी सब भूषणउतारिलै। पियहै विदेश वाही देश क्यों न परैधाइ ससकि ससकि उठै मनहूं विचारिलै। परघर आगिआली लागन क्यों जाति अब आगिमेरे अंगचिनगारीवारिझारिलै। सांझसमैसांचसुन वातीक्यों न देति आखी छाती सों छुवाइ दियाबाती क्यों न बारिलै १ बसन डसन भये हसन रसन होत सवासनिसों जागिहै बियोगआगिआगरी। बासतो उजा रसे है कारसेहैं कामकाज आलिनकैयुथजाल ऐसे हाल नागरी। भोजन हलाहल कुलाहल सोनादजाति बाद है बिवाह ऐसे बिसदनिकी सागरी। आपुन सगीको तुज कामदेव शारदूल बचिहै न मूल भूल उठीहै उजागरी२॥ दोहा॥ धवल महल शय्याधवल धवल शरदकीरैन। एक श्याम बिन बिकलसब ज्यों पुतरी बिननैन ३॥

टीकानृपसुताकी॥सुनोनृपसुताबातभक्तिगातगातपगी भजीसबविषयव्रतसेवाअनुरागीहै। ब्याहीहोबिमुखघर आयेलेनवहेवरखरीअरवरीकोईचितचिंतालागीहै। करि दईसंगभरीआपनेहीरंगचली अलीहूनकोऊएकवहीजा- सोंरागीहै। आयोढिगपतिबोलिकियोचाहैरतियाकीऔर भईगतिमतिआवैबिथापागीहै १९८ कौनवहबिथाताको कीजियेयतनबेगिबड़ोउदबेगनेकुबोलिसुखदीजिये। बो- लिबोजोचाहौतौपैकरौहरिभक्तिहियेबिनहरिभक्तिमेरोअं- गजिनिछीजिये। आयोरोषभारीतबमनमेंबिचारीवापिटा रीमेंजुकछूसोईलैकैन्यारोकीजिये। करिवहीबातमूसिजल मांझडारिदईनईभईज्वालाजियोजातनहिंखीजिये १९९ तज्योजलअन्नअबचाहतप्रसन्नकियो होतक्योंप्रसन्नता कोसरबसलियोहै। पहुंचेभवनआइदईसोजताइबातगा तअतिछीनदेखिकहाहठकियोहै। सासमझावैकछूहा थसोंखवावेयोकोबोल्योहूनभावेतबधरकतहियोहै। कहै सोईकरें अबपरैपांइतेरेहम बोलीजबवेईआवे तौहीजात जियोहै २०० ॥

तज्योजलअन्न॥ दोहा ॥ शठसनेहसों डरपियै नंद और भयनाहिं। सांपिनिसुत हित जानिकै गिलपेटपचि जाहिं १ ॥ कवित्त॥ समरमें लरोजाइ गिरहूते गिरो जाइ गगनमें फिरोजाइ पावकको दहिबो। कानन में रह्योजाइ ब्यालकर गह्योजाइ विरहऊ सह्यो जाइ घोर कहाकहिबो। हलाहल पियोजाइ सरबस दियो जाइ करवत लियो जाइ वारिधि को बहिबो। और दुख याहूते जुदुसह कठिन ऐसो जैसो कहूं विमुख

संग एकछिनरहिबो २ ऐसो सत्संग मनसें जानिबो ३ ॥

आयेवाहीठौरभौंरआइतनभूमिगिरयो गिरयोजल नैनसुरआरतपुकारीहै। भक्तिबशश्यामजैसेकामबशकामीनर धायलागेछातीसोंजुसंगसोंपिटारीहै। देखिपति सासुआदिजागतबिवाहमिट्यो बादिहीजनमगयोनेकुन सँभारीहै। कियेसबभक्तहरिसाधुसेवामांझपगे जगेकोऊ भागघरबघूयोंपधारीहै २०१ ॥ भक्तनकेहेतुसुतबिष दियोउभयबाईकीटीका ॥ भक्तनकेहेतसुतबिषदियोउभै बाई कथासरसाईबातखोलिकैजताइये। भयोएकभूपताकेभगतअनेकआवैं आयोभक्तभूपतासोंलगनिलगाइये। नितहीचलतऐसेचलननदेतराजा चितयोबरषमांझकह्यो मोरजाइये। गईआशटूटितनछूटिबेकीरीतिभई लईबात पूंछिरानीसबैलैजनाइये २०२ ॥

आयोभक्त भूप ॥ श्लोक ॥ मद्ाश्रयाकथामिष्टाश्शृण्वंतिकथयंतिच॥तपंतिविविधास्तापानैतान्मद्गतचेतसः १साधुसेवामेंकहालाभ॥ तुलयामलवेनापिनस्वर्गंनपुनर्भवं॥ भगवत्संगिसंगस्यमर्त्यानांकिमुताशिषः २ ॥ प्रथमे ॥ वासुदेवभगवतिभक्तियोगःप्रयोजितः॥ जनयत्याशु वैराग्यं ज्ञानंचयदहैतुकं ३सप्तमे ॥ वासुदेवेभगवति भक्तिमुद्वहतांनृणां ॥ ज्ञानवैराग्यवीर्याणां नेहकश्चिद्व्यपाश्रयः ४ ॥

दियोसुतबिषरानीजानीनृपजीवैनाहिं संतहैस्वतंत्र सोइन्हैंकैसेराखिये। भयेबिनभोरबधूशोरकरिरोइउठी भोइगईरावलमेंसुनीसाधुभाषिये। खोलिडारीकटिपट भवनमेंप्रवेश कियोलियोदेखिबालककोनीलतनसाषिये।

पूंछ्योभूपतियासोंजुसांचकहिकियोकहा कहौतुमचल्यौ चाहौनैनअभिलाषिये २०३ छातीखोलिरोयेसंतबोलहू नआवैमुखसुखभयोभारीभक्तिरीतिकछुन्यारिये। जानी हूनजातिपांतिजाकोसोबिचारकहा अहोरससागरसोस-दाउरधारिये। हरिगुणगाइसाखिसंतनिवतायदियोबा-लकजिवाइलागीठौरवहप्यारिये। संगकेपठाइदियेरहे जेवेभजिहिये बोलेआपजाउंजौनमारिकैविडारिये २०४ सुनौचित्तलाइकहौदूसरोसुहाइहिये जियेजगमांहिंजौ-लौंसंतसंगकीजिये। भक्तनृपएकसुताब्याहीसोअभक्तम-हा जाकेघरमांझजननामनहिंलीजिये। पल्यौसाधुशीत सोंजुशरिहगरूपपले जीभचरणामृतकेस्वादहीसोंभी-जिये। रह्यौकैसेजाइअकुलाइनबस्याइकछु आवैपुरप्या-रेतबबिषसुतदीजिये २०५॥

जानीहू न जातिपांति॥कुंडलिया॥ सोईनारिसुतैबड़ी जाकीकोठीउआरि।जाकी कोठी उआरि जाहि यादव पति भावै। श्रवणसुनत हरिकथारसनगोविंदगुणगावै॥ आरन विदुष उदार सुमति सुकुलीनी सोई। हृदय बसत हरि चरण जगत डार्योकरि छोई॥ अगर कहतादासपरतन मन दीजैवारि। सोई नारिसुतैबड़ी जाकी कोठी उआरि १॥ दोहा॥यद्यपि सुन्दर सुघरपुनि सगुनौ दीपक देह। तऊ प्रकाश करै तितौ भरिये जितौ सनेह २॥एकादशे॥ मल्लिंगमद्भक्तजन:दर्शनस्पर्शनार्चनं॥ परिचर्य्यास्तुतिप्रह्व गुणकर्मानुकीर्त्तनं ३ हरिगुणगावैसाखिसंतन॥ आदिपु-राणे॥ मद्भक्तायत्रगच्छंतितत्रगच्छामिपार्थिव। भक्तानामनु गच्छंतिमुक्तयेमुक्तिभि:सह ४॥

आयेपुरसंतआइदासीनिजनाइकही सहीकैसेजातिसु

तविषलैकैदियोहै । गयेवाकेप्राणरोइउठीकिलकारिसब भूमिगिरेआनिदुकभयोजातहियोहै । बोलीअकुलाइएक जीवेकोउपायजोपै कियोजायपितामेरेकोउबारकियोहै । कहैसोईकरैदृगभरेल्यावोसंतनिको कैसेहोतसंतपूछौचेरो नामलियोहै २०६ चलीलैलिवायचेरीबोलिवोसिखाइदि योदेखिकैधरणिपरीपाइगहिलीजिये । कीनीवहीरीतिदृ- गधारामानोंप्रीतिसतकरीयोंप्रतीतिगृह पावनकोकीजिये चलेसुखपाइदासीआगेहीजनाईजाहि आइठाढ़ीपौरिपां- इगहेमतिभीजिये । कहिहरेबातमेरेजानौपितामातमैंतो अंगमेंनमातआजुप्राणवारिदीजिये २०७ रीझिगयेसंत प्रीतिदेखिकैअनंतकह्यो होइगीजुवहीसोप्रतिज्ञातैजुकरी है। बालकनिहारिजानीबिषनिरधारदियो दियोचरणा- मृतकोप्राणसंज्ञाधरीहै । देखतबिमुखजाइपाइततकाल लिये कियेतवशिष्यसाधुसेवामतिहरीहै । ऐसेभूपनारि पतिराखी सबसाखीजन रहैअभिलाषी सोपैदेखोयह घरीहै २०८॥

दियो चरणामृत ॥ श्लोक ॥ अकालमृत्युहरणं सर्वव्या धिविनाशनं । विष्णुपादकंपीत्वा शिरसाधारयाम्यहं १ देवतान नेकही शुकदेव जी सों श्रीभागवत हमें देऊ अमृत राजा परीक्षितको देऊ सो इन भागवत न दयो है यातें हरिको बालक को चरणामृत दियो ॥ दोहा ॥ धन्य संत जहँ जहँफिरें तहँ तहँ करत निहाल। चरणामृत सुख डारिकै फेरि जियाबो बाल २ ॥ श्लोक ॥ वरंहुतवहज्वाला पिंजरांतर्व्यवस्थितिः। नासौरीविष्णुविमुखः जनसंवासवै- शसम् ४ ॥

मूल ॥आसैअगाधदोउभक्तकोहरितोषनअतिशयकियो॥श्रीरंगनाथकोसदनकरनबहुबुद्धिबिचारी। कपटधर्मरबिजेन्द्र द्रव्यहितदेहबिसारी । हंसपकरनेकाज बधिकबानेंधरिआये। तिलकदामकीसकुच जानितिहिआपबँधाये॥ सुतबधहरिजनदेखिकैदैकन्याआदरदियो। आसेअगाधदोउभक्तको हरितोषनअतिशयकियो ५२ टीका॥ आसैसौअगाधदोउभक्तमामाभानजेको दियोप्रभुपोषताकीबातचितधारिये। घरतेनिकसिचलेबनकोविवेकरूपमूरतिअनूपबिनमंदिरनिहारिये। दक्षिणमेंरंगनाथनामअभिरामजाको ताकोलैबनावैधामकामसबटारिये। धनकेयतनफिरैभूमिपैनपायोकहूंचहूंदिशिहेरिदेख्योभयोसुखभारिये २०९ मंदिरसरावगीकोप्रतिमासोपारसकीआरसनकियोवेदनूनहूंबतायोहै। पावैंप्रभुसुखहमनरकहूगयेतौकहा घरकनआईजाइकानलैफुकायोहै। ऐसीकरीसेवाजासोंहरीमतिकेवराज्योसेवरासमाजसबनीकैकैरिझायेहैं। दियोसोंपिभारतबलेबेकोबिचारकरै हरेकोनराहभेदराजनपैपायोहै २१० ॥

घरतेनिकसिचले॥कवित्त॥ चाहैंधन धामवाम सुतअभिरामसुख कछ्यो नाहीं नाहीं कछू सरत न काजहै। चतुरनआगे कोटि चातुरी न काम आवै बातन बनाइसुनि उपजत लाज है। जापै कहौंसांच यामें भूठन मिलाव नेकु तोपै श्वान से क्यों कहूं रोक्यो गज राज है। वृन्दाबन चाहैतौ न चाहै जीवतनहूको मनहूंको दूरि ऐसे मिलतसमाजहै॥ वेदनूनहू बतावै॥ श्लोक॥ गजैरापीड्यमानोपि नगच्छेज्जैनमंदिरे। यामनीनैववक्तव्यं कंठैःप्राणगतैरपि १ रंग

नाथ॥कावेरीविरजातौच वैकुण्ठंरंगमंदिरं।प्रवासदेवरंगेश प्रत्यक्षंपरसंपदं २॥

मामारह्योभीतरऔऊपरसों भानजोहो कलसमँवरक लीहाथसोंफिरायोहै। जेवरलैफांसिदियोमूरतिसुखैंचिलई औरबारबहुआपनीकैचढ़िआयोहै। कियाहोजोद्वारतामेंफूलितनफँसिबैठेउअतिसुखपाइतबबोलिकैसुनायोहै।काढ़िलेबोशीशईशभेषकीननिंदाकरेंभरेंअंकवारि मनकीजियो सवायोहै २११ काढ़िलियोशीशईशइच्छाकोविचारकियोजियेनहींजाततऊचाहमतिपागीहै। जोपैतनत्यागकरोंकैसेआससिंधुतरौंवाहीओरआयो तहांनीमखुदीलागीहै। भयोशोकभारीहमेंहवैगईअवारीकाहूऔरनेविचारी देखेंवहीबड़भागीहै। भरिअंकवारिमिलेमंदिरसँवारिझिलेखिलेसुखपाइनयनजानेसोईरागीहै २१२ कोढ़ीभयोराजाकियोयतनअनेकऐयेएकहूनलागैकह्योहंसनिमँगाइये। बधिकबुलाइकहीबेगिहीउपायकरौ जहांतहांढूंढ़िअहेइहांलगिलाइये। कैसेकरिलावेंवेतोरहैंमानसरमांझलावोंगेछुटौगेतबजनेचारिजाइये। देखतहिउड़िजातजातिकोपिछानिलेतसाधुसोनडरैंजानिभेषलैबनाइये२१३।

मामारह्यो भीतर॥ दोहा॥ साधुसतोअरुसूरमाज्ञानी अरु गजदंत। येते निकसिनबाहुरैं जोयुग नाहिंअनंत। ११॥ श्लोक॥ स्वर्गापवर्गनरकेष्वपितुल्यार्थदर्शिनः। सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकंशरणंव्रजेति २ अग्रेवहनिःपृष्ठेभानुः सायंचिबुकसमर्पितजानुः। करतलभिक्षाः तरुतलवासास्तदपिनमुञ्चत्याशापाशम् ३॥ दोहा॥ जौन युगति पिय मिलनकी धूरिमुक्ति मुखदीन। जो लहिये संग सजन तौ

घरका नरकहू दीन ४ ईश्वइच्छा भलीकरी॥यद्यद्वांछतिमक्तः॥ इनकही सुहकैसेदिखावेंगे सेवराके चेला भयेयाते काह्यो प्रथम पाप पुण्य भोगे ऐसे औषधि व्यवहार कालिये वैद पसारी ऐसे कोढ़ी भयोखर कुत्तानहीं भले मनुष्यपैहै॥

गयेजहांहंससंतवानेसोप्रसंशदेखि जानिकेबधायेराजापासलैकेआयेहैं।मानिमतिसारप्रभुवैद्यकोस्वरूपधारिपूंछिकैबजारलोगभूपढिगल्यायेहैं। काहेकोमँगायेपक्षीआछीहमदेहकरैंछाड़िदीजैइन्हैंकहीनीठिकरिपायेहैं। औषधीपिसाईअंगअंगनिमिलाइकिये नीकेसुखपाइकहीउनकोछुड़ायेहैं २१४॥

नामिके बधाये॥ दोहा॥ हंस कहै सुनि हंसिनी सुनौं पुरातम साखि॥ बधिकभेद जानेनहीं प्रतिमानैकीराखिवैद्यको॥ कवित्त॥ तपबेल हजर हरौन खंडौल कफवाद मूलहूलहलकारा काहली विचारिये। कोटकोतवालकों तो दादहै दिवान कोरा फौजदार पित्तीपद चरहूँकारिये। तिजारी तापतिस्ली संग्रहणी सेठमानिलेऊ खईखानखासी राजपत्नी निहारिये। शीतअतीसार युग मंत्री विषम वादशाहिभाजि वैदराज आयो सेना लिये भारिये २ आई मनजूनकी जनून बड़ीनून सेती भनिडारें रोग अरुण आमल बैठाया है। अरक फरक से तो प्यादिनके यूथ बक्र चूरण चतुर चोबदार मन भायो है।गोली किधौं गोला काथ कटक भसुरडी मानों उसन सलिल शीत बातको नशायो है। अंजन सुगंध लेप मर्द्दन कराइ पुनि सेन चतुरंगसजि वैदराज आयोहै ३॥ छप्पै॥ नारद शुक सदवैद ग्रंथ भागवत बतावैं। करै सतसंग जबहित्तिकुपथ छोनेनहिंपावैं। औषधि नवधाभक्ति यतन प्रभु

को आचारा । चरणामृत करिकाय हरै सो सकल विकारा। संत चरण रजधोइ के तौइ मारौ करि दीजै । पय दै महाप्रसाद अन्न रसना नहिं लीजै । त्रिगुण दोषबाई चौरासीजनम मरण कोउहिहरै। तहरबेता तिहुंलोक में फिरि न रोग तिहिं संचरै ४ ॥

लेवोभूमिगांवबलिजांवयादयालुताकीभागभालजाके ताकोदरशनदीजिये। पायोहमसबअबकरोहरिसाधुसेवा मानुषजनमजाकीसफलताकीजिये। करिलैनिदेशदेशभ क्तिविस्तारंभईहंसहितसारजानिहियेधरिलीजिये। वणि कनजानीजासोंखगनिप्रतीतिकीनी ऐसोभेषछाड़ियेनरा ल्योमतिभीजियेर१५॥महाजनसदावर्तीकीटीका॥ महा जनसुनोसदा ब्रतीताकोभक्तपनमनमेंबिचारसेवाकीजैचि तलाइकै। आवतअनेकसाधुनिपटअगाधमतिसाधलेतजै सेअवेसुबुधिमिलाइकै। संतसुखमानिरहिगयोघरमांझस दा सुतसोंसनेहनितखेलेसंगजाइकै।इच्छाभगवानमुख्य गोनलोभजानिमारिडार्योधूरिगाड़िगृहआयोपछिताइकै २१६ देखैमहतारीमगबेटाकहांरह्योपगिबीतेचारियाम तऊधामनमेंनआयोहै।फेरीनृपडोंड़ीजाकेसंतसंगआयलौंड़ी कह्योपोंपुकारिसुतकौनेबिरमायोहै। बेगिदेवताइदीजैआ भरण दियोलीजैकहीसोसन्यासीयहमार्योमनलायोहै। दईलैदिखाइदेहबोल्योयाकोगहिलेहु याहीनेहमारोपुत्र मारेउनीकेपायोहै२१७॥

हिये ॥ श्लोक ॥ आराधनानांसर्वेषांविष्णोराराधनंप रं॥ तस्मात्परतरंदेवितदीयानांसमर्चनं १ भक्तेतुष्टेहरिस्तु ष्टेतुहरौतुष्टेचदेवता ॥ भवतिसिक्ताशाखाश्चतरोर्मूलनिसे

च्चनात् २ आरंभगुर्वीक्षयतिक्रमेण नहीपदाइष्टद्वि मतीचप
श्चात् ॥ दिनस्यपूर्वार्द्धपरार्द्धभिन्ना।छायेवमैत्रीखलसज्जना
नां ३ मनमेंविचार ॥ नवमे ॥ मनुरेवमनुष्याणांकारणंबंध
मोक्षयोः ४ चितलाइके ॥ करनहीं तौ भक्ति डिगि जाइ
जैसे पाथर चढ़ावते तौबड़ी बेर चढ़ै चित्त बिना नेकमें
गिरिपरेहैं ५ साधुलेत अनेक प्रकारके साधुआवे हैं ॥ जि-
न में न्यारी न्यारी क्रिया महादेवकोसी रीतिजानौ ६॥

बोल्योअकुलाइ मैंतौदियोहैबताइ मोकोदेवौजुछुड़ाइनहींझूठककुभाषिये। लेवौमतिनामसाधु जोउपाधिमेंटे उचहौजावौउठिऔरकहूंमांनिक्षोरिनाखिये। आइकेबिचारकियोजानीसकुचायोहियो बोलिउठीतियासुतदेकैनीकेराखिये। परेउबधूपांइतेरीलीजियेबुलाइपुत्रशोककोमिटाइऔरखरीअभिलाषिये२१८बोलिलियोसंतसुताकीजियेजुअंगीकारदुखसोअपारकाहूविमुखकोदीजिये। बोल्योमुरझाइ मैंतौमार्योसुतहाइमापैजियेहूनजाइ मेरोनाम नहींलीजिये। देखौसाधुताईधरीशीशपैबुराईइनरतीहूनहोसकियोमेरुसमरीझिये। दईबेटीब्याहिकहिमेरोउरदाहमिटेउकीजियेनिबाहजगमांहिंजौलौंजीजिये२१६ आयेगुरुघरसुनिदीजैकीनसरिबड़े संतसुखदाईसाधुसेवालेबताईहै। कह्योसुतकहांअजूपायोसुतकैसीभांतिकहिकैबखानेजगमीचुलपटाईहै। प्रभुनेपरीक्षालईसोईहमैंआज्ञादईचलियेदिखावौजहांदेहकीजराईहै। गयोवाहीठौरशिरमौरहरिध्यानकियोजियो चल्योआयोदासकीरतिबड़ाईहै२२०मूल॥ चारोयुगचतुर्भुजसदाभक्तिगिरासांचीकरनदारुमईतरवारिमारुमयरचीभुवनकी। देवाहितसितकेश

प्रतिज्ञाराखीजनकी । कमध्वजकेकपिचारुचितापरकाष्ठ लाये। जैमलकेयुद्धमाहिंअश्वचढ़िआपनधाये। घृतसहितभैंसचोगुणीश्रीधरसंगशायकधरन। चारोयुगचतुर्भुजसदाभक्तिगिरासांचीकरन ५२ ॥

लेवोमति नाम साधु॥ कुंडलिया॥ भुस ऊपरको लीपनो अरु बालूकी भीति। अरुबालू की भीति भूलकी मनो मिठाई। बाजीगरको बागखलनमें नवनिधिपाई॥ अन्नाअस्तन ज्यों छांट तुच्छ चादरकी छाया। पूरब वस्तु बिसारि पच्छिमदिशिढूढ़नधाया॥ आन उपासक राम बिनु अगर सुऐसीरीति। भुसऊपरको लीपनौ अरु बालूकी भीति॥ कर्त्तुमकर्त्तुमन्यथाकर्त्तुं समर्थः॥ ऐसेप्रीतिमें अवगुण दीखै जैसे मजनूं की सहनकफोरी जब नाच्यौ १॥

भुवनचौहानकीटीका॥ सुनोकलिकालबातऔरहैपुराणख्यात भुवनचौहानजहांरानाकीदुहाईहै । पट्टायुगलाखबातसेवाअभिलाषसाधुचल्योईशिकारनृपभीरसंगधाईहै। मृगीपाछेपरेकरटूकहतिज्ञाभवनजे आइगईदयाकहीकाहेकोलगाईहै । कहैंमोकोभक्तक्रियाकरौंमैंअभक्तनिकी दारुतरवारिधरौयहैमनभाईहै २२१॥

सुनौ कलिकालहैं तीन युगनमें तौ पुराणन में विख्यात हैं सतयुगमें तौध्रुव त्रेतामें प्रह्लाद हैं दूसरो हास राजा रामाश्वमेधमेंरूपा हैं द्वापरमें भीष्मपितामह अरु द्रौपदी तीन युगनमें हरि प्रकट दर्शन देते कलियुग में तौ जीव लगौ रहैंबातें कलियुगके जीव अधिकारी नहीं छून्यहैं सोनहीं और युगनमें वरदेके छुटि जाते दश दश हजार वर्ष तप करिके जो धनमाल मांगते सोकै छुटिते और ये कलियुग के जीव तनकाहु दर्शन देहिंतौ लिपटि जाहिं

क्योंकि गोपिनने द्वापरमें कृष्ण देखिकै घर छोड़े है कलि
के जीव कागद देखिके घर छोड़ि देहैं फिरि घरको मुख
न देखैंगे पोतौ घरहूको आई १ ॥कवित्त॥ रसिकप्रवीन
निकी कविताई नाना भांतिगाई रसस्वादही सों होति
सफलाई है। यहै जानि मोहनजु भोग भोगता बनाये
आये चलेधुरिही सों सबनिजनाई है। त्रियुग प्रकट रूप
देखे नितनैनन सों बैनसें सरूप लखिहोति अधिकाई है
कल कलिकालके लगोहैं येरसाल जीव छाड़िहैं न क्योंहू
हरि मूरति छिपाईहै २ येबाणीमें साचात् मूरतिही देखै
है अधिकाई तौ येईहै याते प्रगट दर्शन नहीं देहैं हरि
कृपा ॥ श्लोक ॥ वैष्णमानाश्रय:कर्मदयाजीवेषुनारद।
श्रीगोविन्देपराभक्तिस्तदीयानांसमर्चनं ४ ॥

औरएकभाईतानेदेखीतरवारिदारुसक्योनसँभारिजा
इशनाकोजनाईहै । नृपनप्रतीतकरैकरैयहसौंहनानावा
नोप्रभुदेखितेजबातनचलाईहै । ऐसेहीबरषएककहतव्य
तीतभयोकहेंमोहिंमारिडारोजोपैमैंबनाईहै । करीगोटकु
डजाइपाइकैप्रसादबैठेप्रथमनिकासिआपसबनदिखाईहै
२२२ क्रमसोंनिहारिकहीभुवनबिचारिकहाकह्योचाहैंदा
रुमुखनिकसतसारहै । काढ़िकेदिखाइमानोंबीजुरीचम
चमाइआईमनमांझबोलेउवाकोमारोभारहै । भक्तकरजो
रिकैबचायोअजूमारियेक्यों कहीबातझूंठनहींकरीकरतार
है।पटादूनादूनपावैआवौमतिमुजराकोमहींघरआऊं होइ
मेरोनिस्तारहै २२३ ॥

मारिडारिये ॥ एतेसत्पुरुषापरार्थघटिकास्स्वार्थंपरित्य
ज्यते सामान्यास्तुपरार्थमुद्यमभृत:स्वार्थाविरोधेनये १ तेऽ
मीमानुषराक्षसापरहितं स्वार्थायविघ्नन्तियेयेनिघ्नंतिनि-

रथंकंपरहितंतेकेनजानीमहे२॥ कबित्त॥ तजि स्वारथ परमारथको चित्त देके सुधारत देवतजे। स्वारथहू परमारथ हूचितदेके सँभारत मानुषते। परमारथ कोतजि स्वारथ चित्तदेकैसुधारतराक्षसजे।स्वारथहूपरमारथहू चित्तदेकेजे बिगारत जानीनते ३ अरिल्ल भद्रतला यागौठजु रेनाहि चक्कवेपरचौनी जै आजु खाहुहै लध्यवे। परमेश्वर पति राखी बात नहिं कहुमकी।बिजुली ज्यों तरवारि चमकी भुवनकी ४ ॥

रूपचतुर्भुजकेपंडाकीटीका॥ दरशनआयोरानारूपचतुर्भुजजूकेरहेप्रभुपौढ़िहारशीशलपटायेहैं। बेगिदेउतारिकरिलेकेगरेडारिदियादेखिवारकहेउधौरोधौरेयेआयेहैं। कहततोकहिगई सहीनहींजातिअब महीपतिडारिमार हरिपदध्यायेहैं। अहोऋषीकेशकरोमेरेलियेसेतकेशलेश हूनभक्तिकहीकियेदेखोछायेहैं २२४ मानिराजात्रासदुख राशिसिंधुबूड़ोहुतोसुनिकेमिठासबाणीमानेंफेरिजियोहै। देखिसेतवारजानीकृपामेअपारकरी भरीआंखिनीरसेवा लेशमैंनकियोहै।बड़ईदयालसदाभक्तप्रतिपालकरैमेंतोहों अभक्तऐपेहियोसकुचायोहै। झूठेसनबंधहूतेनामलीजेमे रोहीजूतातेसुखसाजैयहदरशाइदियोहै २२५ आयोमार रानासेजवारसोनिहारिरहेकेशकाहूओरकलै पंडानेलगायेहैं। ऐंचिलियोएकतामेंखैंचिकेचढ़ाईनाकरुधिरकीधारा नृपअंगछिरकायेहैं। गिरयोभूमिमुर्छाह्वेकैतनकीनसुधि कछूजाग्योयामबीतेअपराधकोटिगायेहैं। यहअबदंडराज बैठसोनआवैइहांअबयौहूआनमानिकरैजेसिखायेहैं२२६ हरपदध्याइये॥ कुंडलिया॥ खटिया टूटेभ्यौ सरनभुजा भगन भये ग्रीव। भुजा भगन भये ग्रीव दंड यमराज धरैगो।

तहां बराहर और राम बिन कौन करैगो। मात तात सुत सुता प्रीय परिजन कहि चारो। सब सौं परभीतिछा ह सुदिन हरिनाम संभारो। अगर आसरो और तजि रामनाम दृढ़ सोंव। बटिया टटैभ्योसएन सुना भगनभयो ग्रीव १ अहो हृषीकेश॥ गीतायां॥ यत्रस्यगुण दोष त्वंचमर्थपुरुषोत्तम॥ अहंयंचभक्तान्यंचोनमेदोषोनमेगुण: २ झूठेसम्बंध॥ दोहा॥ परसा झूठ भक्तको हरि राखत सनमान॥ जैसे प्रोहित कुपढ़को देतदान यजमान ३ खरौ खरौ सब लेतहै परखि पारखी सार॥ खोटदास अनन्यके गाहक नंदकुमार ४ मन बुद्धिचित्त अहंकार सोइन के प्रेरक नंद कुमार ५॥

भयेचारिभाईकरैंचाकरीवेरानाजूकी तामेंएकभक्तिकरै बनमेंबसेरोहै। आइकैप्रसादखावैफेरिउठिजाइतहांकहै नेकुचलौतौमहीनालीजैतेरोहै। जाकेहमचाकरहैंरहतहजूरसदामरैतौजरावैकौनवहीजाकोचेरोहै। छूटेउतनबनरामआज्ञाहनुमानआयेकियोदाग धूवांलागिप्रेतपारनेरोहै॥ २२७॥

एक भक्ति॥ श्लोक॥ तुल्यंभूभृतिजन्मतुल्यमुभयोस्तुल्यंवमूल्यंवपुस्तुल्यंदार्व्य सुदयदंकखननंतुल्यंचपाषाणयो:॥ एकस्याखिलवंदनायविधिनादेवत्वमारोपितं॥ तद्द्वारेविहितापरस्परपदाघातास्पदंदेहली१॥दोहा।ज्ञाति गोत सब परिहरे प्रभुसेवाको आस॥ रंक हरिहि को ह्वैरहै सोकहिये निज दास २ जाकेहम चाकर हैं॥ सवैया॥ जिन के चित्रहै पतितैं अति पावन है बचनै दुखि छंदनि के। सुबड़ेई कृपाल बड़ेई दयाल बड़े गुण दुःखनि कंदनि के। कवि सूरति जे शरणागतपालहैं दायक सुख आनंदनिके। कृपाल बड़े करुणाकर हैं हम चाकर हैं रघुनंदनि के २

नरनकी करै सेव बड़े अहमद भेव पाछे काम क्रोध लोभ मोह अधिकात है। तासों जीवहिंसा झूंठ निंदा आदि कर्म ह्वैहै ताही के कुसंग नर दुःख दरसात है। मेरे जान वीज सब दोसनिको चाकरीहै सोई ताहि भावै मद अंध उतपात है। प्रजा परमेश्वरकी परिहरै पुण्यपापजैसेपौन परसेते पात उड़िजात है ३ नेक मुजरा करि आव॥ गीतायां॥ मन्मनाभवमद्भक्तो मद्याजीमांनमस्कुरु ॥ मामेवैष्यसिसत्यंते प्रतिजानेप्रियोसिमे ४।

सवैया॥ होहुनिचिंतकरैमतिचिंततू चोंचेंदईसोईचिंत करैगो। पांइपसारिपरेउरहिसोइतू पेटदियोसोइपेटभरैगो। जीवजितेजलकेथलकेपुनिपाहनमेंपहुंचाइधरैगो। भूखहिभूखपुकारतुहैनरतूकहांसुन्दरभूखमरैगो ३ कुंडलिया॥ यहतौगलौगुपालबनायो सोखालीक्योंरहिसी। सोखालीक्योंरहिसी संतौगलौगुपालबनायो। पांचमहीनापीछेजनम्यो दूधअगाऊआयो। निरधनकेघरचाकी होतीअन्नकहूंनहिं दीसे। ताहूकोहरिविमुखनराखें आनिपरोसिनिपीसे। कृष्णायहबरजातबतायो धृकमनमाहीं वैसी। यहतौगलौगुपालबनायो सोखालीक्योंरहिसी ४ पद॥ नारदजीमेरेसाधतेअंतरनाहीं। जोमेरेसाधते अंतररारवेतेउनरकमेंजाहीं। जहँजनजैहैतहँमैंजैवोजहँसोवेतहंसोऊं। जोकबहूंमेरोभक्तदुखपावै कोटियतनकरिखोऊं॥

पाइ दिये चलिबेफिरिबेको हाथदिये हरिकसकमायो। कानदिये सुनिये हरिको यश नैनदिये हरि दरश दिखायो। नासिका दीनी झतीरन सुंघन जीभदई हरिको

यश गायो। येसब सानदिये अतिसुंदर पेटदियो किधौं पाप लगायो॥ पांडवगीतायां॥ भोजनेछादनेचिंता वृथा कुर्वंतिवैष्णवाः॥ योसौविश्वंभरोदेवःकथंभक्तानुपेक्षति१ हाथ हलाये बिन तौपंखाहू न पवन देहै हाथतौ हलाया ईचाहिये यतन॥ कबिर वाक्यं॥ लक्ष्मी मेरी अर्द्धशरीरी हरिदासनकीदासी। सबतीरथ दासनिके चरणनकोटि गंग अरुकासी। जहंजहंमेरो हरियशगावै तैंहीं कियमैं बासा। आगे साधु पाछे उठिधाऊं मोहिंभक्तकी आसा। मन वच क्रमकरि हिरदैराखे सोईपरमपद पावै। कहत कबीर साधुको महिमाहरि अपने मुखगावै १ हरि अरु हरिजन एक समाना। खोजिलेहु सब वेदपुराना। याते सबहीं संसार रूपीमाया ते छुटावे। अरु हरिकी भक्तिको बढ़ावेहरिमारगुलगावै॥

मेरतौप्रथमवासजैमलन्‌पतिताको सेवाअनुरागनेकु खटकौनभावई। करेंघरीदशतामें कोऊजोखबरिदेतलेत नाहिंकानऔरठौरमरवावई। हुतोएकभाईवैरीभेदयह पाइलियोकियोआनिघेरोमाता जाइकेसुनावही। करें हरिभलीप्रभुघोराअसवारभये मारीफौजसबैकहैलोगस चुपावही २२८ देखेंहाफेघोराअहोकौनअसवारभयोआ गजबेदेखौ कहीवहीबैरीपर्‌योहै। बोल्योसुखपाइअजूसां वरोसिपाईकोहो अकेलेहीफौजमारीमेरोमनहर्‌योहै। तो हीकोदिखाइदईमेरेतरफतनैन बैननिसोंजानीवही श्याम प्रभूटर्‌योहै। पूछिकेपढ़ाइदियोवानेपनयहलियो कियोइ नदुःखकरैभलीबुरोकियोहै २२९॥

खटको न भावई॥ गीतायां॥ चंचलंहिमनःकृष्णः प्रमाथिवलवद्दृढं। तस्याहंनिग्रहंमन्ये वायोरिवसुदुष्करं

कवित्त ॥ छिनमें प्रवीन छिन माया में मलीन पुनि छिन
में दीन छिनमांहि जैसो भक्त है। लिये दौरि धूप छिनछिनक
में अनंत रूप कोलाहल ठाने मध्यान्हकैसो तक है। नटकोसो
थारकिधौं हारहै रहटकोसो धाराकोसोभँवर कैकुम्हार
को सौं चक्र है। ऐसो मन भ्रामक सो ब्रह्मकैसे थिर होत ग्रा-
दिहीको चंचल अनादिहीको वक्र है ॥ श्लोक ॥ यत्रयोगे
श्वर:कृष्णोयत्रपार्थोधनुर्धर:॥ तत्रश्रीविजयोभूतिर्ध्रुवानी
तिर्मतिर्मम ६ पूछिकैपठाइ दियौ ॥ कवित्त ॥ काहेकोक-
पूरचूरि चंदनमें सानतहौ काहेकोगुलाबनिको कीजतमत
लुहै। कहैं ऊधौ रामराग औरेलग औरै ठठैरि कहा
होतयहां जारत अतनुहै। वेई तलवी वलवी वेई सुई लाल
डोरै उनहींके टांकेहोत दुख को हतनुहै। छांड़िदेव पा-
पनिको दूरिकै चत्राइनिको आंखिनके घाइनिको आंखे
सीयतनुहै ४ ॥

भयोएकग्वालसाधुसेवासोरसालकरै परैजोईहाथलै
कैसंतनखवावही। पायोपकवानबनमध्य गयोखवाइबेको
आइबेकीढीलचोरभैंसिसोचुरावही। जानिकैछिपाईवात
मातासोंबनाइकही दईबिप्रभूखघृतसंगफिरिआवही। दि
नहोदिवारीकोसो उनपहरायोहांस आईवरजामलियेरा
भिकैसुनावही २३० भागवतटीकाकरि श्रीधरसुजानि
लेहु गृहमेंरहतकरैंजगतब्यौहारहै। चलेजातमगठगमि
लैकहेकौनसंगसंगरघुनाथमेरोजीवनअधारहै। जानिइन
कोईनाहिं मारिबोउपावकरैं धरेचापबाणआवैवहीसुकु
वारहै। आयेघरल्यायेपूछैश्यामसोंस्वरूपकहां जानिवेतो
पारकियेआपडारयोभारहै २३१ ॥ मूल॥ भक्तनसंगभ
गवाननितज्योंगऊवच्छगोहनफिरे ॥ निष्किंचनइकदास

तासकेहरिजनआये। बिदितबटोहीरूपभये हरिआपलुटाये। साखिदैनकोश्यामखुरइहांप्रभुहिपधारे। रामदासकेसदनराइरनछोरसिधारे। आयुधछाततनअनुगकेबलिबंधनअपुबपुधरे। भक्तनसंगभगवाननितज्यों गऊबच्छगोहनफिरे ५४॥

आईघर॥ दोहा॥ छल करि बल करि बुद्धि करि साधनकेसुख देहिं॥ ऊंडो कैसे दाम को हरिजू सों गनि लेहिं १ धरेचापबाण॥ कोटि बिघन सिर पररहैं कोटि दुष्ट को साथ॥ तुलसी कछू न करि सकैं जो सहाइ रघुनाथ २ गोहनफिरै॥ ब्रह्मवैवर्त्ते॥ भक्तसंगश्चमत्येव छायेवसततं हरिः॥ चक्रंधारयतेभक्तान् भक्ताधीनोभक्तजनप्रियः ३ कृष्ण कृष्णेतिकृष्णेतिसप्रयातिभवेन्नरः॥ पश्चात्सहस्रसंपार्थस त्यंसत्यंवदाम्यहम् ४॥

टीका॥ भक्तनकेसंगभगवान ऐसेफिरयोकरेंजैसेबच्छसंगफिरैनेहवतीगाईहै। हरिपालनामबिप्रधाममें जनमलियोकियोअनुरागसाधुदईश्रीलुटाईहै। केतिकहजारलेबजारकेकरजआये गरजनसरैकियोचोरीकोउंपाईहै। बिमुखकोलेतहरिदासकोनदेतदुख आयेघरसंततियासंगबतराईहै २३२ बैठेकृष्णरुक्मिणीमहलतहांशोचपर्योहर्योमनसाधुसेवासाहरूपकियोहै। पूछिचलेकहाकहीभक्तहैहमारोएक मैंहूंआऊंआवोआयेजहांपूछिलियोहै। अजूमगचल्योजातबड़ोउतपातमध्य कोऊपहुंचाइदेवोलेरुपइयादियोहै। करौसमाधानसंतमैंलिवाइजाउइन्हैंजाइबनमांझदेखिबहुधनजियोहै २३३ देखिजोनिहारिमालातिलकनसदाचारहोहिंगेभंडारघनजोपैइतौलायोहै

लीजियेछिनाइयेहीबारकहेडारिदेवो दियोसबडारिछला छिगुनीमेंछायोहै। अंगुरीमरोरिकहीबड़ोतूकठोरअहो तो कोकैसेछाड़ौसतजैबेमोकोभायोहै। प्रकटदिखायोरूपसु न्दरअनूपवह मेरौभक्तभूपलैकैछातीसोंलगायोहै २३४॥

चोरी को उपाव ॥ श्लोक ॥ वैष्णवोबंधुसत्कृत्य ॥ बि-नयरथकुटुंबैठेजच्छरुक्मिणीमहल ॥ वर्जयित्वामहाराज श्रीमद्भगवदालयं १ हरप्रीमनसाधुसेवा ॥ साधवोहृदयंम-ह्यंसाधूनांहृदयंत्वहं। मदन्यंतेनजानंतिनाहन्तेभ्योमनाग-पि २ कोउ पकुंचावै बिमुख को लेत बनिया ह्वै कै चोरी करी वह वैष्णव निकस्यौ पिछौरी लैकै भज्यौ हरिपद यामेरे सारेको बिवाहहैआजुपकुंचाना देखैजो निहारि जानी के सराबगी वनिया है ३ ॥

गौड़देशबासीउभयबिप्रताकीकथासुनौं एकवैश्यवृद्ध जातिवृद्धछोटोसंगहै। औरऔरठौरफिरिआयेफिरिआये बनंतनभयोदुखीकीनीटहलअभंगहै। रीझेउबड़ोद्विजनि जसुतातोकोंदईअहोरहोनहींचाहौंमेरेलईबिनयरंगहै।सा खीदैगुपालअबबातप्रतिपालकरो ठरोकुलग्रामभामपूछौ सोप्रसंगहै २३५ बोल्योछोटोबिप्रक्षिप्रदीजियेकहीजो बाततियासुतकहैंअहोसुतायाकेयोगहै। द्विजकहैंनाहींकै सेकरौंमैंतोदेनकहीकहीकहाभूलिगयोबिथाकोप्रयोगहै। भईसभाभारीपूंछेसाखीनरनारीश्रीगुपालबनवारीऔरकौ नतुच्छलोगहै। लावोंजूलिवाइजोपैसाखीभरैआइतोपै ब्याहिबेटीदीजैलीजैकरौसुखभोगहै २३६॥

फिरिआयेबन॥पद॥ ब्रजभूमिमोहनीमैंजानी। मोहनकुं जमोहनवृन्दावनमोहनयमुनापानी ॥ मोहननारिसकल

गोकुलकी बोलत अमृतबानी ॥ जैश्रीभटके प्रभुमोहननागर मोहन राधारानी ॥१॥ श्लो॥ वृन्दावनं जीवन्ते यत्र स्तेनातिवैष्णवाः॥ २ ॥ कवित्त ॥ कालिंदीकेतीर द्रुमडार कुकिनीरआई त्रिबिधि समीर बहै ललितमनकी। कुंजकुंजनमें बोलत मधुप माते आवत सरसगंध माधुरीसुमनकी। राधिकाश्यामनामधुनि छाइरही जहां तहां कहीं न परतशोभा पुलिन अवनिकी॥ देखिदेखिरहे फूलिसुधिबुधि भूलिफूलि ठौरठौर राखे वृन्दाबन वृन्दाबनकी ३॥ बंदौंश्रीवृन्दावनधाम।ब्रह्मादिकदुर्लभतिनहींकोदेतवृच्छ जीवन बिस्राम। उद्धवसेहरि प्रीतम चाहत गुल्मजन्मलग्यौंअभिराम। ललितललिताईरूपानिधिमोको लाड़लड़वतआठौयाम। यहीरीतिरानीश्रीराधा नहींबिचारशुभधाम। पाइनिलाल भालबेंदीदईभोडरपिय लखिरीझतश्याम १ ॥ श्लोक॥ वाराणस्यांविशालाक्षि विमला पुरुषोत्तमे ॥ रुक्मिणीद्वारकायांतु राधावृंदावनेवने॥ छप्पै ॥ सघनकुंजअलिगुंजपवन तहँत्रिबिधि सुहाई। रतनजटितअवनी अनूप यमुनाबहिआई॥ छरिवुकोक संगीत रागरागिनि सखिरतिपति। सबसुखराजसमाज सहजसेवत अतिनितप्रति ॥ श्रृंगारहास्यरसप्रेममहैं कामर्मगुन कछुनडर। दंपति बिहार गोबिंदसरस जैजैवृंदाबिपिनबर ३॥ कवित्त॥ ब्रह्माके कमंडलते गिरिजाप्र डनते शिवजटा मंडनते धाराधौं बहतिहै। तीनोलोक पावनको आपदा नशावनको जाकेगुणगावनको बाणीयौं चहतिहै। कहैकबिराइ सुरअसुरहू पूजैंजाहि सुरधुनीं कहेदुखपापनरहतहै। यमुनाजीकी महिमा यातेनकहि परै गंगापगपानी ताकीपटरानी कहतहै ४ ॥ कवित्त रसिबो बसिबो वृन्दाबनको हँसिबोमिलि संतनमेंरहिबो पढ़िबो गुनिबोनित राम सदा सुख सों लहि जो जितके बहिये। योगी सुयती हियध्यान धरैं जग जीवनि भाग बड़ो लहिये। भ्रमणा मिटिजाइ सबै जियकी यमुना य

ना यमुना कहिये ५ ॥ कवित्त ॥ यमुना सुभगतीर कुंजसुख पुंजभीर मोर पिक कीर धुनि भांति भांति हेरीहै। फूली द्रुम डारैं गुंजमधुप बिहारैं प्यारी प्रीतम निहारैं आंखें चऊंदिशि हेरीहै ॥ पुलिन प्रकाश रास बिबिधि बिलास जहां बढ़त हुलासबात बीते होति मेरी है। कैसो यहधाम अभिराम वृंदाबन नाम ऐसी छबि हेरीपरी रोमरोम बेरी है ६ ॥ दोहा ॥ उपमा वृन्दा बिपिनकी कहिधौंदीजै काहि ॥ कोटिकोटि बैकुंठहू तिहिसम कहे न जाहि७ ॥

आयोवृन्दावनबनबासीश्रीगुपालजूसों बोल्योचलो साखीदेवलईहैलिखाइकै । बीतेकैऊयामश्यामसुंदरजूप्रतिमानचलैतौपैबोल्योक्योंजुभाइकै। लागेजबसंगयुगसेरभोगधरेउरंगआधेआधपावैंचलेउनूपुरबजाइकै। धुनितेरेकानपरैपाछेजनिडीठिकरैकरैरहौवाहीठौरकहीमैंसुनायकै२३६ गयेढिगग्रामकहीनेकुतौचिंताउरहैचितयेतेठाढ़ेदियोमृदुमुसुकाइकै। लावौजाबुलाइकहीआइदेखौआयेआयसुनतहीचोंकिसबग्रामआयोधाइकै। बोलिकैसुनाईसाखिपूजीहियेअभिलापलाषलापभांतिरंगभरेउरभाइकै । आयोनसरूपफेरिबिनयकरिराख्योघेरिभूपसुखढेरदियेअबलौंबजाइकै २३७ ॥

सुखढेरदियो ॥ कबित्त ॥ लागीजबआश तबउतरयोआकाशहूते सिंधुजलजंतु रसचीन्होपानकीन्होहै। देख्योहि तसार वाकोउदर बिदारि कढ़यो चख्योमै.लषारी वासस पुटनिलीनोहै। चाहतकिशोरभ्रम्योदशदिशिओर लयो ब्रजचितचोर जियबारि फेरिदीनोहै। उरकेसुलाक मोती नासिका बुलाकभयो बड़ोईचलाक मोहिंलाकमन कीनो है १ बदनसुराहीमें छबीलो छबिछातौमद अधरपिया

लाचणचणमेंगहतुहै। अलसाइकै पीटत कपोलपट्यैकपर कबहूंगनकजानि भषनचहतुहै। प्रेमनगसाधी येतौसदाई अर्थंकभरि छकोईरहत कोऊकछुन कहतु है। कुकि परै बातकै कहैते अनखातन्यारो बेसरिको मोती मतवारोई रहतुहै २ दृष्टांतसिद्धकोचौबेने तमाचोदियो३ ॥

रामदासकीटीका ॥ द्वारकाकेढिगहीडांकोरएकगांवर हैरहैरामदासभक्तभक्तिजाकोप्यारिये। जागरणएकादशी करैरणछोरजूकेभयोतनवृद्धआज्ञादईनहींधारिये। बोलेभ रभाइतेरोआइबोसह्योनजाइचलौंघरधाइ तेरेलावौगाड़ी भारिये। खिरकीजुमंदिरकेपाछेतहांठाढ़ीकरौभरोअकवा रमोकोबेगिहीपधारिये २३८ करीवाहीभांतिआयोजाग रणगाड़ीचढ़िजानीसबवृद्धभयोथकीपांवगतिहै। द्वादशी कीआधीरातलैकैचलेउमोदगातभूषणउतारिधरे जाकेसां चीरतिहै। मंदिरउघारिदेपरिखैहैउजारितहांदौरेपाछेजा निदेखिकहीकौनमतिहै। वायीपधराइहांकिजानिसुखपा इरहौगहौचलौजातिआनिमारेउघावआतिहै २३६ देखेच हुंदिशिगाड़ीकहूंपैनपायेहरि पछितावौकरिकहैभक्तिकेल गाईहै। बोलिउठेउएकयहओरयहगयोहतोदेखजाइबा वरीकोलेहूलपटाईहै। दासकोजुडारीचोटओटिलईअंगमें हीनहीमेंतौजाहुविजयमूरतिबताईहै। मेरीसिरसोनौलेहु कहीजनतोलिदेहु मेरेकहाबोलेउवारीतियाकेजताईहै २४० लगेजबतोलिबेकोवारीपाछेडारिदईनईगतिभईप लाउठेनहींवारीको। तबतौखिसानेभयेसबैउठिघरगयेकै सेसुखपावैंफिरौमतिहीमुरारीको। घरबिराजैंआपकहेउ भक्तिकोप्रतापजाइकरैजेपैफुरैरूपलालप्यारीको। बलबं

धनामप्रभुबांधेबलिभयोतब आयुधकोक्षत सुनिआयेचोट मारीको २४१ ॥

द्वारका से दोसौ कोस काह्नमंडलमें डांकोरगांवहै खिरकीकी गैलबताई जैसेरुक्मिणी श्रीकृष्णनेहरीही भगवान अपनेगुण अपनेभक्तनको सिखावैं सांचीरति तापै दृष्टांत एकडोकरी ठाकुरकोसेवासहतको देतिहीसोउन कही दर्शनकरि लेहिंगे अंगमेंही ओटिलई तुमअपराधी भक्तमारेउ मरैंगे महाप्रलयकरौहत्यानहीं मेरीसरसोंनों अबअपनोनहीं बलबंधननाम इहांघावप्रति छवौनाह्वैरहै याचकारको नमतिहै महबूवा देशहरविचिकोईआनित भासाजोबैदीनक ॥

मूल ॥ बच्छहरणपीछेविदित सुनोंसंतअचरजभयो। जसूस्वामिकेवृषभ चोरिब्रजवासीलाये। तैसेइदियेश्याम वरषदिनखेतजुताये । नाभाज्योंनन्ददासमुईइकवच्छ जिवाई। अम्बअलहकौनयेप्रसिद्धजगगाथागाई । बारमु खीकेमुकुटकोश्रीरंगनाथकोशिरनयो । बच्छहरणपीछे विदितसुनोंसंतअचरजभयो ५४ जसूस्वामीकीटीका ॥ जसूनामस्वामीगंगायमुनाकेमध्यरहैं साधुसेवाताकोखेती उपजावहीं। चोरीगयेबैलताकीइनकोनसुधिकछूतैसेश्या महलजुतेमनभावहीं। आयेब्रजवासीपैठवृषभनिहारिक हीइहैंकौनलायोघरजाइदेखिआवहीं। ऐसेबारदोइचारि फिरेउनठीकहोत पूछीपुनिल्यायेआयेइन्हें पैनपावहीं २४२ बड़ोईप्रभावदेख्योतैसेप्रभुबैलदिये भयोहियेभाव आइपाइनमेंपरेहैं । निपटअधीनदीनभाषिअभिलाषजा निदयाकेनिधानस्वामीशिष्यलैकेकरेहैं। चोरीत्यागिदई

अतिसुधिबुधिभईनईरीतिगहिलईसाधुपंथअनुसरेंहैं । अन्नपहुचावैंदूधदहीदैलड़ावैंआवैंसंतगुणगावैंवअनंतसुखभरेंहैं २४३ ॥

साधुसेवैरागीहैं ॥ हरिको सांचौ सनेह तौ तबहीं जानिये जब हरिके प्यारेन में सनेह होइ १ संतसे बाहिरि प्रसन्न भजनू कातो साखामकरी लैकै को गली में देखौ करै द्विज दोष साधु सेवा के प्रताप सों बड़ो वैभवभयो ताहि देखिके २ ॥ श्लोक ॥ काककुक्कुटकायस्थाः स्वजातिप्रपोषकाः ॥ स्वजातिपरिहंतारोश्वानसिंहगजद्विजाः ३ तापैदृष्टांतराजाभरतकोअवडतव्यको ॥

नन्ददासकीटीका ॥ निकटबरेलीगांवतामेंसोहबोली रहेनन्ददासविप्रभक्तसाधुसेवारागीहैं । करैंद्विजदोषतासोंमुईएकबछियाले डारिदईखेतमांझगारीजकलागीहैं । हत्याकोप्रसंगकरैंसंतजनहूंसों लरेंहिन्दूसोनमारेंयह बड़ीअभागीहैं । खेतपरजायबाहिलईहैजवाइदेखिपरेंदोषीपांइभक्तिभावमतिपागीहैं २४४ अल्हकीटीका ॥ चलेजातअल्हमगलगेबागदीठिपर्यो करिअनुरागहरिसेवाबिस्तारिये । पकिरहेआंबमांगेमालीपासभोगलियेकहालीजैकहीझुकिआईसबडारिये। चल्योदौरिराजाजहांजाइकेसुनाईबातगातभईप्रीतिअलुटतपांवधारिये । आवतहीलौटिगयोमैंतोजूसनाथभयो दयोलैप्रसादभक्तिभावईसँभारिये २४५ ॥ वारमुखीकीटीका ॥ वेश्याकोप्रसंगसुनोंअतिरसरंगभर्योभर्योधरधनअहोऐयेकौनकामको । चलेमगयाचनकोठौरस्वच्छआईमनछाई भूमिआसनसोंलोभनहीं

दामको। निकसीझमकिद्वारहंससेनिहारिसबकौनभागजा गभेदनहींमेरेनामको।मोहरनिपात्रभरिलैमहंतआगेधरय ढरयोजलनैनकहींभोगकरोश्यामको २४६ पूछीतुमको नकाकेभौनमेंजनमलियो कियोसुनिमौनमहा।चिंताजियध रीहै । खोलिकैनिशंककहोशंकाजिनिआनोमनकहीबार मुखीऐयेपाइआइपरीहै। भरयोहैभंडारधनकरोअंगीकार अजूकरियेबिचारजोपैतोपैयहैएकहै। उपाइहाथरंगनाथ जूकेअहोकीजियेमुकुटजामजातिमतिहरीहै २४७॥

कौनकामको॥ धर्मशास्त्रे॥ दशश्वानसमोचक्रीदशचक्री समोध्वजः॥ दशध्वजसमोवेश्यादशवेश्यासमोनृपः १ काक भुशुण्डपैनबैठेहंस सतद्रव्यऐसेकोनभाग ॥ नारदपंचरात्रे ॥ यास्याद्यमस्यानांऊंगावामंभयायतत्॥ सर्वंभवंतिगांगेयको नसेचितबुद्धिमान् २ ॥ छप्पै॥ ज्ञानवंत हठकरै निबल परि वार बढ़ावैं। बिधवाकरैशृंगार धनीसेवाको धावैं॥ निर्धन समझै धर्मनारि भरता नहिंमानैं। पंडित किरिया हीन राज दुर्लभ वारिजानैं॥ कुलवंत पुरुष कुलबिधि तजैं बंधु न मानत बंधु हित। संन्यास धारिधन संग्रहैं सुये जगमें मूरख बिदित ३ भेदनहीनामको ॥ श्लोक॥ नज्ञंसयानितोयां निनदेवामृच्छिलामया॥ नोपैहमरीरै॥ दोहा॥ सबसु- खपावैजासुते सोहरिजूको दास। दुख पावै कोउ जासु ते सो न दासरे दास॥ रंगनाथ को मुकट॥ तेजीयसांन दोषायवन्हेःसर्वभुजोयथा ४ ॥

बिप्रहूनछुवैजाकोरंगनाथकेसेलेत देतहमहाथतोकोर हैइहांकीजिये। कियोईवनाईसबघरकोलगाईधनबनिठ निचलीयारमध्यधरिदीजिये । सन्तआज्ञापाइकेनिशंक गईमन्दिरमेंफिरीयोंसशंकधृगतियाधर्मभीजिये । बोलें

आइयाकोलाइआइपहराइजाइ दियोपहराइनयोशीशम-
तिभीजिये २४८ ॥ मूल ॥ औरयुगनतेकमलनयनकलि
युगबहुतकृपाकरी। बीचदियेरघुनाथभक्तसंगठगियाला
गे। निर्जनबनमेंजाइदुष्टकृमकियेअभाग ॥ बीचदियेसो
कहारामकहिनारिपुकारी। आयेशारंगपाणिशोकसागर
तेतारी। दुष्टकियेनिर्जीवसबदासप्राणसंज्ञाधरी। और
युगनतेकमलनयनकलियुगबहुतकृपाकरी ५५ टीका॥
विप्रहरिभक्तकरिगौनोचल्योतियासंग जाकेदूनोरंगजा
कीबातलैजनाइये। मगठगमिलेद्विजपूछेअहोकहांजात
जहांतुमजातयामेंमननपत्याइये।पंथकोछुटायोचाहैबनमें
लिवाइजाइकहैअतिसूधोपैंडोउरमेंनआइये। बोलेबीचरा
मतऊहियेनेकुधकधकी कहीउहीभामश्यामनामकहापा-
इये २४९ ॥

विप्रक्षुन कुवै राजाने ऋषिन्यो ते सो छोड़ि गये बन
में कुत्ताको खायो यों सबको खवायो लिंग गाजर सोय
बार अंडकोश प्याजलख लहसन हाड़मरी मूड़ तरबूजसो
ऐसो मेरो धान्यनिषिद्धहै १ नेकुधकधकी ॥ कुंडलिया॥
बैरी बंधुवा बावरो जुआरी चोरलबार।व्यभिचारी रोगी
ऋणीनगरनारिको यार।नगरनारिकोयार भूलिपरतीति
नकीजै।सौ हैं सौसौ खाइचितमें एक न लीजै। कह गिरि
धर कविराइ न्याइमेंभायोऐसे। दुखसोंहितको कहैं पेट
में बैरीजैसे २ कमलनयन बहुत सूझै तीनयुग आयुदावुद्धि
बल धनरोग नहो।कर्म कारसोइबनै कलियुगमें कछू न बनै
नामबतायो कृपाकरि ३ ॥

चलेलागिसंगअबरंगकोकुरंगकरयो तियापररीझिभ-
किसांचीइनजानीहै। गयेबनमध्यठगलोभलगिमारयो

विप्रक्षिप्रलैकैचलेबधूअतिविलखानीहैं। देखैफिरिफिरि पाछेकहैकहादेखोमांर्यो ततताउचार्योदेखोवाही विच प्रानीहै। आयेरामप्यारेसबदुष्टमारिडारेसाधुप्राणदेउवा रेहितरीतियोंबखानीहैं २५० ॥ मूल ॥ एकभूपभागवत कीकथासुनतहरिहोइरति। तिलकदामधरिकोइताहि गु रुगोबिंदजाने। षटदरशनीअभावसर्वथाघटकरिमाने। भांड़भक्तकोभेषहासहितभंडकुललाये। नरपतिकेदृढ़नेम ताहिपैपाइँधुवाये। भाँड़भेषगाढ़ोकह्योदरशपरसउपजी भगति। एकभूपभागवतकीकथासुनतहरिहोइरति ५६ ॥

चलेलगि संग ॥ कवित्त ॥ विप्रसोईपढ्यो चारोवेदह्वको भेदजाने स्मृति षट शास्त्र मतिन्याइसबरढ्योहै। सोई पढ्यो भारतपुराण पढ्यो पिंगलसौं सबै कोश पढ्यो सोतौ काव्यकोषकढ्योहै। पढ्यो आगम सो अगम विचार चित्तसोई पढ्यो जोतिस सो जोतिरस मढ्योहै। सोईपढ्यो व्याकरण जानिलियै शब्द वर्ण सोईसब पढ्यो जोई रामनाम रढ्यो है॥ दोहा॥ जोहै जाकी आसरै ताहीको सिरभार। करुईहरुईतोमरी खेइलगावै पार २ ॥सवैया॥ कामसे रूप प्रतापदिनेशसे सोमसे शीलगणेशसमाने। हरिचंदसे सांचे षडेविधिसे मघवासे महीप विषै सुख साने। शुकसे मुनि शारद सेवकता चिरजीवनलोमससे अधिकाने। ऐसेभयेतौ कहा तुलसी जोपै राजिवलोचन राम न जाने ३ तिलक दामधरि चारि आश्रम हरिके अंगते संत शरीर। वैष्णवो समदेहस्तु ॥ तुलसी काष्ठधारीन ॥ वैष्णवो।भक्तिध-र्जितिः॥ पूजनीयंमहीपालः ॥ षटदरशनीषटशास्त्रवक्ता दासनहीं संतदास कहावैं धन हरिको जैसेगुमास्ता दश रुपया महीना पावै ऐसे ४ ॥

टीका ॥ राजाभक्तराजडोमभांड़कोनकाजहोइभोइ

गईयाकेचनहरिकोनदीजिये । आयेभेपधारीलैपुजाइना चेदैंकैतालनृपतिनिहारिकहीयोंनिहालकीजिये। भोजन कराइभरिमोहरनिथारलाये आगेधरिबिनयकरीअजूयह लीजिये । भईभक्तिराशिबोलेआवैबासभावैनाहिंबांहग- हेरहेकैसेचलेमतिभीजिये २५१ ॥ मूल ॥ अंतरनिष्ठनर पालइकपरमधरमनाहिंनधुजी । हरिसुमिरनहरिध्यान आनिकाहूनजनावै । अलगनइहिबिधिरहैअंगनामरमन खावै । निद्राबशसोंभूपबदनतेनामउचार्यो। रानीपति परीझिबहुतबसुतापरवार्यो । ऋषिराजशोचिकह्यो नारिसोंआजमक्तिमेरीकुजी । अंतरनिष्ठनरपालइकपरम धरमनाहिंनधुजी ५७॥

राजाभक्तराज ॥ श्लोक ॥ दृढतरनिबद्धमुष्टे:कोशनिषण स्यसहजमलिनस्य कृपणस्यकृपानस्यचकेवलमाकारतोभे द: १ भईभक्तराशि ॥ कवित्त ॥ जलके सनेही मीन बिछुर- त तजैंप्राण मणिबिन अहिजैसे जीवतन लहिये। स्वाति बूंदकेसनेही प्रगट जगतसांभ्र एकसीपि दूजेपुनि नातकहू कहिये। रविके सनेही बसैं कमल सरोवरमें शशिके सने- ही या चकोर जैसे रहिये। तैसेहीसुखद एकप्रभुसों सनेह जोरि और कछुदेखिकाहू औरनाहिं बहिये १ राजाने तब बांहगही ॥ सवैया ॥ तजे पितुमात तिया सुत भ्रात कियेजगमात पितातवऔरै। नंदकुमार भजैनहिं मूढ़ भजै सोइरूप ठहरात न ठौरै। लेत न शीष सिखावत औरै सुदौरतभोग दिशाकर कौरै। भांड़भयो विषयी न भयो सुकछूोकछूऔर नचयो कछू औरै २ ॥

टीकाअंतरनिष्ठराजाकी॥ तियाहरिभक्तकहैपतिपैनभ क्तपायोरहैमुरझायोमनशोचबढ्योभारीहै । मरमनजान्यो

निशिसोवतपिछान्योभाव बिरहप्रभावनामनिकस्यौबि-हारीहै। सुनतहीरानीप्रेमसागरसमानीभोरसंपतिलुटाई मानोंनृपतिजियारीहै। देखिउत्साहभूपपूछौसुनिवाहि कह्योरह्योतनठौरनावजीवयोंबिचारीहै २५२ देखितन त्यागिपतिभईओरगतियाकी ऐसीरतिवानमैंनभेदकछू पायोहै। भयोदुखभारीसुधिबुधिसबटारी तब नेकनबि चारीभावराशिहियेछायोहै। निशिदिनध्यानबिरहप्र बलतजेप्राणभक्तरसखानरूपकापैजातगायोहै। जाके यहहोइसोईजानेरसभोइयामें डारैमतिखोइसबप्रगटदि खायोहै २५३ ॥

नामनिकस्यौबिहारीहै॥ कवित्त॥ कुटिल अक्रूरक्रूर बैरीकाहूजनमकोहै चेटकसोडारि शिरलैकेबज भूरिगो। व्याकुल बिहालबाल बंशीधरलाल बिन मीनज्यों तर-फितन प्रेमरस भूरिगो। चरण उचाइ चितवत ऊंचेधाम चढ़ि चिंताके चकित भईचैनसब चूरिगो। बारबारकहत बिसरअलेनैनपूरि धूरि न उड़ति आली अवरघदूरिगो १ भ्रमेंभौंर ठौरठौर केतकीकुमुद और तनक जो लाज करै पंकजकेसंगकी। चंचलचलाकचित चोकरीको भूलमति घायलज्यों घूम्योअरे लगनि कुरंगकी। और नहींस्वाद है विवाद काहू बातनिको मनमें न मनसाहै और के प्रसंगकी। जगमें सराहिये सनेहकी नवलरीति बिछुरनि मीनकी औ मिलनि पतंगकी २ ॥

मूल ॥ गुरुगदितबचनशिष्यसत्यअतिदृढ़प्रतीतिगा-ढ़ोगह्यो। अनुचरआज्ञामांगिकह्योकारजकोजैहों। आवा रजइबाततोहिंआयेतेकैहौं। स्वामीरह्योसमाइदासदर-

शनकोआयो। गुरुकीगिराबिश्वासकैरिसबघरमेंलायो। शिष्यपनसांचोकरनकोबिभुसबसुनतसोईकह्यौ। गुरुगदितबचनशिष्यसत्यअतिदृढप्रतीतिगाढ़ोगह्यौ५८॥टीका गुरुनिष्ठकी॥ बडोगुरुनिष्ठकछूघटिसाधुइष्टमानेस्वामी संतपूजोमानेकैसेसमुझाइये। नितहीबिचारैपुनिटारैये उचा नाहिंचल्योजबरामतिकोकहीफिरिआइये। शपथ दिवाइनजराइबेकोदियोतन लायोयोंफिराइवहेबातजूज ताइये। सांचोभावजानिप्राणआइसोबखानकियोकरैभक्त सेवाकरीबर्षलौंदिखाइये२५४॥

दृढ़प्रतीति करिके मानों गुरु के बचन को पर यामें गुरु को शिष्यको भलो होइ ऐसी दृढ़ प्रतीति न करै ताप घोराको दृष्टांत। बड़ोगुरुनिष्टनारदवाक्यं॥ यस्य साक्षात्भगवतिज्ञानदीपप्रदेगुरौ। मर्त्यबुद्धिश्रुतंतस्यसर्वं कुंजरशौचवत् १ आचार्यंमांविजानीयात्॥ करी भक्तसेवा नाभाजूकहीहै भक्तभक्तिभगवंत गुरुगहीन भक्त कामनहीं॥ आदिपुराणे॥ अस्माकंगुरवो भक्ताः भक्तानां गुरवोवयं। अस्माकं बांधवोभक्ताः भक्तानांबांधवोवयं।वैष्णवके अपराधों को गुरुअरुहरि न बचावै २ दोउन के अपराधोंको साधु बचावै जैसे दुर्वासाको महादेव गुरुब्रह्मादादा गुरु हरि परम गुरु न बचायसके अंबरीष ने बचायो साधुही सब अपराधसों बचावैं और की सामर्थ्य नहीं सो छोड़ावैं याते साधु त्रैलोकी में बड़े हैं५॥

मूल॥ संदेहग्रंथखंडननिपुणवाणीविमलरैदासकी। सदाचारश्रुतिशास्त्रबचनअविरुद्धउचार्यो। नीरक्षीर बिवरनपरमहंसनउरधार्यो। भगवतकृपाप्रसादपरम

गतिइहितनपाई । राजसिंहासनबैठिज्ञातिपरतीतिदि-
खाई । बर्णाश्रमअभिमानतजि पदरजबंदहिजासकी ।
संदेहग्रंथखंडननिपुणवाणीबिमलरैदासकी ५६ टीकारै
दासजूकी ॥ रामानंदजूकोशिष्यब्रह्मचारीरहैएक गहै
ब्रह्मचुटकीकोतासोंकहैबानिये । करौअंगीकारसीधोक
होदशबीसबारबरषैप्रबलधारातामेंबापैआनिये । भोग
कोलगावैप्रभूध्याननाहिंआवैअरे कैसेकरिलावैजाइपूछी
नीचमानिये । दियोशापभारीबातसुनीनहमारीघटिकुल
मेंउतारीदेहसोईयाकोजानिये २५५ ॥

बाणीबिमलरैदासकी केवल भक्तही गाई ॥ पद ॥ धन्य
हरि भक्ति त्रयलोक यश पावनी । करै सतसंग दृढ़हि बि-
मल यश गावनी । बेद पुराण पुराण ते भागवत भागवत ते
भक्ति प्रगट कीनी । भक्तिते प्रेम प्रेमते लच्छणा बिना सत-
संग नहिं जाति चीनी । गंगा पापहरै शशितापअरुकल्प-
तरुदीनता दूरि खोवैं । पाप अरु ताप सब तुच्छ मति
दूरि करि अमी की दृष्टि जब संतजोवैं । बिष्णुभक्त जिते
चित पर्बरतिते मन बच करम करि बिश्वासा । संत धरणी
धरी कीर्त्ति जग बिस्तरी प्रणत जन चरण रैदास दासा १
नीरछीर ॥ गीतायां ॥ निर्मानमोहाजितसंगदोषा अध्या
त्मनित्याविनिवृत्तकामा ॥ द्वंद्वैर्विमुक्ताःसुखदुःखसंगैर्गच्छं
त्यमूढापदमव्ययंतत् २ राजसिंहासन पै कहूं चमारहू
बैठेहैं तब कही गुरु की संतन की कृपाते बैठि जात हैं
कामनहीं स्वरूप मुख्य है ३ ॥

भातदूधथावैंयाकोछुयोहूनभावसुधिआवैआवैसबप
छिलीसासेवाकोप्रतापहै । भईनभबाणीरामानंदमनजा
नीबड़ोदंडदियोमानिबेगआयोचल्योआपहै।दुखीपितुमा

तुदेखिधाइलपटायेपांइ कीजियेउपाइकियेशिशुगयोपा पहै। स्तनपानकियोजियोलियोउन्हैंईशजाननिपटअजा मफेरिभूलेपायोतापहै २५६ बड़ेईरैदासहरिदासनिसोंप्री तिबड़ीपितानसुहाइदईठौरपिछवारही।हुतौधनमालकन दियोहूनिहालतियापतिसुखजालअहोकियेजबन्यारही। गाढ़ेपगदासीकाहूयतनप्रकाशीलावै खालकरैजूतीसाधु संतकोसंभारही।डारिएकछानिकियोसेवाकोस्थानरहैंचौं ड़ौअपजानिबांटिपावैयहैगारही २५७॥

पितानसुहाई॥ कबित्त॥ पैसेबिन बापकहै पूततौ कपूत भयो पैसेबिन भाईकहै जीकोदुखदाईहै। पैसे बिन यारकहै मेरो यह यारनाहीं पैसेबिन ससुरकहै कौनको जमाईहै। पैसेबिन बंदेकी प्रतीति नहीं पंचनमें पैसेबिन आइघर रोइ रोटी खाईहै। कहैं अलमस्त सबै बजैसही आठौयाम आजुके जमानेमें पैसेकी बड़ाईहै १ धर्मकर्म प्रीतिरीति सजन सुहृदताई सकल भलाइनिको पुंजसो बिलाइगो। अंतरमलीन ह्वैकै कलह प्रवेशभयो नरनक लेश निशिदिन सरसाइगो। नहीं रागरंग नहीं चरचा चतुरता की नहीं सुखसेज घनआनँद नशाइगो। देखिकै निराश जियलहतन झलासमन देखतही देखतहीऐसोस मोआइगो २ बड़ेईरैदास॥ दोहा॥ नंदनँदनकी भक्ति बिन बड़ो कहावै सोइ। जैसे दीपक बुझनको बड़ोकहै सबकोइ ३॥

सहैअतिकष्टअंगहियेसुखशीलरंग आयेहरिप्यारेलि योभक्तिभेषधारिकै। कियोबहुमानखानपानसोंप्रसन्नह्वै कैदीनोकह्योपारसहैराखियोसँभारिकै। मेरेधनरामकछु पाथरनसरैकामदाममेंनचाहौंचाहौडारौतनवारिकै। राई

एकसोनौकियोदियोकरिकृपाराखोराख्योवह कानिमांझ लेहुगोनिकारिकै २५९ आयेफिरिश्यामम्मासतेरहबिती तभयेप्रीतिकरिबोलेकहौपारसोकीरीतिको। वाहीठौरली जैमेरोमननपतीजैअब चाहौसोईकीजैमैंतौपावतहौंभीति को। लैकैउठिगयेनयेकौतुकसोसुनोपावैसेवतमुहरपांच नितहीप्रतीतिको। सेवाहूकरतडरलाग्योनिशिकहेउहरि छांड़ौअरआपनीऔराखोमेरीजीतिको २६० ॥

याते हरिभक्तिही बड़ीहै कियेशिष्य ॥ श्लोक॥ अंत्यजा अपितद्राष्ट्रेशंखचक्रांकधारिणः॥ सुधिआवै राजाइंद्रद्युम्नअ गस्तस्नापगज भयेकियौ वक्तमान ॥ पद ॥ आजुके द्यौसकी जाऊंबलिहार। मेरेगृह आयाराजा रामजीका प्यार। करौं दंडवत चरण पखारों। तनमन धन संतनि परवारौं। आंगन भवन भयो अति पावन। हरिजन बैठे हरियश गावन। कहेंकथा अरुअर्थ बिचारें। आपतरैं औरनिको तारें। कहैरैदास मिले हरिदासा। जनम जनमकी पूजी आसा १ पाथरनसरै काम पारसतौ सोई जोपार उतारै सोतौ एक रामनामकै ३ डराग्यो ॥ श्लोक ॥स्तेयंहिंसा नृतंदंभ कामंक्रोधस्मयोमदः। भेदोवैरमविश्वासः संस्पर्द्धा व्यसनानिच। एतेपंचदशानर्थाह्यर्थमूलामतांनृणां तस्मा दनर्थमर्थाख्यंश्रेयोर्थीदूरतस्त्यजेत् ५ ॥ चौपाई ॥ कैसा- याकै हरिगुण गाई। दोनों सेती दोनो जाई ६ श्लोक ॥ विषयाविष्टचित्तानांविष्णावेशसुदूरतः। वारुणीदिग्गतंव स्तुव्रजनैंद्रीकिमाप्नुयात् ७ ॥

मानिलईबातनईठौरलैबनाइचाइ संतनिबसाइहरिमं दिरचिनायोहै। बिबिधिबितानतानगनौंजोप्रमानहोईभो ईभक्तिगईपुरीजगयशछायोहै। दरशनआवैलोगनाना। बि

विरागभोगरोगभयोबिघ्नकेतनसबछायोहै। बड़ेइंखि
लारीवेरहेहीछानिडारिकरीघरपैअटारीफेरिद्विजनसिखा
योहै २६१ प्रीतिरसराशिसोरैदासहरिसेवतहैघरमेंदुरा
इलोकरंजनादिटारीहै। फेरिदियेहृदयजाइद्विजनपुकार
करीभरीसभानृपआगेकहेउमुखगारीहै। जनकोबुलाइस
मुझाइन्याइप्रभुसोंपिकीनोजगयशसाधुलीलामनुहारीहै।
जितेप्रतिकूलमैंतौमानेअनुकूलयातेसंतन प्रभावमनिकोठ
रीकीतारीहै २६२॥

लोकरंजनादिटारिये ४॥ सवैया ॥ हम जो मनमोहन सों हित है चुगली करि कोउ कहा करि है। अबतो बनि के बदनामी भई गुरु लोगनि के जु कहा डरि है। कबिधीर कहै अटकी छबि सों ब्रज में भटकी बिसर्‍यौ घर है। तुम को यह बातसों काह्न कहा अपने कोउ नान कुंवा परि है १ सुखगारी है॥ पुष्करमाहात्म्ये ॥ अपूज्योयत्रपूज्यंते पूज्यपूजाव्यतिक्रमः ॥ तत्रतत्रप्रवर्त्तन्तेदुर्भिक्षंमरणंभयं २ न्याइ प्रभुसोंपि॥ छन्द॥ सदाकृपानिधान हौ कहा कहौ सुजानहौ अमान हान मानहौ समान काहि दीजिये। रसाल प्रीति के भरे खरे प्रतीति के निकेत रीति नीतिके समुद्र देखि देखि जीजिये। टीको लगी तिहारियेइ सु-आइयो निहारिये लोक रंजनादि टारिये समीप यौं बिहारिये उमंग रंग भीजिये। पयोदसो ददाइये बिनोद को बढ़ाइये। बिलंब छांड़ि आइये किधौं बुलाइलीजिये २ तारी है॥ दोहा॥ ज्योंज्यों आवै बिघन डर त्योंत्यों प्रेम हुलास। जैसे दीपक तम बढ़ै सतगुन होत प्रकाश॥ मन कोठरीकी तारी है हिरण्यकश्यप दुखदिये तब प्रह्लाद गुण प्रगट ऐसे ४ ॥

बसतचितौरमांझ रानीएकझालीनाम नामबिनकाम

खालीशिष्यआनिभईहै । संगहुतेविप्रसुनिक्षिप्रतनआ गिलागीभागीमतिनृपआगेभीरसवगईहै ।वैसेहीसिंहास नपैआईकैबिराजेप्रभूपढ़ैवेदबाणीपैनआयेयहनईहै । प- तितपावननामकीजियेप्रगटआज गायोपदगोदआइबैठेभ क्तिलईहै २६३ ॥

पद गायो ३ ॥ पद ॥ आयो आयो हौ देवाधि देवतुम शरण आयो । सकल सुखको मूल जाको नाहिंसम तूलसो चरण मूल पायो । लियो बिविधि जौन बास यमकीअगम त्रास तुम्हरे भजन बिन भ्रमत फिरयो ॥ माया मोह विषय रस लंपट यह दुस्तर दूर तरयो । तुम्हरे नाम बिश्वास छा- ड़िये आन आश संसारी धर्म मेरो मन न धीजै । रैदास दासकी सेवा मानऊं देवापतितपावन नाम आजप्रगट कीजै १ ॥ सवैया ॥ स्तको ठौर ठौवन कुल जाको हरि मूरति लो डूनमें अरको । सेवन लग्यौ जग्यौ जग ऊपर निंदक नर मूसन कूकरको । हरि प्रसन्न शिर चढ़ौ सिं- हासन जैति धुनि काशि नगर की । लाल कृपाल प्रेमरस बंधन निर्भय भक्ति राधिकाबरकी ॥ जैमिनिपुराणे ॥ मोर ध्वजस्याने । अंत्यजाअपितद्राष्टेशंखचक्रांकधारिण: ॥ संप्राप्यवैष्णवींदीक्षांदीक्षयताद्रवसंबभौ ३ ॥ सप्तमे ॥ वि- प्राद्विषटगुणयुतादरविंदनाभपादारविंदविमुखात् स्वपचं वरिष्टं । मन्येतदर्पितमनोवचनेहितायप्राणंपुनातिसकुलंन तुभूरिमान: ४ ॥

गईघरझालीपुनिबोलिकैपठायेअहोजैसेप्रतिपालीअ बतैसेप्रतिपालिये । आपहूपधारेउनबहुधनपटवारेविप्र सुनिपांवधारेसीधैदैनिकारिये । करिकेरसोइद्विजभोजन करनबैठेद्वैद्वै मधिएकपोरैदासकोनिहारिये ॥ देखिभई

आंखैंदीनभाषैंशिष्यभष्येलावें स्वर्णकोजनेऊकाढ्योत्वचा कीनोन्यारिये २६४ ॥ मूल ॥ कबीरकानिराखीनहींब-र्णाश्रमषटदरशनी ॥ भक्तिबिमुखजोधर्मसोअधर्मकरि गायो। योगयज्ञब्रतदानभजनबिनतुच्छदिखायो ॥ हिंदू तुरकप्रमानरमैंनीसबदीसाषी।पक्षपातनहिंबचनसबहिके हितकीभाषी॥ आरूढ़दशाह्वैजगतपरमुखदेखीनाहिंनभ नी। कबीरकानिराखीनहींबर्णाश्रमषटदरशनी ६० ॥

पतितपावन नामकीजिये प्रगट आजुगायो पदआपुबैठे भक्ति मनभाईहै निहारिये ॥ भूतानांदेवचरितं॥ देखेतेज्ञान आयो॥ यस्यनास्तिस्वयंप्रज्ञा १ जानिगये॥एकतेअनेकभये परमभागवतहोहैंभृंगीभयतेभृंगहोत ॥ शुकोहंशुकोहं॥ इत्त्वनिसेंदिखायो ऐसे इनको जीत्योतब सोनेको जनेऊ दिखायो भक्ति बिमुखजो धर्म सो अधर्म करि गायो २॥ भागवते॥गुरुवैष्णवोगोविप्रंहरिअर्थसबकोपूजै पैग्रहव्यती पातदेखैसोइअधर्मस्वर्गनरकसंसारकारणधरमवहै जगकूटै॥ सोहरिकीशरणजायतबऐसे ३ तुच्छदिखायो ॥ दोहा॥ रामनाम तौ अंक है अरु सब साधन शुन्य॥अच्छरके सन्मुख रहै शून्य शून्यदशगुन्य॥पच्छपातनहीं ॥ छप्पै ॥ पाड़ भली कथा कहिजानै॥ औरनि परमारथ उपदेशै आपु स्वार-थ लपटानै। ज्यों दीपक घर करै उजारो निज तनतम सन ठानै। महिषी खीर अवै औरनि को आपु भुसहि रुचि मानै। श्रोता गोता क्यों न खाइ आचारजफिरै भुलानै। यह कलि छल सब कीमति नाठी समझत लाभ न हानै। हितकी कहत लगत अनहितकी रजराजसमें सानै ॥ क-हत कबीर बिना रघुबीर हित यह पीरहि कोजानै ५ भजनबिन ॥ समार्तीसर्वधर्माणांभक्तोयस्तवकेशव ॥ सकर्ता सर्वपापानांयोनभक्तस्तवाच्युत ६ यदिसधुमथनत्वदंघ्रिसे

बांहृदिचिदधातिजहातिवाविरक्ती ॥ तदखिलमपिदुःअतं त्रिलोकक्षतमक्षतंतुक्षतंक्षतंचसर्वं १ ॥

टीका ॥ अतिहीगँभीरमतिसरसकबीरहियोलियोभक्तिभावजातिपांतिसबटारिये। भईनभबाणीदेहतिलकरवानिकरौकरौगुरुरामानंदगरेमालधारिये। देखैनहांमुखमेरोजानिकेमलेच्छमोको जातन्हानगंगाकहीमिगतनडारिये। रजनीकेसेसमयआवेससोंचलतआपपरैपगरामकहैंमंत्रसोंबिचारिये २६५ कीनिवहीबातमालातिउकबनाइगातमानिउतपातमातशोरकियोभारिये। पहुंचीपुकाररामानंदजूकेपासआइकहीकोऊपूछेंतुमनामलैउचारिये। लावौजूपकरिवाकोकबहमकियोशिष्य लायेकरिपरदामेंपूछीकहिडारिये। रामनाममंत्रयहीलिख्योसबतंत्रनिमेंखोलिपटमिलेसांचोमतउरधारिये २६६ ॥

सबतंत्रनिमें ॥ श्लोक ॥ श्रीरामेतिपरंजाप्यंतारकंब्रह्मसंज्ञकं ॥ ब्रह्महत्यादिपापघ्नमितिवेदविदोविदुः १ ॥ कवित्त ॥ रहैगो नराज रजधानीपै न पानीपुनि कहै वाकवानी जिमीआसमान जाइगो। सप्त पाताल अरु सात दीप भाइ सत एक बेर चांद सूर ज्योतिह्व बिलाइगो। जोइ कछू सृष्टि रची करताकी दृष्टिहीसो एक बेरसृष्टिहूको करता समाइगो। कहैं कबि काशीराम औरककूथिर नाहिं रहिबे को एक रामनाम रहिजाइगो २ छप्पै ॥ यत बिन योगी अफल अफल भोगी बिन माया। जलबिन सरवर अफल अफलतरुवर बिनछाया ॥ शशिबिन रजनी अफल अफल दीपक बिन मंदिर। नर बिन नारी अफल अफल गुण बिन सबसुन्दर ॥ नारायणकीभक्तिबिन राजा परजा सब अफल। तत्ववेत्तातिज्ञ लोकमें रामरटैं ते नर सुफल ३ ॥

वुनैतानेबानोहियरामभडरानोकही कैसेकैबखानो हीरीतिकछुन्यारिये । उतनोहीकरैतामैंतननिरबाहहोइ भोइगइऔरैबातभक्तिलागीप्यारिये । ठाढ़ेमंडीमांझपै बेचनलैजनकोऊआयेमोंकोदेहुदेहमेरीहैउघारिये।लग्यो देनआधोफारिआधेसोंनकामहोयदियोसबलैगोजोपैयही उरधारिये २६७तियासुतमातमगदेखेभूंखेआवेंकबदौ रहेहाटनमेंलावैंकहाधामको । सांचौभक्तिभावजानिनिप टसुजानवेताकृपाकेनिधानगृहशोचपरेउश्यामको । वाल दलैधायेदिनतीनियोंबितायेजब आयेघरिडारिदईलहे हैपरामको । माताकरैशोरकोऊहाकिममरोरिबांधैडारे बिनजानेसुतनहींलेतदामको २६८ गयेजनदोइचौरिढूं केलिवाइलायेआयेघरसुनिबातजानीप्रभूपीरको । रहेसु खपाइकृपाकरीरघुराइदईक्षणमेंलुटाइसबबोलिभक्तभीर को। दयोछोंड़ितानोबानोसुखसरसानोहियेकियेरोसधा येसुनिबिप्रतजिधीरको । क्योंरेतेजुलाहेयनपायोनाबुला येहमैंशूद्रनिकोदियोजावोकहैंयोंकबीरको २६९ ॥

वुनै तानो बानो दोऊकरैसो दोऊकैसे बने मनतौ एक हीहै मनको अभ्यास भजनको इंद्रियनको अभ्यासक्रिया को जैसे जड़भरत शरीर त्यागतीबार १ देवानांगुणलि गानां ॥ अथवा हरि आपही भड़राइ २ सुखसरसानो एक फकीर तापैफकीर आवैकहीगुजर कैसे हैतबकही मेंसाहिब देताहै जबखातेहैं संतसंतोषसों परेरहेते दूसरो कहीऐसे हमारी गलीकेकुत्ताह्व करतेहैं आपकैसे देता तब बांटि खातेहैं तबतौ आनँद मानेहैं ३ ॥

क्योंजूउठिजाऊंकछूचोरीधनलाऊंनित हरिगुणगाऊं

कोऊराहमेंनमारीहै । उनकोलैमानकियोयाहीमेंअमान भयो दयोजोपैजाइहमैंतौहीतौजियारीहै । घरमेंतोनाहीं मंडीजांउतुमरहौबैठे नीठिकैछुड़ायोपैड़ोछिपैठ्याधिटारी है। आयेप्रभूआपद्रव्यलायेसमाधानकियो लियोसुख होयभक्तिकीरतिउजारीहै २७० ब्राह्मणकोरूपधरिआये छिपिबैठेजहां काहेकोमरतभूखौजावोजूकबीरके । कोऊ जाइद्वारताहिदेतहैअढ़ाईसेर बेरजिनिलावोचलेजावोयों बहीरको। आयेघरमांझदेखिनिपटमगनभये नयेनयेकौ- तुकसोकैसेरहैधीरके। बारमुखीलईसंगमानोवाहीरंगरंगे जानोयहबातकरीउरअतिभीरके २७१ संतदेखिदुरेसुख भयोईअसंतनिके तबतौविचारिमनमांझऔरआयोहै । बैठीनृपसभातहांगयेपैनमानकियो कियोएकचीजउठि जलढरकायोहै । राजाजियशोचपर्योकह्योकहाकह्योतब जगन्नाथपंडापांवजरतबचायोहै । सुनिअवरजभरिनृपने पठायेनर लायेसुधिकहीअजूसांचहीसुनायोहै २७२ ॥

नयेनये ॥ दोहा ॥ व्यासबड़ाईजगतकीकूकरकी पहिं- चांनि । प्रीतिकियेमुखचाटिहै वैरकिये तनहानि १ हाथ कछू न लगै भजन गांठिकोजाइ ऐसे बिषयिनको संगहै जैसे सेवरिको सुवाको कछू हाथ न लगै देखतही में सुंदर सेवत बिचारी बड़ाई खोईआपही आवेंगे २ बारमुखी लईसंग था कुसंगसौं कबीर परम साधताकी महिमा घटोबिषै कहनलगे ॥ दोहा ॥ संगति खोटी नीचकी दे- खोकरिकै व्यास। महिमा घटी समुद्रकी बस्यौ जुरावन पास ३ जल ढरकायो ऋषभदेव यथेष्ट कृपा देखि जगत बुरोहोय ॥

कहीराजारानीसोंजुबातवहसांचभई आंचलागीहिये अबकहोकहाकीजिये । चलेहीबनतिचलेशीशतृणबोझ भारी गरेसोंकुल्हारीबांधि तियासंगभीजिये । निकसे बजारह्वैकैडारिदईलोकलाज कियोमैंअकाजछिनछिन तनछीजिये। दूरिजेकवीरदेखिह्वैगयोअधीरमहा आयो उठिआगेकह्योडारिमतिरीझिये २७३ देखिकेप्रभावफेरि उपज्योअभावद्विज आयोबादशाहजूसिकंदरसोनामहै। बिमुखसमूहसंगमाताहूमिलाइलई जाइकेपुकारेजूदुखा- योसबगांवहै । लावौरेपकरिवाकोदेखौरेमकरकैसा अ- करमिटाऊंगाढ़ेजकरतनावहै। आनिठाढ़ेकियेकाजीकहत सलामकरौ जानैंनसलामजामेंरामगाढ़ेपावहै २७४ बां- धिकैजँजीरगंगातीरमांझबोरिदियो जियौतीरठाढ़ौकहै यंत्रमंत्रआवहीं । लकरीनमांझडारिअगिनिप्रजारिदई नईमानोंभईदेहकंचनलजावहीं । बिफलउपाइभयेतऊ नहींआइनये तबमतवारौहाथीआनिकेझुकावहीं। आवत नढिगओचिंघारिहारिभाजिजाइ आगआपसिंहरूपबैठे शोभागावहीं २७५ ॥

भाजिजाइ भगवान सिंह रूप हाथी के पास सन्मुख आइ ठाढ़े भये हाथी चिंघारि के भाज्यौ बादशाह नेक- ही हाथी क्यों नहीं पेलै कही महाराज सन्मुख सिंह है तौ मोहिं क्यों नहीं देखै सन्मुख आवै तब देखौ जबआ- यो तब देखतही बड़ो डरकियो यह वही नृसिंह हैं जो प्रह्लादकी रक्षा को प्रगट्यो है याते संतनि के संमुख तब हरि दीखै १ भगावही॥ दोहा ॥ बधिक बाज कार दुष्ट नर आइन चील्यौहोइ। तुलसी या संसार में साधुन

जीवै कोइ २ राजा खीसों बूझैं कृष्ण सान्दीपन के पढ़े दक्षिणा मांगो सो कही खीसों पूछैंतब प्रभास में बूड़ि गयोपुत्र सो ल्याइ देव ऐसे पंडित पूछे बिफल उपाव॥ जलेविष्णु स्थलेविष्णुर्विष्णु:पर्वतमस्तके ॥ ज्वालामालाकुलेविष्णु:सर्वंविष्णुमयंजगत् ३ ॥

देख्यौ बादशाहिभावकूदिपरेगहेपाव देखिकरामाति मातभयेसबलोकहैं । प्रभुपैबचाइलीजैहमैंलगजबकीजै लीजैसोईभावैगांवदेशनानाभोगहैं । चाहैंएकरामजाको जपैआठौयामऔर दामसोंनकामजासेंभरेकोटिरोगहैं । आयेघरजीतिसाधुमिलिकेरिप्रीतिजिन्हैं हरिकीप्रतीति वेईगायबेकेयोगहैं २७६ होइकैखिसानेद्विजनिजचारि बिप्रनके मूड़निमुड़ाइभेषसुंदरबनायेहैं । दूरिद्वूरिगांवन मेंनामनिकोपूछिपूछि नामजोकबीरजूके झूठन्योतिआये हैं। आयेसबसाधुसुनियेतोदुरिगयेकहू चहूंदिशिसंतनि केफिरैंहरिधायेहैं । इनहीकोरूपधरिन्यारन्यारेठौरबैठे एऊमिलिगयेनीकेपोखिकैरिझायेहैं २७७॥

गहेपाव॥ पद॥ कलिमें सांचो भक्त कबीर। जबते हरि चरणन रुचि उपजी तबते बुन्यौनचीर। दीनो लेहिं न यांचे काहू ऐसो मनको धीर। योगीयती तपीसंन्यासी इनकी मिटी न पीर। पांच तत्वते जनम न पायो कालन ग्रस्यौ शरीर। ब्यास भक्तको खेत जुलायो हरि करुणामय नीर १ लेरीमन अनतहीसचुपावै। जैसे उड़त जहाजको पक्षी फिरि जहाजपैआवै। जोनरकमलनैनको तजिकेआपनी देवको ध्यावै । बिद्यमान गंगा तटप्यासौ दुर्मति कूप खनावै। जिन मधुकर अंबुजरस चाखौताहि करीलनभावै। सूरदास प्रभुकामधेनु तजिछोरी कौन दुहावै२॥

दोहा॥ कहा करै रसखानि को कोउ दुष्ट लवार॥ जो पति राखनहार है माखन चाखनहार ३ हरिको निश्चय मानि के बनिज करै जो कोइ॥ तुलसी मन विश्वास सों राम चौगुना होइ ४ मछरी मीन खाई कुत्ता बिलाई ते बचै॥

आईअप्सराछरिबेकेलियेबेसकिये हियेदेखिगाढ़ोफिरिगईनहींलागीहै।चतुर्भुजरूपप्रभुआनिकैप्रगटकियोलियोफलनैननिकोबड़ोबड़भागीहै। शीशधरेंहाथतनसाथमेरेधामआवौ गावोगुणरहौजौलौंतेरीमतिपागीहै। मगमेंहैजाइभक्तिभावकोदिखाइबहु फूलनिमँगाइपौढ़िमिल्योहरिरागीहै २७८॥

आई अप्सरा ताको देखिकै मोहितनहींभये जैसे नारदजी१॥पद॥ तुम घरजावौ मेरी बहिना।यहां तिहारो लेना न देना रामबिना गोविंदबिना विष लागैं ये बैना। जगमगात पट भूषण सारी उर मोतिन के हार। इन्द्रलोकते मोहन आई मोहिं करनभरतार। इनबातन को छांड़ि देउरी गोविंदके गुनगावो। तुलसीमाला क्यों नहिं पहिरो बेगिपरम पदपावौ।इन्द्रलोक में टोट परयोहै हमसों और न कोई। तुमतो हमें डिगावन आई जाऊ दईको खोई। बहुते तपसी बांधि बिगोये कच्चेसूत के धागे। जो तुमयतनकरो बहुतेरा जलमें आगि न लागे। होतो केवल हरिके शरणै तुमतो झूंठीमाया। गुरुपरताप साधुकी संगति सैंजु परमपद पाया। नाम कबीर जाति जुलाहा गृह बनरहौं उदासी। जो तुममान महत करि आईतो इकमाइ दूजे मासी १॥ कवित्त॥ वहमति कहां गई अब मति औरैभव ऐसी मतिकी जोमति आपनी बिगारोगे।सुधि कहुं सोइगई बुद्धिकहुं बूड़िगई अबक्यों न भई सोतानई बाट पारोगे॥ निपटनिरंजन निहारिकै

विचारि देखो एकही विचारि कहा दोसरा विचारोगे। वृमसों न उद्धारो प्रभु मोसों न पतितभारो मोहिंमति तारो वैकुंठको बिगारोगे २ ॥

मूल ॥ पीपाप्रतापजगवासनानाहरकोउपदेशदियो। प्रथमभवानीभक्तमुक्तिमांगनकोधायो। सत्यकह्योतिहि शक्ति सुदृढ़हरिशरणबतायो ॥ श्रीरामानंदपदपाइ भये अतिभक्तिकीसींवा। गुणअशंखनिरमोलसंतधरिराखत ग्रीवा ॥ परसप्रनालीसरसभई सकलबिश्वमंगलकियो। पीपाप्रतापजगबासना नाहरकोउपदेशदियो ६१ ॥ टीकापीपाकी ॥ गांगरोलगढ़बठपीपानामराजाभयोलयोप नदेवीसेवारंगचढ्योभारिये। आयेपुरसाधुसीधोदियो जोईसोईलियो कियोमनमांझप्रभुबुद्धिफेरिडारिये। सोयो निशिशोयोदेखिसुपनोबिहालअति प्रेतविकरालदेहिधरि कैपछारिये। अबनसुहाइकछूबहुपाइंपरिगईनईरीतिभ ईयाहिभक्तिलागीप्यारिये २७६ ॥

आयेपुरसाधु ॥ पीपाकी दयारहै भक्तिअंगमें ॥ कवित्त॥ देवी सेठि शीतला बराही जा जगावैराति अकत पितर पंचपीरको मनावैहैं। खेतखाल गूंगारवभैरव भूपालादिक नाना देवता मनावै नगरकोट जावैहैं। ब्याहकाज छौंकि कपरोजन सराध आत काटिकै करजयों उदारता दि-खावैहैं। केवल जगतहरामसुमिरै न सीतारामको पैंजव धर्मराज नरकको पठावैहैं १ पीपाजी भवानी को सेवैपद-या भक्ति अंगरहै याते साधुआये दियो सीधो जोईसोई लियो ॥ श्लोक ॥ यदृच्छालाभसंतुष्टोद्वंद्वातीतोविमत्सरः २ कियो मनमांझ साधुनिने भोग धरिकै हरिसे कही जेइंकै चुपकरि मति ह्वैरहियो राजाकै भक्ति उपजाइयो

३ भागवतेएकादशे ॥ भूतानांदेवचरितंदुःखायचसुखायच। सुखायेवहिसाधूनांत्वादृशामच्युतात्मनां ५ ॥

पूछोहरिपाइबेकोभगजबदेवीकही सहीरामानंदगुरु करिप्रभुपाइये । लोगजानैबौरोभयोगयोयहकाशीपुरी फुरीमतिअतिआयेजहांहरिगाइये । द्वारपैनजानदेतआ ज्ञाईशलेतकहीराजमीनहेतसुनिसबहीलुटाइये । कहीकुं वागिरैचलेगिरनप्रसन्नहिये जियेसुखपायेलायेदरशदि खाइये २८० कियेशिष्यकृपाकरीधरीहरिभक्तिहियेकही अवजावौगेहसेवासाधुकीजिये । बितयेबरषजबसरसट हलजानिसंतसुखमानिआवैघरमध्यलीजिये । आयेआ ज्ञापाइधामकीनीअभिरामरीति प्रीतिकोनपारावारचीठी लिखिदीजिये । हूजियेकृपालवहीबातप्रतिपालकरौचले युगवीशजनसंगमतिरीझिये २८१ ॥

पूछौहरिपाइबेकोभग जैसे राजा मुचकुंदने देवतन पै मुक्तिमांगी देवता बोले हमपै मुक्तिकहांहाइ तौ हमहूं मुक्तिनहोइं तापैदृष्टांत शीतलाको तब सोइबो मांग्यो मुक्तिही तुल्यहै देवीने रामानंद बताये धरीहरिभक्तिहिये उपदेशन करिधरि दियो जैसे आधेको अपनो बड़ो अ-भ्यास जैसे अज्ञानी विषयोंको तौ विषैको खतैसिद्धि ज्ञान ॥ सवैया ॥ जबतें तुमआवन आशदई तबतें तरफौं कब आइहौजू। मन आतुरनामनहीं में लखौं मनभावन नामसुनाइहौजू। विधिके छिनलौं दिन बाटपरौ यह मान वियोग बिताइहौंजू। सरसौ घन आनंद वारस सों सुमहारस कोबरषाइहौ जू १ ॥

कबीररैदासआदिदाससबसंगलिये आयेपुरपासपीपा

पालकीलैआयोहै । करीसाष्टांगन्यारीन्यारीविनयसाधु निकोधनकोलुटाइसोसमाजपधरायोहै। ऐसीकरीसेवाव हुमेवानानारोगभोगबाणीकैनयोगभागकापैजातगायोहै। जानीभक्तिरीतिघररहौकैंप्रतीतिहौहुकरिकैप्रतीति गुरुप गलगिधायोहै २८२ लागीसंगरानीदशदोयकहींमानीन हींकष्टकोबतावैडरपावैमनलावही । कामरीनफारिमधि मेषलापहरिलैवोदेवोडारिआभरणजेपैनहींभावही। का हूपैनहोहिदियोरोइभोइभक्तिआइ छोटीनामसीतागरैंडा रीनलज्यावहीं। यहूदूरिडारौकरौतनकोउघारोकियोद योरामानंदहियोपीपानसुहावहीं २८३ जोपैयापैकृपाक रीदीजैकाहूसंगकरिमेरेनहींरंगयामेंकहीबारबारहै। सोंह कोदिवाइदईलईतबकरधरि चलेढरिविप्रएकछोड़ेनबिचा रहै। खायोबिषज्यायोपुनिफेरिकैपठायोसबआयोसोसमा जद्वारावतीसुखसारहै। रहेकोऊदिनआज्ञामांगीइनरहि बेकीकूदेसिंधुमांझचाहउपजीअपारहै २८४॥

करी साष्टांगधनको लुटाय॥ कबित्त॥ जिन जिनकरना ईतिन करआई तिन करननाई तिन करनआई है। का-गर लिखाई जिन कागदै लिखाई पाई धरामें धराई जिन धरा धूरि खाई है। दैदै लबराई जिन लई है पराई अब ताहू पास नेकुहूं न रहति रहाई है। जिनजिन खाई तिन उदरसमाती खाई जिननखवाई तिन खाईवज्रताई है १ श्लोक॥बोधयंतीनयाचंतिभिक्षांकाराग्रहेग्रहे ।दीयतां दीयतांनित्यमदातुःफलमीदृशं २ अहंताममताविनछूटेहरि प्रापतिनिश्चयनयातेकुंवागिरैं प्रतीति गुरुपगलगि सूर-दासग्रामकी खबरिराखे परग्रामकीः नहीं ऐसेजीवविषे ण।नेहरिको नहींसो इनकही गुरुआश्रयरहिये तोभलो

छायसौंहको दिखाइदई जैसे तेरी प्रतीति भुक्त बैराग्य बलखबुखारेको बादशाह फकीर एक संगकी कही ऐसे आज्ञा ॥ कवित्त ॥ सबसुख दैकै शरणागत को एकैबार भक्ति के हियेपै और ठाठ ठठवत हौ। पावन पतित यह बिरद तिहारो ताके दोष दुख पुंजपलहोमें मिटवतहौ। सुरज कहत ताहि अपना कै राखौद्वार मेरी बारहीको क्यों अबार हटवत हौ। देवकार काकेवेद दानतार का-के मोहिं नाथद्वारकाके द्वारकाके पठवत हौ १ ॥

आयेआगेलेनआपुदियेहैंपठायजन देखिद्वारावतीकृष्णमिलेबहुभाइकै। महलमहलमांझचहलपहललखीरहे दिनसातसुखसकैकौनगाइकै। आज्ञादईजाइबेकोजाइबो नचाहैंहियेपियेबहुरूपदेखोंमोहिंकोजुजाइकै। भक्तबूड़िगयेयहबड़ोईकलंकभयोमेटौतमअंकशंकगहीअकुलायकै। २८५ चलेपहुंचाइबेकोप्रीतिकेआधीनमहा।बिनजलमीन जैसेऐसेफिरिआयेहैं। देखिनईबातगातसूकेपटभीजेहिये लियेपहिंचानिआनिपगलपटायेहैं। दईलैकैछापपापज गतकेदूरिकरोढरोकाहूओरकहिसीतासमझायेहैं। छूटेई मिलानबनमेंपठानभेंटभई लईछीनितियाकियाचैनप्रभु धायेहैं २८६ अभूलगिजावोघरकैंसेकैसेआवेंडरबोलीहरि जानियेनभावपैनआयोहै। लेतहौंपरिमैंतौजानोंतेरीशि क्षाऐयेसुनिदृढ़बातकानअतिसुखपायोहै। चलेमगदोसरै संतामेंएकसिंधुरहै आयोवासलेतकियोशिष्यसमुझायो है।आयोओरगांवशेषशाहीप्रभुनाव रहैकरेवासहरेटरचौं धरसुहायोहै २८७॥

आयेआगेलैन॥ श्लोक॥ चीरेणात्मगतोदकापमिखि

कादत्तापुरास्वगुणा: । क्षीरेतापमवेद्यतेनपयसास्वात्मा
क्षयानीकृत: २ गंतुंपावकमुन्मनास्तदभवद्दृष्ट्वातुंचमित्रापदं।
युक्तंतेनजलेनशाम्यतिसतां मैत्रीपुनस्त्वीदृशी ३ ॥ दोहा ॥
सीतापति रघुनाथजी तुमलगि मेरीदौर । जैसेकागजहा-
जको सूझत और न ठौर ४ ॥

दोऊतियापतिदेखेंआयेभागवतऐयेघरकीकुगतिरसां
चीलैदिखाईहै । लहँगाउतारिबेंचिदियोताकोसीधालियो
करोअजूपाकबधूकोटमेंदुराईहै । करिकैरसोईसोईभोगल
गिबैठेकहेउआवोमिलिदोऊलेहुपाछेसीतभाईहै। वाहूको
बुलावौलावौआनिकैजिमायोतब सीतागईवाहीठौररनग
नलखाईहै २८८ पूछेंकहौबातयेउघारेक्यों हैंगातकहीऐ
सेहीबिहातसाधुसेवामनभाईहै । आवैंजबसंतसुखहोतहै
अनंततनढक्योकैउघारेउकहाचरचाचलाईहै । जानिगई
रीतिप्रीतिदेखीएकइनहींमेंहमहूंकहावैंऐयेछूटाहूनपाईहै।
दियोपटआधोफारिजहिकैनिकारिलई भईसुखशैलपाछे
पीपासोसुनाईहै २८९ ॥

दोऊतियापति महाराज पीपा अरु सीता श्रीद्वार-
काहूँ आये हैं वेई छाप लायेहैं श्रीकृष्ण जूने दईहै १
सो इन्हेंलगावैगो सो सोहीपै आवैगो लंबेसे गोरेसे
पीपाजी हैं वर्षतीस में अरु सीताजी वर्षपंद्रह में सर्वांग
सुन्दरी गौरांगी मानोंसीताश्रीहैं उनको दर्शन साक्षात्
श्रीकृष्णहीहैं याते नितको बाटदेखैं २ ॥ दोहा ॥ आज
हैअतिथि है सखो शशिऊग्यौ आकाश । मेरेदृग अरुपोव
को है दोउराकेपास ३ रति सांची जैसे नटकीसी कला
लै ऐसे पहले ४ ॥

करैंवेश्याकर्मअवधर्महैहमारोयही कहीजाइबैठीजह
नाजनकीढेरीहै।घिरिआयेलोगजिन्हैंनयननकोरोगलखि
दूरिभयोशोकनेकुनीकेहूनहेरीहै । कहैतुमकौनवारमुखी
नहांभौनसंगभरुवासगहैंमौनसुनिपरीबिरीहै । करीअन्न
राशिआगे मोहरंरुपैयापागे पठैदईचींधरकेतहीनबेरीहै
२६० आज्ञामांगिढोड़ेआयेकभूंभूखेकभूंयायेओचकहीदा
मपायेगयेस्नानको। मुहरनिभांड़ोभूमिगड़ेउदेखिछोड़ि
आयोकहीनिशितियाबोलीजावोशरआनको। चोरचाहैंचो
रीकरैंढरंसुनिबाहीओरदेखैंजे।उघारिसांपडारेहतेप्राणहैं
ऐसेआइपरीगनीसातसतबीशभई तोरेपांचबांटकरैएक
केप्रमाणको २६१ जोईआवैद्वारताहिदेतहैंअहारऔरुबो
लिकैअनंतसंतभोजनकरायोहै । बीतेदिनतीनिधनधाइ
प्याइछीनकियोलियोसुनिनामनृपदेखिबेकोआयोहै । दे
खिकैप्रसन्नभयोनयोदेवोदीक्षामाहिं दीक्षाहैआतीतिकौं
आपसोसुहायोहै । चाहौंसोईकरौंह्वैकृपालमोकोढरौंअ
जूधरौंआनिसंपतिओंरानीज्याइलायोहै २६२ ॥

करें वेश्याकर्म क्योंकि हमलूंदेखा देखी आगेकोबढ़ैंव
तनकौन कामकोहै और तनसबकाम आवैबैल भैंस सुरह
गऊ हाथी भेड़ पीपाजी बोले हमैं कोऊलेइतौ हमहू
निकैं सीता बोलीं हमारे पीछे लगिलेऊ तुमकैसे बिकौगे
बारमुखी होहिंगी सोसत्संगते रंगचढ़ग्रो गहगह्योतीनि
बार पुटनि सें गहगह्यो चढ़ाहै एक पुट पीपाजीसों दूस
रौ चौंधरजीसों तीसरो चौंधररानी जीने गहगह्यो
कह्यो। ऐसे ध्यानिपरी पीपाजीनेकही कहाकरौगी कहीं
अब बाधा न करैंगी १ इतिप्राण॥ श्लोक ॥ लिखिता चित्र

गुम्फेन ललाटेच्छर मालिका॥ नसापिचालितुंशक्या पंडितैरखिदशैरपि। लछमण दर्शन बिभीषण आवै पड़ा फूल टेरी लौह गुञ्जा मांगे॥

करिकैपरीक्षादईदिक्षासंगरानीदईभईहैहमारीकरोप रदानसंतसों। दियोवनघोराकछूराख्योदंनिहोराभूपमा नतनछोराबड़ोमान्योजीवजंतुसों। सुनिजरिबारिगयेभा ईसेनसूरजकऊरजप्रतापकहाकहैसीताकंतसों। आयोव नजारोमोललियोचाहैखेलनको दियोबहकाइकहौपपिपा जूअनंतसों २६३ बोलेउबनिजारोदामखोलिखैठादीजि यैजूलीजियेजूआइग्रामचरणपठायेहैं। गयेउठिपाछेबो लिसंतनमहोछोकियो आयोवाहीसमयकहीलैहुमनभाये हैं। दरशनकरिहियेभक्तिभावभरेउआनिआनिकैबसनस बसाधुपहरायेहैं। औरदिनन्हानगयेघोड़ाचढ़िछोड़ियो लियोबांध्योदुष्टननेआयोमानोलायेहैं २६४ गयेहेबुलाये आपपाछेघरसंतआये अन्नकछुनांहिकहूंजाइकरिलाइये। विषईबणिकएकदेखिकैबुलाइलई दईसबसौंजकहीसही निशिआइये। भोजनकरतमांझपीपाजूपधारेपूछीबारेतन प्राणजबकहिकैजनाइये। करिकैशृंगारसीताचलीझुकि मेहआयोकांधेपैचढ़ाइबपुबनियांरिझाइये २६५॥

दईदीक्षा॥ श्लोक॥ राज्ञश्चामात्यजादोषा पत्नीपापं स्वभर्त्तरि॥ यथाशिष्यार्जितंपापं गुरुःप्राप्नोतिनिश्चितं १ दईसबसौंज॥ कवित्त॥ कागिनि को मातीचुगावतहै रैनि दिन हंसनि को चुनी बूर कांकरी समेतहै। चेरीकोंचूड़ा अरुसुन्दर दुशालालाल शीलहू की बात कभूं हियेहूं

न लेतहै। गुणीतेगुमानता गुण की परिछांहि नाहिं आवै जो अजान तासों निपट कछुहेतहै। कोऊ जोसीमांगैसी घा सूधहीजबाबदेतकांचनीको कांचनउधार लेलेदेतहै २॥

हाटपैउतारिदईद्वारआपबैठिरहेचहेसूकेपगमाताकैसे करिआईहै। स्वामीजुलिवाईलायेकहांहैनिहारोजाइआई पाइपर्योठर्योराखोसुखदाईहै।मानोंजिनिशंककाजकी जियेनिशंकधन दियोबिनअंकजापैलरैमरैभाईहै। मर्यो लाजभारचाहैधर्योभूमिफारिहग बहैनीरधारदेखिदई दीक्षापाईहै २९६ चलतचलतबातनृपतिश्रवणपरी भरी सभाबिप्रकहैबड़ीबिपरीतिहै। भूपमनआईयहनिपटघ- टाईहोति भक्तिसरसाईनहींजानैघटीप्रीतिहै। चलैपीपा बोधदैनद्वारहीतेसुधिदई लईसुनिकहीआवोकरौसेवारी- तिहै। बड़ोमूढ़राजासोजगाठबेठ्योमोचीघर सुनीदौरि आयोरहेठाढ़ेकौननीतिहै २९७ हुतीघरमांझबांझरानी एकरूपवती मांगीवहीलावोबेगिचल्योशोचभारीहै। डग मगपांवधरैपीपासिंहरूपकरै ठाढ़ादेखिडरैइतआवैआप स्वारीहै। जाइतौबिलाइमयोतियाढिगसुतनयोनयोभूमि परकलाजानीनतिहारीहै। प्रगट्योस्वरूपनिजखिचिकै प्रसंगकह्यो कहांवहरंगशिष्यभयोलाजटारीहै २९८॥

माता कैसे॥ सवैया॥ प्रीतम प्यारो मिल्यो सपनेमें परी जबनेसुक नींदनिहारे। कंतकोआइबो त्योंहीं जगाइ कह्यो सखिबैन पियूषनिचोरे। योंमतिराम गयो हियमें तब बालके बालम सों हगजोरे। ज्योंपटमें अतिही चट- कीलो चढ़ैरँग तीसरी बार के बोरे १ याको शुद्धहृदय

अबहों कैसेहु गयो सीताजी के दर्शनते सीधेकी वेरक्यों न भयो तीनपुट में रंगहै द्वैविधि दर्शन एक विधि भोजन विप्रकहैं यहां राजाके ब्राह्मणनको पीपाजीको बोध क्यों न भयो बासमीपकेलासो पतनासो पाचभेदहै २॥

कियोउपदेशनृपहृदयमेंप्रवेशकियो लियोवहीप्रण आपआयेनिजधामहैं । बोल्योएकनामसाधुएकनिशिदेहु तिया लेहुकहीभागोसंगभागीसीतावामहैं। प्रातभयेचल नाहिं रैनिहीकीआज्ञाप्रभु चल्योहारिआगेघरघरदेखी ग्रामहैं। आयोवाहीठौरचलौमातापहुंचाइआऊं आयगहे पांवभावभयोगयोकामहैं २९९ बिषयीकुटिलचारिसाधु भेषलियोधारि कीनीमनुहारिकहीतियानिजदीजिये। करिकैशृंगारसीताकोठेमांझबैठीजाइ चाहैंमगआतुरह्वै अजूजाहुलीजिये । गयेजबद्वारउठीनाहरीसुफारिबेको फारेनहींबानोजानिआइअतिखीजिये । अपनोबिचारो हियोकियोभोगभावनाको मानिसांचभयोशिष्यप्रभुमति धीजिये ३०० गूजरीकोधनदियो पीयोदहीसंतनने ब्राह्मणकोभक्तकियोदेवीदीनिकारिकै। तेलीकोजिंवायोंभै सिचारनपैफेरिलायोगाड़ीभरिगेहूंतनपांचठौरजारिकै । कामदलैकोरोकरोबनियाकोशोकहर्यो भर्योघरत्यागि डारीहत्याहूउतारिकै। राजाकोऔसरभईसंतकोजोबिभ- वदई लईचोठीमानिगयेश्रीरंगउदारकै ३०१॥

गयो कामहै ॥ दोहा ॥ मनपंछी जबलग उड़ै बिषै बा- सना माहिं ॥ प्रेम बाजकी झपटमें जबलगि आयो नाहिं १ बिषयी कुटिल ॥ चरण रंगेलोचनरँगे चले मराली चा-

ल॥ नीर छीर बिवरण समय बकउधारो त्यहिकाल २ गुजरीको धनदियो साधुबोले ठाकुर जीको मन दहीपै चल्योहै ठाकुर क्योंकहैं अपनोही क्यों न कहैं २ ब्राह्मण को भक्तिकियो॥ श्लोक॥ वांछितकल्पतरोभ्यश्चकृपासिंधुभ्यएवच॥ पतितानांपावनेभ्योवैष्णवेभ्योनमोनमः ३॥

श्रीरंगकेचेतधरेउतियहियभावभरेउ ब्राह्मणकोशोक हरेउराजापैपुजाइकै। चँदवाबुझाइलियोतेलीकोलैबैल दियोदियोपुनिघरमांझभयोसुखआइकै। बड़ोईअकालप रेउजीवदुखदूरिकरेउपरेउभूमिगर्भधनपायोदैलुटाइकै। अतिबिस्तारलियेकियोहैविचारयहसुनेएकबारफिरिभूले नहींगाइकै ३०२॥ मूल॥ धन्यधनाकेभजनकोबिनही बीजअंकुरभयो। घरआयेहरिदासतिनहिंगोधूमखवाये। तातमातडुरथोथखेतलंगूरबवाये॥ आसपासकृषीकारखे तकीकरतबड़ाई। भक्तभजेकीरतिप्रगटपरतीतिजुपाई। अचरजमानतजगतमेंकहुनिपज्योकहुबैबयो। धन्यधना केभजनकोबिनहिबीजअंकुरभयो ६२॥ टीका॥ खेतकी तोबातकहीप्रगटकबित्तमांझ औरएकसुनौभईप्रथमजुरी तिहै। आयोसाधुबिप्रधामसेवाअभिरामकरैटरोढिगआ इकहीमोहदीजैप्रीतिहै। पाथरलैदियोअतिसावधानकि योयहछातीलाइजियोसेवैजैसीनेहनीतिहै। रोटीधरिआ गेआंखिमूंदिलियोपरदाकेछिपोनहींटूकदेखि भईबड़ीभी तिहै ३०३॥

चितधरयो तिया हियेभावभरयो ऐसीस्त्रीजाति कैसेभाव भरयो सतसंगते एकादशी॥ सतसंगनहिंदेखे यातुधानाख-

गामृगाः । गंधर्वाप्सरसोनागासिद्धाश्चारणगुह्यकाः २ ॥ विद्याधरमनुष्येषुवैश्याशूद्रास्त्रियोंत्यजा ३ ॥ घरआयेहरिदास ॥ कुंडलिया ॥ घरआयेनागनपूजई बांबीपूजन जाइ। बांबीपूजननजाइ भटकिभ्रमसनरैंआवै । हरिजन हरहर हँसेतिनहिंतजि अंतहिधावै। नकटीभूषणकोटिकरैशोभा नहिंपावै। घरमेंफजिहतहोइबाहरपरिवारननावै॥ अगर भखभाजैनहीं सुपनेसोमन खाइ। घरआये नागनपूजई बांबीपूजनजाइ ४ प्रीतिहै॥ श्रवणाद्दर्शनाद्ध्यानात्मपि भावोनुकीर्त्तनात् ५ ॥

बारबारपांवपरैऔरभूखप्यासतजीधरैहियेसांचौभाव पाईप्रभुप्यारिये । छाकनितआवैनीकेभोगकोलगावैजोई छोड़ोसोईपावैप्रीतिरीतिकछुन्यारिये । जाकोकोऊखाइ ताकीटहलबनाइकरैलावतचराइगाइहरिउरधारिये। आयोफिरिबिप्रनेहखोजहूनपायो।किहूंसरसायोबातैलैदिखायेश्यामजारिये ३०४ छिजलखिगाइनमेंचाचनिसमात नाहिंभाइनकीचीटदगलागीनीरझरीहै । जायकेभवनसातारवनप्रसन्न करैबड़ेभागमानिप्रीतिदेखीजैसीकरीहै। धनाकोदयालहोइकैआज्ञाप्रभुदईठरौकरौगुरुरामानंदभक्तमतिहरीहै । भयेशिष्यजाइआयछातीसोंलगाइलियेकियेगृहकाजसबैसुनीजैसीधरीहै ३०५॥

छिजलखिगाइनमें॥ कबित्त ॥ गोरजबिराजैभाल लहलहीबनमाल आगे गैया पाछेग्वाल गावैंमदुबानिरी। जैसीधुनि बांसुरीकी मधुर मधुर तैसी बंकचितवनि मंदमंद मुसुकानिरी। कदम बिटपके निकट तटनीकेतटअटाचढ़िचाहिपीतपट फहरानिरो। रसबरषावै तनतपनि बुझावै नैनबैननिरिझावै भक्तआवैरसखानिरी१ ॥ भूपकेतेल लगा-

या यहतौ बड़ोआश्चर्य है वैष्णवकी तौ टहलकरै पै अभक्त राजा ताके तेललगायो तहां टीकाकारने कह्यो है वही भगवंत संत प्रीतिको बिचारकरै वरैदूरि ईश्वताई पांडव निसों करीहै २ ॥

मूल ॥ बिदितबातजगजानियेहरिभयेसहायकसेनके प्रभूदासकेकाजरूपनापितकोकीनो । क्षिप्रक्षुरहरीगही पानदर्पणतहँलीनो । तादृशिह्वैतिहिकालभूपकेतेललगायो । उलटिरावभयोशिष्यप्रगटपरचौजबपायो । श्यामरहतसम्मुखसदाज्योंबच्छाहितधेनुके । बिदितबातजगजानियेहरि भयेसहायक सेनके ६३ टीका ॥ बांधोगढबास हरिसाधुसेवाआशलगीपगीमतिअति प्रभुपरचौदिखायो है । करिनितनेमचलेउभूपकेलगाऊंतेलभयोमगमेलसंतफिरिघरआयोहै ॥ टहलबनाइकरीनृपकीनशंकधरीध राउरश्यामजाइभूपतिरिझायोहै । पाछेसेनगयोपंथपूछे हियेरंगछयोभयोअचरजराजाबचनसुनायोहै ३०६ फेरिकैसेआयेसुनिअतिहीलजाये कहीसदनपधारेसंतभईयोंअबारहै । आवननपायोवाहीसेवाअरुझायोराजादौरिशिरनायोदेखीमहिमाअपारहै । भीजिगयोहियोदासभावदृढ़लियोपियोभक्तरसशिष्यह्वैकैजान्योसोईसारहै । अबलौंहूंप्रीतिसुतनातीभई रीतिचलैंहोइजोप्रतीतिप्रभु पावैनिरधारहै ३०७ ॥

नापति ॥ दशमे ॥ अनुग्रहायभक्तानांमानुषंदेहमास्थितः ॥ भजतेताद्दशीक्रीडायाश्रुत्वाततपरोभवेत् २ ऐसे वचने नाऊरूपधर्यो तौ हमनाऊके शिष्य॥सोरससुच्चये ॥ न

शूद्राभागवद्भक्तास्तेपिभागवतोत्तमाः॥ सर्ववर्णेषुतेशूद्रा ये नभक्ताजनार्दने १ पदरचना॥मथुरीकयोंनचलोब्रजामहरी। दूनचारणन की बलिजाऊं रजधानी कैसेछांड़िगो कुलघर सोंग्राम। नंदयशोदाकी रट मेटो बेगिचलोउठिधाम॥ निशिबासरकछुंकलनपरतिहैसुमिरतर्तेरोनाम॥ तबतुमबेनुबजाइ बुलाईकालिंदीकेतीर। अबवैबातेंक्यों बसरैंगी हरिहलधरदोउबीर। गोपबधू ब्रजमंडल मंडन सबमिलिजोरेंहाथ।सुखानंदस्वामी सुखसागरतुमबेगिचलोउठिसाथ२॥

मूल॥ भक्तिदानभयहरणभुजसुखानंदपारसपरसासुखसागरकीछापरायगौरीरुचिन्यारी। पदरचनागुरुमंत्रमनोआगमउनहारी। निशिदिनप्रेमप्रवाहद्रवतभूधरत्योंनिर्झर। हरिगुणकथाअगाधभालराजतलीलाभर। संतकंजपोषणबिमलअतिपियूषसरसीसरस। भक्तदानभयहरणभुजसुखानंदपारसपरस ६४॥ मूल॥ महिमामहाप्रसादकीसुरसुरानंदसांचीकरी एकसमयअध्वाचलतबशावाकछलपाये। देखादेखीशिष्यतिनहुंपीछेतेखाये। तिनपरस्वामीखिजेबवनकरिबिनबिश्वासी। तिनतैसेप्रत्यक्षभूमपरकीनीरासी। सुरसुरीसुवरपुनिउदकलैपुहपरेणुतुलसीहरी। महिमामहाप्रसादकीसुरसुरानंदसांचीकरी ६५॥ मूल॥ महासतीसतऊपमात्योंसत्तसुरसुरीकोरहेउ। अतिउदारदंपत्यत्यागिगृहबनकोगवनें। अचरजभयोतहांएकसंतसुनिजिनहोबिमनें। बैठेहुतेएकांतआइअसुरनदुखदीयो। सुमिरेशारंगपाणिरूपनरसिंहकोकीयो। सुरसुरानंदकीघरनिकोसतराखेउनरसिंहज्यों। महासतीसतऊपमात्योंसत्तसुरसुरीकोरहेउ ६६॥

तवप्रतिमारनछोरजीकी ॥ बहुतदिनबसे नगरद्वारका नँदी गोमतीतीर। ब्रजबासी दरशनको तरसें परमत श्यामशरीर।प्रेम तीन प्रकारको तापै कबूतरको दृष्टांत॥ दोहा॥ हितकरि तुमपठयोलगी वा व्यंजनाकी बाइ॥ गईतपति तनकीतऊउठी पसीनान्हाइ१ महिमाप्रसाद॥ पाद्मे॥ प्रसादं जगदीशस्यअन्नपानादिकंचयत्॥ ब्रह्मवन्निर्विकारंहियथाविष्णुस्तथैवतत्॥ विचारंयेवकुर्वंतितेनश्यंतिनराधमाः॥ पिंज॥ गुरोराज्ञासदाकुर्यात् नतदाचरणं क्वचित्॥ महादेवजीने विषपियो औरकोऊ कैसे पीवैगो गुरुको गुरु न होइजाइ तापैरोटीको दृष्टांत॥ दोहा॥ गौनेव्याह उछाहको संतअन्न नहिंखाय॥ जहां तहांके पायके भजन तेज घटिजाय ३॥

मूल॥ निपटनरहरियानंदकोकरदातादुरगाभई। झरघरलकरीनाहिंशक्तिकोसदनउदारै॥ शक्तिभक्तसोंबोलिदिनहिंप्रतिवरहीलैडारै। लगीपरोसनिहोसभवानीभैसोंमारै॥ बदलेकीबेगारिमूंड़वाकेशिरडारै। भरतप्रसंगज्योंकालिकालइदेखितनमैंतई। निपटनरहरियानंदकेकरदातादुरगाभई६७ कबीरकृपातेपरमतत्वपद्मनाभपरचोलह्यो। नाममहानिधिमंत्रनामहीसेवापूजा। जपतपतीरथनामनामबिनऔरनदूजा। नामप्रीतिनामबैरनामकहिनामीबोलै। नामअजामिलसाखिनामबंधनतेखोलै। नामअधिकरघुनाथतेराम निकटहनुमतकह्यो॥ कबीरकृपातेपरमतत्वपद्मनाभपरचोलह्यो ६८॥टीका॥ काशीबासीसाहभयोकोठीसोंनिबाहकैसेपरिगये कृमचल्योबड़िबेकोभीरहै। निकसेपदमआइपूछीढिगजाइकहीगहीदेहखोलौगुणन्हाइगंगानीरहै। रामनामकरैबेरतीनिसेंनवीनहात

भयोईनवीनकियोभक्तमतिधीरहै।गयेगुरुपासतुमम्हिमा नजानीअहोनामाभासकामकरैकहियोंकबीरहै॥ ३०८॥

कबीर॥ दोहा॥ समझिपढ़ैकैपढ़ि समझियह जो कहो द्विजराय॥ सुनियहबातकबीरकी पंडित रह्योहिराय१ तपजपतीरथनाम॥नामलियो जिनसबकियोयोगयज्ञआ- चार॥जपतप तीरथपरशुराम सबैनामकीलार२॥नामबैर॥ कबित्त॥ कोऊ एक यवनजठर संगजात कह्योसूकरकेघाव- कनेमारयोताहिधायकै॥ जोरसोंपुकारयोमोहिं मारयो है हरामजाति ऐसेकहिबेगि प्राणगयेअकुलायकै। गोपद समानभवसागरसोंपारगयो नामकेप्रताप ऐसो पदकहो गायकै। प्रेमसों कहैगो कोजनाम रूपारामकौन अचरज रामधामदेतहैं सुनायकै ३॥

मूल॥तत्वाजीवादक्षिणदेशवंशीधरराजतविदित।भक्ति सुधाजलसमुद्रभयेबेलाबलिगाढी।पूरबजान्योरीतिप्रीति उतरोत्तरबाढ़ी। रघुकुलसदृशसुभावसृष्टिगुणसदाधर्मर- त। शूरधीरउदारदयापरदक्षअनन्यव्रत। पदमखंडप- दमापधितप्रफुलितकरसविताउदित। तत्वाजीवादक्षि- णदेशबंशीधरराजतविदित६९॥ टीका॥तत्वाजीवाकी॥ तत्वाजीवाभाईउभैविप्रसाधुसेवापन मनधँसेबाततातेशि ष्यनहींभयेहैं गाड़ेउएकठठडारहोइअहोहरीडारसंतचर णामृतकोलैकैडारिनयेहैं। जबहींहरितदेखैंताकोगुरुकरि लेवैंआयेश्रीकबीरपूजीआशपावलयेहैं। नीठिनीठिनाम दियोदियोपरचाइधामकामकोइहाइजोपैआवोकहिगयेहैं ३०९ कानाकानिभईद्विजजानीजातिगईपांतिन्यारीकि रिदईकोउबेटीनहींलेतहै। चलेउएककाशिजहांबसतकवी

रधीरजाइकहीपीरजबपूछेउकौन हेतहै । दोऊतुमभाईक रोआपुमेंसगाईहोइभक्तिसरसाईनघटाईचितचेतहै । आ इबहेकरीपरीजातिखरभरीकहैकहाउरधरी कछूमतिहूअ चेतहै ३१०॥

भक्तिसुधा अमृतमैत्वैगुणमादिकतामिष्टभक्तिरूपी ष-मतऋमादिक अतिमिष्टपैवहनश्वर अव यह स्वसुख कर्त्ता यह सन्मुख कर्त्ता बेलाबेलघाटहै १ ॥ मनधरी ॥ दोहा ॥ तालोबरोबरिगोगची मोलबरोबरिनाहिं ॥ भेषबरोबरि परशुराम भेदबरोबरिनाहिं २ नामदियो ॥ बातेपरीक्षा लई सबतीरथ करत कबीरजी आये ३ चितचेतहै ॥ चितमें बिचारी सम्बन्ध तो सबसोंहै वे तो अभक्त तुम भक्तसोस-म्बन्ध कामको नहीं परपरायो देख्यो स्वयंभूमुनि कर्दम ऋषि ४ बंशीधर प्रह्लाद काही पिता उद्धार दूकोप्रकुली ब्रह्मा मारीच कश्यप हिरण्य कश्यप नाना फूफा मामा मौसी पूरब जाग्यो ॥ आरम्भगुर्वीक्षयिणीक्रमेण लघ्वी पुराहृद्धिमतीचपश्चात् । दिनस्यपूर्वार्द्धपरार्द्ध भिन्नाछाये वमैत्रीखलसज्जनानां ॥ दोऊतुम भाईकरौ ब्रह्माके अंगते स्वयंभूमनु सतरूपा तिनते देवहूती आकूती प्रसूती सृष्टि थोड़ी तब ब्रह्माके बेटा कर्दम आदिदई ॥

करैंयहीबातहमैंऔरनासुहातआये सबैहाहाखातयह छांड़िहठदीजिये । पूंछिबेकोफेरिगयेकरौठ्याहजोपैनयेद सडकरिनानाभांतिभक्तिदृढ़कीजिये । तबदईसुतालईयात नप्रसन्नह्वैकैपांतिहरिभक्तनसोसदामतिभीजिये। बिमुख समूहदेखिसमुखबड़ाईकरैधरैहियमांझकहै पनपरीझिये ३११ ॥ मूल ॥ बिनयठ्यासमनोप्रकटह्वैजगकोहित माधवकियो। पहलेवेदविभागकथितपुराणअष्टादश भार

तथ्यादिभागवतमथितउद्धारेउ। हरियशअवसोधेसबग्रंथ अर्थभाषाविस्तारेउ। लीलाजेजयजयतिगाइभवपारउ तारेउ। श्रीजगन्नाथइष्टवैरागसींवकरुणारसभीज्योहियो। विनयव्यासमनोप्रकटह्वै जगकोहितमाधवकियो ७०॥

भाषाविस्तार्यो ॥ पद ॥ हरि हरि नाम उचारिये हरि यश सुनिये काना। हरिको मस्तक नाइये हरि हैं सकल गुणके निधाना। हाथ न हरिके कर्म करि पावनपरिक्रमा दीजै। नैन निरखि श्री जगन्नाथ आत्मा समर्पणकीने। कोटि ग्रंथको अर्थ यह श्रीभागवत विचारा। वासुदेव की भक्ति विननहीं नरको निस्तारा १ ॥ श्लोक॥ स्त्रीशूद्रद्विजबंधूनांत्रयीनश्रुतिगोचरा। कर्मश्रेयसिमूढानांश्रेयएवं भवेदिह २ इति भारत माख्यानंकृपया मुनिनाकृतम् ३ ॥स्मृतौ ॥ आद्यौत्रयोद्विजाप्रोक्तास्तेषांवैसंचसत्क्रियाः ४ ऐसें व्यासने जगत्को हित कियो तैसेही माधवदास कीने ॥ मृषा गिरस्ताद्ध्यसतीरसत्कथा ॥ तापै भट्टजी अरु कुबाको दृष्टांत ५ ॥

टीकामाधवदासजीकी ॥ माधवदासद्विजनिजतिया तनत्यागकियोलियोइनजानजगएेसोईव्योहारहै। सुत कीबढ़नयोगलियेनितचाहतहौंभईयह औरलैदिखाईकर तारहै। तातेतजिदियोगेहवेईअबपालैंदेहकरैअभिमान सोईजानियेगँवारहै। आयेनीलगिरिधामरहेगिरिसिंधु तीरअतिमतिधीरभूखप्यासनबिचारहै ३१२ भयेदिनती नियेतोभूखकेअधीननहिं रहेहरिलीनप्रभुशोचपरेउभारि ये। दियोसेनभोगआपलक्ष्मीजूलैपधारीहाटककीथारीझ नझनपांवधारिये। बैठेहेकुटीमेंपीठिदियेहियेरूपरंगेबिजु

रीसीकौंधिगईनीकैंनिहारिये । देखिसोप्रसादबड़ोमन
अह्लादभयोलयोभागमानिपात्रधरेउईबिचारिये ३१३॥

माधवदास कनौजिया ब्राह्मण हैं यह बिचारै हैं हरि-
कास्याने होहिंतौ माता स्त्री कौटम्बको छोड़िकै बैराग
लेहिं तौ लौं स्त्री पाइगई उलटी टहल करिके निकौ आइपरी
जैसे कोई सवारी चाहै हो उलटौ शिरपै घोड़ा को बा-
बा धर्‍यो १ दिखाई पाजन सबको हरि ही करै हैं अब
जो लरिकनको बटिबो बिचारौं फिरि सगाई ब्याह
फेरि छूछक इतने में शरीरकी छूछि ह्वै गई गृहकारज
तौ बड़ो नाथके पहाड़ हैं कब छूटैंगे सह दिखाइकै नि-
कार्‍यो जैसे बलख के बादशाहको २ हिये रूपरंग सा-
धुद्वै जातिके एक भगवतकामी एक स्थानी एक गमनी
गमनी द्वै जातिके एकपर उपकारी एक अन्तकामी स्थि
री द्वैजातिके एक भगवतकामी एक अर्थकामी शोभादेश
चारी ग्रामचारी ग्रामचारी के तीनभेद एक हटानव्रती
एक स्थान व्रती एक ध्यानक माधवदास हरिकामी हैं सो
साधुनके भेद हैं ॥

खोलैजोकिँवारथारदेखियेनशोचपरेउकरेउलैयतनढूं-
ढ़िपाहीठौरपायोहै । लायेबांधिमारीबैनधारीजगन्नाथदे
वभेवजबजान्योपीठिचिह्नदरशायोहै। कहीतबआपमेही
दियोजबलियोयानेमानेअपराधपांवगहिकैक्षमायोहै । भ
ईयोंप्रसिद्धबातकीरतिनमातकहूंसुनिकैलजातसाधुशील
यहगायोहै ३१४ देखतस्वरूपसुधितनकीबिसरिजातिर
हिजातिमंदिरमेंजानेनहींकोईहै।लग्योशीतगातसुनोबात
प्रभुकांपिउठेदईसकलातआनिप्रीतिहियेभोईहै।लागेजब
बेगवेगीजाइपरेसिंधुतीरचाहैजबनीरलियेठाढ़ेदेहधोईहै।

करिकैविचारयोंनिहारिकहीजानेमैंतो देतहौंअपारदुखदई शतालैखोईहै ३१५ कहाकरोंअहोमोपैरहोनहींजातनेकु मेटौव्यथागातमोकोव्यथावहुभारीहै। रहैभोगशेषऔरत नमेंप्रवेशकरैतातेनहींकरोदूरिईशतालैटारीहै। वहूबात सांचयाकीगांसएकऔरसुनोसाधुकोनहँसेकोऊ यहमैंवि चारीहै। देखतहीदेखतमेंखीड़ासीबिलाइगईनईनईकथा कहिभक्तिबिस्तारीहै ३१६॥

भईयोंप्रसिद्धिबात॥सोज्योंज्योंसुनेजगन्नाथनेमाधवदा-सकेलियेआपवैतपायेत्योंत्योंयेलजात अरुकहैंहमाराकुना-समयोहै जिनकोपुष्पादिसोंपूजिये तिन्होंनेवैतपायेसाधुन केलच्छणहैं जैसेसुदामाकहीमेरोदरिद्रगयो मेरेदरिद्रको॥ ख्यातकियोहै सबकहैंहैंसुदामागरीबभक्तहै १ देहधोइये श्लोक॥ यद्यद्वाञ्छतिमद्भक्तस्तत्तत्कुर्य्यामतंद्रितः॥ रच्छोन-हींजातसब जग जगन्नाथकीसेवाकरैहै। जगन्नाथजीमाधव दासकीसेवाकरैहैं॥

कीरतिअभंगदेखिभिक्षाकोआरंभकियो दियोकाहूबा ईपोताखीजतचलाइकै। देवोगुणलियोनीकेजलसोंप्रछा लिकरिकरीदिव्यबातीदईदियेमेंबराइकै। मंदिरउजारो भयोहियेकोअँध्यारोगयोगयोफेरिदेखिबेको परीपाइंआइ कै। ऐसेहैंदयालदुखदेतमेंनिहालकरैंकरैंलैजैसेवाताको सकैकौनगाइकै ३१७ पंडितप्रबलदिगबिजयकरिआयो आपबचनसुनायोजूबिचारमोसोंकीजियै। दईलिखिहार काशीजाइकैनिहारपत्र भयोअतिहारलिखीजीतिवाकीखी जियै। फेरिमिलिमाधवजूकोवैसेईहरायोएकखरकोबुला

योकहीचढ़ौजीउधीजिये । बोलेउजूतीबांधोकानगयोसु निन्हानश्रानजगन्नाथजीतेलैचढ़ायोवाकोरीझिये ३१८॥

भिक्षाकोआरंभ॥ दोहा॥ धरतीतौबूंदनसहै काठसहै बनराइ॥ कुवचनतौसाधुसहै औरपैसहोनजाइ १ हार॥ कवित्त॥ दूनोभलोसुपथपैन कुपथकनोभलो सूनोभलोगेह पैनवलसायकरिये। अनलकोलपट औक्षपटभलीनाहरकी कपटीकेकपटसों दूरिपरिहरिये। यहैनगजीवन परमपुरुषारयहै परघरजाइकैरि रससोनिकरिये । हारिमानिलीजियेनकीजैबादनीचनसौं सर्बखदीजैपैनपरबशपरिये २ दोहा॥ हारेतैहरिजनभले जीतनदौसंसार॥ हारेहरिपैजाहिंगे जीतेयमकेद्वार ३ जगन्नाथजीतेतबजगन्नाथकही गदहापैचढ़ैतिऐसुखन्यायहै। जैसेवानेकही काजीकेसुखन्यायहै ४ ॥

ब्रजहीकीलीलासबगावैंनीलाचलमांझमनभईचाहजाइनयननिहारिये । चलैवृन्दावनमगलगिएकगांवजहां वाईभक्तिभोजनकोलाईचावभारिये । बैठेयेप्रसादलेतले तदृगभरिआहोकहोकहाबातदुखहियेकोउघारिये। सांवरो कुँवरयहकौनकोभुराइलाये माइकैसेजीवैसुनिमतिलैबिसारिये३१६चलेऔरगांवजहांमहाजनभक्तरहैगहैमनमांझआगेबिनतीहूकरीहै। गयेवाकेघरवहगयोकाहूऔरघर भावभरितियाआयपायँनमेंपरीहै । ऊपरमहंतकहीअबएकसंतआयोयहांतौसमाइनाहिंआईअरबरीहै । कीजियेरसोइँजोइसिद्धसोइलावोदूधनीकेकैपिवावो नाममाधवआशभरीहै ३२० गयेउठिपाछेभक्तआयोसोसुनायोनाम सुनिअभिरामदौरेसंगहीमहंतहै। लियेजाइपाइँलपटाय

सुखपायमिले झिलेघरमांझतियाधन्यतोसोकंतहै । संत पतिबोलेमैंअनंतअपराधकियेजिये अबकहीसेवोसीतमानि जंतहै। आवतमिलापहोइयहीराखौबातगोइआयेवृन्दा-बनजहांसदाईबसंतहै ३२१॥

सवैया॥ झीने झगामें दगाही भरी औ लगाही लगा सँग डोलतहैं। द्वैबै पगान जगा जगमें सुभगाकुल कानि के गोलत हैं। नैनलगा सो लगाही गया सुभगा उर बान बिलोलतहैं। लरिकानमें डोलतहैं जगन्नाथ ऊरुरू कुरुरू करि बोलतहैं १ धूरिमें धूरिभरे सबगात सुजातपु-कारत डोलतहैं। अलकावलि राजतिहैं बिथुरी सुथरी बरगोल कलोलत हैं। अंबुज लोचन चारुचितौनिसुभाल बिसाल बिलोलत हैं। लरिकानिमें डोलतहैं जगन्नाथ ऊरुरू कुरुरू करिबोलत हैं २ माधवदास पंडितसों बोले आपबड़े उतावले इतनेमेंआऊं तोलों आपही चढ़िबैठे तबलाजमें दबिगयो तब माधवदासजी जगन्नाथजीसेबोले यह दिग्विजय करि आयेहो सो सब खारकरी मरेऊ बुरोभयो वह आछो न कियो मेरे बदले चढ़ायो जैतौ अपने बदले चढ़ायोहै तब अपने हाथसों अपराध छमा करायो ये साधुताके लच्छणहैं ३ न्याये॥ विद्याविवादाय धनंमदायशक्तिः परेषांपरिपीडनाय॥ खलस्यसाधोर्विपरी तमेतत्ज्ञानायदानायचरक्षणाय४ पठकापाठकाश्चैवयेचा न्येशास्त्रचिंतकाः॥ सर्वेव्यसनिनोमूढायःक्रियावान्सपण्डि तः५॥दोहा॥ भक्तिबिनाश्रीभागवतकहैं सुनैजेग्रंथ॥ज्यौंदर्वी व्यंजननिमेंस्वादन जानेमंद ६॥ छप्पै॥ पंडितपढ़िभागवत भक्तिभक्त निजुसिखवत॥ महिषी ज्योंपयश्रवत आपसो स्वाद न पावत। मृगजनाभि नहिंलखैलतटण सिलसभि मानै।काटआगरकरे परवहै ये मरम न जानै।तैसेदर्वीन्याय चतुरभुज भक्तिबिना मंडक धुनि। दर्पण दियो जुनैनबिन त्यों अंधअंधेरो डोरिमुनि ७॥ सप्तमे॥ यथा खरस्चंदन

भारवाही भारस्यवेत्तानतु चंदनस्य ॥ यथाह्यविप्राश्रुति शास्त्रयोगासङ्गकहीनाखरवद्वहंति ८ तापैगंगला तेलीको दृष्टांत और पंडितको दृष्टांत ९ ॥ संतपति ॥ दोहा ॥ नैन निकट काजर बसै पै दरशि दरशाइ ॥ ज्यों साधनके संग मिल हरिसुख छबि न लखाइ ५ ॥ कबित्त ॥ वेदहूकी निंदाकरै साधहूकी निंदाकरै गुरुकी आज्ञा बिष्णु शिवभेद मानिये। नामही के आसरे आइ बहु पापनि औ अश्रद्ध वानही सों उपदेश जै बखानिये। एक अर्थ बाद अरु व्याख्या कुतर्क करै महिमा सुनत हिये अश्रद्धान आनिये। नामको समान सब धर्म समान कहै नामन अफल अपराध दश जानिये ॥

देखिदेखिवृन्दावनमेंमगनभये गयेश्रीबिहारीजूकेच नातहीपायेहैं।कहिरह्योद्वारपालनेकमैंप्रसादलालयमुना रसालतटभोगकोलगायेहैं। नानाविधिपाकधरैस्वामीआ पध्यानकरैबोलैहरिभावैनाहिंवेईलेखवायेहैं।पूछेउसोजना योढूंढ़िलायोआगेगायोसब तुमतौउदासहासरससमझा येहैं ३२२ गयेब्रजदेखिबेकोभांडीरमैंपैमरहेनिशिकोदुरा इपाइक्रमलैदिखायेहैं । लीलासुनिबेकोहरियानेगांवरहै जाइगोवरहूपाथिपुनिनीलाचलधायेहैं। घरहूकोआयेसुत सुखीसुनिमाताआगीमारगमेंसुपनदेकैबणिकमिलायेहैं। याहीबिधिनानाभांतिचरितअपारजानोजितेकछुजानेतिते गाइकैसुनायेहैं ३२३ ॥ मूल ॥ श्रीरघुनाथगुसाईंगरुड़ ज्योंसिंहपौरिठाढ़ेरहैं । शीतलगतसकलातबिदितपुरुषो त्तमदीनी । शौचगयेहरिसंगकृत्यसेवककीकीनी । जगन्ना थपदप्रीतिनिरंतरकरतखवासी । भगवतधर्मप्रधानप्रस न्ननीलाचलबासी । उत्कलदेशउड़ीसानगरबैनतेयसब

कोऊ कहै ॥ श्रीरघुनाथगुसाईं गरुड़ज्यों सिंहपौरिठाढ़े रहें ७१ ॥

बिमारिये ॥ दोहा ॥ जो मोसों मोसों करौ तौ रन है कछु ठौर ॥ तुमही जैसी कीजियो अहो रसिक सिर मौर ॥ तुमतौ उदास हास रस समभायो तुम जगतसों विरक्त भये सोतौ आछो पै हरिसों विरक्तभये सो आछो नहीं माधव दास कही मैं तुम्हारे ठाकुर कीसचिक्कणता देखी सो प्रसंग २ निशिको दुराइ खाइ क्रमसों दिखाई है जब डरे तब कही मथुरा विश्रामघाट भारो संत चरणोदक शीत सेवनकरो सोई कियो मूलमें नाभाजी ने धरे हैं खेम गुसाईं खेमकर लीला सुनिबे को हरियाने गाली गांवरहै गोबर पाथो सो प्रसंग ॥

टीका॥ अतिअनुरागघरसंपतिसोंरहेउपागितातहकरि त्यागनीलाचलकियोबासहै । धनकोपठावैपिताऐपैनहीं भावैकछूदेखिबोसुहावैमहाप्रभुजूकोपासहै । मंदिरकेद्वार रूपसुंदरनिहारोकरैलग्योशीतगातसकलातदईदासहै। शौचसंगजाइबेकीरीतिकोप्रमानवहै बसेसबजानौमाधव दाससुखरासहै ३२४ महाप्रभुकृष्णचैतन्यजूकीआज्ञा पाइआयेवृन्दावनराधाकुंडबासकियोहै।रहनिकहनिरूप चहनिकहनिसकैथकैसुनितनभावरूपकरिलियोहै। मान सीमैंपायोंदूधभातसरसातहिये लियेरसनारीदेखिवैदक हिदियोहै । कहांलौंप्रतापकहौंआपहीसमझिलेहुदेहूव हीरीझिजासोंआगेपायजियोहै ३२५॥

भावरूप ॥ दोहा ॥ चढ़िकर मैन तुरंग पर चलिबो पावक माहिं ॥ प्रेम पंथ ऐसो कठिन सब कोउ निबहत

नाहिं १ यह स्वरूप सोमरूपी भावना हरिकी अग्निरूप सो कैसे निबहै या शरीरको सखी भावरूप अष्टधातु को किया अग्निरूप रस तामें प्रवेश किया ॥ दोहा ॥ भजन रसिक रघुनाथजी राधा कुंड निवास ॥ लोन तक्र ब्रज को लियो आसु नहीं कछु आस २ राधाकुंडवास ॥ यथाराधा तथाविष्णु: यथाकुण्डप्रियंतथा ॥ सर्वगोपसु सैवैकाविष्णो रत्यंत वल्लभा ३ ॥ छप्पै ॥ रतन जड़ित नगखचित घाट सिढ़ियन की शोभा । गुंजत मोर मराल भरे आनंद की गोभा ॥ माधव काज तमाल वृक्ष सबही भाक भूमैं । छबि की उठतितरंग निरखि नंदलालजुघूमैं ॥दोहा॥ श्रीमहारानी राधिका अष्टसखिन के झुंड । डगर बहारैं सांवरो सुजय जय राधाकुण्ड ॥

मूल ॥ श्रीनित्यानंदकृष्णचैतन्यकीभक्तिदशोंदिशि बिस्तरी । गौड़देशपाषंडमेटिकियोभजनपरायन । करुणा सिंधुकृतज्ञभयेअगतिनगतिदायन।दशधारसआक्रांतिमह तजनचरणउपासे । नामलेतनिःपापदुरिततिहिनरकेना से । अवतारबिदितपूरबमहीउभयमहतदेहीधरी । श्रीनि त्यानंदकृष्णचैतन्यकीभक्तिदशोंदिशिबिस्तरी ७२ ॥ नि त्यानंदकीटीका ॥ आयबलदेवसदाबारुणीसोमत्तरहे चाहेमनमान्योप्रेममत्तताईचाखिये । सोईनित्यानंदप्रभुम हंतकीदेहीधरीभरीसबआनितऊपुनिअभिलाखिये । भयो बोझभारीकिहूंजातनसँभारीबात ठौरठौरपारषदमांझधरि राखिये । कहतकहतअरुसुनतसुनतवाकेभयेमतवारेबहुग्रं थताकीसाखिये ३२६ ॥

देहीधरी ॥पद॥ अबतौहरी नामलौ लागी साधोहरी नामलौ लागी । सबजग को यह माखनचोरा नाम धरो

बैरागी। कहँ छोड़ी वह मोहन मुरली कहं छोड़ी सब गोपी। मूंड़मुड़ाइ डोरि कटि बांधी माथे मोहन टोपी। मात यशामति माखन कारण बांधे जाको पांव। श्यामकिशोर भये नवगोरा चैतन्य जाको नांव। पीतांबर को भाव दिखावै कटिकोपीनकसे। दासभक्तकी दासीमीरा रसना कृष्ण बसे १॥ दशमे॥ आसन्वर्णास्त्रयोह्यस्यगृह्णंतोऽनुयुगं तनु:। शुक्लोरक्तस्तथापीतइदानींकृष्णतांगत: २ एकादशे॥ कृष्णवर्णंत्विषाकृष्णं सांगोपांगास्त्रपार्षदं॥ यज्ञैसंकीर्त्तनप्रायैर्यजंतिहिसुमेधस: ३ चाष्टिये॥ दोहा॥ सूतलगे मदिरापिये सबकाहूसुधिहोई॥ प्रेमसुधारसजिनपियोतिहिन रहै सुधिकोइ ४ जैसेगंगा यमुना सरस्वती महिमा गौर नाम गोरतन अंतर कृष्ण स्वरूप ५॥

टीकाश्रीकृष्णचैतन्यमहाप्रभूकी॥ गोपिनकेअनुराग आगेआपहारेश्यामजान्यो यहलालरंगकैसेआवैतनमें। पीतोसबगोरतनीनखशिखबनीठनी खुलेउयोसुरंगरंग अंगरँगेबनमें। श्यामताईमांझसोललाइहूसमाइजाइताते मेरेजानफिरिआईयहमनमें। यशुमतिसुतसोईशचीसुत गौरभयेनयेनयेनेहचोजनाचेनिजगनमें३२७॥

हारेश्याम॥ पंचाध्यायी॥ भगवानपितारात्री: शरदो त्फुल्लमल्लिका: वीक्ष्यरंतुंमनश्चक्रे योगमायामुपाश्रित: २ कवित्त॥ पाग जिमिरागहो भस्योहै या बांसुरी में ताको ताने शिखा सुनि गोपी कांतचतिहै। कानमध्य तूलदिये दिये जैसी बातो बरै नाहिंने उपाइ कोऊ बाद नहीं पत तिहै॥ बनके पखेरु उठि पांखन बयारि करैं गोकुल की कुलवधू कैसेकैबचतिहै। जरिगई अतिताती ताते तकिनेहो कान्हें फूंकिफूंकि गहैं तऊ आगरी नचतिहै २ एकओर बीजना दुरावति चतुरनारि एकओर भारी लिये करज-

ल पानको। पाछेते खवासिनी खवावैं पान खोलिखोलि राधे मुख लाली मानों तम करतान की॥ ताही छिन बांसुरी बजाई नँदनंदन जू आईसुधि वाही ब्रज कुञ्जकी लतान की। बांयेंगिरि नीर वारी दाहिने समीर वारी पाछे पान दान वारी आगे वृषभान की ३ वेसगदापग अंधनिको दून चालिबो आछिनिह्नको निवारयो। सूर-ति घाह दिखावत वे दून प्रेम अथाह के बारिधि डारयो। वेबसबास बसावत हैं दूनबास छुड़ाइ उज्यारनियारयो। देखो अहो हरि की बंसुरी दून कैसे सुबंस को नामबिगा-रयो ४ दियाकेउज्यारि तिय दूधसीरो करतिही संगवाके आसपास भावजनभीरकी। लौनेह्न ते सुलखसलोनीसाठि सोनेकीसी गौनकीसीआई किधौं आई सुनासीर की॥ काशीराम रूपभरी रतिह्नते अति खरी कह्नंवाके कान परीबंशी बलवीरकी॥ सानोलागी तीरकी यापरीहै अ-हीरकीसँभार न शरीरकी न ओरकीनछोरकीपूभूलीसी फिरति फिराति कुंजकुंजनि में कितौ समझाइ रही बैठी रहीगेहमें। तबतौ न मानी कान्ह सुनिवे को जातिता न मानी नहीं कान्ह तरुणाईकेतेहमें। अबतौ प्रह्लाद डसी बिरहके भुवंगम मे अंग रोम रोम बिखरमिगयो शरीरमें। सांसरीभरनलागी आंसुरी टरनलागी पांसुरी निकसि आई बांसुरीके नेहमें २ दूनजेते सुरलीने तेतेबेध उरकीने जेतेराग तेते दाग रोम रोम छीजिये। अंतरकी सूनीघर करैसूने औरनिके शेषसुनि श्रवण बसेरो बनकी-जिये। ताननकी तीखी उर बाननचलाये देतचीरी चीरि अंगनि तुणीर तनकीजिये। बांसुरीबसैंगीतौहमन बसेंगी श्याम बांसुरीबसाइ कान्ह हमें बिदा कीजिये १ बाजी उठिधाईं बाजी देखिवेको दौरीं आईं बाजीसुनि आईं पौरिवंशी गिरिधरकी। बाजी हँसि बोलैं बाजीसंग लगी डोलैं बाजी भईबौरी बाजिन बिसारीसुधिघरकी। बाजी न धरतधीर बाजिन सँभारै चीर बाजिन की छाती पर

पीर दावानल की। बाजी कहैं बाजीपुनि बाजी कहैं कहांबाजी बाजीकहैं बाजीबंशी चंचल चतुरकी ३ श्लोक॥ तासांतत्सौभगमिदंवीद्यमानप्रवकेशव:। प्रशमायप्रसादायतत्रैवांतरधीयत ४॥ कवित्त॥ जाही कुंजपुंजतर गुंजत भवँरभीर ताहीतरुवरतर शोभधुनियतहैं। जाहीरसनासें कही रस की रसीली बात ताही रसना सों आप गुण गुनियतहैं। आलमविहारीलाल हियेते अचेत भये येहों दईहेत खेत कैसेलुनियतहैं। जेइकान्ह आखिनिके तारे हुते निशिदिन तेईकान्ह काननि कहानी सुनियतहैं ५ मंजुरची रससों रुचिकै सुगुमानकी मेंड़ खसाइ गयोरी। याह बताइ हमैं सजनी अँझधारमें छांड़िनशाइ गयोरी। खेल संयोगको नेक दिखाइ बियोग फनीये कटाइ गयोरी। प्रेमकेफंद फसाइ गयोव्रजमें घरकान्ह बसाइ गयोरी २ कदम करीलतीर पूंछति अधीर गोपी आनन रुचौहौ गरौंखरौंहै भरौहौंसों। चोरहैं।हमारो प्रेमचौतरानि तारौ गदरानि कसि भाज्यो ह्वैकै करिलजौहौं सों। ऐसेरूप ऐसेभेषह्रमेंहू दिखैयो अति देखतहीं रसखानिनैननचुभोंहौंसों। मुकुट झुकौहौं हियहारहैं हरौहौं कटिफेटापियरौहों अंगरंग सबरौहौंसों ३ श्लोक॥ चूतप्रियालपनसासनकोविदार जम्ब्वर्कविल्वबकुलाम्रकदंबनीपा:। येन्येपरार्थभविकायमुनोपकूलेशंशंतुकृष्णपदवींरहितात्मनानां: ४ पंचाध्यायी॥यमुनाकेविटप पूछिभई निपट उदासो। क्योंकहिहै सखिमहाकठिन ये तीरयबासी॥ श्लोक॥ पुन:पुलिनमागत्यकालिंद्या: कृष्णभावना:। समवेताजगु:कृष्णंतदागमनकांक्षया ५ तबगोपीअधीनह्वैवचन सोंबिलिन सों पूंछतभईं महाविह्वल शरीरह्वैगये साकहैंहैं तुमकहूंश्रीकृष्णदेखेहैं॥श्लोक॥ भजतोपिनवैकेचिद्भजंत्यभजत:कुत:।आत्मारामाह्यासकामाअकृतज्ञागुरुद्रुह: ६ न पारयेहंनिरवद्यसंयुजांस्वसाधुकृत्यंविवुधायुषापिव:। यामाभजनदुर्जरगेहशृंखला: संवृश्च्यतद्व:प्रतियातुसाधुना ७॥

दोहा॥ कसत कसौटी हेमको लोकरीतियहनेम। प्रेमनगरकी पैठमें भयो कसौटीहेम ८ बातैंश्रीकृष्णजी गोपिकनिके आगेहारि इनके प्रेमको देखिके महाप्रफुल्लित ह्वैकै हाथजोरिके आइमिले ८॥

आवैकभू प्रेमहेमपिंडवततनहोइकभूसंधिसंधिछुटिअंगबटिजातहैं। औरएकन्यारीरीतिआंसूपिचकारीमानों उभैलालप्यारीभावसागरसमातहैं। ईशताबखानिकहा करोसोप्रमाणयाको जगन्नाथक्षेत्रनेत्रनिरखिसाक्षातहैं। चतुर्भुजषटभुजस्वरूपलैदिखायदियो दियोजोअनूपहित बातपातपातहैं ३२८ कृष्णचैतन्यनामजगतप्रकटभयो अतिअभिरामलैमहंतदेहीधरीहैं। जितोगौड़देशभक्ति लेशहूनजानेकोऊ सोऊप्रेमसागरमेंबोरेउकहिहरीहैं। भयेशिरमौरएकएकजगतारिबेको धारिबेकोकौनसाखि पोथिनमेंधरीहैं। कोटिकोटिअजामीलवारिडारेदुष्टतापै ऐसेहूमगनकियेभक्तिभूमिभरीहैं ३२९॥

आवैकभूप्रेम॥पद॥रासमंडल बनेन्टत्यनीकीबनी। गौर गोविंदके नयन अरबिंद सों छुटत आनंद मकरंद चऊ दिशि घनी।ताल बसमृदु चरणधरत धरणी ऊलसि बिलस हस्तकभेदचलन लोयनअनी। पुलकाआयाद घन कंपभरि थरहरनि परसत प्रस्वेद सुरभेदभारी बनी। अहितसित आरकत धरत जड़ता नवहिंवहिठाढ़े रहतगहतवानके फनी। निपट अवसन्नजब तबहिं छिति धुकिपरत अंगनहिं हलत गत श्वासकी निगमनी। तासमयजगतमें जीवजेति कवसत प्रेमआनंदके होत सबरे घनी। चकृत सब पारषद शब्द मुखमें मिलत लगी टकटकी यहसुख मनोहरभनी॥

मूल ॥ सूरकबित्तसुनिकौनकबिजोनहिंशिरचालनकरै। उक्तिचोजअनुप्रासबरनअस्थितअतिभारी । बचनप्रीतिनिर्बाहअर्थअद्भु ततुकधारी। प्रतिबिंबितदिव्यदृष्टिहृदैहरिलीलाभासी। जन्मकर्मगुणरूपसबैरसनापरकासी। बिमलबुद्धिगुणऔरकीजोयहगुणश्रवणनिधरै।सूरकबित्तसुनिकौनकबिजोनहिंशिरचालनकरै ७३ ॥

शिरचालनकरै ॥ श्लोक ॥ किंकवेस्तस्यकाव्येनकिंकाण्डेनधनुस्मतः।परस्यहृदयेलग्नायन्नघुर्णयतिशिरः २दोहा॥ किधौं सूरको शरलग्यो किधौं सूरकी पीर। किधौंसूरका पदसुन्यो यौंशिरधुनत अधीर २ ॥ कबित्त ॥ जासों मनहोत तासों तनमन दीजियत जासों मनभंग तासों कछू न बिशेषिये। बोलै तासों बोलि अनबोलै तासों अनबोलिप्रेमरस चाहै तासोंप्रेमरसपेखिये। प्रीतिरीति चाहै तासों प्रीति रीतिजानियत नातरु अनेक रूपसबही अलेखिये। नर कहा नारीकहा खूबी महाखूबी कहा आप को न चाहै ताहि आपहू न देखिये ३ कहावतऐसेत्यागी दानि,चारिपदारथ दिये सुदामा गुरुके सुतदियेआनि। बिभीषण निजलंकादीनी प्रेमप्रीतिपहिंचानि। रावणके दशमस्तक छेदे दृढ़गहि शारँगपानि। प्रह्लाद की जिन रक्षाकीनी सुरपतिकियोनिधानि। सूरदासपरबहुतनिठुरतानैननहू की आनि ४बचनप्रीति॥ ऊधो यह निश्चय हम जानी। खोयो गयो नेह न गुनपै प्रीति कोठरीभई पुरानी। यहलै अधर सुधारस सींचो कियोपोषबहुलाड़ लडानो। बहुरौ किया खेलशिशु को गृह रचना ज्यों चलतिबिजानो।ऐसी हितकीरीति दिखाईपन्नग कांचुरी ज्यों लपटानी। फिरिहू सूरतिकरत नहीं ऐसे त्यागत भँवरलता कुम्हिलानी। बहुरंगीजितजाति तितैसुख एकरंगी दुखदेह दहानी। सूरदास पशुधनी चोरकी खायो चाहैं दानोपानो ५॥

मूल ॥ व्रजबधूरीतिकलियुगबिषेपरमानंदभयोप्रेमकेत।पौगंडबालकिशोरगोपलीलासबगाई। अचरजकहाइहिबातहुतौयहलौजुसखाई। नयननिनीरप्रबाहरहतरोमांचरैनिदिन। गदगदगिराउदारश्यामशोभाभीजेउतन। शारंगछापताकीभईश्रवणसुनतआवेसदेत। ब्रजबधूरीति कलियुगविषेपरमानंदभयोप्रेमकेत ७४ श्रीकेशवभटनरमुकुटमणिजिनकीप्रभुताबिस्तरी। काशमीरकीछापपायतापनजगमंडन। दृढ़हरिभक्तिकुठारआनधर्मबिटपबिहंडन। मथुरामध्यमलेच्छवदकरिवरबटजीते। काजीअजितअनेकदेखिपरचेभयभीते।बिदितबातसंसारसबसंतसाखिनाहिंनदुरी। श्रीकेशवभटनर मुकुटमणिजिनकीप्रभुताविस्तरी ७५ टीकाश्रीकेशवभट्टकी॥आपकाशमीरसुनीवसतबिश्रामतीरतुरकसमूहद्वारयंत्रइकधारिये। सहजसुभाइकोऊनिकसतआइताकोपकरतधाइताकेसुनतनिहारिये। संगलैहजारशिष्यभरेभक्तिरंगमहा अरेवाहीठौरबोलेनीचपटटारिये। क्रोधभरिझारेआयसुवापैपुकारेवेतोदेखिसबैडारेमारेजलबोरिडारिये ३३० ॥

पौगंडबालकिशोर॥ रसामृते॥ कौमारंपंचमादाप्तंपौगंडंदशमावधि॥ आषोडशंचकैशोरं यौवनंस्यात्ततःपरं १ हरिकुवार॥ दोहा॥ व्यासविषयजलबटिरह्यो नीचसंगजलधार॥ हरिकुठारसों प्रीतिकरि कटतनलागेबार २॥ बाराहे॥ अहोमधुपुरीधन्या वैकुंठाच्चगरीयसी॥ विनाकृष्णप्रसादेनक्षणमेकंनतिष्ठति २ ताकेसुनतनिहारिये॥ श्लोक॥ मणिमंत्रमहौषधीनांअचिंतशक्तिः ४ जलबोरिडारिये॥ कवित्त॥ गयेसबदौरिजहांकाजीकी जुपौरिअति

कियो तिनसोई अजुखो जियेपुकारहै। औजुको कहै सोएक आयोहै जुसयुरासेंसंगहै हजारशिष्यतिनकोनपारहै। लैकै करकारे घरकोरमति भांतिकह्यो औरै अधर्मी हिंदूधर्म कियो ख्वारहै। होऊतुमरांडकियो पुरुषारथ भांडजोई हरिसोंविमुख ताकोनहीं पारावारहै २ कानीअतिडरेउ हियेपरेउखरभरेउ यहकौनआईअरेउअबकरोका उपाइ मैं। रच्योभूतबैताल मूठि दीठि मायाजाल सुदर्शन कियेख्याल सहजसुभाइमैं। असुरके तनमें सोअगिनि लगाइदई दईकहो दईकहा कहाकियो हाइमैं। येतौहैंबड़ेप्रतापी मैं तौरहौं महापापी अहो मतियापी आवेंपरो भेद पाइ मैं २ आइपाइंपरेउ नीर नयननिते ढरेउ बैन कहैमरेउ मरेउ प्रभुमेरी रक्षा कीजिये। तबस्वामीकह्यो तोहिलैहौंमैं बचाइ पुनिएकहै उपाइ सीख सुनिमेरी लीजिये। फेरिजो अधर्मऐसो करोगे न कर्मआव मेटौसबगर्भसदा शीतलह्वै जीजिये। और जितेवादी हरि विमुख प्रसादी तिन्हैंलीये जीजिये। और जितेवादी हरि विमुख प्रसादी तिन्हैंलीये सतमारग में नौधारस पीजिये ३ जितेहिंदू तुरकनि सैकरानि मारिहारे भरेदुख भारे वेतौस्वामीजपै आयेहैं। प्रभु कह्यो आवो अब दुखजिनिपावो कैसौराइ गुणगावो यमुनाजल्ल अन्हायेहैं। महीन एकवस्त्रल्याये तिन को लैपहराये हिंदू को चिन्हपाये जगयश गायेहैं। तुरक तियाकान्ह धरी आइ सब पाइं परी करी प्रभुदया नर नारी दरशायेहैं ४

मूल ॥ श्रीभटसुभटप्रगट्योअघटरससरसिकनमनमोद घन। मधुरभावसंमिलितललितलीलासुबलितछवि। निरखतहरषतहृदैप्रेमवरषतसुकलितकवि। भवनिस्तारनहेतदेतदृढ़भक्तिसबननित। जासुसुयशशशिउदैहरतअतितमभ्रमश्रमचित। आनंदकंदश्रीनंदसुतश्रीवृषभानुसुताभजन। श्रीभटसुभटप्रगट्योअघटरससरसिकनमन

मोदघन ७६ श्रीहरिब्यासतेजहरिभजनबलदेवीकोदी-क्षादई। खेचरनरकीशिष्यनिपटअचरजयहआवै। बिदित बातसंसार संतमुखकीरतिगावै। बैरागिनिकेवृन्दरहत सँगश्यामसनेही। ज्योंयोगेश्वरमध्यमनोशोभितबैदेही। श्रीभटचरणरजपरसिकैसकलसृष्टिजाकीनई। श्रीहरिब्यासतेजहरिभजनबलदेवीकोदीक्षादई ७७॥

मधुर कहिये माधुर्य शृंगाररस॥ पद॥ राधिका आजु आनंद में डोलैं। सांवरचंद गोबिंद के रस भरी दूसरी कोकिला मधुरसुरबोलैं। पहर पट नीलतान कनक हीरावली हाथलै आरसी रूप को तौलैं। जै श्री भट आजु नागरि नीकी बनीकृष्णके शीलकी ग्रंथको खोलैं २ संतो-सेव्य हमारे श्री प्रियप्यारे वृन्दाबिपिन बिलासी। नंदनँदन वृषभान नंदिनी चरण अनन्य उपासी। मतप्रणाय वस सदा एक रस बिबिधि निकुंज निवासी। जै श्रीभटयुगुल बंशीबट सेवत मूरति सब सुख रासी २ तौ नंद वृषभान कहैं इनके उपासिक श्री राधाकृष्णके संतहैं ३॥ दोहा॥ साधुसराहैं सोसती यतीजोषिता जानि। रजबसाँचे शूर को बैरी करै बखान॥

टीकाश्रीहरिब्यासदेवकी॥ चढ़थावरगावबागदेखिअ-नुरागभयोलयोनितनेमकरिचाहैपाककीजिये। देवीकोस्थानकाहूबकरालैमारोआनिदेखतगिलानिइहांपानी नहींपीजिये। भूखेनिशिभईभक्तितेजमिटिगईनई देहधरिलईआइलखिमतिभीजिये। करौजूरसोईकौनकरैकछूऔर भोईसोईमोकोदीजैदानशिष्यकरिलीजिये ३३१ करीदेवी शिष्यसुनिनगरकोसटकीयों पटकीलैखाटजाकीबड़ोसिर

दारहै। बढ़ीमुखबोलैंहौंतौभईहरिदासदासीजौनदासहो
हुतौपैअभीडारोमारहै। आयेसबभृत्यभयेमानोंतननयेलये
गयेदुखपायतापकियेभवपारहै। कोऊदिनरहेनानाभोग
सुखलहेएक श्रद्धाकेसुपचआयोपायोभक्तिसारहै ३३२॥

पायोभक्तिसारहै॥ श्लोक॥ अश्वत्थंकाकविष्टायांजन्मो
पिउच्यतेबुधैः। देवानामपिन्हयांवै पूज्यएवनसंशयः२॥पद॥
जातिभेद जो करै भक्त सो तौ बड़ो अतिपापी। तातेभलो
वधिक पर निंदक गुरुताजप मद दापी। वायस की बिष्टा
सों उपजै पीपर नामकहावै। परिक्रमी दंडवत करै द्विज
सब जग पूजन आवै। तुलसी जो घूरपैउपजै दोष न कोई
धरई। ता तुलसी के पातफूल दल हरि पूजन को रहई।
शूकर मरै गोमती संगम अरु चक्र हैंउरउरही। तिनचक्रन
को सब जग बंदै दोष न कोऊ कहिही। ज्यों जल बरषै
पुरवीथिन सें गंगामें बहिआवै। सोतिहि परशि महाअप-
राधी कलमष सबै नशावै। सेन धना रैदासकबीरा और
किते परवाना। इनको दरशन दीनोहै हरिप्रगट सबै जग
जाना। जोग यज्ञ जप तप ब्रतसंयम इनसें तौ हरि नाहीं।
गंगा राम हित नवल युगुलवर बसत भक्त उरमाहीं२॥

मूल॥अज्ञानध्वांतअन्तहिकरनद्वितियदिवाकरअवत
र्यो।उपदेशेनृपसिंहरहतनितआज्ञाकारी। पक्कवृक्षज्यों
नायसंतपोषकउपकारी। बानीभोलारामसुहृदसबहिन
परछाया। भक्तचरणरजयांचिविशदराघवगुणगाया।
करमचंदकश्यपसदनबहुरिआइमनोंबपुधर्यो। अज्ञान
ध्वांत अंतहिकरनद्वितियदिवाकरअवतर्यो ७८ श्रीविट्ठ
लनाथब्रजराजज्योंलाललड़ाइकेसुखलियो। रागभोग
नितविविधिरहतपरिचर्याततपर। शय्याभूषणबसनरु

चिररचनाअपनेकर । वहगोकुलवहनंदसदनदीखतको सोहै। प्रगटविभवजहँघोषदेखिसुरपतिमनमोहै। वल्लभ सुतबल्लभजनकेकलियुगमेंद्वापरकियो। श्रीबिट्ठलनाथ ब्रजराजज्यों लालुलड़ाइकेसुखलियो ७६ ॥ टीका॥ कायथत्रिपुरदासभक्तिसुखरासभयो कस्योऐसोपनशीत दगलापठाइये । निपटअमोलपटहियेहितजटिआवेताते अतिमावैनाथअंगपहिराईये । आयोकोऊकालनरपति तेबिहालकियोभयोईश०यालनेकुघरमेंनखाइये । वही ऋतुआईसुधिआई आंखिपानीभरि आईएकखातिदीठि आईवेलिलाइये ३३३॥

चरणरजयांचि देवप्रसन्न कियो बरमांगौं वहचतुर अघ वंश धन नहीं पुत्रको सोनाके कटोरामें दूध प्यावते देखो ऐसे आत्म हरिज्ञान १ ब्रज राज ज्यों॥ पद ॥ जे वसुदेव किये पूरण तप तेई फल फलत श्री वल्लभ देव। जे गोपाल हुते गोकुलमें तेई अब आनि बसे करि गेह। तेवे गोपवधू हुतीबन में आवतेई वेद ऋचाभई येह। छीतस्वा- मी गिरिधरन श्रीविट्ठल वेई वेई येषपै ईकछु न सँदेह २ भेदियाकी प्रेरणा दईआये इन वे ३॥

वेंचिकेबजारयोंरुपैयाएकपायोताकोलायोमोटोथान मात्ररँगलालगाइये। भेज्योंअनुरागपुनिनयनजलधारभी ज्योभीज्योदीनताईधरिराखो औरैआइये। कोऊप्रभुजन आइसहजदिखाईदई भईमनदियोंलैभँडारीपकराइये। काहूदासदासीके नकामकोपैजाउलैकेबिनतीहमारीजूगु साईंनसुनाइये ३३४दियोलैभंडारीकरराखेधरिपटवाये निपटसनेहीनाथबोलेअकुलाइके। भयेहेजड़ायेकोउबे-

गिहीउपायकरैविविधिउठायेअंगबसनसुहाइके। आज्ञा पुनिदईयोंअगीठीबारिदईफेरि बहोभईसुनिरहेअतिही लजाइके। सेवकबुलाइकहीकौनकीकबाइआईसबैसोसु नाईएकवहलीबचाइके ३३५ सुनीनत्रिपुरदासबोल्यो धननाशभयोमोटौएकथानआयोराख्योहैबिछाइकोलावो वेगियाहीक्षणमनकीप्रबीनजानि लायोदुखमानिब्योंति लईसोसिमाइके। अंगपहराईसुखदाईकापैगाईजातिक हीजबबातजाड़ोगयोभरिभाइके। नेहसरसाईलैदिखाई उरआईसबै ऐसीरसिकाईहृदयराखीहैबसाइके ३३६॥

नेहसरसाई॥ दोहा॥ हरिरहीम ऐसीकरी ज्योंकमान शरपूर। खैंचि आपनीओर को डारि दियो अति दूर १ यह कहिके मंदिर के द्वारपै गोविंद कुण्ड कीचचीपैजाय बैठे गुसाईं के टहलुवा प्रसाद लाये सो न लियो तबनाथ नी आपही लाये॥दोहा॥ खैंचिचढ़निटीली ढरनि कहो कौनयहप्रीति॥ आजकालिहमोहनगही बंशदियाकीरी ति॥ कवित्त॥ जबलौंन कोऊ पीरलागतिहै अपने उरतब लौं पराईपीर कैसेपहिंचानि हौं। आजुलौं न जानत हौं लग्योहैनेह काहूसोंजबनेह लागिहैतौहितउन मानिहौं। कहतचतुरकबि मेरेकहिबेकीतौ एकौ न रहेगी तबसमझि जियआनिहैं। जैसेनीकेमोहिंतुम लागतहौप्यारेलाल तैसोनीको तुम्हैंकोऊ लागिहै तौजानिहैं १ तबरहीम पीठि फेरिलई माथजी याद धरिके अंतरध्यान होतभये तबयहपदगायौ॥पद॥ छबि आवन मोहनलालकी। लाल काछनी काछे करमुरली पीतपिछौरी सालकी। बंक तिलककेसरिको किये द्युतिमानों बिधुबालकी। बिसरत नाहिंसखीमोमनतेचितवनिनयनबिशालकी। नीकीहँसनि अधरसधरनिकी छबिछीनीसुमनगुलालकी। जलसोंडारि

दियोपुरइनपर डोलनिमुक्तामालकी ॥ आपमोलबिन मोलनडोलनि बोलनिमदनगोपालकी। यहस्वरूपनिरखै सोइजानै इस रहीमकेहालकी २ कमलदल नैननिकीउन मानि। बिसरतनाहिंसखीमोमनते मंदमंदमुसकानि। यह दशननिद्युतिचपलाहूते महाचपलचमकानि। बसुधाकी बशकरीमधुरता सुधापगीबतरानि। चढ़ीरहैचितउरबि- शालकी मुक्तालथहरानि। न्त्यसमयपीतांबरहूकी फ- हरफहर फहरानि। अनुदिनश्रीवृंदाबनब्रजते आवनआ- वनजानि। छबिरहीमचितनेनटरति हैसकलश्यामकीबानि ३॥ दोहा॥ मोहनछबिनैननिबसी परछबिहगनिसुहाइ। भरीसराइरहीमज्यों पथिकआइफिरिजाइ ४ अंतरदाँव लगीरहै धुवां न प्रगटैसोइ। केजियजानैआपनोकैजाशिर बीतीहोइ५ तिहि रहीम तनमनदियो कियोहियेबिचभौन। तासोंदुखसुखकहनकी बातरहीअबकौन ६ श्रीकीचूरी कोदृष्टांत ७॥

मूल॥ श्रीबिट्ठलेशसुतसुहृदश्रीगोबर्द्धनधरध्याइये। श्रीगिरिधरजूसरसशीलगोबिंदजुसाथहि। बालकृष्णाय शबीरधीरश्रीगोकुलनाथहि। श्रीरघुनाथजुमहाराजश्री यदुनाथहिभजि। श्रीघनश्यामजुपगेप्रभुअनुरागीसुधि सजि। येसातप्रकटविभुभजनजगतारततसयशगाइये। श्रीबिट्ठलेशसुतसुहृदश्रीगोबर्द्धनधरध्याइये ८० गिरि धरनरीझिकृष्णदासकोनाममांझसाझोदियो। श्रीवल्ल भगुरुदत्तभजनसागरगुणआगर। कबित्तनोपनिर्दूषनाथ सेवामेंनागर। बाणीबंदितबिदुषसुयशगोपालअलंकृत। ब्रजरजअतिआराध्यवहैधारीसर्बसुचित। सानिध्यसदा हरिदासवर्यगौरश्यामदृढ़ब्रतलियो। गिरिधरनरीझिकृ ष्णदासकोनाममांझसाझोदियो ८१॥

यदुनाथ ॥ सवैया ॥ श्रीशदिनेशतपैनिहिबार सुबारहि
बारबिहारीकोएबो । बासमेंबैरिनिआरजलाज सुएकऊ
बारबनैनचितैबो । शोचयहैसजनीरजनीदिन कौनसेअव
सरअवसरपैबो । जानतहौंयदुनाथ यहै कबहूंकमहोसनि
हीमरिजैबो २ ॥ पद ॥ बातनहीं हौंपतितपावन । मोते
कासपरेखानोके बिनरणशूरकहावन ॥ सतयुगत्रेताद्वापरहू
के पतितनकीगतिआपी । हमैंउन्हेंबहुतैअंतरहै हमकल-
युगकेपापी ॥ कोऊटांकहैटांकपौसेरा बड़ीबड़ाईसेर । हौं
परनपतिताईऐसौ ज्यौंआननिमेंमेर ॥ हौंदिनमनिख-
द्योतआनखल अविद्याकोउजागर । गोपदपावनकेन
सरबरैं हौंदुर्मतिजलसागर पतितपावनहै बिरदतिहारो
सोईकरौपरवान । पाहननावपारकरौनाभाको केहर
पकरौकान २ ॥

टीका ॥ प्रेमरसरासिकृष्णदासजूप्रकाशकियोलियोनां
थमानिसोप्रमाणजगगाइये । दिल्लीकेबजारमेंजलेबी
सोनिहारिनयनभोगलेलगाईलगीविद्यमानखाइये । रा
मसुनिभक्तनकोभयोअनुरागबसिशशिमुखलालजूकोजाइ
कैसुनाइये । देखिरिझवाररीझिनिकटबुलाइलयेलईसंग
चलेजगलाजकोबहाइये ३३७ नीकेअन्हवाइ पटआभर
णपहिराइसुगन्धछूलगाइहरिमंदिरमेंलायेहैं । देखिभईम
तवारीकोनीलै अलापचारीकह्यो;लालदेखिबोलीदेखेमोह
भयेहैं । नृत्यगानतानभावमुरिमुसुकानिदृगरूपलपटानी
नाथनिपटरिझायेहैं । ह्वैकैतदाकारतनछूटेउअंगीकारक
रीधरीउरप्रीतिमनसबकेभिजायेहैं ३३८ आयेसूरसाग
रसोकहीबड़ेनागरहौकोऊपदगावोमेरीछायानमिलाइये ।
गायेपांचसातसुनिजातमुसुकातकही भलेजूप्रभातआनिक

रिकैसुनाइये। परेउशोचभारीगिरिधारीउरधारीबातसुंद
रबनाइसेजधरेउयोंलखाइये। आइकेसुनायोसुखपायोप
क्षपातलैं बतायोहूमनायोरंगछायोअभूंगाइये ३३६॥

दिल्लीके सेवकनको प्रसाददियो काहूनेतौ लियो
कहीअधिकारी भ्रष्टभयोहै काहूलयो पै पायोनहींबि-
चारयो बड़ेनकी क्रियामेंमनदीजै कौनभावसोंभोगलगाइ
ये तापैदृष्टांत नारदजीको नृत्यागान॥पद॥मेरोमनगिरिधर
छबिपर अटक्यो। ललितत्रिभंगीअंगनपर चलिगयो तहां
हींठटक्यो। सजलश्याम घनबरण नीलह्वै फिरिचित अंत
नभटक्यो। कृष्णदासकी प्राणनिछावरि यहतन जगशिर
पटक्यो॥२॥ दोहा॥ सखियाअखियाहाथदे तनराख्यौ
ठहराइ। मनहरिमदिराछबिछक्यो दईनारि लटकाइ२
अभूंलगिगाइये॥ पद॥ आवतवनकान्ह गोपबालक संग
नेचुकी खुररेणु छुरित अलिकावली। भौंहमन्मथचाप
वक्रलोचनबाण शीशशोभित मत्तमोरचन्द्रावली। उदित
उडराज सुंदर शिरोमणि बदन निरखिफूली नवलयुवति
कुमुदावली। अरुण सकुचत अधरबिंबफलउपहंसतकछुक
प्रगटेहोत कुमुद दशनावली। श्रवण कुंडल तिलकभाल
वेसरि नाक कंठकौस्तुभमणि शुभग त्रिबलीवली। रत्न
हाटक खचित उरसिपद कनकपांति बीचराजतशुभभ-
लकमुक्तावली। वलय कंकणि बाजुबंद आजानुभुजमुद्रिका
करतलबिराजत नखावली। कुणितकर मुरलिका अखिल
मोहित बिश्वगोपिका जनमन ग्रंथित प्रेमावली। कटि
क्षुद्रघंटिका कनक हीरामई नाभ अंबुज बलित शृंगार
रोमावली। धाइचावकुंक चलत भक्तहितजानि पियगंड
मंडल रचितश्रम जलकणावली। पीतकौ श्रेय प्रधान
सुंदर अंग बजत नूपुरगीत भरत सदावली। हृदयकृष्ण
दास बलि गिरिधरनलालकी चरणनख चंद्रिका हरत
तिमिरावली२॥ यहपदगावत सुनतप्रभु हर्षतहिय सुख

पाई। छबिनिरखत हरि आपनी मनहींमन मुसिक्याई॥

कूवामैंईखिसिलदेहछुटिगईनईभईभयोअशंकाकछूओ रैउरआईहै।रसिकनिमणिदुखजानिसोसुजाननाथ दियो दरशाइतनग्वालसुखदाइये । गोवर्द्धनतीरकहीआगेबल वीरगयेश्रीगुसाईंवीरसोंप्रणामयोंजनाइये । धनहुबता योखोदिपायो।विश्वासआयो हियेसुखछायोशंकएकलैबहा इये ३४० मूल ॥ श्रीबर्द्धमानमंगलगँभीरउभैथंभहरिभ क्तिके। श्रीभागवतबखानिअमृतमयनदीबहाई । अमल करीसबअवनितापहारकसुखदाई। भक्तनसोंअनुरागदी नसोंपरमदयाकर। भजनयशोदानंदसंतसंघटकेआगर । भीषमभटअंगजउदारअतिकलियुगदातासुगतिके। श्रीव र्द्धमानमंगलगँभीरउभैथंभहरिभक्तिके८२रामरामप्रताप तेखेमगुसाईंखेमकर । रघुनंदनकोदासप्रकटभूमंडलजा न्यो।सर्बसुसीतारामऔरुकछुउरनहिंआन्यो । धनुषबाण सोंप्रीतिस्वामिकेआयुधप्यारे। निकटनिरंतररहतहोतकब हूंनहिंन्यारे।शूरबीरहनुमंतकेसदृशपरमउपासकप्रेमभर। रामरामप्रतापतेखेनगुसाईंखेमकर८३ ॥

माथुर बाराहपुराणमें लिख्योहै सब ब्राह्मणनके मुकुट माथुर सोमथुरियनि के मुकुटमणि बिट्ठलदास ॥ श्लोक ॥ ब्राह्मणःक्षत्रियावैश्या शूद्रावायदिचेतरः॥ विष्णुभक्तिसमा युक्तोज्ञेयःसर्वोत्तमोत्तमः २ मानदद॥ तृणादपिसुनीचेनत रोरिवसहिष्णुता ॥ अमानिनांमानदेन कीर्त्तनीयःसदा हरिः २ गुनहिगुनअंतरधारतो संतनिको सुभाव सूपको सोंहैसारहीलेहिं असार फटकिडारेंअसंत को सुभाव चालिनीकोसों ३।४।५।६॥

विट्ठलदासमाथुरमुकुटभयोअमानीमानप्रद।तिलक दाससोंप्रीतिगुणहिगुणअंतरधारेउ। भक्तनकोउत्कर्षजन्मभरिरसनउचारेउ।सरलहृदैसंतोषजहांतहँपरउपकारी उत्सवमेंसुतदानकियोकृमदुष्कृतभारी।हरिगोबिंदजयजयगोबिंदगिराहुसदआनंदकृत। विट्ठलदासमाथुरमुकुटभयोअमानीमानप्रद८४टीका॥ भाईउभैमाथुरसोरानाकेपुरोहितहेलरिमरेआपसमेंजियोएकजामेंहै।ताकोसुतविलसुदाससुखराशिहियेलियेबैसथोरीभयोबड़ोसेवैश्यामेंहै। बोल्योनृपसभामध्यआवतनविप्रसुत क्षिप्रलैकेआवौकही कहोपूजेकामहै। फिरिकैबुलायोकरोजायरणय।हीठौरका हूसमझायोगावैनाचैप्रेमधामहै ३४१ गयेसंगसाधुनलै बिनयरंगरँगेसबरानाउठिआदरदैनीकेपधरायेहैं। किये जाबिछौनातीनिछातिनकेऊपरलेना।बिगाईआयेप्रेमगिरे नीचेआयेहैं।राजामुखभयोश्वेतदुष्टनकोगारीदेतसंतभरि अंकलेतघरमधिलायेहैं। भूपबहूभेंटकरीदेहवाहीभांतिप रीपाछेसुधिभईदिनातीसरंजगायेहैं ३४२ उठेजबमाय लेजनायसबबातकही सहीनहींजातिनिशिनिकसेबिचारि कै। आयेयों छटीकरामें गरुड़गोबिंदसेवा करतमगन हियेरहतनिहारिकै। राजाकेजेलोगसुतौ ढूंढिकररहे बैठितियामातुआइकरें रुदनपुकारिकै। कियेलेउ- पाइरहीकितौ हाहाखाइयेतौ रहेमढ़रायतबबसीमनहारिकै ३४३॥

बिनयरंगरँगे॥ कवित्त॥ कविता रसिकतादि गुन सब उर बसे नम्रता सज्जनता न रीझि आप मासमें। बातें

गढ़ि छोलिकहैं पोलिको न पारावार रीझे नचि चारु घनबासी के बिलासमें। इनके जे गुण तिन्हैं उपमानपाई कहूं चहूंदिशि हरिहेरिकियो लैप्रकाशमें। काहू न सुहायत जिजायसो भवनबैठे जैसेचांदनीसरसआई पूस मास में रछायेकछू॥ श्लोक ॥ रण्डमन्यस्त्रमन्यस्त्र दुर्भगेदुःख कारिणि परान्नं दुर्लभंलोके देहोयंचपुनःपुनः२ ॥ दोहा ॥ तुलसीकुरसीसोंकलोंचढ़ईहरिकेअंग ॥ पीवतहीबैकुण्ठको लियोजातिहै भंग २ ॥

देख्योजबकष्टतनप्रभुजीस्वपनदियोजावोमधुपुरीऐसे तीनबारभाषिये। आयेजहांजातिपांतिआये कछूआरैरंगदे ख्योएकखातीसाधुसंगअभिलाषिये। तियारहैगर्बवर्तीस तीमतिशोचरतीखोदतभूमिपाईप्रतिमाधनराखिये । खा तीकोबुलाइकहीलहीपहलेहुतुम उनपाइपरिकह्योरूपसु खचाखिये ३४४ करेसेवापूजाअरुकामनहींदूजाजाढिग ईभक्तिभयेशिष्यवहुभाइकै। बड़ोईसमाजहोतमानोंसिंधु सोतआयेबिबिधिबधायेगुणीजनउठगाइकै। वकैआईए कनटीरूपगुणधनजटी वहगावै तानकटीघटपटीसीलगा इकै। दियेपटभूषणलैभूषणमिटतिकहुंचहूंदिशिहेरिपुत्र दियोअकुलाइकै ३४५ रंगीराइमामताकीशिष्यएकराना सुताभयादुखभारीनैकुजलहूनपीजिये । कहिकैपठाईवा सोंचाहोसाईलीजैधनमेरोप्रभुरूपमेरेनयननकोदीजिये। द्रव्यतोनचाहोंरीझिचाहो तनमनदियो फेरिकैसनाजकि योबिनतीकोकीजिये। जितेगुणीजनतिन्हैंदियेअनगनदा न पाछेनृत्यकरेउआपदेतसोनलीजिये ३४६ ॥

भूषणमिटत॥कवित्त।हाथिनको अंकुशबनायेपुनिघोरन

कोलोहेकी लगाम सुखदशन चबातकी । योगिनकी पुरी राज्य रोगिनकी यमपुरी जातिज्वर जातहै विषम उतपात की। सांपनकोमंत्र भूतप्रेतनकोयंत्र रचि पानी पढ़ि दियेते न व्यथा रहै गातकी। अवनीमेंआय विधिरचेहैं उपायऐपै तासोंन बसाय जेपचावैं रीझबातकी॥ दोहा ॥ रूपचोच कीबातपुनि औरकटीलीतान। रसिकप्रबीणनके हिये छेदनको येबान २॥

ल्याईएकडोलामेंबैठारिरँगीराइजूकोसुंदरश्रृंगारकही वारतेरीआइये। कियोनृत्यभारीजोबिभूतिसोतोवारीलि येभरीअंकवारीभेटकियेद्वारगाइये। मोहननिछावरिमेंभ योमोहिंलेहुमतिलियोउनशिष्यतनतज्योकहांपाइये। क ह्योजूचरित्रबड़ेरसिकबिचित्रनिको जोपैलालमित्रकियो चाहोहियलाइये३४७॥मूल॥ हरिरामहठीलेभजनबल रानाकोउत्तरदियो।उग्रतेजउदारसुघरसुथराईसींवा। प्रे मपुंजरसराशिसदागदगदसुरग्रीवा। भक्तनकोअपराध करैताकोफलगायो। हिरणयकश्यपप्रहलादप्रगटदृष्टांत दिखायो। सस्फुटबक्ताजगतमेंराजसभानिधरकहियो। हरिरामहठीलेभजनबलरानाकोउत्तरदियो ८५ टीका॥ रानासोंसनेहसदाचौपरिकोखेलोकरें ऐसोसोसन्यासीभू मिसंतकीछिनाईहै। जाइकेपुकार्योसाधुझिरकिबिडा र्योपर्योबिमुखकेबशाबातसांचीलैझुठाईहै। आयेहरिरा मजूपैसबहीजनाईरीति प्रीतिकरिबोलेचलोआगेआवोभा ईहै। गयेबैठेआवोजनमनमेंनलायोतब नृपसमझायोझा र्योफेरिभूदिवाईहै ३४८॥

रानासोंसनेह ॥ दोहा ॥ विषय विषम जे भरिरहै

रानामद रँग भोइ । तिनके द्वारे रहतजे विषयी जानो होइ २ भाईहैंहमारो दनिपाल करी के नातेमाने हमारो तौनातो कंठोकोहै ॥ अस्माकंवदरीचक्रं युष्माकंवदरीतरु: २ अथवा भाईहै साधुनकी सेवा जहां निमित्त रजोगुणनृपतिकोरहेहैं नहींतौ महाअपराधलगैहै तौ तिहारो काम न होइ तौकाहेकोरहैंगे ॥ दोहा ॥ धनुषबाण धारे रहैंअग्रदासकेकाज।भीरपरैहरिभक्तपैसावधानतवराज ३ ॥

मूल ॥ कमलाकरभटजगतमेंतत्ववादरोपीध्वजा। पंडितकलाप्रवीणअधिकआदरदेआरज। संप्रदायशिरछत्रद्वितीयमनोंमध्वाचारज । जेतिकहरिअवतारसबैपूरणकरिजाने। परिपाटीध्वजविजैसदृशभागवतबखाने। श्रुतिस्मृतिसंमतपुराणतप्तमुद्राधारीभुजा। कमलाकरभटजगतमेंतत्ववादरोपीध्वजा ८६ ब्रजभूमिउपासकभट्टसोरचिपचिहरिएकैकियो ।गोप्यस्थलमथुरामंडलजिसेबाराहबखाने । तेकियेनारायणप्रकटेप्रसिद्धपृथ्वीमेंजाने। भक्तिसुधाकोसिंधुसदासतसंगसमाजन। परमरसज्ञअनन्यकृष्णलीलाकोभाजन। ज्ञानस्मारतकपक्षकोनाहिंनकोउखंडनवियो । ब्रजभूमिउपासकभट्टसोरचिपचिहरिएकैकियो ८७ टीका ॥ भट्टश्रीनारायणजूभयेब्रजपरायणजायताईग्रामतहांब्रतकरिध्यायेहैं। बोलिकैसुनावैंइहांश्रमकोसरूपहैजू लीलाकुंडधामश्यामप्रगटदिखायेहैं । ठौरठौररासकेबिलासलैप्रकाशकियेजियेयोंरसिकजनकोटिसुखपायेहैं। मथुरातेकहीचलौबैनीपूछेबैनीकहोऊंचेगावआइखोदसोतलैदिखायेहैं ३४६ ॥

सच्चितआनंद मायात्रिगुणते न्यारोहै। जाकेवनउपवन ग्रामनदी परबत हरिरूपरचे हरिखेलेखिलख्यारोहै। रत्नमयभूमि अरु अमृतमय जल ताको मारुतसुगंधमिसों भरोहरियारोहै। ब्रह्मा शिव नारद मुनीन्द्रकहैं वेद चारो खेदमिटिजाइ जाकेसुमिरोउचारोहै २॥ दोहा॥ ब्रजवृन्दाबन अवटरस राधाकृष्णस्वरूप। नामलेत पातक कटैं ज्योंहरिनाम अनूप २ ज्ञानकृष्णरत सोज्ञान अद्वैत वेदांतसोंसुखीरहतहैं ३॥

मूल॥श्रीब्रजवल्लभवल्लभसुदुर्लभसुखनयननदिये नृत्यगानगुनिनिपुणरासमेंरसबरषावत। अबलीलालिलितादिबलितिदंपतिहिरिझावत। अतिउदारनिस्तारसुयश ब्रजमण्डलराजत। महामहोत्सवकरतबहुतसबहीसुखसाजत। श्रीनारायणभट्टप्रभुपरमप्रीतिरसबशकिये। श्रीब्रजवल्लभवल्लभसुदुर्लभसुखनयननदिये ८८ मूल॥ संसारस्वादसुखवातज्योंदुहुश्रीरूपसनातनत्यागदियो। गौड़देशवंगालहुतेसबहीअधिकारी। हयगयभवनभँडारबिभवभूभुजअसुहारी। यहसुखअनित्यबिचारबासवृन्दाबनकीनो। यथालाभसंतोषकुंजकरबामनदीनो। ब्रजभूमिरहस्यराधाकृष्णभक्ततोषउद्धारकियो। संसारस्वादसुखवातज्योंदुहुश्रीरूपसनातनत्यागदियो ८९॥

संसारस्वाद॥भागवते॥ जहौयुवैवमलवदुत्तमश्लोकलालसा॥भर्तृहरीशतके॥ यांचिंतयामिसततंमयिसाविरक्तासाप्यन्यमिच्छतिजनंसजनोन्यसक्तः। अस्मत्कृतेचपरितुष्यतिकाचिदन्याधिकतांचतंचमदनं चइमांचमांच २॥कवित्त॥ जितेमणिमाणिकहैं जोरेमणिमाणिकहैं धरामेंधराधूरहीमिलाइबी। देहदेहदेहफेर पाइहैन ऐसी देह कौनजानै

कौनदेह कौनयोनिजाइबी। भूखएक राखैमति राखैभूख भूषणकी भूषणको भूषणते भूषणनपाइबी। गगनको नगनगन गगननदेहेघाते नगन चलेंगेसाथ नगन चलाइबी। भुवन अनुहारि बादशाहीकी उनहारि तापैदृष्टांत गुलामको अनित्यबिचार॥श्लोक॥धनंहि पुरुषोलोके पुरुषश्चनसेवच। अवश्यमेवंत्यजतितस्मात्किंधनतस्त्वया ४॥ बिनापरमेश्वर निर्वाह काहूका नहीं५॥

टीका॥ कहतवैरागगयेपागिनाभास्वामीजू वेगईयो निवरतुकपांचलागीआंचहै । रहीएकमांझधर्योकोटिक कवित्तअर्थयाहीठौरलैदिखायोकविताकोसांचहै । राधा कृष्णरसकीआचारजताकहीयामें सोईजीवनाथभटछपै वानीनाथहै । बड़ेअनुरागीयेतोकहिबोबड़ाईकहा अहो जिनकृपादृष्टप्रेमपोथीबांचहै ३५० वृंदावनव्रजभूमि जानतनकोऊप्राय दईदरशाईजैसीशुकमुखगाईहै। रीति हूउपासनाकीभागवतअनुसारलियो रससारसोरसिक सुखदाईहै। आज्ञाप्रभुपाइपुनिगोपेश्वरलगेआई कियेग्रंथ भाइभक्तिभांतिसबपाईहै।एकएकबातमेंसमातमनबुद्धिज ब पुलकितगातदृगझरीसीलगाईहै ३५१ रहैनंदगांवरूप आयेश्रीसनातनजू महासुखरूपभोगखीरकीलगाइये। नेकुमनआइसुखदाईप्रियालाड़िलीतू मानोंकोऊबालकी सुसोंजसबलाइये। करिरसोईसोईलैप्रसादपायोभायोअ- मलसोंआयोचढ़िपूछीसोजनाइये।फेरिजिनऐसीकरौयही दृढ़हियेधरौढरोनिजचालिकहिआंखेंभरिआइये ३५२॥

सांचहै॥दोहा॥ थोड़ेअक्षररसहितकहैंसुनैरससार। ताहिमनोहरजानियो रसिकचतुरनिरधार॥कवित्त॥

भक्त रसरूपराधाकृष्णरसरूपपद रचनाकेरूपयह तेरूपनाम भाषिये। त्यागरूपभागरूपसेवासुखसानरूप रूपहीकी भावनाऔरूपसुखचाखिये। कृपारूपभावरूपरसिकप्रभाव रूप गावतज्ञातरूपलखिमनअभिलाषिये। महाप्रभुकृष्ण चैतन्यजूकेहृदयरूप श्रीगुसाईंरूपसदानयननिमेंराखिये२ शुकमुखसों रत्न यमुनागाई रत्नादिकनगाये ३॥

रूपगुणगानहोतकानसुनिसभासब अतिअकुलानप्राणमुरछासीआईहै। बड़ेआपधीररहेठाढ़ेनशरीरसुधि बुधि मेंनआवैऐसीबातलैदिखाईहै। श्रीगुसाईंकर्णपूरिपाछे आइदेखेआछे नेकुढिगभयेश्वासलाग्योतबपाईहै। मानों आगआंचलागीऐसोतनचिन्हभयो नयोयहप्रेमरीतिकापै जातिगाईहै ३५३ श्रीगोविंदचंदआइनिशिकोसुपनदियो दियोकहिभेदसबजासोंपहिचानिये। रहोंमेंखरिकमांझ खोखैनिशिभोरसांझ सींचैदूधधारगाईजाइदेखिजानिये। प्रगटलैकियोरूपअतिहीअनूपछवि कविकैसेकहैंथकिरहे लखिमानिये। कहांलोंबखानोंभरेसागरनगागरमें नागर रसिकहियेनिशिदिनआनिये ३५४॥

ऐसीबात॥ दोहा॥ हृदयसरोवरछलछलहिदंतगयंद भकोर। महासमुद्रहिपरैनब पावतओरनछोर२॥कवित्त॥ पावकप्रचंडहूकेपुंजतेअधिकताती वज्रसोंबिचारीकहाता कीसमतूलहै। कोटिककटककीमकुटताकेआगेकहा महा दुखदारुणकेडरहूकोमूलहै। जाकेडरमीचहूनआवैपास लेतऔर सोईरैनिदिनमोहीसरकोशूलहै।भरराहूननाय कितौनियोहाइहाइयह नेहकिधौंबैरीदेवताहीमतिभूल है२ कौनेकहौवधिरे अवधिककरैयालागि येरेबिनकहैं ऐसोकाम करियतुहै। जासोंभजैघूटिबेन डरहूअहूंटियेनू

दूरिधैपतंगलौंपुकारिपरियतुहै। नंदनन्दनभौयौरमोकुल कचंद कीसौंहरिहरिहाइहाइकरैमरियतुहै। कहाकहि कासौंतोसौं बावरे बिरंचि ऐसो पावककोनामकहुंप्रेम धरियतुहै॥

रहेंश्रीसनातनजूनंदगांवपावनपै आवनदिवसतीनि दूधलैकेप्यारिये। सांवरोकिशोरआपपूछेंकिहिओररहौ कहैंचारिभाईपितारोतिहूउचारिये। गयेग्रामबूझिघर हरिपैनपायेकहूं चहूंदिशिहेरिहेरिनयननभरिडारिये। अब कैजेआवैफेरिजाननहिंपावैशीशलालपागभावैनिशिदिन उरधारिये ३५५ कही॰यालीरूपवेनीनिरखिस्वरूपन- यन जानीश्रीसनातनजूकाव्यअनुसारिये। राधासरतीर द्रुमडारगहिमूलेफूले देखतसफलफानिगतिमतिवारिये। आयेयोंअनुजपासफिरेआसपासदेखि भयोअतित्रासगहे पांवउरधारिये। चरितअपारउभैभाईहितसारपगे जगे जगमाहिंमतिमनमेंउचारिये ३५६॥

शीशलालपाग॥ सवैया॥ बरखाउघरैंऋतुसावनकी निकस्यौवहछैलमहाछलडारै। फूलअनारकेरंगरँगीपगि माखिरकीनबनायसंवारै॥ तादिनतेंरँगऔरकहैहोसखी सुनश्यामासुजेझिझकारै। झुकेहगमालखेतबलाल सुभाल पैलालहीपागनिहारै १॥ व्यालीरूपदेखतसफलफानि॥ कवित्त॥ पीतपटनाकतहो दीठिडसिलेतिफिरि फैलिके विरहविष रोमरोमछावतो। हौतोअबऐसोहाल केतेब्रज बासिनको ऐसोकोकागारुड़ कहांतेंढूढ़िलावतो। ईश्वर इहाईजोपैहोतोऐसीनागिनतो कालीकोनथैयाकान्ह काहकोकहावतो। सुरिमुसकानि मंत्रजानतिनराधेजीतो वेनीकिडसनिब्रजजनजीवनपावतो १ वेणीव्यालांगनाफणी २॥

मूल ॥ श्रीहरिबंशगोसाईंभजनकीरीतिसुकृतकोई
जानिहै ॥ श्रीराधाचरणप्रधानहृदयअतिसुदृढ़उपासी।
कुंजकेलिदंपतितहांकीकरतखवासी ॥ सर्वसुमहाप्रसाद
प्रसिद्धताकेअधिकारी। विधिनिषेधनहिंदास अनन्यउत
कटव्रतधारी। व्याससुवनपथअनुसरैसोईभलैपहिंचानि
है।श्रीहरिबंशगुसाईंभजनकीरीतिसुकृतकोईजानिहै ६१॥

हरिबंशगुसाईं ॥ पद ॥ बंदौंराधिकापदपदम। परम
कोमलशुभगशीतल कृपायुतसुखकदम ॥ चरणचिंततअमल
उरशिव जगतसबहीछदम। भालपरअच्छरअनयाससोहै
होतपरसतरदम ॥ कृष्णअलंकृतस्वहस्तपूजन निगमनूपुर
रदम। रसिकजनजीवनसमूली अग्रसरबसुसदम ॥ रीति
सुकृत ॥ कबित्त ॥ जाकेहितहेतधनधामतजिदेतपुनि बन
वासलेतमुनिक्लेशनकरतहैं। तारीलैलगावैंदेहसुधिबिस-
रावैंतऊ उरमेंनआवैतबदुखमेंजरतहैं।बहुतउपायकरैंमरि-
बेतेनाहिंडरैंगिरिहूतेगिरैं नदीमाहिंनपरतहैं। ऐसेनंद
नंदनमहावरसुजाकेदेतताकोव्यासनंदनजूध्यानहीधरतहैं।
सुधानिधौ ॥यस्याकदापिवसनांचलखेलनोत्थधन्यातिधन्य
पवनेनकृतार्थमानी।योगीन्द्रदुर्गमगतिर्मधुसूदनोपितस्या-
नमोस्तुवृषभानुभुवोदिशेपि २ ब्रह्मवैवर्त्ते ॥ राशब्दंकुर्वतेरा
धोददासिभक्तिमुत्तमां। धाशब्दंकुर्वतेपश्चात्याभिश्रवन
लोभित: ३ राधाचरण प्रधान ॥ दोहा ॥ कुंवरिचरण
अंकित धरणि देखतजिहि जिहिठौर। प्रियाचरण रज-
जानिकै लुटत रसिक शिरमौर ५ जिहिउर सरराधा
कमल बसौलसौ बहुभाय। मोहनभौंरारैनिदिनरहै तहां
मड़रायइचौपाई॥ जाकेहियेसरहितजलनाहीं ॥ राधापद
कलतानसाहीं। चरण कमल उदै होइ जौलौं। मोहन
भवँरन आवै तौलौं २ ॥ कबित्त॥ ब्रह्ममें ढूंढ़ै। पुराण में ढूं
ढ़ौं वेदरूचापढ़िचौगुने चाइन। जान्यों नहीं कबहूं वह

कैसोहै कैसे स्वरूपहै कैसे सुभाइन। हेरतहेरत हारपर्यो रसखानि बतायो न लोग लुगाइन। देखौ कहां दुर्यो कुंज कुटीरमें बैठो पलोटत राधाके पाइन २ कहा जानौं कौने बीचन देखो उन प्राणप्यारी तादिन ते मिलिबे के यतन करतहैं। पानीपान भोजन भुलानो भवन सोजनस-निदक बनाइ कनधीरज धरतहैं। दैगई महावर तिहारे तरवानिमांझ ताके करपल्लवकीपौरै पकरतहैं। नयननसों लाइ उरलाइ कहै हाइहाइ बारबार नाइनकेपाइन प-रत हैं ३॥ पद॥ भजमन राधिकाके चरण। सुभग शीतल परम कोमल कमल कैसे बरण। क्वणितनूपुरशब्द उचरत विरहसागरतरण। ललिताहिपरमानंदललिवसिप्रयामजा कीशरण४राधेजूकेचरणपलोटतमोहन। नीलकमलकेदलन लपेटेअरुण कमल दलसोहन। कबहुंकलैलै नयलन लावत अलिधावतज्योंगोहन। जैसीभइछबीलोराधेहोतजगेतेंछो हनभू राधासुधानिधै॥ योब्रह्मरुद्रशुकनारदभीष्ममुख्यैरा लक्षितोनसहसापुरुषस्यतस्य ॥ सद्योवशीकरणचूर्णमनंत शक्तिंतंराधिकाचरणरेणुमनुस्मरामि ३आगमे॥ ब्रह्मानंदर सादनंत गुणतोरम्योरसोवैष्णवस्तस्मात्कोटिगुणोज्ज्वल प्रवमधुरःश्रीगोकुलेन्द्रोरसः॥ तत्रानंतचमत्कृति प्रतिमुहः सद्दलवीनांपरः श्रीराधापदपद्ममेवपरमंसर्वस्यभूतंमम१८ शमे॥ नैमंविरंच्योनभवोनश्रीरप्यंगसंश्रया ॥प्रसादंलेभिरे गोपीयत्तत्प्रापविमुक्तिदात् ८ ब्रह्माडे॥ श्रृणुगुह्यतमंतात नारायणमुखात्श्रुतं॥ सर्वैश्चपूजितादेवीराधावृंदावनेवने२ माधुर्य्यैमधुराराधामहत्वेराधिकागुरुः। सौंदर्यैसुंदरीरा धाराधैवाराध्यतेमया॥प्रधानकोअर्थ॥ कवित्त ॥ भूपतिके संपतिसों भरेहैं विविधि कोशदीनो तहांछापकहो रंक पावै कैसे हैं। बिनारीझ रावरी निहारि सकै राजूकौन पांगुलो सुमेरु चढ़िसकै नहींजैसेहै। राजाहूकी दईएपै मिलैगी प्रधान हाथ नीतिमेंप्रमाण बात कहियेजू ऐसेहैं। राधिका चरण रतिपावै हितअपाहीसों नाभाजी प्रधान

तादिखाईयहऐसेहैं ३ दृढ़उपासीसुधानिधौ॥धर्माद्यर्थचतुष्टयंविजयता किंतद्वृथा वार्त्तया सैकांतेश्वरिभक्तियोगपदवी त्वारोपितामूर्द्धनि याहृंदावनसीम्निकाचनघना श्चर्यंकिशोरीमणि स्तत्कैंकर्यरसामृतादिहपरंचित्तेनमेरोचते ४ करतखवासी॥ तांबूलंकचिदर्पयामिचरणौसंवाहयामिकचितमालाद्यैःपरमंडयेकचिदहोसंवीजयामि कचित्॥कर्पूरादिसुवासितंकचिपुनःसुस्वादुरंसोमृतं यायाम्येवगृहेकेदाखलुभजे श्रीराधिकामाधवौ ५ ॥ कवित्त ॥ जहां नव नागरी रसिक नागर दोऊमै मसौंबिबश ह्वैकरतहांसी। ऊलस ऊलसात लपटातसन सुधिजात परस्परबात रस के विलासी। इतैअनखातउतमानापगपरनिकौहै चरणकी छबि हिये हरि प्रकासी। जहां दृगसैनकी बात समभ्मन हेत हितभरी खरी हरिवंशदासीहै परस्पर बात ॥दोहा॥ बतरस लालच लालकी मुरली लई लुकाइ। सौंहकरै भौंहन हसै देनकहै नटजाइ ७ सर्वसुमहाप्रसाद॥ सवैया॥ काहूलियोजपकाहू लियो तप काहू महाव्रतसाधिकियोहै। काहूलियोगुणकाहूलियो घनकाहू महाउनमाद हियोहै। रंचक चारु चकोरनि दंपति संपति प्रेमपियूष पियोहै। राधिकावल्लभलालकेथारको श्रीहरिवंशप्रसाद लियोहै ८ ॥कवित्त॥आदरयोप्रसादऔनिरादरी जगत रीतिहृदयोकी लिष्ट बात सबहीमन भाईहै। सुहृयनिभाये गौरश्याम रस रीति प्रीति अर्थौ भयोगुणातीतनेम को बताई है। धर्म धर्म बरण्यो चरणोदक प्रसाद सुख सर्वसु सो मान्यो भक्ति बेलिही बढ़ाई है। शुद्ध रस मारग चलायो लोक धर्मनाहिं युगुल उच्छिष्ट की अधिकारता यौं पाई है २ आदिपुराणे ॥ एकादशीसहस्राणि द्वादशीनांशतानिच॥ कर्णिकायांप्रसादस्य कलांनार्हंतिषोडशीं ३ गरुडपुराणे ॥ आकंठभक्षितंनित्यं पुनातिसकलांहसः॥ सर्वरोगोपशमनंपुष्पौचादिवर्द्धनं ४ विधि निषेध॥ स्मरतव्योसततंविष्णु र्विस्मर्त्तव्योनजातुचित्॥ सर्वेविधिनि

वास्युरेतयोरेवकिंकरा: ५ अनुसरै ॥ कवित्त ॥ हितहरि
वंश विन हितकी न रीति जानै कैसे वृषभान नंदनी सों
प्रीति करिये। कौन सों है धर्म जासों कर्मनिको धर्मजाय
सुत वित्त राज पाय कैसे ध्यान धरिये। रसिकनरसनिकी
राह औ कुराहकोन कौन की उपासना सों आशु सिंधु
तरिये। जोपै नंदनंदन को चहै जग बंदनको तोपै व्यास
नंदन को नाम उच्चरिये ६ ॥ दोहा ॥ रसन श्री हरिवंश
भज जो चाहत विश्राम ॥ जिहि रस सबव्रज सुन्दरी
छाड़िदिये सुख धाम १ जयजय श्री हरि वंश सहहंसनि
लीलारति। जयजय श्रीहरिवंश भक्ति में जाकी दृढ़ म-
ति ॥ जयजय श्रीहरि वंश रटन श्री राधा राधा। जय
जय श्री हरिवंश सुमिरि नाशै भव बाधा ॥ व्यास आश
हरिवंशकी सु जयजय श्रीहरिवंश ॥ कवित्त ॥ तूही हरि
वंशी हरि करसों प्रसंशी है राधा गुण गानहेत अधर पै
बसना। नईनई तानन से कानन में पैठि पैठि दंपति के
आनन में तेरी ये बिलसना। प्यारेके हिये लागि प्यारी
के अनुराग उत औरप्रेम दूत रूपह्वै बरसना। हिय में
हित भई चित्त में चोपनई नयननि में नेह नई रस रस
रसना ९ ॥

टीका श्रीहरिवंशीगुसाईं ॥हितजूकीरीतिकोईलाखन
मेंएकजानैंसधाईप्रधानमानैंपाछेकृष्णध्याइये। निकटबि-
कटभावहोतनसुभावऐसोगुणहीकीकृपादृष्टिनेकु क्योंहूं-
पाइये। बिधिऔनिषेधछेदडारेप्राणप्यारेहियेजियेनिज
दासनिशिदिनवहैगाइये। सुखदचरित्ररसरसिक बिचि
त्रनकेजानतप्रसिद्धकहाकहिकेसुनाइये ३५७ आयेघर
त्यागरागबढ्योपियाप्रीतमसों बिप्रबड़भागहरिआज्ञादई
जानिये। तेरीउभैसुताब्याहिदेवोलेबोनाममेरोउनकोजो

बंशसोप्रसंगजगमानिये। ताहीद्वारसेवाबिस्तारनिजभक्तनिकीआगलनकीगतिसोप्रसिद्धपहिचानिये। मानिप्रियबातगृहगयोसुखलह्योतब कह्योकैसेजातयहमनमन आनिये३ ५८राधिकावल्लभलालआज्ञासोरसालदईसेवा सोप्रकाशऔबिलासकुंजधामको। सोइबिस्तारसुखसार दृगरूपपियोहियोरसिकनिजिनलियोपक्षबामको। निशि दिनगानरसमाधुरीकोपानउरअन्तरसिहातएककामश्यामाश्यामको। गुणसोंअनूपकहिकैसेकैस्वरूपकहैंलहैंमन मोहजैसेऔरनहींनामको ३५६॥

मानिप्रियबात ॥ दोहा ॥ टोना टामन सहस विधि करि देखौ सबकोय॥ पीवकाबैसो कीजिये आपुनहीं बस होय २॥ पद ॥ प्रीतमप्रीति सो वस होइ। मंत्र यंत्र अरु टोनाटामन काम न आवत कोइ। जो अपने प्रीतम प्यारे सों रहिये प्राण समोइ। तौ काहेको और ठौर वह जात प्रीतिपति खोइ। हित के गुणमें प्रीतमकोमन मानिकली जैखोइ। सुर बिहसति राखै अपने मन तन सजूष में गोइ। गवौ भार गरब को सजनी अवतो तू जिहि ठौरहिजोइ। उठि चलि मिलो किशोरी पतिसों केलि कल्पतरु वोइ।

मूल ॥ आशधीरउरदोतकररसिकछापहरिदासकी। युगुलनामसोंनेमजपतनितकुंजबिहारी। अवलोकतरहैंकेलिसखीसुखकेअधिकारी। गानकलागंधर्बश्यामश्यामा कोतोषे। उत्तमभोगलगाइमोरमर्कटतिमिपोषे। नृपतिद्वारठाढ़ेरहेदर्शनआशाजासकी। आशधीरउरदोतकररसिकछापहरिदासकी ६२॥

रसिकछाप हरिदासजी रसिकहरिदास॥दोहा॥ श्री

स्वामीहरिदासको यशवैलोक विस्तार। आपपियोप्या-
रोरसिक नवलनिकुंज विहार ॥ कबित्त ॥ रतनसुदेशमई
अवनिनिकुंजधाम अति अभिराम पियप्यारी केलिरासहै।
रमत रमतदोऊ सुमति सुरतिसेज असित कटाक्षनकेहाव
भाव हासहै। भावक प्रवीण सुपुनीत गुणगान रटैं वाते
लोक लोकनमें सुयश सुवासहै। सखीरङ्गनिसपानकरै
रसिक शिरोमणिस्वामी हरिदासहै २ ॥ पद ॥ रसिक
अनन्यनको पंथबांको। जापंथको पंथलेत महामुनिसूदति
नयनगहे नितनाको। जापंथको पछतातहै वेदलहै नहिंभेद
रहैनकजाको। सोपंथ श्रीहरिदासलहेउरसरीतिकीप्रीति
लायनिशाको। निशान बजावत गावत गोबिंद रसिक
अनन्यनको पथबांको ३ ॥ युगुलनामसोंनेम ॥ दोहा ॥
तुलसी जनककुमारिबिन जैसेवतरघुबीर। जैसे चंदारैनि
बिन अवै न अमृतसीर ४ ॥ कबित्त ॥ वहहैशरदचंददिन
में उद्दोत देख्यो ज्योतिकोन लेशलागै घारीको अकारहै।
रैनिरस दैनसांझ चैनको समूहहोत सोतज्योप्रकाशरास
ताको योंबिचारहै। शब्दसुधाकर औपाव निशिवासरहै
तासरनकोजजामें सारनिरधारहै। रसिकप्रवीणह्वचकोर
रजनीशहीसों युगुल स्वरूपगुण नामही अधारहै ५ ॥ सं-
मोहनीतंत्रे ॥ गौरतेजोविनायस्तु श्यामतेजोसमर्चयेत्। जपे
द्वाध्यायतेवापिसभवेत्पातकीशिवे २ ॥सखीसुख ॥ कबित्त ॥
विपिनविहार फूलफूलेहैंअपारलाल लाड़िली निहारमन
चाहैयोंश्रृंगारिये। बीनिबीनिफूल मृदुअंगकीसुसमलैलै
भूषणरचतसीरिनीकेकै सँवारिये। सन्मुखहीमोहनहियेमें
लख्योप्रतिबिंब सोहन सनेह मोहभरी अंकुवारिये। यहै
जानि श्यामा पीठिदई अतिबामा येहोजीती चतुराईयों
भुराइ परवारिये ३ ॥ पद ॥ होड़परीमोरहिं अरुश्याम-
हिं। आवौचलो लधि सबकोगतिलीजै रंगधौंकामहिं।
हमारे तिहारे मध्यस्यराधै औरजाहि बदौ पूछदेख्यो
दर्पण कहाहै यामहिं। श्रीहरिदासके स्वामी श्यामाको

चौपरिकोसो खेलएकगुण द्विगुण त्रिगुण चतुरगुणदीजै री आकेनामहिं ४ पियको नघावन सिखवतीप्यारी। वृन्दावनमें रासरच्योहै सरद रैनिउजियारी। रूपभरी गुणहाथ छरीलिये डरपत कुंजविहारी। व्यासस्वामिनी निरखि नट श्यामहिं रीझदेत करतारी ५ महाराज कौन याको कृत्यकरैहै कहाकहै पूछे इ बेर मोरीकहा तीजिलालजीको अंकमें भरिलयो कहीतासमान को नृत्य करैहैजैसो चौपरि की नरद एकबेर कच्चीहोय फेरिपकै सोईचौपरिको खेलकहिये जय लाड़िली लाल मिले तब प्रियाजीने रीझिकै रसिकछापदई॥ ६॥ कवित्त॥ चहूं ओर बैठेमोर हाविचारो ओरनतें मोलोमनमथ राख्यो मनहिं दुहाईमें। कस्तूरी अरगजाकोतिलक बिराजैभाल भागभरे यौवनकी जगमग जाईमें। अलक चमर घनश्याम बाजे नूपुरादि हसनि अवलोकनि सो बटति बधाईमें। थिरचरऐसोराज देखो देखौसखी आज दुहुनिरजाइपा ई एकही रजाईमें २ सवैया॥ जैसे अनखानि सतरोनिल-पटानि पुनि अति इतरानि मुसकानि रंग बरषे। जैसेकि रजान अति दीनता निदान पान आपने प्रमाण उहिमि सिपानकरषे। झटक रिसान भुवतान त्यों त्यों प्राणनाथ प्राणन सिंहान मान मनलेंही हरषे। ऐसी कुंजकेलि रस बेलि सुखकेलिरही बिना हरिदास दासी ताहिकोन निरषे २ पद॥प्यारीतेरी पुतरी कागरहूते कारी। मानों द्वै भवँर उड़ेहैं बराबर। चंपकीडारबैठे कुंदअलि लागी है नैवचराअर। जब आइ घेरत कटक कामको तबनियहोत दरादर। हरिदासके स्वामी श्यामा कुंजबिहारी दोऊ मिल लरत भराभर। अनन्य नृपति श्रीस्वामी हरिदास। श्रीकुंजविहारीसेये बिनछिन्नकरीकाहूकीआस। सेवा सावधान करिजाने सुघर गावतदिन रसरास। देह विदेह भये जीवतिही बिसरे विश्वबिलास। श्रीवृन्दावन रजतनमन भजतजि लोकवेदकी आस।प्रीति रीति कीनी

सबहिनसोंकिये नखासखवास । यह अपनोमत औरनि-
वाहो जयलगकंठ उसास । सुरपतिभूपति कंचिनकामन
तिनकेभावैघास । अबकेरसिक व्यासहम ऐसे जगतकरत
उपहास ३ ऐसोहहु सदासर्वदा जोरहैबोलत नितभोर
नि। नीकेबादर नीकेघनकचहूंदिसि नीकोवृंदावनआछी
नीकी मेघनिकी घोरनि । आछीनीकी भूमिहरीहरी
आछीनीकीरंगनिकामकीरोरनि। श्रीहरिदासकेस्वामी
श्यामाको मिलगावत अब्योरागमलार किशोरकिशो-
रनि ४ ॥

टीका॥ स्वामीहरिदासरससराशिकोबखानिसकैरसिक
ताछापजेईजायमध्यपाइये। लायोकोऊचोवावाकोअतिम
नभोवावामें डारयोलैपुलिनयहैखोवाहियेआइये । जानि
कैसुजानकहीलैदिखावोलालप्यारे नेसुकुउघारेपटसुगंध
उड़ाइये । पारसपषानकरिजलडरवाइदियो कियांतवशि
ष्यऐसेनानाविधिपाइये ३६० मूल ॥ उत्कर्षतिलकअरु
दामकोभक्तइष्टअतिव्यासको । काहूकेआराध्यमच्छक
च्छशूकरनरहरि । बावनफरसावरनसेतुबंधनशैलकर ।
एकतकंयहरीतिनेमनवधासोंल्याये । सुकलसमोखनसु
वनअच्युतगोत्रीजुलड़ाये ॥ नौगुनतोरनूपुरगुह्योमहत
सभामधिरासको । उत्कर्षतिलकअरुदासकोभक्तइष्टअति
व्यासको ६३ ॥

लायौ कोऊ चोवा ॥ दोहा ॥ कै सुगंध सोंधौ सरस
कैउत्तम कलगान ॥ इनहीके करमीचहै मेरीमेरेजान २
दुखाइदियौ ॥ कुंडलिया ॥ रानीराजसिंगारपटधावीको
धुवरोट। धावीकोधुबरोट कियादुर्लभमानुषतन । सुलभ
विषैसबजोर बह्म आधीनजगतजन ॥ कौड़ीकामिनिकुटुम्ब

तिनहिंहितहीराहारयौ । ज्योंवनिजारोबैल यक्यौतब लगमेंडारयौ । नेगनलागयौरामके अगरवड़ोथहखोट। रानीराजसिंगारपट धोबीकोधुबरोट॥ गाडरआनीऊन को बांधीचरैकपास । बांधीचरैकपास बिमुखहरिलोंन हरामी। प्रभुप्रतापकीदेह कुछित सुखसोईकामी॥ जठर यातनाअधिक भजनबदिबाहरआया । पवनलगतसंसार ऊतभीनाथभुलायो।याकरीचौरहाजिरकुंवरअगरदूतेपर आस। गाडरआनीऊनकोबांधीचरैकपास३॥ उत्कर्षतिल कअरु॥पद॥ ऐसेभक्तहैदेवादेऊ। भक्तनिजानौभक्तनिमानौ निजजनमोजिवतेऊ। मातपिताभक्तअनभाईयाभक्तदमादस जनवसनेऊ। सुत संपति परमेश्वरमेरे हरिजनजातिजनेऊ भवसागरको बेरोभक्तहै हरिखेवटकुरखेऊ। बूड़तबहुतउ बारभक्तनलियेउबारिजरेऊ। तिनकीमहिमा व्यासकपि- लकहि हारे सबपरवेऊ। व्यासदासकी प्राणजिवन धन हरिपरिवारबड़ेऊ। रासकेलि॥ कबित्त॥ शरदउज्यारी फुलवारीमें विहारी प्यारी श्रीगोविंद तैसीयाणी मंडली सखीनकी। प्रेमको प्रकाश रासरसको विलासत।में राग रागनीहै सुरसात ग्राम तीनकी। उरपति रपकीसंगीतनि को भेदभाव नीको धुनिनूपुर किंकिणी चुरीनको। लीन भईमुरली मृदंगकी नर्त्तनगति बीनकीबजनि औबजावन प्रबीनको २॥ उचकिउचकि पगधरत धरणिपर झिझकि झिझकि करकारन उचतहैं। ललका ललक गतिलेत सुवह पुनि झपक झपक हगपलन सुचतहैं। ठुमुक ठुमुक पगबजत घुंघरूधुनि मधुर मधुर सुरतानन खचत हैं। मुलक मुलक मनहरत सकलजन आजराज ब्रजराज रासमेंनचतहैं ३॥ ऐसेरासमें जनेऊ तौरिके श्रीप्रियाजूको नूपुर गुह्यो तब यहपद गायो॥पद॥ रसिकअनन्य हमारीजाति। कुलदेवी राधाबरसानों खेरो ब्रजबासिन की पांति। गोत गोपाल जनेऊमाला शिखा शिखंडी हरि मंदिर भाल। हरिगुण गानवेदधुनि सुनियत मंजुपखावज कुशकरताल। शाखा

यमुना हरिलीला षटकर्म प्रसाद प्राणधनरास। सेवा विधि निषेध सतसंमतग्रसत सदा वृन्दावनवास। स्मृतिभागवत कृष्णव्याख्यान गायत्री जापवंशीकृष्णि निजमान कल्पतरु व्यास अग्रीमनदेत सराय॥

टीका॥ आयेगृहत्यागिवृन्दावनअनुरागकरिगयोहियोपागिहोइन्यारोतासोंखीजिये। राजालैनआयोऐपैजाइबोनभायोश्रीकिशोरअरुझायोमनसेवामतिभीजिये। चीराजरकसीशीशचिकनोखिसिलजाइ लेहुजूबँधायनहींआपबांधिलीजिये। गयेउठिकुंजसुधिआईसुखपुंजआयेदेख्योबंध्योमंजुकहिकैसेमोपैरीझिये ३६१ संतसुखदेनबैठेसंगहीप्रसादलेतपरोसततियासबभांतिनप्रबीनहैं। दूधबरताइलैमलाईछिटकाईनिज खिजउठेजानिपतिपोखतनवीनहैं। सेवासोंछुड़ायदईअतिअनसनिभईगईभूखबीतेदिनतीनितनक्षीनहैं। सबसमुझावैंतबदंडकोमनावैंअंगआभरणबेचिसाधजैबैयोंअधीनहैं ३६२ सुताकोविवाहभयोबड़उत्साहकियोनानायकबानसबनीकैबनिआयेहैं। भक्तनिकीसुधिकरीखरीअरबरीमतिभावनाकरतभोगसुखदलगायेहैं। आइगयेसाधुसोबुलाइकहीपावोजाइपोटनिबँधायचाइकुंजनपठायेहैं। बंशीपहराईद्विजभक्तिलैदृढ़ाईसंतसंपुटमेंचिरीयादेहितसोबसायेहैं ३६३॥

आयेवृन्दाबन॥ सवैया॥ भूमिहरी द्रुमझूमिरहे लखिठौररहे दृगठौर सुहाते। न्यारसेलोगरँगीलतहांके मिलेहँसिप्रेम हियेसरसाते। नास न आवै औ आवै गरोभरिनामलियो नहिंजातहै याते। सांवरी एक नदीपैवसै सोकहौकिमि कोउ या गांवकी बाते २॥ खोजिये॥पद॥ सु-

धारोहरि मेरोपरलोक । वृन्दावनमें कोनोदीनो हरि अपनो निजओक ।.मातासों हितकियो हरिजानि आपनेतोक । चरणधूरि मेरेशिरमेली औरसबनिदै रोक। जैनर राकस कूकर गदहा ऊंट वृषभ गजलोक। वृन्दावन तजिजाइकर भटकत तासिर पनहीं ठोक २ ॥ जाकूजानभावै ॥ वृन्दावनकेरूप हमारे मात पिता सुतबंध । गुरुगोविंद साधुगति मतिफल अरु फूलनको गंध । इन्हैपीठिदै अनत दीठिकरि सोअंधनमें अंध । व्यासइन्हैंछोड़ैकछुड़ावैताको परियो कंध ३ ॥ दोहा ॥ वृन्दावनको छांड़िकै औरतीर्थ कोजात । छांड़ि विमल चिंतामणी कौड़ीको ललचात ४॥ राधाबल्लभ कारणै सहीजगत उपहास । वृन्दावनके श्वपचकी जूठनिखाई व्यास १ ॥ वृन्दावन छांड़ियेनहीं ६ ॥ खिजउठे पद ॥ तिया जानहोइ हरिदासी । सोदासीगणिकासम जानो दुष्टराड़ मसवासी । निशिदिन अपनो अंजन मंजन करत विषयकी रासी । परमारथ कबहूं नहिं जाने आनिपरै यमफांसी । कहाभयो स्वरूप गुणसुंदर नाहिंन श्याम उपासी । ताकेसंग न पतिगति जैहै याते भली उदासी । साकतनारि जुबरमें राखै निश्चय नरक निवासी । व्यासदास यह संगति तजिये मिटैजगतकीहांसी २ ॥ अगआभरण बेंचि बीसहजार रुपैयाके बेंचिकै वैष्णव जिमाये तब तिया रसोई मेंलईमैंपुत्रेतमख पहिराइ कैसेवामें आवै २ ॥ पद ॥ विनतीसुनिये वैष्णवदासी । या शरीरमें बसत निरंतर नरक बात पितखांसी । ताहिसुलाइहरिहि यों गहियेज्यैसैंसंग सुखबासी । बढ़ै सुहाग ताहिमनदीजे धोके बराक विश्वासी । ताहिछांड़ि हित करै औरसों गरेपरै यमफांसी । दीपकहाथ परै कूवां में जगतकरै सबहांसी । सर्वोपरि राधापतिसों रति करत अनन्य बिलासी । तिनकीपदरज शरण व्यासको गतिवृन्दावनबासी ३ ॥ पाटन ॥ पद ॥ हरिभक्तनतेसबधीप्यारे । आयेभक्त दूरिबैठारी फोरतकानहमारे । दूरदेशतेसबधी

आये तेबरमें बैठारे । उत्तम पत्रिका सौंरसपेटी भोजन बहुत सँवारे । भक्तनको देखन धनाको इनको सिखवट न्यारे । व्यासदास ऐसे विमुखनको यमसदा टेरतहारे । तापर दृष्टांत उंगलीसों राहबताई २ ॥ पोटवँधाइके खिठाई साधुनकोदई तब पुचखिके यहकहा करतहौ २ ॥

शरदउजियारीरासरचेउपियप्यारीतामेंरंगबढ़ोभारी कैसेकहिकैसुनाइये । प्रियाश्रतिगतिलईबिजुरीसीकौंधि गईचकचौंधीभईछबिमंडलमेंछाइये । नूपुरसोटूटिछूटिप र्‌योश्ररबर्‌योमनतोरिकैजनेउकर्‌योवाहीभांतिभाइये । स कलसमाजमेंयोंकहेउश्राजकामश्रायो ढोयोहौजनमताको वातजियश्राइये ३६४ गायोभक्तइष्टश्रतिसुनिकैमहंतए कलेनकोपरीक्षानायोसंतसंगभीरहैं । भूखकोजतावैत्यागी व्यासकोसुनावैसुनि कहीभोगश्रावैइहांमानैहरिधीरहैं । तबनप्रमाणकरीशंकधरीलैप्रमाद श्रासदोइचारिउठमानों भईपीरहैं।पातरिसिमेटिलईसतकरिमोकोदईपावोतुमश्रौर पावलियेदृगनीरहैं ३६५ ॥

तोरिकै जनेऊ ॥ पद ॥ इतनोहै सब कुटुंबहमारो । सेन धनाभाश्रा श्ररुपीपा श्ररुकबीर रैदास चमारो । रूप सनातनको सेवक गंगल भट्ट सुढारो । सूरदास परमानंद मेहा मीराभक्त बिचारो । ब्राह्मण राजपूज्य कुलउत्तम कारत जातिकोगारो । श्रादिश्रंत भक्तनको सर्वस राधा बल्लभ प्यारो । इहिपंथचलत श्याम श्यामाके व्यासकि शोरी भावैतारो ३ ॥

भयेसुततीनबाटनिपटनवीनकियेएकश्रोरसेवाएकश्रोर धनधर्‌योहै । तीसरीजुठौरश्यामबंदनीश्ररुछापधरीकरी

ऐसीरीतिदेखिबड़ोशोचपर्योहै। एकनेरुपैयालयेएकनेकिशोरजूको श्रीकिशोरदासभालतिलकलैकर्योहै। छोयेदियेस्वामीहरिदासनिशिराशिकियोवहीराशिललितादिगायोमनहर्योहै ३६६ ॥

श्रीतकरीपद॥ जूठनजेनभगतकीखात। तिनकेबदनसदननरकनके जेहरिजनन घिनात। कामबिबशकामिनकेपीवतअधरनलारचुचात। भोजनपरमाखीभूततहैं जिहिजेंवत नाहिंसकात। बाजदारकीपांतिव्याहमें जेंवतबिप्रबरात। भेंटत सुतहिंरेटमुखलागत सुखपावतनड़तात। अपरसहैं भक्तनिछूछुतिह। तेलसचेलअन्हात। भक्तनपीछेसबडोलत हैं हरिगंगाअकुलात। साधुचरणरजमांझव्याससेकोटिक पतितसमात२ आदिपुराणे॥ मद्भक्तायत्रगच्छंतितत्रगच्छामिपार्थिव।भक्तानामनुगच्छंतिमुक्तय:श्रुतिभि:सह २ भागीरथकेपीछेडोलीहीहैं आपजगमें तीर्थहीहैं ३ वहीरीति ॥पद॥लालललकता यौवनसंता खेलतरासअनंता। यमुनातीरभीरयुवतिनकीबांहजोरि मंडलीबनाईमध्यराधिकाकंता॥ एकनि के कर कंजकपोल पर रंभनि देतहसंता। किशोर दासके स्वामी कुंजबिहारी बिहारिन के संग विहरत केलि करंता ४॥

मूल॥श्रीरूपसनातनभक्तिजलश्रीजीवगुसाईंसरगँभीर। बेलाभजन सुखककषायनकबहूंलागी।वृन्दाबनदृढ़बासयुगुलचरणनिअनुरागी ॥ पोथीलेखनपानअघटअक्षरचितदीनो। सदग्रंथनकोसारसबैहस्तामलकीनो॥ संदेहग्रंथछेदनसमर्थरसराशिउपासकपरमधीर। श्रीरूपसनातनभक्तिजल श्रीजीवगुसांईसरगँभीर ६४ टीका॥कियेनानाग्रन्थहदैग्रन्थदढ़छेदडारेंवनयमुनामेंआवैचहूंओरतें

कहीदाससाधुसेवाकीजेकहैंपात्रजान करौंनीकेकरीवो ल्यौकटिकोपजोरते। तबसमझायौ संतगौरवबढ़ायो यह सबकोसिखायो बोलैमीठेनिशिभोरते। चरितअ-पारभावभक्तिकोनपारावार कियोहूंवैरागसारकहैंकौन छोरते ३६७ ॥

भक्तजलपद॥जयजयमेरेप्राणसनातनरूप। अगतनकीगति दोऊभैयायोगयज्ञकेजूप। श्रीवृंदावनकीसहजमाधुरीप्रेम सुधाकेकूप। करुणासिंधुअनाथबंधुजय भक्तसभाकेभूप। भक्त भागवतमतआचारज चतुरकुलचतुरभूप। भुवनचतुरदश बिदितबिमलयश रसनाकेरसतूप। चरणकमलकोमलरज छापा मेटतकलरजधूप। व्यास उपासक सदाउपासी श्रीराधाचरणअनूप॥ बोले कबित्त॥ सीखेव्याकरणकोष काव्यऔपुराणसीखे सीखेवेदपढ़िबो जोधर्मनकोमूरिहै। न्यायवेदान्त आदि सीखे षटशास्त्रबरपंडिताई चतुराई जानैभरिपूरिहै। सीखेघटपटसांपजेवरीबखानिबेको मा-याभ्रमजाकीअतिजीवनिकीमूरिहै। भक्तनकीसभाबीच प्रेमरस सींचिसींचि बोलिबो न सीख्यो सबसीखिबे मैं धूरि है २॥

प्रसंगमजरंपासमात्मनःकवयोविदुः। सएवसाधुसु-कृतंमोक्षद्वारमपावृतं १ मूल॥ श्रीवृन्दाबनकीमाधुरीइन मिलआस्वादनकियो। सर्बसुराधारवनभट्टगोपालउजा-गर। हृषीकेशभगवानबिपुलबिट्ठलरससागर॥ थाने श्वरीजगन्नाथलोकनाथमहामुनिमधुश्रीरंग। कृष्णदास पंडितउभैअधिकारीहरिअंग॥ घमंडीयुगलकिशोरभृगर्भ जीवदृढ़ब्रतलियो। श्रीवृंदाबनकीमाधुरी इनमिलिआ-स्वादनकियो ६५॥

इनमिल विषैरसखादीको मिलजोकहा राजाकोदूस रोनकहै अरु दत्तात्रेयहूनेकारी कन्याकी छूरी दूसरीकु दूरिकरीपैकैसेमिलै दत्तात्रेयजी ने ब्रह्मज्ञानीन को संग निषेधकियो उपासकनकोनहीं ब्रह्मज्ञानींविधवातुल्य हैं उपासकसुहागवती तिनको संगचूरीचाहिये जैसेचूरीको अरुपतिकोप्यारोलगै ऐसे संगरूपचूरी को अरु कथा पतिको प्यारोलगैयातेब्रह्मज्ञानीकेछ्लपतिनहींतिनही कोसंगचूरीत्यागहैयातेइन्हेंनेनिजिके रूपमाधुरीकोस्वाद लिये ॥ पद ॥ जोकोउवृन्दावनरसचाखैं। खारीलगतखांड़ अरुखारकग्यानदेमकोदाखैं । प्राणसमानतजैनहिंसीवा लोभदिखावतलाखैं। भूखेरहिकै पावैभाजी निरखिरहै तरुशाखैं । परे रहैं कुंजनिके कोने कटुकराबिकाभाखैं। जनगोविन्द ब्रजवीरकृपाते पटरानी जरावैं २ क्योंकि राधेको वृन्दावन वेदनमें गायोहै ॥ सवैया ॥ पौरिकेपौरियाद्वारकेद्वारिया पाहरुवा घरके घनश्यामहैं । दासी केदाससखीनके सेवक पारपरोसिनके धनधामहैं । श्रीधर कान्हभरेहित भामरमानभरी सतभामासी बामहैं । एक वड़ीबिग्रामथली वृषभानललीकी गलीके गुलामहैं २॥

टीकागोपालभट्टकी॥ श्रीगोपालभट्टजूकेहियेवेरसाल बसेलसेयोंप्रगटराधारवनस्वरूपहैं। नानाभोगरागकरैं अतिअनुरागपगे जगेजगमाहिंहितकौतुकअनूपहैं। वृंदा बनमाधुरीअगाधकोसवादलियो जियोजिनपायोशीतभ येरसरूपहैं। गुणहीकोलेतजीव औगुणकोत्यागदेत करु णानिकेतधर्मसेतुभक्तभूपहैं ३६८ ॥ टीका अलिभगवान की॥ अलिभगवानरामसेवासावधानमन वृन्दावनआइके कुंआरैरीतिभईहै। देखेरासमंडलमेंबिहरतरसरास बाढ़ी छबिध्यासदृगसुधिबुधिगईहै। नामधरिरासऔविहारी

सेवाप्यारीलगी खगीहियमांझगुरुसुनीबातनईहै । बि-
पिनपधारेआपजाइपगधारेशीश ईशमरेतुमसुखपायोक-
हिदईहै ३६९ ॥

वाटीकवि पद ॥ रहौकोउकाहूमनहिंदिये । मेरेप्राण
नाथश्रीश्यामा सपथकरौतृणछिये । जेअवतारकदंबभजतहैं
धरिदृढ़ब्रतजुहिये । तेऊउमँगितजतमर्यादा बनबिहार
रसपिये । खोयेरतनफिरतजेघरघर कौनकाजअपजिये ।
जयश्रीहितहरिवंशअनंतसचनाहींबिनधारततातहिलिये २
आनिदेशकीगैलहरिति श्रीकृष्णदौरिमैबातीलूटलैहैं जो
रावरी । सोईअखिभगवानको लूटिलियो जोजोरावर
रामहोतौबचायलेतो श्रीशुकदेवजीनेब्रह्मनेटकोलूटिलियो
दोहा ॥ अनव्याहीहोसेकरैंव्याहीलेतउसास । गौनेकी
मौबेरही देखराजहुहास ॥

टीकाबिट्ठलबिपुलकी ॥ स्वामीहरिदासजूकेदासनाम
बिट्ठलहैं गुरुकेबियोगदाहउपज्योअपारहै । रासकेसमाज
मेंबिराजसबभक्तराजबोलिकैपठायेआयेआज्ञाबड़ोभारहै।
युगुलस्वरूपअवलोकनानाभेदनृत्य गानतानकानसुनिर
हीनसँभारहै।मिलिगयेवाहीठौरपायोभावतनऔरकहैंरस
सागरसोताकोयोंबिचारहै ३७० टीकालोकनाथकी ॥ म
हाप्रभुश्रीकृष्णचैतन्यजूकेपारषदलोकनाथनामअभिराम
सबरीतिहै । राधाकृष्णलीलासौंरंगीनमैंनवीनमनजल
मीनजैसेतैसेनिशिदिनप्रीतिहै ।भागवतगानरसखानसो
तौप्राणतुल्यअतिसुखमानिकहैगावैजोईनीतिहै । रसिक
प्रबीणमनचलतचरणलागि कृपाकैजताइदईजैसीनेहरी
तिहै ३७१ ॥ टीका मधुगुसाईंकी ॥ श्रीमधुगुसाईंआये

वृन्दावनचाहबढ़ीदेखेइननयननसोंकैसोधौंस्वरूपहै । ढूंढ़तफिरतबनबनकुंजलताद्रुममिटीभूखप्यासनहींजानेछांहधूपहै । यमुनाचढ़तिकाटिकरतकरारेजहांबंशीबटतदीठिपरेवेअनूपहै । अंकभरिलियोदौरिअजहूंलैशिरमौरचहैभागभालसाथगोपीनाथरूपहै ३७२॥

पायोभावतन ॥ पद ॥ प्यारीनेकु निरखौ नवरँगलालै। तुवपद पंकजतल रजबंदत तिलक बनावतभालै । तेरेवरण बसन आभूषण उरधरि चंपकमालै। वीठल बिपुल बिनोद करोबल भुजभरि बाहुबिशालै ॥ जलमीनजैसे॥ दोहा॥ मीनमारि जलधोइये खायेअधिक पियास। बलिहारी वा चित्तकी मुये मित्तकीआस २॥ परसा हरिसों प्रीतिकरि मछरीकीसी न्याइ। जीवत मरतनछांड़ही जलबिनरह्यो न जाइ ३ ॥

गुसाईंश्रीसनातनजूमदनमोहनरूपमाथेपधरायकहीसेवानीकेकीजिये । जानोकृष्णदासब्रह्मचारीअधिकारीभयेभटश्रीनारायणजूशिष्यकियेरीझिये । करिकैशृङ्गाररचारुआपहीनिहारिरहेगहेनहींचेतभावमांझमतिभीजिये ।कहांलौंबखानकरौंरागभोगरीतिभांतिअबलोंबिराजमान देखिदेखिजीजिये ३७३ श्रीगोबिंदचंदरूपराशिसुखराशिदासकृष्णदासपंडितयेदूसरेयोंजानिले । सेवाअनुरागअंगअंगमतिपागिरहीपागिरहीमतिजेपैतापैयाहिमानिलै। प्रीतिहरिदासनसोंविविधिप्रसाददेतहियेल्याइलेतदेखपद्धतिप्रमानले। सहजकीरीतिमेंप्रतीतिसोंबिनीतकरैटेरेवाहीओरमनअनुभवआनिले ३७४ ॥

मतिपागिरही ॥ कबित्त॥ गोबिंदरंगीले रंगरंगनि शृं-
गारकियो लिये कारछरी हिये सबको बिलोयेहैं। इतरात
जातघरे पगधरचौपर यौवन उसंगआप अंगअंग भोयेहैं।
चितवनिमें न सनी सैननसों बातैंकरै हरैमनलाड़ भरेनेह
सोंसमोयेहैं। ऐसोकबिकौन सकै नयनन स्वरूपकहिलाल
लाल कोयननमें केतैघर खोयेहैं २ प्रसाददेत ॥ कुंडलिया ॥
राइनि माइनि जासको खँड़ाबरा दैहाथ । खँड़ाबरादै
हाथ देतप्रभुको तुलसीदल । कैदोनाभरि फूलकै करुवा
भरिकैजल। भोजन गटकत आप रजोगुण दैपुनि हरषै।
यावाहूयल मांझ दयानिधिको लै बरषै। भवभोरै सेवा
खडग लैकाटयो निजमाथ। राइनि माइनि जासको खँड़ा
बरा दैहाथ४। ५ अलोनी रोटी गलेमें अटकै कही कहा
गीता विस्तार करोगे ॥

गुसाईंभूगर्भवृन्दाबनदृढ़बासकियो लियोसुखबैठिकुं
जगोबिंदअनूपहैं । बड़ेईबिरक्तअनुरक्तरूपमाधुरीमेंताही
कोसवादलेतमिलेभक्तभूपहैं। मानसीबिचारहीअहारसो
निहाररहेगहेमनवृत्यवेईयुगुलस्वरूपहैं। बुद्धिकेप्रमाणउ
नमानिमेंबखानकियो भर्योबहुरंगजाहिजाने रसरूपहैं
३७५ मूल ॥ श्रीरसिकमुरारिउदारअतिमत्तगज हिउप
देशदियो । तनमनधनपरिवारसहितसेवतसंतनकहि ।
दिब्यभोगआरतीअधिकहरिहूतेहियमहि । श्रीवृन्दाबन
चंदश्यामश्यामारँगभीने । मगनसुप्रेमपियूषपयधपरचेव
हुदीने। श्रीहरिप्रियश्यामानंदवरभजनभूमिउद्धारकियो।
श्रीरसिकमुरारिउदारअतिमत्तगजहिउपदेशदियो ६५॥
टीका ॥ श्रीरसिकमुरारिसाधुसेवाबिस्तारकियोपावैकौन
पाररीतिभांतिकछुन्यारियै। संतचरणामृतकेमाठगृहभरे

रहेताहिकोश्यामपूजाकरिउरधारिये। आवेंहरिदासति
न्हेंदेतसुखराशिजीभएकनप्रकाशसकैथकैसोबिचारिये।
करेंगुरुउत्सवलैदिनमानसबैकोईद्वादशदिवसजनघटाल
गीप्यारिये ३७६ संतचरणाम्रतकोलावोजायनीकीभां
तिजीकीभांतिजानिबेकोदासलपटायोहै। आनिकैबखान
कियोलियोसबसाधुनकोपानकरिबोलेसोसवादनहींआ
योहै। जितेसभाजनकहीचाखौदेवौमनकोऊमहिमानजा
नेकनजानीछेड़िआयोहै। पूछीकह्योकोटीएकरह्योआनौला
योपियोदियोसुखपासनयननीरढरकायोहै ३७७॥

आनौ॥ चैतन्यचरितामृते॥ हष्टैःस्वभावजनितैर्वपुषस्त्व
दोषैर्नप्राकृतत्वमिहभक्तजनस्यपश्येत्। गङ्गाम्भसांनखलुबुद्बु
फेणपंकैर्ब्रह्मद्रवत्वमुपगच्छतिनारधर्म्मैः १॥ सौप्याईनएक
तिसाई जैसेप्रीतिकरि पाछिग्रामसोंपूजे॥

नृपतिसमाजमेंबिराजभक्तराजकहैं गहैंवविवेककोऊ
कहनप्रभावहै। तहांएकठौरसाधूभोजनकरतरौरदेवोदू
जीसौंटासंगकैसेआवेभावहै। पातरिउठाइश्रीगुसाईंपर
डारिदईदईगारिसुनीआपबोलेदेखौदावहै। सीतासांबिमु
खमेंतौआनिमुखमध्यदियोकियोदासदूरिसेतसेवामेंनचा
वहै ३७८ बागमेंसमाजसंतआपचलेदेखिबेकोदेखतदुरा
योजनहूंकोशोचपर्योहै। बड़ोअपराधमानिसाधूसनमान
चाहैंघूमितनबैठिकहीदेख्योकहूंधर्योहै। जाइकैसुनाईबा
सकाहूकेतमाखूपास सुनिकैहुलासबढ़ेउआगेआनिकर्यो
है। झूठहीउसासभरिसांचेप्रेमपाइलियेकियेमनभायेऐसे
शंकादुखहर्योहै ३७९ उपजतअन्नगांवआवैसाधुसेवा

ठांवनयोन्टपदुष्टआय कावाकावकियोहै।ग्रामसोंजवतकरौ करेउलैबिचारआपश्यामानंदजूसुरारिपत्रलिखिदियोहै। जाहीभांतिहोहिताहीभांतिउठिआवैयहां आयेहाथबांधि करिआचेहूंनलियोहै। पाछेसाष्टांगकरीकरिलैनिवेदनसो भोजनमेंकहीचलेआयेभीज्योहियोहै ३८० ॥

प्रीतसोंबिमुख ॥ दोहा ॥ जानिअजानी ह्वैरहै तातलेइ जोजानि। अगिला होवै अगनसम आपुनहोवै पानि २ ॥ कियोदास दूरि रसोई पावोले महाराज लाज कैसे रहै सोंटाको मांगेहै सोंटाक्तु खाइकै बावरे मनुष्य खाइसेर सोंटाखाइचारिसेर कैसेमहाराज जबसोंटासों भांगघोटि कैपीवैं तब चारिपनवारे उड़ाइजाइ सोंटाहीतौ खाइहै दासको दूरिकरिदियो ३ प्रोचपत्रो संतके लक्षणहैं कुछ न क्रियाकरै तौ लाजकरै नाहींकाहेकोकरे३।४।५।६॥

आज्ञापाइअचयोलैदैपठायेवाहीठौर दुष्टशिरमौरज हांतहांआपआयेहैं। मिलेमुत्सद्दीशिष्यआइकैसुनाईबा- तजावोउठिप्रातयहनीचजैसेगायेहैं। हमहींपठावेंकाम करिसमझावेंसबमनमेंनआवैजानिनेहडरपायेहैं। चिंता जनिकरौहियेधरौनिहचिंतताई भूपसुधिआईदिनाती- नकहांछायेहैं ३८१ सुनिआयेगुरुवरकलआवोमेरेघर देखौकरामातिबातपहलैसुनाईहै। कह्यौआनिअभूजावो चलौउनमानदेखें चलेसुखमानिआयोहाथीधूमछाईहै। छोड़िकेकहारभागयेननिहारिसके आपरससारबानीबो- लीजैसीगाईहै। बोलौहरिकृष्णकृष्णछाड़ौगजतमतन सनिगयोहियेभावदेहसोनवाईहै ३८२ बहैदृगनीरदेखि होइगयोअधीरआपकृपाकरिखीरकियोदियोभक्तभावहै।

कानमेंसुनायोनामनामदेगोपालदास मालापहिरायगरे प्रगट्योप्रभावहै। दुष्टशिरमौरभूपलखिवहिठौरआयोपाइलपटाइभयोहियेअतिचावहै। निपटअधीनग्रामकेतिकनवीनदियेलियेकरजोरिमेरोफल्यौभागदावहै ३८३॥

आज्ञा पाइ अचयो लै गुरुमें भाव भक्ति की नीम है जैसे हवेली की नीम होइ तौ सतखण्डौ उठाइ लई नहींतौ गिरिपरै ऐसेही गुरु में भक्ति होइतौ दशधाभक्ति दशखण्डी सिद्ध होइ उनमान देखे हकीम प्रबल रोग सुनतही न भाजै रोग को उनमान देखिये बोले हरेकृष्ण॥ भागवते॥ प्रविष्टाःकर्णरन्ध्रेणस्वानांभावसरोरुहे।धुनोतिशमलंकृष्णः सलिलस्ययथासरित्॥ प्रभाव है ॥ स्वणांस्वकथाकृष्णः पुण्यश्रवणकीर्त्तनः॥ हृद्यंतस्योह्यभद्राणिविधुनोतिसुहृत्सता ३ ॥

भयोगजराजभक्तराजसाधुसेवासाजसंतनसमाजदेखकरतप्रणामहै। आनिडारैगौनद्वनिजारिनिकीवारिनिसोंआयेईपुकारनवेजहांगुरुधामहै। आवतमहोछेमध्यपावतप्रसादशीतबोलेआपहाथीसोंयोंनिन्दबहुकामहै। छोड़िदईरीतितबभक्तनिसोंप्रीतिबढ़ी संगहीसमूहफिरैफैलिगयोनामहै३८४ संतसातपांचसातसंगजितजाततितलोकउठिधावैंलावैंसिधैवहुभीरहै। चहुंओरपरीहईसुवासुनिचाहभई हाथपैनआवतसोआनैकोऊधीरहै। साधुएकगयोगहिलयोभेषदासतन मनमेंप्रसादनेमपीवैनहींनीरहै। वीतेदिनतीनिचारिजललैपिवावैधारिगंगाजूनिहारिमध्यतज्योयोंशरीरहै ३८५ मूल॥भवप्रबाहनिस्तारहितअवलंबनयेजनभये।सोझासींवांअधारधीरहरिनामत्रिलो

चन। आशाधरदेवराजनीरसधनादुखमोचन। काशीश्वर अवधूतकृष्णकिंकरकटहरियो। सोभूउदाराममनामडूंगर व्रतधरियो। पद्मपदारथरामदासविमलानंदअमृतसृये। भवप्रवाहनिस्तारहितअवलम्बनयेजनभये ६६॥

निंदबहुकामहै॥ वैष्णवोंबंधुसत्कृत्य २ महाराज बंधुन के लिये चोरी करै ठगाई करै आप बोले धन न होइतौ करै ताते यह काम छोड़िदे भेटसुन्नी आदूरहैगी बहु भीरहै पांचसौ सातसै वैष्णवनकी भीररहै संग जहां चलै गोपाल दास हाथी सीधे चलै आवै और याते भीर बहुत रहै बैष्णवनकी गूदरी तौ लाद लेहै और हारौनीरो साधुहु चढ़िलेहि ऐसो महंत कहा पाइये और महंत तौ बैष्णवन कांधे लादे यह वैष्णवन को सब बोझलैचलै २॥

टीका॥सदनाकसाईताकीनीकीकसआईजैसेवारहबानीसोनेकीकसौटीकसआईहै। जीवकोनबधकरैऐपैकुलाचारढरैबेचैमासलाइप्रीतिहरिसोंलगाईहै। गंडकीकोसुत बिनजानेतासोंतौल्यौकरैभरैदृगसाधुआनिपूजेपैनभाईहै। कहीनिशिस्वपनमेंवाहीठौरमोकोदेवो सुनौ गुणगानरीझैहियेकीसचाईहै ३८६ लैकेआयोसाधुमेंतौबड़ोअपराध कियोकियोअभिषेकसेवाकरौपैनभाईहै। येतौप्रभुरीझेतौ पैजोईचाहौसोईकरौगरीभरिआयोसुनिमतिबिसराईहै। वेईहरिउरधारि डारिदियोकुलाचारि चलेजगन्नाथदेव चाहउपजाईहै। मिल्योएकसंगसंगजातवेसुज्ञातसबतब आपदूरिदूरिरहेजानिपाईहै ३८७॥

सुनौगुनगान॥ पद॥ मैंतो अतिही दुखित मुरार।

पांच ग्रह गीलत हैं मोको गज ज्यों करौ उधार॥ नाम गरीब निवाजउनासों करन बिषै हठतार। सदना को प्रभु तारौ ऐसे बहत है कारी धार २॥ कबित्त॥ वह पद भाषा को है एक करि गावत हौ हम तुम्हैं गावत हैं सदा वेदबाणी सों। मास भरें हाथनि सों श्याई तुम्हैं छूवत हौ हमै कौउ नास बीते तुम्हरी कहानीसों॥ लक्ष्मीनारायण जू बड़ रिझवार तुम्हारी क्षनिकसत है तुम्हारी रजधानीसों। हम निरमल गंगा जलसों न्हवावैं नित तुम रीझे सदना के बदना के पानीसों २ डारिदियो॥ पद॥ तजौ मन हरि बिमुखनको संग। तिनके संग कुमति उपजत है परत भजन में भंग॥ कागै कहा करपूर चुनावै मरकट भूषण अंग। खरको कहा अरगजालेपै श्वानअन्हाये गंग॥ काह भयो पयपान कराये बिष नहिं तजत भुवंग। सूरदास कारी कामरि पर चढ़त न दूजोरंग ३।४।५॥

आयोमगग्रामभिक्षालेनइकठामगयोनयोरूपदेखको ऊतियारीझपरीहै। बैठोयाहीठौरकरौभोजननिहोरकह्यो रह्यौनिशिसोइआईमेरीमतिहरीहै। लेवोमोकोसंगगरोका टौतोनहोइरंगबूझीऔरकाटीपतिश्रीवपैनडरीहै। कही अबपागौमोसोंनातैकौनतोसोंमोसों शोरकरिउठीइनमाशैभीरकरीहै ३८८ हाकिमपकरिपूछैकहैंहँसिमारोहम डारयोशोचभारीकहीहाथकाटिडारिये। कह्योकरचलेहरिंगमांझझिलेमानी जानीकछूचूकमेरीयहैउरधारिये। जगन्नाथदेवआगेपालकीपठाईलेन सदनासुभक्तकहांचढ़ौं नबिचारिये। चढ़ेआयेप्रभुपाससुपनेसोंमिट्योत्रासबोले दैकसौटीहूपैभक्तबिस्तारिये ३८९ गुसाईंश्रीकाशीश्वर आगेअवधूतबरकरप्रीतिनीलाचलरहेलागेनीकोहै। महाप्रभुश्रीकृष्णचैतन्यजूकीआज्ञापाइ आयेवृन्दाबनदेखि

भयोभायोहीकोहैसेवाअधिकारपायोरसिकगोविंदचंदचा
हतमुखारविंदजीवनजोजीकोहै । नितहीलड़ावैभावसाग
रछुड़ावैकौनपारावारपावैसुनैंलागैजगफीकोहै ३६० ॥

चूक मेरी ॥ कुण्डलिया ॥ ढाक चढ़त वारी गिरै करै
रावसों रोस । करै रावसों रोस दोस हरिकों कहंदी-
नै॥ आपुन कुमति कमाय परेखो काकोकीजै। तृषावंत
ह्वैजीव सरोवर पै चलिआवै ॥ यह नहिं देखी सुनी आइ
सर तृषा बुझावै।अगर कहै अपराध यह प्रभु हैं सदा अ-
दोस ॥ ढाक चढ़तवारी गिरै करै रावसोंरोस २ पालकी
पठाई ॥ श्री जगन्नाथदेवजी करईऔषधि दैपिछिले जन्म
को अपराधखोयोथाहैं तब बुलाया ॥ दोहा ॥ दुर्जनकोहै
तन भलो सज्जनको भलो वास॥ जोसूरज अधिकीतपै तौ
बरषन की आस २ न्याइ के कर्त्ता न्याइ करतही हैं ॥

मूल ॥ करुणाछायाभक्तिफलयेकलियुगपादपरचे ।
जतीरामरावलश्यामखोजीसंतसीहा । दलहापद्ममनोर-
थएकाद्यौगूजपजीहा । जाड़ाचाचागुरूसवाईचांदनपा ।
पुरुषोत्तमसोंसांचचतुरकीतामनकोजिहिमेटउआपा॥ मति
सुंदरधीधागैश्रमसंसारचालनाहिंननचे । करुणाछायाभ
क्तिफलयेकलियुगपादपरचे ६७ टीकाखोजीजूकेगुरुहरि
भावनाप्रवीनमहादेहअंतसमयबांधिघटासोंप्रमानिये।पा
वैंप्रभुजबतबबाजिउठेजानौयहैपायेनबाज्यौबड़ीचिंतामन
आनिये।तनत्यागबेरनहीहुतेफेरिपाछेआयेवाहीठौरपौढ़ि
देख्यौआवपक्योमानिये।तोरताकेटूककियेछोटोएकजन्त
मध्यगयोसोबिलाइबाजउठेजगजानिये ३६१ शिष्यकी
तौयोगताईनीकेमनआइआजुगुरूकीप्रलवलऐ पैनेकुघटि

क्योंभईसुनोयहीबातमनबातबतकहीसहीलैदिखाईऔर कथाअतिरसमई।वेतोप्रभुपाइचुकेप्रथमप्रसिद्धपाछेआछो फलदेखिहरियोगउपजीनई। इच्छासोसफलश्यामभक्त बशकरीवहीरहीपूरपक्षसबव्यथाउरकीगई ३६२॥

मतिसुन्दर धीधागे॥ मृदंगकैसीमतिहीसोंसुन्दर ठहराई है पैहैभूठी ताकी चालमें सब संसारनचैहै १॥ कवित्त॥ आयो सदाकाल पै न पायो कछु सांचो सुख रूपसों बिमुख दुख कूप वास बसा है। धर्म को संघाती है न महाही अघाती पुनि ऐपै यह सन्निपात कैसी युत दशा है। माया कोउ पटि गहै काया सों लपटि रहै भूल्यो भ्रम भीर में वहीरको सों ससा है। ऐसो मन चंचल पताका कोसों अंचल सुज्ञानके जगेते निर्वाण पद धसा है २ ऐसे भ्रम करिकेनहीं नचैसंसारकीचाळमें रम्योंहै ३।५।६॥

टीकाराकाबांकाकी ॥ राकापतिवांकातियाबसैपुरपंढुरमेंउरमेंनचाहनेकुरीतिकुछन्यारिये।लंकरीनबीनिकरि जीविकानबीनैकरै धरैहरिरूपहियेतासोंयोंजियारिये । बिनतीकरतनामदेवकृष्णदेवजूसों कीजेदुखदूरिकहीमेरी मतिहारिये। चलौलैंदिखाऊंतबतेरेमनभाऊंरहेबनछिप दोऊथैलीमगमांझडारिये ३६३ आयेदोऊतियापतिपाछेबधूआगेस्वामीऔचकहीमगमांझसंपतिनिहारिये। जानीयोंयुवतिजातकभूमनचलिजात यातेबेगिसंभ्रमसोंधूरि वापैडारिये। पूछीअजूकहांकियोभूमिमेंनिहुरितुमकहीवहीबातबोलीयनहूबिचारिये। कहैमोकोराकाऐपैबांकाआजूदेखीतुहीसुनिप्रभुबोलेबातसांचीहैहमारिये ३६४॥

जीविकानवीन करै॥ उतनीही लावै उतनीही ब्लल

करै अथवा साधुन को देकै नचै सो आप पावै यह नवीन-
तातो काहूपै न बने विनतीकरतानामदेव ॥ दोहा ॥
कहूंकहूं गोपालकी गई सिटलतौ नाहिं। काबुल में सेवा
करी ब्रज में टटीखाहिं २ कहूंकहूं गोपालकी गई सिट-
लतौ नाहिं। बिमुख लोग घोड़ाचढ़े काठबेंच जनखाहिं।
२ कहा भयो जल में जल वर्षत वर्षत नाहिंखेत जहँ
सूखा ॥ अघाये आगे बहुत परोसत परसत नाहिं मरत
जहँभूखा ३ ॥ सवैया ॥ श्रीहरिदास के गर्भ भरे कामनेत
अनन्य निहारिनि के। सदा मधुरे रस पानकरैं अवसान
खतासिल हारिनि के। दियौलै नहिं लैहन मांगत काहू
पै जोरत नेहतिहारिनिके। किये रहे अंड विहारिय सों
हम ठेपर बाह विहारिनिकी ४ । ५ ॥

नामदेवहारेहरिदेवकहीओरैबात जोपैदाहगातचलौ
लकरीसकेरिये । आयेदोऊबीनिबेकोदेखीइकठौरीढेरीह्वै
हूमिलीपावेतेउहाथनहींछेरिये । तबतौप्रगटश्यामलायो
योंलेवाइघरदेखिमूढ़फोराकह्योऐसेप्रभूफेरिये । बिनती
करतकरजोरिअंगपटधारोभारो बोझपरोलियोचीरमात्रहे
रिये३६५मूल॥ परअर्थपरायणभक्तयेकामधेनुकलियुगके
लक्षिमनलफरालडूसतजोधपुरत्यागी । सूरजकुंभनदास
बिमानीखेमबैरागी । भावनबिरहीभरतनफरहरिकेशट
टेरा॥ हरीदासअयोध्याचक्रपाणिदियोसरयूतटडेरा॥ तिलो
कपुषरदीबीजुरीउद्धबचनचरबंशजे । परअर्थपरायणभक्त
येकामधेनुकलियुगके ६८ टीका ॥ लड़नामभक्तजाइनिक
सेबिमुखदेश लेशहूनसंतभावजानेपापपागेहैं । देवीको
प्रसन्नकरैमानसकोमारिधरैलैगयेपकरिजहांमारिबेकोला
गेहैं । प्रतिमाकोफारिबिकरालरूपधरिआईलेकेतरवारमू

ड़काटेभीजेवागेंहैं। आगेनृत्यकरैदृगभरैसाधपावधरैंऐसे रखवारेजानिजनअनुरागेंहैं ३६६ ॥

नहीं छेरिये ॥ कही कोऊ कंगला धरिगयौ आगे ले लेहिंगे लकरी क्यों न मिले प्रातहि धनको सुहड़ो देख्यौ होले जेतो न जानियेकहाहैतौ ॥ अबाहसौं कंगोलकह्यो दोहा ॥ घरघर डोलत दीन ह्वै जन जन याचत जाइ। दिये लोभ चसमाचखन लघुपुनिबड़ोलखाइ १ जैसे लोभी को लघु बड़ो दीखै तैसे त्यागी को बड़े हैं ते लघु दीखैहैं। प्रयंत धन सुक्ति स्वर्ग तुच्छ दीखै अत्यन्त॥दोहा॥ रामअ-मलते रहैं पीवै प्रेम निशंक ॥ आंटगांठिकोपीन में कहेइंद्र सौं रंक ३ वेषधारी वैष्णव ऐसे २ ॥

टीकासंतकी ॥ सदासाधुसेवाअनुरागरंगपागिरह्यो गह्योनेमभिक्षाब्रतगांवगांवजाइके। आयेघरसंतपूछेति यासोंयोंसंतकहासंतचूल्हेमांझकहीऐसेअलसाइके। बानी सुनिजानीचलेमगसुखदानीमिलेकहौकितहुतेसो बखानी उरआइके। बोलीवहसांचवोहीआंचहीकोध्यानमेरे आ निगृहफिरिकियेमगनजिवाइके ३६७ टीकातिलोककी॥ पूरबमेंओकसोतिलोकहौसुनारजाति पायोभक्तसारसा धुसेवाउरधारिये। भूपकेबिवाहसुताजोराएकजेहरिकी गढ़िबेकोदियोकह्यौनीकेकैसँवारिये। आवतअनंतसंतऔ सरनपावैकिहूंरहेदिनदोयभूपरोसयोंसँभारिये। ल्यावोरे पकरलाये छाड़ियेमकरकंहीनेकुरह्यो कामआवै नातैंमा रिडारिये ३६८ आयोवहीदिनकरछुयोहूनइननृपकरै प्राणबिनबनमांझछिप्योजाइकै। आयेनरचारिपांचजानी प्रभुआंचगढ़ियोसोदिखायोसांचचलेभक्तभाइकै। भूप

कोसलामकियोजेहरिकोजोरादियो लियोकरदेखिनयन छोड़ैनअघायकै। भईरीझभारीसबचूकमेटिडारीधनपायो लैमुरारीऐसेबैठेघरआइकै ३९९ ॥

बानीसुनिजानी चले ॥ सवैया ॥ होतही प्रातजोघात करै नित पार परोसिन सोकलगाढ़ी। हाथ नचावति मू-ड़ खुजावति पौरि खड़ी अतिकोटिनि बाढ़ी॥ ऐसीवनौ नखते शिख लौं मनों क्रोध के कुंडमें बोरिके काढ़ी। ढूंट लिये पियको मुख जोवत भूतसो भामिनि भौनमें ठाढ़ी २ ऐसी कलहा को वचन सुनि के साधू उठि चले क्योंकि जिनके वचन सुनिकै भूतहू भाजिजाहिं २ राजाके पुरो-हित कुरला डारा अपनी स्त्री पदोन्ह संपति और शरीर सुख विद्या अरु बरनारि मांगेमिलैंन चारि विन पूरब के पुण्य विन अनंतसंत॥ पंचमे ॥ तुलयामल वेनापिनस्वर्गं नपुन र्भवं॥ भगवत्संगिसंगस्यमर्त्यानांकिमुताशिषः ३ स-त्संगको मार्ग आछोहै ४ ॥

भोरहीमहोत्सवकियोजोईमांगैसोईदियो नानापकवा नरसखानस्वादलागेहैं। संतकोस्वरूपधरिलैप्रसादगोद भरिगयेजहांपावोंजोतिलोकग्रहपागेहैं। कौनसोत्रिलोक अजूदूसरोत्रिलोकीमेंन बैनसुनिचैनभयोआयोनिशिरागे हैं। चहलपहलधनभरयोघरदेखिढरयोप्रभुपदकंजजानी मेरेभागजागेहैं ४००॥ मूल॥अभिलाषअधिकपूरणकरन येचिंतामणिचतुरदास। सोमभीमसोमनाथविकोविशाषा लमध्याना। महदामुकुंदगयेसत्रिविक्रमरघुजगजाना। बालमीकिवृद्धव्यासजगनझांझबीठलआचारज।हरभूला लाहरीदासबाहुबलराघवआरज। लाखाछीतरउद्धवकपू

रघाटमघूराक्रियोप्रकास। अभिलाषअधिकपूरणाकरनये चिंतामणिचतुरदास ९९ भगतपालदिग्गजभगतयेथाना पतिशूरधीर। देवनंदबरहरियानंदमुकुन्दमहीपतिसंतरा मतमोली। खेमश्रीरंगनंदबिष्णुबीदावाजूसुतनोरी। छी तमद्वारकादासमाधवमांडनरुपादमोदर। भलनरहरिभ गवानबालकन्हरकेशवसोहेंघर। दासप्रियागलोहंगगुपा लनागूसुतगृहभक्तभीर। भक्तपालदिग्गजभगतयेथानाप तिशूरधीर २००॥

चहलपहल॥ दोहा॥ परमारथ अनुसरतही बीचहि स्वारथहोइ। खेतीकीजै नाजकी सहजघासतहँहोइ २॥ घाटम पद॥ जोनर रसनानाम उचारै। केतिकबात आप तरिबेकी कोटिपतित निस्तारै। कामक्रोध मदलोभ तजै जो जीवदया प्रतिपालै। तीरथ जेतिकतिबसुधापर तिनहूं के अघटारै। जेनाजाति यद्यपि कुलनीचो सतगुरु शब्द बिचारै। घाटमदास रामजो परचै तीनलोक उद्धारै। या- नापतिक्योंनभये॥ क्षुधारूपिणी कूकरी हरिनेदईलगाई। परसा टूका डारिकै गोबिंदके गुणगाई ३।४।५॥

मूल॥ बद्रीनाथउड़ीसेद्वारकासेवहरिभजनपर। के शवपुनिहरिनाथभीमखेतागोबिंदब्रह्मचारी। बालकृष्ण भलभरतअच्युतअपयाब्रतधारी। पंडागोपीनाथमुकुन्दाग जपतिमहायसु। गुणनिधियशगोपालदेइभक्तनकोसर्व सु। श्रीअंगसदासानिधिरहैकृत्यपुण्यपुंजभलभागभर। बद्रीनाथउड़ीसाद्वारकासेवहरिभजनपर २०१ टीकाप्र तापरुद्रराजाकी॥ श्रीप्रतापरुद्रगजपतिकोबखानकियो लियोभक्तिभावमहाप्रभुपैनदेखहीं। कियेहूउपायकोटि

ओटिलैसंन्यासलियो हियोअकुलायअइो कहूँमोकोपेख हीं। जगन्नाथरथआगेनृत्यकरैंमत्तभयेनीलाचलनृपपाइ पर्योभागलेखहीं। छातीसोंलगायोप्रेमसागरबुड़ायोभ योअतिमनभायोदुखदेतयेनिमेषहीं ४०१॥ मूल॥ हरि सुयशप्रचुरकरिजगतमेंयेकबिजनअतिशयउदार। बिद्या पतिब्रह्मदासबहोरणचतुरबिहारी। गोबिंदगंगारामलाल बरसानियामंगलकारी। पियदयालपरशुरामभक्तिभाई खाटीको। नंदसुवनकीछापकबित्तकेशवकोनीको। आ शकरणपूरणनृपतिभीषमजनदयालगुणनहिंपार। हरिसु यशप्रचुरकरिजगतमेंयेकबिजनअतिशयउदार २०२॥

प्रेमसागर॥ महाप्रभुजू प्रेमभक्ति देतभये॥ श्लोक॥ ज्ञानतःसुलभामुक्तिःभुक्तिःयज्ञादिपुण्यतः। सेयंसाधनसाहस्रैर्हरि भक्तिर्दुर्लभा २ अर्जुनके रथकी रक्षाके निमित्त अनेक झूठ सांच बोले ऐसेभक्तनसों बँधेहैं पै हरिके बँधेहीमें शो- भाहै॥ श्लोक॥ तवकथामृतंतप्तजीवनं कविभिरीडितंक- ल्मषापहं। श्रवणमंगलं श्रीमदाततं भुविगृणंति येभूरिदा जना: २॥ भूरिदा कहिये बड़ेदाता जन्मकर्मके दूरिकरने हारे सोइन कविनहरिकेगुणरूपही बर्णनकरेहैं तिनगुणा- रविन्दनको बांचिकै जगत तरिजाइगो बिश्वासमानि ३॥

टीकागोबिंदस्वामीकी॥ गोबर्द्धननाथसाथखेलेसदा झेलेरंगअंगसख्यभावहियेगोबिंदसुनामहै। स्वामीकरि ख्यालताकीबातसुनिलीजेनीके सुनेसरसातनयनरीतिअ भिरामहै। खेलतहोलालसंगगयोउठिदांवलैकैमारीखेच गिलीदेखिमंदिरमेंश्यामहै। मानिअपराधसाधूधकादैनि कारिदियोमतिसोअगाधकैसेजानेवहबामहै ४०२ बैठे

कुंडतीरजाइ निकसेगोआइबन दियोहैलगाइताकोफल भुगताइये। लालहियेशोचपर्योकैसेजातभर्योवहअटेउ मगमांझभोगधर्योपैनखाइये। कहीश्रीगुसाईंजीसोंमोपै कोनभावैकछूचाहोजोखवायोतौपैवाकोजामनाइये। वाको हुतोदांवमोपैसोतौभाव जानौंनाहिं कहैमोसोंबातैंशोकमा रैबेगिलाइये ४०३ बनबनखेलैबिनबनतनमोकोनेकुभ नतजगारीअनगनतलगावैगो। सुधिबुधिमेरीगईभईबड़ी चिंतामोहिंलाइयेजुढूंढ़िजबचैनढिगआवैगो। भोगजेलगा येमैंतौतनकनपायेरिसवाकीजबजाइजबमोहिंकछूभावैगो। चलेउठिधाइनीठिनीठिकैमनाइलाये मंदिरमेंखाइमिलिक हीगरेलावैगो ४०४॥

सख्यभाव॥ नवप्रकारकी भक्तिहैं तामेंसख्यबड़ीकठिन है तामेंईश्वरताकोगंध न रहै दृष्टांत बादशाहके खिलवतख-खाने अरु दोभिचनको २॥ विश्वासंसमतानित्यंसख्यतं भावरुच्यते २ परहैंयांपहराई नाथजीको खेलत पाषाण कीमूरति चैतन्य ह्वै कैसे खेलनलगी ३ याहशी भावना यस्य४ गोविन्द स्वामी के अजलौं सनभावनारहै याते संग खेलै एकगोपहौं सो नंदजीके मंदिरमें जाइकै पगड़ी उतारिलायोलालाकी सगाईसारिजाइहै ५॥

गयेहैंबहरभूमितहांकृष्णाझूमिआयेकरीबड़ीधूमआक बौंड़निसोंमारिकै। इनहूंनिहारिउठिमारिदईवाहीसोंजु कौतुकअपारसख्यभावरससारिकै। मातामगचाहैबड़ीबेर भईआईतहांकहीबारबारओटपाईउरधारिकै। आयोयों बिचारअनुसारसदाचारकियो लियेप्रेमढिगकभूंकरतसं भारिकै ४०५ आवतहैभोगमहासुंदरसोमंदिरकोरहेउ

मगवैठिकहीआगेमेहिंदीजिये। भयोकोपभारीधारडारि कैपुकारकरीभरीनअनीतिजातिसेवायहलीजिये। बोलिकै सुनाईअहोकहामनआईतब खोलिकैबताईअजूबातकान कीजिये।पहिलेजुखाइबनमांझउठिजाइपाछेपाऊंकहांधा इसुनिमतिरसभीजिये४०६मूल॥जेबसेवसमथुरामंडल तेदयादृष्टिमोपरकरौ।रघुनाथगोपीनाथरामभद्रदासूस्वा मी। गुंजामालीचित्तउत्तमबीठलमरहटनिःकामी। यदु नंदनरघुनाथरामानंदगोविंदमुरलीसोती।हरिदासमिश्र भगवानमुकुंदकेशवडंडोती। चतुरभुजचरित्रविष्णुदास बेनीपदमोशिरधरौ। जेबसेवसमथुरामंडलतेदयादृष्टि मोपरकरौ २०३॥

आइतहां देखैतौ धूमनचाइ रह्योहै माताकहै ओट पाई धूमकौनसों मचाइ रह्योहै इहांतौ कोईहै नहीं माताको दृष्णक्यों न दीखे गोविंद स्वामीको कैसेदीखे गोविंदस्वामी श्रीकृष्णके संगते अप्राकृत भयो यातेदीखे जैसे कच्चोआंब पालसों पकै खटाई जातिरहै मिठाई ह्वै जाइ जैसेधुव भगवानके संगते अप्राकृतभये ऐसेही गोविंद स्वामीअप्राकृतभये मतिरसभीजिये विट्ठलनाथजी कीमति रसमें भीजिगई सो सख्यभावमें भीजिगयेहैं २॥

टीकागुंजामालीकी॥ कहीनाभास्वामीआपगायोमें प्रतापसंत बसेब्रजबसेसोतौमहिमाअपारहै। भयेगुंजा मालीगुंजहारधारुनामपर्यो कर्योबासलाहौरमेंआगे सुनौसारहै। सुतबधूविधवासोंबोलिकैसुनायोलेहु धन पतिगेहश्रीगुपालभरतारहै। देवोप्रभुसेवामांगैनारिवा-

रिवारयहै डारैसबवारियापैगनैजगक्कारहै ४०७ दईसे-
वावाहिऔरघरधनतियादियो लियोब्रजबासवाकीप्रीति
सुनिलीजिये । ठाकुरबिराजैजहांखेलैंसुतऔरनके डारे
ईटखोवार्योप्रभुपरखीजिये । दियेबेबिडारिधर्यो भोग
पैनखातहरि पूछीकहीवेईआवैंतबहींतौजीजिये । कह्यौ
रिसभरिधूरिनीकेभोरडारौभरि खावौहमहाहाकरीपायो
लाइरीझिये ४०८ मूल ॥ कलियुगयुवतीजनभगतराज
महिमासबजानैजगत ॥ सीताझालीसुमतिशोभाप्रभुता
उमाभटियानी । गंगागौराकुवरीउबीठागुपालीगणेशदे
रानी ॥ कलालखाकृतगढ़ौमानमतीशुचिसतभामा । यमु
नाकोलीरामामृगादेभक्तनविश्रामा ॥ युगजीवाकीकमला
देवकीहीराहरिचेरीपौषेभगत । कलियुगयुवतीजनभगत
राजमहिमासबजानैजगत २०४ ॥

भक्तराज ॥ स्कांदे ॥ स्त्रियोवायदिवाशूद्रो ब्राह्मणःक्षत्रि
योपिवा ॥ पूजयित्वाशिलाचक्रंलभतेसास्त्रतंपदं १॥ दोहा॥
राम रंग लाग्यौ नहीं बिप्र जनेऊ बांह ॥ रज्जब बोनता
गलगि चक्र चूनरी चाह २ महिमा यह सब भक्त राज
है जाति पांति की गनती नहीं एक पंगति में राखी
रानी ब्राह्मणी कोली भटियानी रैदासिनी भक्तिही श्रेष्ठ
है जहां भक्ति तहां भगवान शिवरी के गये अभिमानी
ऋषिन के न गये प्रीति की रीति सांची जानी ॥

टीकागणेशदेरानीकी ॥ मधुकरशाहभूपभयोदेशऔंड
छेको रानीसोगणेशदेसुकामवाकोकियोहै । आवैंबहुसंत
सेवाकरतअनंतभांतिरह्यौएकसाधुखानपानसुखलियोहै।

निपटअकेलीदेखिबोल्योधनथैलीकहां होइतौबताऊंसब तुमजानौहियोहै । मारीजांघछुरीलखिलोहूवेगिभागि गयो भयोशोचजानैजिनिराजाबंददियोहै ४०६ बांधि नीकीभांतिपौढ़िरहीकहीकाहूंसौंन आयोढिगराजामति आवोतियाधर्महै । बीतेदिनतीनजानीबेदननवीनकछू कहियेप्रवीणमोसोंखोलिसबमर्महै । टारीबारदोइचारि नृपकेबिचारपर्यो कह्योसावधानजिनिआनौजियभर्महै। फिर्योआसपासभूमिपरितनरासकरी भक्तिकोप्रभावछांड़ितियापतिशर्महै ४१० ॥

आवैं बहुसंत बहुरंग कै पै सबही को सेवै कह्यौ सावधान ॥ कवित्त ॥ संतहैं अनंत गुण अंत को न पावै या को जानै रसवंत कोईरीझै पहिचानि कै। औगुणन दीठिपरै देखतही नैन भरै ढरै पगओर ढर प्रेम भरि आनिकै॥ जोपै कछूघटि क्रिया देखिपतिइनमांझ करिलै बिचारहरिही की इच्छा मानिकै। बालक शृंगारके निहारि नेहवती माता देतिहै दिठौनाकारो दीठि दुर जानिकै ॥ दोहा ॥ कामी साधुकृष्ण कहि लोभी बावन जानि ॥ क्रोधीको नरसिंहही नहीं भक्ति की हानि २ जाकोजैसो सुभाव जायनहिं जीवसों। नींब न मीठीहोइ सींचि गुण घीवसौं ३ कोइला होइ न ऊजलानौ मन साबुन लाइ। मूरखकोसमझावनो ज्ञान गांठिको जाइ॥ काहू ने कही सुंदर क्यों न भये तापै दृष्टांत राजा आशकरन को और साहब जादे फकीरको प्रसंग १ ॥

मूल ॥ हरिकेसम्मतजेजगततेदासनकेदास॥ नरबाहनबाहनबरीसजापूजैमलवीदावत । जयंतधारारूपा अनभईउदरावत ॥ गंभीरैअर्जुनजनार्दनगोबिंदजीता।

दामोदरसापिलेगदाईश्वरहेमविदीता ॥ मयानंदमहिमा अनंतगुढ़ीलेतुलसीदास । हरिकेसम्मतजेभगततेदासन केदास २०५टीकानरबाहनजीकीहैभैगांवनावनरबाहन साधुसेवीलूटिलईनावजाकीबंदीखानेदियोहै। लौंड़ीआवै देनकछुखाइबेकोआईदया अतिअकुलाइलैउपाइयहकि-योहैबोलीराधाबल्लभऔलेवोहरिबंशनाम पूछेंशिष्यना-मकहौपूछीनामलियोहै। दईमँगवायबस्तुराखियोदुराइ बातआपुदासभयो कहीरीझिपददियोहै ४११मूल ॥ श्री मुखपूजासंतकीआपुनतेअधिकीकही ॥ यहबचनपरिमान दासगावढीजढियानैभाऊ । बूंदीबनियाराममडौतैंमोहन वारीदाऊ ॥ मांडौढीजगदीशलक्षिमणचटथावरभारी। सुनपथमेंभगवानसबैसलखानमुपालउधारी ॥ जोबनेरि गोपालकेभक्तइष्टतानिर्महो । श्रीमुखपूजासंतकीआपुनते अधिकीकही२०६टीकाजोबनेरगोपालकी॥ जोवनेरबास सोंगुपालभक्तइष्टताको कियोनिर्वाहबातमोकोलागीप्या-रिये । भयोहौविरक्तकोऊकुलमेंप्रसंगसुनौआयोयोंपरी क्षालेनद्वारपैविचारियेआइपर्योपाइँधारोनिजमंदिरमेंसुं दरनदेखौमुखपनकैसेटारिये। चलौजिनिटारौतियारहैंगी किनारोकरि चलेसबछिपीनेकुदेखियाकेमारिये ४१२॥

लूटिकैसेवैतो पापलगैगो जगतकेपापपुण्यमिथ्याजाने स्वभवत्ताकोफल दुखसुखकहाजैसेव्यभिचारिणीस्त्रीकोसु मकोफलभूठो सेवामेंसांचो याद्दशीभावनायस्य १दईजंवे कोदेखि यामेंमारिये ४१५ भगवाई१कामदारबोलेतीनि लाखतीसहजारकोमाल क्योंफेरिदियोनरबाहनबोले॥ जोहरिबंशको नामसुनावैतनमनधनतापैबलिहारी। जोह

रिवंश उपासकसेवैसदासेजंतावेचरणविचारी ॥ श्रीहरिवंशगिरायमगावैसर्वैसदेहौंतेहिवारी । जोहरिवंशकोधर्मसिखावैसोमेरेप्रभुतेप्रभुभारी॥पददियो॥ पद॥ मंजुलकलकुंजदेश राधाहरिविशदवेशराकानभकुमुदचंद शरदयामिनी। श्यामलद्युतिकनकअंगविरहतमिलिएकसंग नीरदमनोनीलमधिलसतदामिनी।अरुणपीतिनवदुकूलअनुपमअनुरागमूलसौरभयुतशीतअनिलमंदगामिनी। किशलयदलरचतसेन बोलतपियचारुबैन मानसहितप्रतिपदप्रतिकूलकामिनी ॥ मोहनमनमथतमारपरसतकुचनीबिहार नेपथयुतनेतिनेति बदतिभामिनी।नरबाहनप्रभुसकेलिबहुविधिभरभरतिकेलि सोरतिरसरूपनदीजगतपावनी २ चलिहे राधिकेसुजानतेरेहित सुखनिधान रासरच्यो श्यामतटकलिंदनंदिनी। निर्त्ततयुवतीसमूह रागरंगअति कुतूह वाजततमूलमुरलिकाआनंदिनी। बंशीबटनिकटजहां परमरवनिभूमितहांसकलसुखदमलयबहैवायुमंदिनी । जातीईषत्विकासकाननअतिशयसुवासराकानिशिशरदमास बिमलचांदनी।निरबाहनप्रभुनिहारिलोचनभरिघोषनारि नखशिखसौंदर्यकाम दुखनिकंदिनी। बिलसौभुजग्रीवमेलिभामिनिसुखसिंधुभेलि नवनिकुंजश्यामकेलिजगतबंदिनी ३ आपनतेअधिकपूजाअष्टप्रकारकोब्राह्मणभोजनअग्निहोमजलमंत्रगोचन बैष्णवउदरऔरइत्यादि ४ आदिस्तुपरिचर्यायां सर्वांगरपित्रन्दनं । मद्भक्तपूजाभ्यधिका सर्वभूतेषु मन्मतिः ५ ॥

एकपैतमाचोदियोदूसरेनेरोषकियो देवोयाकपोलपैयों बाणीकहीप्यारिये । सुनिआंसूभरिआये जाइलपटायेपांयकैसेकहीजाइयहरीतिकछुन्यारिये । भक्तइष्टसुनेमेरेबड़ोअचरजभयोलईमैंपरीक्षामोकोभईशिक्षाभारिये। बोलेउअकुलाइअजूऐपैकहांभायऐपैसाधुसुखपायकहेंयहीमेरो

ज्यारिये ४१३ मूल ॥ परमहंसबंशनमेंभयोबिभागीबा नरो। मुरधरिखंडनिबासभूपसबआज्ञाकारी। रामनाम बिश्वासभक्तपदरजव्रतधारी। जगन्नाथकेद्वारदंडवतप्र भुपरधायो। दईदासकोदादिहुंडीकरिफेरिपठायो। सुरधु नीओघसंसर्गतेनामबदलिकुछितनरो। परमहंसबंशनमें भयोबिभागीबानरो २०७ टीकालाखाभक्तकी॥लाखाना मभक्तताकोबानरोबखानकियो कहेंजगडौमजासोंमेरोशि रमौरहै। करैसाधुसेवावहुपाकडारिमैवासंतजेवतअनंतसु खपावैंकौरकौरहैं ॥ ऐसेमेंअकालपर्योआमेंघरमालजा लकैसेप्रतिपालकरैंताकीओरठौरहै। प्रभुजीस्वपनदियो कियोमैंयतनएकगाड़ीभरिगेहूंभैंसआवैकरोगौरहै४१४॥

बिभागीबानरो॥ भगवानकीभक्तिरूपी संपतिचारोंबां टिपावैं ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र काहूसोंघटतीनहीं जैसे काहूकेचारिपुत्र पंडित मूरखनिर्धनपंगुलासबहीबांटिपावैं कुछित॥नारदपंचरात्रे॥ यस्माद्यस्मादपिस्थानाद्गंगायामं भआपतत्। सर्वंभवतिगांगेयकोनसेवतबुद्धिमान्१ दोहा॥ तुलसीनारोजगतको मिलैसंगमेंगंग। महानीचपनआदि को शुद्धकरैसतसंग २ नीरनगरकोपरशुराम तासमरत अज्ञान। साधुसमागमसुरसरी मिलइकहोतसमान ३॥

गेहूंकोठीडारिमुहुंमूंदिनीचेदेखौखोलि निकसेअतोलि पीसिरोटीलैबनाइये। दूधजितोहोइसोजमाइकैबिलोईली जेदीजेयोंचुपरिसंगछांछदैजिमाइये। खुलिगईआंखेंभा पैंतियासोंजुआज्ञादई भईमनभाईअजुहरिगुणगाइये। भोरभयेगाड़ीभैंसिआईवहीरीतिकरी करीसाधुसेवाकीप्री तिहूबखानिये४१५ प्रीतिहूबखानकीजेलीजेउरधारिसार

भक्तिनिरधारहै। रहैढिगगांवतहांसभाएकठांवभईडाटिग
येभाईसोउगाहीकोबिचारहै। बोलिउठ्यौकोऊयोंठ्योहार
कीतौभारचुकयोलीजियेसँभारिलाखासंतभवपारहै।लाज
दबितिनदियेगेहूंलैपचासमन दईनिजभैंससंगसबसरदा
रहै ४१६ मारवाड़देशतेचल्योईसाष्टांगकियेहियेजगन्ना
थदेवयाहीपनजाइये। नेहभरिभारीदेहबारिफारिडारीकै
सेकरैंतनधारीनिकुश्रमसुरझाइये। पहुंच्योनिकटजाइपा
लकीपठाइदईकहैंलाखाभक्तकौनवेगदेबताइये। काहूक
हिदियोजाइकरगहिलियोअजू चलौप्रभुपासइहिक्षणहीं
बुलाइये४१७ कैसेचलौपाउकीमेंप्रणप्रतिपालकीजेदीजे
मोकोदानयाहिभांतिजानिहारिये। बोलेप्रभुकहीआपुसु
मिरनीबनाइलायेअबपहराइमोहिंसुनिउरधारिये। चढ़ेच
ढ़िबढ़कियोचाहेंयहजानी मैंतौपढ़िपढ़िपोथीप्रेममेंपैबि
स्तारिये। जाइकैनिहारेतनमनप्राणवारेजगन्नाथजूकेप्या
रेनेकुढिगतेनढारिये ४१८ ॥

बोखोदेवता पितृ अतिथि इनको ऋणियारहैनदेइ तौ
तातेलाखाकोदीजै २ एकोपिकृष्णस्यकृतप्रणामोदशाश्व
मेधावभृथेनतुल्यः। दशाश्वमेधीपुनरेतिजन्मकृष्णप्रणामी
नपुनर्भवाय॥ बड़ेगहै करहोतबड़ज्योंबावनकरदंड। मौजी
प्रभुको संगबड़गयोअखिलब्रह्मांड ॥

बेटीएककारीठ्यहिदेतनबिचारीमनधनहरिसाधुनको
कैसेकैलगाइये। कीजैवाकोकार्यकहीजगन्नाथदेवजूनेली
जेमोपैद्रव्यउरनेकहूनआइये। बिदापैनभयेचलेडगभन
लयेगयेआगेनृपभक्तमगचौकीअटकाइये। दियोहैस्वपरि

प्रभुजनिहठकरौअजू हुंडीलिखिदईलईबिनयकै जताइये ४१९ हुंडीसोहजारकीलैग्रहद्वारआयेजब तामेंतेलगाये सौकबेटीब्याहकियोहै । औरुसबसंतनबुलाइकैखवाइ दिये लियेपगदाससुखराशिप्रणालियोहै । ऐसेहीबहुत दामवाहीकेनिमित्तलैलैसायुभुगतायेअतिहरषतहियोहै। चरितअपारकछूमतिअनुसारकहेउलहेउजिनस्वादसोतौ पाइनिधिजियोहौ ४२० ॥

पद ॥ हरिकेजनकी अतिठकुराई । महाराजऋषिराज देवमुनि सकुचिरहत शिरनाई । दृढ़विश्वास दियोसिंहासन तापरबैठेभूप । हरिजस छत्र बिमल शिरसोहत राजत परम अनूप । निशिप्रहदेश राजकरताको लोकन अति उत्साह । काम क्रोध मद मोहलोभ ये भयेचोरते शाह । अर्थकामकहुं हरिगये हरिधर्मसोन्हशिरनाये । बुधिविवेक दोउ पवंरि पवँरिया समय न कबहूंपाये । अष्टसिद्धिनव निद्धि चातुरी करजोरे आधीनी । छरीदारबैरागबिनोदी भरक बाहिरीकीनी । हरिपदपंकजप्रीतिप्रियाबरताही सों अनुराता । संचीज्ञान न अवसरपावै बातकहत सकुचाता । मायामोह न व्यापैकबहूं जोयह भेदहि जाने। सूरदास पदटरत न टारे गुरुप्रसाद पहिंचाने १ ॥ धनहम तो गुमस्ताऐसे ॥

मूल ॥ जगतबिदितनरसीभगतजिनगुज्जरधरपावन करी । महास्मारतकलोगभक्तिलवलेशनजाने। मालामुद्रा देखितासुकीनिंदाठाने । ऐसेकुलउतपन्नभयोभागवत शिरोमनि । ऊसरतेसरकियोषंडदोषहिखोयोजिनि। बहुत ठौरपरचेदियेरसरीतिभक्तिहिरदैधरी। जगतबिदितनरसी

भगतजिनगुज्जरधरपावनकरी२०८टीकानरसीमहिता
की॥जूनागढ़बासपितामाततननाशभयो रहैएकभाईऔभौ
जाईरिसिभरीहै । डोलतफिरतआइबोलतपिवावोनीरभा
भीपैनजानीपीरबोलीजरीबरीहै। आवतकमायेजलप्याये
बिवसरैकसोपियोयोजुवाबदियोदेहथरहरीहै । निकसेबि
चारकहूंदीजेतनडारमानों शिवपैपुकारकरीरहेचितधरीहै
४२१बीतेदिनसातशिवधामतेनजातचार परैकाहूतुच्छद्वा
रसोऊसुधिलेतहै। इतनीबिचारिभूखप्यासदईढारिलियो
प्रगटस्वरूपधारिभयोहितहेतहै । बोलेबरमांगिअजूमां
गिमैंनजानतुहौं तुम्हैंजोइप्यारोसोइदेवोचितचेतहै। प
र्योशोचभारीमेरीप्राणप्यारीन्यारीतासों कहतडरतवेद
कहैंनेतिनेत है ४२२॥

पावनंकरी पहले अपावनता कैसीहै जाहिपावनकियो
जैसेखाईंगढ़ अरावा बड़ोहोइतौ ताकोसरकारैं सोभ्रूरमा
कहावै अरु शोभापावै ऐसे अपावन बड़ी होइ तब पावन
कीशोभा सोनरसीतौ अभक्तदेश जीतिकै भक्तिको राज्य
कियो १ महास्मारतक लोग स्मारतक्रतौयहकर्मकरिकै
नामलीजे कैसरिजाइ॥ अष्टमे॥ संवतस्तंचतच्छिद्रं देशका
लार्हवस्तुतः। सर्वंकरोतिनिश्छिद्रंनामसंकीर्तनंतव २ ऐसा
क्योंबांकोगढ़ो सुरंगसोटूटैहै॥

दियोमैंवृकासुरकोबरडरभयोजहां वैसेवरकोटिकोटि
यापैवारिडारेहैं । बालकनहोइयहपालकहैलोकनकोम
नकोबिचारकहादीजेप्राणप्यारेहैं। जोपैनहींदेतमेरोबोलि
बोअचेतहोतदियोनिजहेततनआलिनकेधारेहैं । लायेद

न्दाबनरासमंडलजटितमणिप्रियाअनगतबीचलालजूनि हारेहैं ४२३ हीरनिखचितरासमंडलनचतदोऊरचतअ पारनृत्यगानतानन्यारिये । रूपउजियारीचंदचांदिनीन समतारीदेतकरतारीलालगतिलेतप्यारिये । ग्रीवकीदुर निकरअँगुरीमुरनिमुखमधुरसुरनिसुनिश्रवणतापारिये। बजतमृदंगमुरचंगसंगअंगअंग उठततरंगरंगछबिजीकी ज्यारिये ४२४ दईलैमशालहाथनिरखिनिहालभईलाल दीठिपरीकोऊनईयहआईहै । शिवसहचरीरंगभरीअटक रीबातमृदुमुसुकातनयनकोरमेंजताईहै ।चाहैया।हिटारयो यहचाहैप्राणवारयोतब श्यामढिगआइकहिनीकेसमुझाई है। जादोयहध्यानकरौकरौसुधिआऊंजहां आयेनिजठौर चटपटीसोंलगाईहै ४२५ ॥

बजतमृदंग ॥ कवित्त ॥ पियप्यारीदोऊमिलरासकोम- चाहूरहेदेखैजोनिहारि वाहिरहीनसंभारहै। ततायेईथेई करतनृत्यतगति लेतरंगसौभरतपेखसकुचतमारहै। बाजत मृदंगसुरचंगउठतउमंग गावतहैतालसंगलाग्योप्रेमलारहै। शरदसमाजबनवृन्दावनप्रगटभयो कहैकबिकौनजाकोपा वैनहींपारहै १ भागवते ॥ वलयानांनूपुराणांकिंकिणीनांच योषितां। सप्रियानामभूच्छब्दस्तुमुलोरासमण्डले२ वक्ता रतेमानिये ३ ॥

कीनीठौरन्यारीविप्रसुताभईन्यारीएकसुताउभयवारी जगभक्तिबिस्तारीहै। आवैंबहुसंतसुखदेतहैंअनंतगुणगाव तरिझावतऐसेसेवाविधिधारीहै। जितीद्विजजातिदुखभा- योअतिगातमानीबड़ीउतपातदोषकरैनबिचारीहै। येतोरू पसागरमेंनागरमगनमहा सकैकहाकरिचहूंओरगिरिधा-

रीहै ४२६ तीरथकरतसाधुआयेपुरपूछेकोऊहूंडीलिखिदे हिंहमैंद्वारकासिधारिबे। जेवरहैदूषिकहीजातहीभगावैभ क्तनरसीविदितसाहआगेदामडारिबे। चरणपकरिगिरि जावेसुलिखावौअहो कहोवारवारसुनिविनतीनटारिबे। दियोलैबतायघरजायवहीरीतिकरीभरीअंकवारिमेरेभाग कहावारिये ४२७ सातसैरुपैयागनिढेरीकरिदईआगेलु गेपगदेबोलिलिखिकहोबारबारहै। जानीयहँकायेप्रभुदास देपठायेलिखि कियेमनभायेसाहसांवलउदारहै। वाही हाथदीजेपैलेकीजियेनिशंककाज गयेयदुराजधानीपूछो सोबजारहै। ढूंढ़िफिरिहारेभूखप्यासमीड़िडारेपुर तजि भयेन्यारेदुखसागरअपारहै ४२८॥

कोनीठौरन्यारी॥सवैया॥देवऔदानवदोऊकुलेबलिकै कोकुलथोमलिदावनयातैं। आनिकुल्योसिगरोब्रजरीपुनि ऐसोकुलीनहिंऔरहैयातैं। होऊकुलीकुलसोंकह्योविद होजानिप्रवीनकिशोरकीघातैं। सोहिंघरीकुलिवायोचहै तौकरौकिनवाहीविप्रवासीकीवातैं२आवैंवड़संत॥दोहा॥ नागरसोहरिरूपपरसागरपगलरसाल। सतआगरजागर सदासेवससंतमराल२दोष॥मृदुसोंमृदुअतिकठिनहैकठिन संइमतुसार। अलिअंबुजमेंदुरिरह्योकाटैकाठअपार३॥

शाहकोस्वरूपकरिआयेकान्हेथैलीधरि कौनपासहुंडी दामलीजियेगिनाइकै। बोलिउठेढूंढ़हारेभलेजूनिहारआ जुकहीलाजहमैंदेतमैंहूंपायेआइकै। मेरोहैइकोसौवासजा नैकोऊहरिदास लेवोसुखराशिकरोचीठीदीजेजाइकै। धरेहैंरुपैयाढेरलेखोकरोबेरबेर फेरिआइपातीदईलैइगरे लाइकै ४२९ देखिआयेशाहदौरिमिलेउत्साहभावेउरंग

बोरेसतसंगकोप्रभावहै।हुंडीलिखिदईदामलियेसोखचाइ दियेकियेप्रभुपूरेकामसंतनसोंभावहै। सुतासुसरारिभयो छूछकविचारसासदेतबहुगारिजाकेनिपटअभावहै। पिता सोंपठाइकहीछातीलैजराईइन जोपैकछूदियोजाइआवो इहिदावहै४३०चलेगाड़ीटूटीसीलैबूढ़ेडभैबैलजोरिपहुंचे नगरछोरद्विजकहीजाइकै। सुनतहिआईदेखिमुहपियराई फिरीदामनहींएकतुमकियोकहाआइकै।चिंताजनिकरौजा इसासूढिगदरोलिखिकागदमैंधरौअतिउत्तमअघाइकै। क हीसमुझाइसुनिनिपटरिसाइउठी कियोपरिहासलिख्यौ गांवसुनसाइकै ४३१॥

भाषे॥कवित्त॥ पखिजूकेनित्तचित्तरहतहीलेरे हियेहरि जूकीभक्ति भेरेआईहैकिनाहिंनै। मोरध्वजकरतबिचार यहबारबार कबऊंकप्रभुअपनाइहैंकिनाहिंनै। पारषद होंऊसोजचहतहैंमनको निवेसऔरदेसहमैंहोइगोकि नाहिंनै। शुकगरुखानिभगवानजोईलीलाकरैं साधुसुख इच्छाहेतुऔरहेतुनाहिंनै १ जानेहरिदास बोलेहमहरि दासनहीं तुमदासदासहौ मिलेकैसे नरसीजोकेसंगते जो कछूनरसी को लिख्यौ चिट्ठीमेंआयो सोसबदेनौ २॥

कागदलैआईदेखिदोसरेफिराईपुनि भूलेपैनपाईजा तपाथरलिखायेहैं। रहिबेकोदईठौरफूटीदइपौरिजहां बै- ठेशिरमौरआपबहुसुखपायेहैं। जलदैपठायोभलीभांतिकै औटायोभई बरषासिरायोसोसमोइकेअन्हायेहैं। कोठरी सँभारिआगेपरिदासोंदियोडारि लेबजायेतालवेसअगि- नितआयेहैं ४३२ गांवपहरायोढविछायोपग्गायोअहो

हाटकरजतउभैपाथरहूआयेहैं। रहिगईएकभूलेलिखनअ नेकजहां लेहौताहीपासजापैसबमिलपायेहैं। बिनतीक रतिबेटीदीजियेजूरहैलाज दियोमँगवाइहरिफेरिकैबुला येहैं। अंगनसमातिसुतातातकोनिरखिरंग संगचलीआई पतिआदिबिसरायेहैं ४३३ ॥

सलदैपठायौजलसावनबारेबोलेमूड़तौटकोतनकहीबा बरेहोमूड़उघारिकेजलउस छोड़िकै हरिकोभजनकरियेये अपनीओरखैचैंअपनीओरखैचैं जैसेनिपटऔरबादशाह कोप्रसंग १ लैबनायेताल॥ कवित्त ॥ लैकरितालबानीबोले सोरसालसुनियोनंदलालसैकहावतबजराजको। तुमगखि- कासीरीतारीप्रहलादभीरटारी कुबिजासुधारीकान्ह द्रौपदीकीलाजको। चरखाड़ोहीवधिकतारयौगजनेपुका- र्यौअति केवलरामआयेश्रीसुदामागृहकाजको। नरसी कीबारहरिक्योंअबारलागेआव आयेततकालरूपधरिकै बजाजको २ रहैलाज नाहींतौनाककटैगी तबनरसीजी बोलेकैनाककटैगीतौकृष्णकीरहैगी तापैदृष्टांतबजोहलाल बारीको सुतादोहूनरसीकै कुवरसेनारतनसेनायेतौबैठो निकेनामहै आगेविस्तारकह्योहै ३॥

सुताहुतीदोइभोइभक्तिरहीघरहीमेंएकपतित्यागिएक पतिहूनकियोहै। भूमिमेंफिरतउभैगाइनिसोंचाइनिसों धनसोंनभेटकाहूनामकहिदियोहै। आइलागीगाइबेको कहीसमुझाइग्रहोपाइबेकोनहींकछुपावेदुखहियोहै। चाहै हरिभक्तितोमुड़ाइकैलड़ाइलीजैकीजैबारदूरिरहीप्रेमरस पियोहै ४३४ मिलीउभैसुतारंगझिलीसंसगाइनि बेचा- इनिसोंनृत्यकरैभाइनिबताइकै। सालंगहैनाममामामंड- लीकमंझरिहै कहैविपरीतिबड़ीराजासोंसुनाइकै। बड़ेबड़े

दंडीअरुपंडितसमाजकियो करौवाकीभंडीदेशदीजियेकु ड़ाइकै। आयेचारिचोबदारचलौजूबिचारकीजैभयोदरबा रहसैंदियोहैपठाइकै४३५ चारौतुमजावोदूरिभयोहमैंरा- जाडर सकैकहाकरिअजूचलैसंगसगही। नाचतबजावत येचलीढिगगावत सुभावतमगनजानीभीजिगईरंगही। आयेवाहीभांतिसभाप्रबलबहुतभई तऊबोलेरीतियह युवतीप्रसंगही। कहीभक्तिगन्धदूरिपढ़ेपोथीपरीधूरि श्री शुकसराहीतियामाथुरनभंगही ४३६ ॥

पतित्यागि ॥ कुंडलिया ॥ नारीतजैनआपनोसपनेहू भरतार। गुंगपंगुबहिराबधिरअंधअनाथअपार॥ अंधअ- नाथअपारवृद्धबावनअतिरोगी। बालकपंडकुरूपसदाकु- बचनजड़योगी॥ कलहीकोटीभीरुचोरज्वारीव्यभिचारी। अधमअभागीकुटिलकुमतिपतितजैननारी २॥ छप्पै ॥ पिता बचनप्रहलादमेटिअपनोमतठान्यो। बलिराजागुरुबचन नेकुहिरदेनहिंआन्यो॥ दईस्वामिकोपीठिबिभीषणकुल मरवायो। गोपिनपतिव्रतत्यागिकियोअपनोमनभायो॥ निगमनिरूपहिमंदकर्मकीलगीनहोंप्रतिवाद। हरिधर्मके साधेजगन्नाथअधर्मधर्मह्वैजाइ २ पोथी॥ दोहा॥ पोथीतौ थोथीभईपंडितभयोनकोइ। एकैअक्षरप्रेमको पढ़ैसुपं- डितहोइ १ शुकसराही॥ भागवते॥ धिग्जन्मन:स्त्रिवृद्वि- द्यांधिग्व्रतंधिग्बहुज्ञतां। धिक्कुलंधिक्क्रियादाक्ष्यंविमुखा येत्वधोक्षजे॥ पद॥ हमसबहिमंदभागभगवानसोंविमुखभ येधन्यवेनारिगोविंदपूजे। मंदिरहमैनहमसबैउलूकज्यौं भानुभगवानआयेनसूझे ३ संगगोधनलगेखेलरसरंगमगेभो रकेनिकसिभूखेआइये। देऊतौभातकरजोरग्वालनकह्यौ अहोभूदेवतुमपैपठाये ४ केवलकरुणाटरनिप्रातभोजनक- रनि निगमहूअगमसमहिमाबतावै। कहांप्रभुकौयचनिहम रेमदकौमचनिदेवकीरचनिकछुकहिनजावै ५ शौचआचा

रगुरुकुलहिसेवाकक्रूकुटिलकारकसहियेबुद्धिदीनी। देखो
दूनतियनिकोभागयाजगतमें सच्चिदानंदकोरंगभीनी ६
उमंगिपहिलेचलीपारसंसारके सांवरोकुँवरहियसांझपो-
यो। धरिरहेक्रूरसुरलोकआशाअलपपाइ अमीआशअ-
मतनिचोयो ७ तियाकौतुकमिलीकछुकजानीचली कम
लिनीहियोमनमामिलावैं। शेषत्रिपुरारिब्रह्मादिसनका-
दिसुख चरणकोरेणुशिरपरचढ़ावैं ८ यदपिनारायणअव-
तारयदुकुलविषे सुन्यौबहुभांतितौमननआये। देखोया
दैवकीमायाअतिमोहनी दईहगधूरि हमसबभुलाये ९
धिकजन्मजातिकुलक्रियाखाहास्वधा योगयज्ञजपतपसक
लधूगहमारे। ज्ञानविज्ञानधनधर्मकछुकर्मनहीं इसपद
विमुखआरंभनसारे॥ गृहआगारसंसारदुखसंभवै मिथुन
मगनिरमयोमनमिलावै। सूरकौशोरहरिविमुखनगमें
बड़ेबूझिगयोदीपजबबड़कहावै॥ ऐसेसंसारीजीवबड़ेकहा
वेंसाधुउन्हैंछोटोमानैं॥

बोलिउठोविप्रएकछक्कप्रसंगदेख्यो कह्योरसरंगभ-
रयोढरयोनृपपाइमें। कहीजूविराजेगाजेनितसुखसाजो
जाइकियेहरिराइबशभीजेरहौभाइमें। धारोउरऔरशिर
मौरप्रभुमंदिरमेंसुंदरकेदाशेरागगावैभरेचाइमें। श्यामकं
ठमालटूटआवतरसालहिये देखिदुखपायेपरेबिमुखसुभा
इमें ४३७ नृपतिसिखायोजाइवृथायशछायोकाचेसूतमें
पुहायोहारटूटैख्यातकरीहै। माताहरिभक्तभूपकहोजनि
करोकानतऊबाणिराजसकीमायामतिहरीहै। गयोढिगमं
दिरकेसुंदरमँगाइपाटतागोबटवाइकरिमालागुहिधरीहै।
प्रभुपहिराइकहेउगाइअबजानिपरै भरैसुररागऔरगायो
पैनपरीहै ४३८ बिमुखप्रसन्नभयेतबतौउदारनैदेनयेनये
चोजहरिसन्मुखभाषिये। जानेग्वालबालएकमालगहिर

हेहिये जियेलग्योयहीरूपकहेउलाखलाखिये। नारायणा बड़ेमहाअहे।मेरेभागलिख्यौ करैकौनदूरिकविपूरिअभि-लाषिये। मरौंकहाजाइआपपरसैकलंकतुम्हें राखियेनिशं कहारभक्तिमारिनाखिये ४३६ ॥

नयेनयेचोज ॥ सवैया ॥ अंतिसुधोसनेहकोमारगहै जहँ नेकुसयानप बांकनहीं । तहँसांचेचलैं तजिआपनपौ झि-झकैंकपटी जुनिसांकनहीं। घनआनँदप्यारेसुजानसुनोइत एकतेदूसरोआंकनहीं।तुमकौनधौंपाटीपढ़ेहौलखामनलै तपैदेतछटांकनहीं १ ॥ प्रणराखिलियोतुमभीषमको जब गजराजकेकाजकोधायो। देतबिलंब न लायोसुदामहि पावकते प्रहलाद बचायो। दीनदयाल सुने मनोरामसु याहीतेमैं चितदै गुणगायो। मैंतौ गरीब गरीबरह्यो तुम कैसे गरीबनिवाजकहायो। बड़ीगरीबीगोबिंदा जोपैहोइ गरीब २ ॥ मेरेभागलिख्यो ॥ श्लोक ॥ लिखितंचित्रगुप्तेन ललाटेऽक्षरमालिका। नसापिचालितुंशक्या पंडितैश्छिद्र-शैरपि १ ॥ कबित्त ॥ दीननकेपाल ब्रजपाल हौ अवधपाल गाइनकेपाल नेकु इतैहू निहारिये। बैकुंठकेपाल हरिचौ-दहभुवनपालबिरदकेपालनिज बिरद सँभारिये। भक्तपाल धर्मपाल सृष्टिपाल देशपाल हूजियेदयाल और भांति न बिचारियें। सुरनकेपालकाहौ.सुरतिबिहारी अब येहोजू गोपाल लाल मोहिंना बिसारिये २ ॥ पद ॥ बधिरभयेलौं देवा बधिरभये लौं। अपनो बिरदक्यों बिसरैलौं। कोपियो मंडनीकम्हाने मारिसी। मूढडीक धूलिदाभि थामसी भक्तिकरौतौ नरसी। बोमारियांतौभक्तबछलतारौंबिरद जाइसी। मलेछनीजाति कबीर उधारो नामानाछापि॥ रागपौछाई ॥ जैदेवनैपद माषती आपीमालाने अवलूक भाई। गाइ न फूल सूतनीधागौ दोइदमड़ीने मोलपावी नरसीने एकहार लैं आपतांता रावापनावा परस्योना-वी ३ ॥ दोहा ॥ आसिक शिर अपनाअरे धरदैपैरौलाइ

वैनिशापकमहबूबको करै दूर अनखाइ ४ ॥ झूलना ॥ जिसदे दैरनपरी याकीडा सोघाव दरदक्याजाने। वेदरदानूइस्क मुहेला इस्कंजनादेआने। शिर लाऊ लटूदेसके सों कछु इस्कसयाने। कहै भगवान हित रामराइप्रभुहारन दिल विचआने ४ ॥

रहैतहाँसाहकियेउभैलैबिवाहजानैतिय।एकभक्तकहेह रिकोदिखाइये। नरसीकहीहीभलेसोईप्रभुबाणीलई सांचकरिदईगयेरागछुटवाइये। बोलेपटखोलिदियेकियेदर्श नताने तानेपटसोवैवहंकहीदेवोभाइये। लियेदामकाम कियोकागदगहायदियो दियोकछुखाइबेकोपायोलैभिजा इये ४४० गहनेधर्योहौरागकेदारोसाहघरधरिरूपनर सीकोजाइकैछुड़ायोहै। कागदलैडार्योगोदमोदभरिगा इउठेआयेझनझनश्यामहारपहिरायोहै। भयोजैजैकारनृ पपाइलैलपटाइगयौगह्योहियेभावसोप्रभावदरशायोहै। बिमुखखिसानेभयेगयेउठिनयेमाहिंबिनाहरिकृपाभक्तिप थजातपायोहै ४४१ करनसगाईआयोपायोबरभायोना हिंघरघरफिर्योद्विजनरसीबतायोहै।आइसुखपाइपूछ्यो सुतसे।दिखाइदियोकियोलैतिलकमनदेखतचुरायोहै। अ जूहमलायकनतुमसबलायकहौशायकसोछुटोजाइनामलै सुनायोहै। सुनतहीमाथोठोंकिकहैतालकूटावहबालबो रिआयोजावोफेरिदुखछायोहै ४४२ ॥

गाइछठे ॥ पद ॥ द्योजीद्यौजीराज थारा गलनीमाल म्हानैद्योजीराज। कृपानुकीजैविसुखपतीजैसुखसोंतौबचन कहौजीराज। केशर बरणी कुवँरिराधिका कस्तूरीबरणा

छोजीराज। सांवरी सूरति माधुरी मूरतियहछबिहियरै रहौजीराज। अनाथन नाथ बधूनावाला सुखनासागर छौजीराज। पैठिपताल कालीनागजुनाथ्यो झहारीकरुणाल्योजीराज। जहीनाफूल सूतनोधागो सोकाढ़ै गाढ़गहौजीराज। रिमिझिमि करतौ सांवलियोआयोभरसीमहिता तुमल्योजीराज॥ चौपाई॥ अहोबकी दुष्टाने प्यायो। मारनताहि कुचन विषलायो। दईधाइकी गति पुनिताहि। तादयालुबिन सुमिरौंकाहि॥२॥

काढ़िकैअँगूठाडारौ तबसोउचारौबातमनमेंबिचारौकियोतिलकबनाइकै। जानेसुताभागऐसेरहेशोचपागिसब आवैजबव्याहिबेकोधनदैअघाइकै। लगनहूंलिखिदियो दियोद्विजआनलियोडारिराख्योकहूंगावैतालयेबजाइकै। रहेदिनचारियेबिचारिनहींनेकुमन आयेकृष्णरुक्मिणीजू झूमिमिलेधाइकै ४४३ ठौरठौरपकवानहोततियगानकरैंघुरतनिशानकाननेसुनियेनबातहै। चित्रसुखकियोलैबिचित्रपटरानीआपघोरीरंगबोरीपैचढ़ायोसुतरातहै। करीसोज्यवनारतामैंमानसअपारआये द्विजनबिचारपोटबांधीपैनमातहै। मणिमयहीसाजवाजिगजरथऊंटकोरझमकैंकिशोरआजसजीयोंबरातहै ४४४ नरसीसोंकहैगहैहाथ तुमसाथचलोअंतरिक्षमेंहूंचलौंयेतीबातमानिये। कहीअजूजानौतुममैंतौहियेआनोंयहै लहैसुखमनमेरो फैंटतालआनिये। आपहीविचारसबभारसोंउठायलियोदियोडेरापुरीसमधीकीपहँचानिये। मानसपठायोदिनआयेपैनआयेअहोदेखिछबिछायेनरपूंछैजोबखानिये ४४५॥

आयेकृष्ण॥ पंचाध्यायी॥ अनुग्रहायभक्तानां मानुषंदेह

माश्रितः। भजतेताहशीक्रीडायांश्रुत्वातत्परोभवेत् ॥ २ ॥ मिलेधाइकै। कोऊकहैनरसीने कृष्णको साक्षात् ठाकुर जाने होहिंगे कैराजा कै साहूकारजानेहोहिंगे सोनहीं पुरके न जाने नरसीने हरिहीजाने १ ॥ दशमे ॥ मल्लानामशनिर्नृणांनरवरःस्त्रीणांस्मरोमूर्तिवान् गोपानांस्वजनोसतांक्षितिभुजांशास्ताखपित्रोःशिशुः। मृत्युर्भोजपतेर्विराटविदुषांतत्वंपरंयोगिनां वृष्णीनांपरदेवतेतिविदितो रंगंगतःसाग्रजः ॥

नरसीबरातमतिजानोयहनरसीकी नरसीनपावैंऐसो समझअपारहै। आइकैसुनाईसुधिबुधिबिसराईअहोकरत हँसाईबातभाषोनिरधारहै। गयोजोसगाईकरिदरवरआ योद्विजनिजअंगनैंनमातकैसेरंगबिस्तारहै। कहीएकघास धनरासमोनपूजैकिहूं चहूंदिशिपूरिरहीदेख्योभक्तिसारहै ४४६ चलेअचरजमानिदेखिअभिमानगयोलयोपाछोत्रा ह्मणकोहमैंराखिलीजिये। जाइगहिपांइरह्योभाइभरिद याकरोगयेहगभरेपांइपरेकृपाकीजिये। मिलेभरिअंकलै दिखायोसोमयंकमुखहूजियेनिशंकइन्हैंभोरसुतादीजिये। ब्याहकरिआयेभक्तिभावलपटायेसब गयेगुणजानैजितैसु निसुनिजीजिये ४४७ ॥ मूल ॥ दिवदासबंशजसोधरस दनभइभक्तिअनपाइनी। सुतकलत्रसंमतसबैगोबिंदपरा यन। सेवतहरिहरिदासद्रवतमुखरामरसायन। सीताप तिकोसुयशप्रथमहीगमनबखान्यो। द्वैसुतदीजेमोहिंक बितसबहीजगजान्यो। गिरागदितलीलामधुरसंतनआ नँददायिनी। दिवदासबंशजसोधरसदनभईभक्तिअनपा इनी २०६ ॥

नरसीबरात् हृष्टिकूट॥ इच्छाग्रवासीनचपक्षिराजः दुग्धं अवंतीनच कामधेनुः। चिनेत्रधारीनचशूलपाणिः नारीचना मानचराजकन्या १॥ हमैंराखिलीजै हमतौ तेरेराखेरहे हैं नहींतौ धनहूं जाइगो अरु अयशहोइगो ब्याहकरि आयेक जकहै नरसीकी ऐसीसहायकरी यह तौ बड़ो अचरजहै कबित्तसबहोजगहै॥ दोहा॥ रामरामसबकोउ कहै दशरथकहै नकोइ। एकबार दशरथकहै कोटियज्ञ फलहोइ। दशरथतौ बड़ेई सामर्थ्यमान्हैं जिनके नामसों आठौंसिद्धि नवोनिधिआगेरहैं ३॥

श्रीनंददासआनंदनिधिरसिकसुप्रभुहितरँगमगे। लीलापदरसरीतिग्रन्थरचनामेंनागर। सरसउक्तियुतयुक्तिभक्तिरसगानउजागर। प्रचुरयपयलौंसुयशरामपुरग्रामनिवासी। सकलसुकलसंबलितभक्तपदरेणुउपासी। चन्द्रहासअग्रजंसुहृदपरमप्रेमपयमेंपगे। श्रीनंददासआनंदनिधिरसिकसुप्रभुहितरँगमगे २१०॥

रसिक॥ दोहा॥ घरको परनो परिहरयो कहौकौन उपदेश। तुलसी यासों जानिये नहींधर्मको लेश॥१॥ हम चाकर रघुनाथके जन्मजन्मकेदास। रूपमाधुरी मनहरयो डारिप्रेमकीफांस २॥ कबित्त॥ अधरबंधूक औबदन अधिकाईछबि मानोंबिधि कीनीयहरूपको उदधिकै। कान्ह देखीआवत अचानक मुरछगिरे घूंघटउघारि राधयोसखिनकेमधिकै। गंगगईमारिसर मृगगिरघरबेधे अधिकअधीनभयेचितवनि तधिकै। बाणबेधे बधिक बधेकोफेरि खोजलेत बधिक बधूनखोज लियेबाण बधिकै ३॥ लीलापद॥ पहिले तौ देखौआइ माननीकी शोभालाल तापाछे लीजिये मनाइ प्यारेहो गोबिंद। करपैदीये कपोल रहीहै नयनन मूंदि कमलबिछाय मानोंसोयोहै पूर्णचन्द। रिसभरीभौं

हैमानौं भौंरबैठे अरबरात इंदुतरेआयो मकरंद भख्यो अरबिंद। नंददास प्रभु ऐसीप्यारीको रूसैये बलिजाके मुखदोखेते मिटत सबै दुखद्वंद ४॥ दोहा॥ जिहिघटबिरह आवा अगिनि परबकभये सुभाइ। ताहीघटमें नंदहो प्रेम असीठहराइ५॥ कुंजकुंज प्रतिपुंजअलि गुंजतइमि परभात। रबिडर तमसब भजिगयो रोवत ताकोतात ६॥ अवला निसरी तीरजब नीरचुवत बरचीर। जनुअंसुवनिखागी झरी तनबिछुरनकी पीर ७॥

मूल॥ संसारसकलब्यापकभईजकड़ीजनगोपालकी। भक्तितेजअतिभालसंतमंडलकोमंडन। बुधिप्रवेशभागवत ग्रंथसंशयकोखंडन। नरहरिग्रामनिवासदेशवागडनिस्तार्यो। नवधाभजनप्रबोधिअनन्यदासनब्रतधार्यो। भक्ति कृपावांछीसदापदरजराधालालकी। संसारसकलब्यापक भईजकड़ीजनगोपालकी २११ माधवदृढ़महिउपरैंप्रचुर करीलोढाभगति। प्रसिद्धप्रेमकीराशिगढ़ागढ़परचोदियो। ऊंचेतेभयोपातश्यामसांचोप्रणकियो। सुतनातीपुनिसदृश चलतऊहीपरिपाटी। भक्तनसोंअतिप्रेमनेमनहिंकिहुंअंग घाटी। नृत्यकरतनहिंतनसँभारसमसरजनकनकीसकति। माधवदृढ़महिउपरैंप्रचुरकरीलोढाभगति २१२॥

जकड़ीसाखी अरीसुनि आतुमप्यारी लालमनाइलै। पहिलेरी पहरै रैनिके तेनवसत साजे। यह प्रीतमसनभाव तो तेरेनिकट बिराजे। माननकीजे पीयसों अरीतेरो योवनलाजे। दूजेरी पहरै रैनिके तैं मरम न जान्यो। यह योवन बहु मोलको लैबिषमें सान्यो। तीजेरीपहरैरैनिकेतू मनऊंम चेती। अंगनदियो सुजानको मैंबकीजकेतो। फिरि पाछे पछितादूगी मिलिसाहब सेती। चौथेरी पहरैरैनि

के शशि ज्योतिउम्मानी। मैंतौतोहिंबज्ञतैकहीतैंचितनहिं आनी। येदेखौ पञ्चपीरी भई टरैसरवरपानी। खेमरसिक भये भोरकै सुंदरि पछितानी १॥ अतिप्रेम॥ दोहा॥ प्रेम भक्ति एकौपलक कोटिबरषकोयोग। प्रेमभक्तिसब योगहै योग प्रेमबिन रोग १॥

माधवदासजीकीटीका॥ गढ़ागढ़पुरनाममाधवबढ़िप्रेमभूमिलोटैजबनृत्यकरैभूलैसुधिअंगकी। भूपतिबिमुखझूठ जानिकैपरीक्षालईआनतीनिछातिपरदेखीगतिरंगकी। नूपुरनिबांधिनाचिसांचसोदिखायदियो गिरेहूकराहिमध्य जियोमतिपंगकी। बड़ोत्रासभयोनृपदासबिश्वासबढ़ोमढ़ेउउरभावरीतिन्यारीहीप्रसंगकी ४४८॥ मूल॥ अभिलाषभक्तअंगदकोपुरुषोत्तमपूरणकियो। नगअमोलइकताहिसबैभूपतिमिलिजाचै। श्यामदासबहुकरैदासनाहिनमनकाचै। एकसमयसंकटलेवपानीमेंडार्यो। प्रभूतिहारी बस्तुबदनतेबचनउचार्यो। पांचदोइसतकीसतैंहरिहीरालैउरधर्यो। अभिलाषभक्तअंगदकोपुरुषोत्तमपूरणकियो २१३ टीकाअंगदभक्तकी॥ राइसैनगढ़बासनृपसोसलाहदीनताकोयहकाकारहैअंगदबिमुखहै। ताकीनारी प्यारीप्रभुसाधुसेवाधारीउर आयेगुरुघरकहैकृष्णकथासुखहै। बैठेभौनदेखिकौनकैसेमौनरहोजातबोल्योतियाजातिकहाकरौनररूपहै। सुनिउठिगयेबधूअन्नजलत्यागिदियेलियेपांवजाइबिषयबशभयोदुखहै ४४६॥

गढ़ागढ़॥भागवते॥ ज्ञानत:सुलभामुक्तिर्भुक्तिर्यज्ञादिपुण्यत:। सेयंसाधनसाहस्रैर्हरिभक्ति:सुदुर्लभा १॥ कृष्णकथा

खहैसोगुरुसों पूछें एकनित्य मुक्तितेन पूछै निरवधि विष योन पूछेंमुमुक्षु पूछैंजिज्ञासू २॥ छप्पै॥ तातमात सुत भ्रात आपको बंधनमाने। छुटैकर्म नहिंलेश यहैडरअंतर जाने। जन्म मरणकी शंकरहै निशिदिन मनमाहीं। चौरासीके दुःख नेकु नहिं बरणे जाहीं। इहिभांति सदा शोचत रहैं संतन सों पूछत फिरै। हैकोऊ सतगुरु ऐसोसोमेरो कारजकरै ३॥

मुखनदिखावैयाहिदेख्योईसुहावैकहीभावैसोईकरोने कुवदनदिखाइये। मैंहूंजलत्यागिदियोअन्नजातकापैलियो जीयोजबनीकेतबआपकछूखाइये। बोलीमोसोंबोलोजि निछाड़ोतनयाहीछिनप्रणासांचोहोतौतौपैसुनतसमाइये। कहौअबकीजैसोइमेरीमतिगईखोई भोईउरदयाबातकहि समझाइये ४५० वेईगुरुकरौजाइपायनिमेंपरिगयोचाइ निलिवायल्यायोभयोसिखदीनहै। धारीउरमालभालति लकबनाइकियोलियोसीतप्रीतिकोऊउपजीनवीनहै। च ढ़िफौजसंगचढ्योबैरीपुरमरिबढ्यो कढ्योढोपीलैकैहीरास तएकपीनहै। डारैसबबेचिपागपेचमध्यराख्योमुख्यभा ष्योसोअमोलकर्योजगन्नाथलीनहै ४५१ कानाकानी भईनृपबातमेंसुनिलईकहीहीरावहदेयतौपैऔरमाफकिये हैं। आपसमझावैबहुयुगतिबतावैयाकेमनमेंनआवेजाइस बैकहिदियेहैं। अंगदबहनिलागैवाकीभूवापागैतासों देवो विषमारोफेरितूहीपगछियेहैं। करतरसोईघरगरलमिला यपाकभोगहूलगायोअजूजेबोबोलिलियेहैं ४५२॥

वेई॥दोहा॥ डरबारस डरपरम गुरु डरकरनीमें सार। बोजीडरै सुजबरै गांफिल पावैमार१ प्रीति॥भागवत॥य-

स्यदेवे पराभक्तिर्यथादेवेतथागुरौ । तस्यतेकथिताह्यर्थाः प्रकाशंते महात्मनः २ वक्रयुगति बताकै सामदाम दंडभेद सनेह धनभेद ३ भूवासों बोल्यो तेरोभाई अंगद बड़ोदुष्ट है तेरे निमित्तगांवबकस दियेहैं सो तो को न दियेअब याहि मारि सबदेश को पट्टातोहीं को करिदेहिंगे४ ॥

वाकीएकसुतासंगलैकेबैठेजेंवनको आईसोछिपाइकहीजेंवोकहूंगईहै । जेंवतनबोधहारीतबसोविचारीप्रीतिभीतरोइमिलीगुरैरीतिकहिदईहै । प्रभुलैजिमायेरांड़भांड़कैनिकासद्वारदैकरिकिंवाररसपायोआपनईहै । बड़ोदुखहियेरह्योकह्योकैसेजातकाहू बातसुनीनृपहूनेजैसीभांतिभईहै ४५३ चलेनीलाचलहीराजाइपहिराइआवैंआइघेरिलीनेनृपनरनिखिसाइके । कहीडारिदेवोकैलराइसन्मुखलेहुबसनहमारोभूपआज्ञाआयेराइके । बोलेनेकुरहौमैंअन्हाइपकराइदेत हेतमनऔरजलडार्योलैदिखाइके । वस्तुहैतिहारीप्रभुलीजियेउबारीयहबाणीलागीप्यारीउरधारीसुखपाइके ४५४ एतौघरआयेवेतौजलमधिकूदिधायेअतिअकुलायेनेकुखोजहूनपायोहै । राजाचलिआयोसबनीरकढ़वायोकीचदेखिमुरझायोदुखसागर बुड़ायोहै । जगन्नाथदेवआज्ञादईसुधिदेवोजायआयकैसुनाईनरतनबिसरायोहै । गयोजाइदेख्योउरपरजगमगरह्योलह्योसुखनैननिकोकापैजातगायोहै ४५५ ॥

बैठेजेंवनको अंगद जेंवनको वहिनिकीकन्या वो संगलै बैठतौ कन्यासोइ तौ सनेह सो सनेह में भक्तिकैसी यह साचात् लाड़िली लालकी सखी प्रगट भईहै यह स्वरूप सखाबिना औरकहां अरुहमारे भक्तन के घरमें जन्मै

सो सामान्य जीवहै सोनहीं परकार की जातिको भाव कियौ भावही सों प्रीति ह्वै है हेलसन और अवसेरो बलनहीं पक्ष चैतवविचारि कही हरि सवेच्छ है सो जलमें डारिदियो सो भगवान ने अलगही लियौ १ सर्वत: पाणि पादेति ॥

राजाहियेतापभयोदयोअन्नत्यागिकर्योआवैजोपैभागमेरेब्राह्मणपठायेहैं । घरनोदैरहेकहेनृपकेवचनसबतवह्वैदयालनिजपुरढिगआयेहैं । भूपसुनि आगेआइपाइलपटायगयोलयोउरलाइदृगनीरलैभिजायेहैं । राजासर्वसुदियोजियोहरिभक्तिकियोहियो सरस्योगुणजानेजितेगायेहैं ४५६ ॥ मूल ॥ चतुरभुजनृपकीभगतिकोकौनभूपसरवरकरै । भक्तआगमनसुनतसन्मुखजोजनइकजाई । सदनआनिसतकारसदृशगोविन्दबड़ाई । पादप्रच्छालनसुहथराइरानीमनसांचें । धूपदीपनैवेद्यबहुरितिनआगेनाचें । यहरीतिकरौलाधीशकोतनमनधनआगेधरै । चतुरभुजनृपकीभगतिकोकौनभूपसरवरकरै २१४ ॥ टीका ॥ पुरढिगचार्योओरचौकीराखीयोजनपैयोज नहींआवैतिन्हैंलावतलिवाइके । मालाधारीप्रभुसनमानिआवैकोऊद्वारजोपैकरैवहीरीतिसोसुनाईछप्पैगाइकै । सुनीएकभूपभक्तिनिपटअनूपकथासबकोभंडारखोलिदेतबोल्योधाइकै । पात्रऔअपात्रमोविचारहीजोनहींतोपै कहाऐसीबातदईनैकुमेंउड़ाइकै ४५७ ॥

जगमगरह्यौ ॥ कवित्त ॥ तरवा जलाईनख चंद्रिका सुछबिछाई हियमें समाई वह कैसे कहिजात है। नूपुरादि

चूरा पगधौती पगि रही लगिक्षुद्रघंटिका अनूप ज्योति जगमगातहै। भागा बूटेदारवनमालमोतीहीराकांतिकौन कवि उपमाकहन सकात है। तिलक विशाल माथे चीरा छविजाल जापैकलगी रसाल देखि अंगद सिहात है १ राजाके हियेताप॥ दोहा॥ विषइनि के शिरपर रहैसाधु फूलके गुच्छ। कैवलतन वसभूमि में परेरहै मनसुच्छ २॥

भागवतगावैभक्तभूपएकबिप्रतहांबोलिकैसुनावैऐसी मनजिनलाइये। पावैआसैकौनहृदयभवनमेंप्रवेशकरिभरिअनुरागकहाउरमधिआइये। करीलैपरीक्षाभाटभिक्षुक पठाइदियोदियोमालातिलकद्वारदासयोंसुनाइये। गयौ गयौभूलिफूलकुलबिस्तारकियो लियोपहिंचानिअबजान कैसेपाइये ४५८ बीतेदिनतीनिबीसआईवससीखसुधिक हीहरिदासकोऊआयोयोंसुनाईहै। बोलेजूनिशाकजावो गावोगुणगोबिंदकेआयेघरमध्यभूपकरीजैसीभाईहै। भक्तिकेप्रसंगकोनरंगकहूंने कुजान्योजान्योउनमानसोपरी क्षामँगवाईहै। दियालैभंडारखोलिलियोमनमान्योद ईसंपुटमेंकौड़ीडारिजरीलपटाइये ४५६ आयोवहीराजा पाससभामेंप्रकाशकियोलियोधनदियोपाछेसोईलै दिखा योहै। खोलिकेलपेटामध्यसंपुटनिहारिकौड़ीसमुझिबिचा रैहारैमनमेंनआयोहै। बड़ाभागवतबिप्रपंडितप्रबीण महानिशिरसलीन जानिआनिकैबतायोहै। कर्योउन मानभक्त मानकोप्रमानजरी मूंदिकैपठायो ताहिगुण समुझायोहै ४६०॥

उड़ायके॥ कवित्त॥ सरलसों सटकहैं बक्रासों ढीठकहैं

विनयकरै तासोंकहैंधनकोअधीनहै। धर्मीसों निवलकहैं दम्भीसों अदत्तीकहैं मधुर वचन कहै तासों कहैंदीन है। दातासों दंभीकहै निस्नेहीसो गुमानी कहैं तृष्णाघटावै तासोंकहैं भागहीनहै। साधुगुण देखेअहोतहांही लगावै दोष ऐसोकछू दुर्जन को हृदोई मलीन है १ भगतभूप है॥ श्लोक ॥ पुष्पाणां स्तवकस्येव द्वयोरीतिर्मनीषिणां। सर्वलोकस्यमूर्ध्नाऽस्तेविशीर्येतवनेपिवा२ ॥

राजारीझपांवगहेकहेजूवचननीके ऐपैनेकआपजाइ तत्वयाकोलाइये । आयेदौरिपांइलपटायेभूपभावभरे परेप्रेमसागरमेंचरचाचलाइये । चलिबैनदेतसुखदेतच-लेलोलमनखोलिकेभंडारदियोलियोनरिझाइये । उभैसु वासारोकहीएककरधारोमेरे दईअकुलाइलईमानोनिधि पाइये ४६१ आयोराजसभावहुवातनिअखारोजहांवेली उठीसारोकृष्णकहोझारिडारेहैं । पूछैंनृपकहोअहोलहो सबयाहीसोंजुपंछीवासमाजरहेहरिप्राणप्यारेहैं । कोटि कोटिरसनाबखानोपैनपाऊंपार सारसुनिभक्तिआपशीश पावधारेहैं । राखौयहखगतनमनपगिरह्योश्यामअतिअ भिरामरीतिमिलेऔपधारेहैं ४६२ ॥

उभय सुवासारो ॥ अरिल्ल॥ शिरपैठाढ़ो कालयवेंडोदे-हिहै। भयोधुंधमें अंधकहा करिलेहिहै। रामकृष्णकहुमूढ़ फेरि पछिताहिहै। दुनियादौलत छांड़ि अकेला जाइहै॥ १ भाग्योहै सुटमरदम बासीकैदतै। बली न जीत्योजाय हजारन जैदतै। महाराज मैं अर्जकरौं सुनु कानदै। अरि हामारि बांधिकै छांड़ि याहि जिनजान दै २ पद॥ कोई सुनियोसंतसुजान दियो हरिखारे। जोतूकहै मेरे द्रव्य बहुतहै संगन चलै अधेलारे। जोतू कहै मेरे कटुंब बहुतहै

यमलैचले अकेलारे। कहतकबीर सुनौभाई साधौ मनको कालिले चेलारे ३ छाण काङ छाण काङ छाण काङ भाई। छाडूगी वही जो प्रभुने बनाई। राखौ॥ तापै बेलसाफकीर कोदृष्टांत इसारोद्वारकाहिगा॥

मूल ॥ लोकलाजकुलशृंखलातजि मीरागिरिधर भजी। सदृशगोपिकाप्रेमप्रगटकलियुगहिदिखायो। नरश्रं कुशश्रतिनिडररसिकयशरसनागायो। दुष्टनदोषबिचार मृत्युकोउद्यमकीयो। बारनबांकोभयोगरलअमृतज्यों पीयो। भक्तनिशानबजायकेकाहूतेनाहिंनलजी। लोक लाजकुलशृंखलातजिमीरागिरिधरभजी २१५॥

लोकलाज॥ कवित्त॥ छीरमें यों नीर ज्यों समानी बूंद सागर में तनमेंसुमन बासभोइूगी सुभोइूगी। तेरी देखिबेकी बानि नयननिमेंपरीआनि आनिकुल कानि अबखोइूगी सुखोइूगी। लोक परलोकहूकी भली सुधि जधो रामयहैबात मनसांक्ष न इूगीसुभोइूगी। रूपउजि यारे गुणभारे लालप्यारे आंखैंताहीसों लगीहैं होनी होइूगी सुहोइूगी १ गिरिधर भजी गिरिधरने मीरा बाई भजी अथवा मीराबाई जीने गिरिधर को भज्यो याते सनेहीही नेहकी मूर्तिहै २॥ कवित्त॥ नेहराज रूप राज रसिक रसाल राज नैन सुखराजलै उठायो गिरि राजहै। छोटेसे करवरश्रंगुरी पै धरयो गिरिखुभीकोसो छत्रवह रिलिये गजराजहै। हाथनिललाई तामें पङ्-कजनिक बिछाई ऊंचो कियो हाथसब छबिको समाजहै। नयननिकी सैननिसों कहैं अलबेली सखी चोरि चोरि खायोदधिकास आयो आजहै २ नेकुजो निहारो पिया प्राणनिकी प्यारी अति पंकजसे हाथनिलै धारयोगिरि भारोहै। प्रेमसों लपेटी कहैनेहभरी बात आली लेकूरी

लकटु नेकु देहरी सम्हारो है ५ कहै हंसिश्राली मिलि कामश्रायो आजु बल खायो दधिम।खन जो चोरिकै ह-मारो है। नेहभरी बातसुनि हियहुलसात मंद मंद मुसु-कात मुख रूपको उज्यारो है १ कवित्त॥ सबहीके ग्वाल बाल गोधनहैं सबहीके सबहीको आनि परी प्राणनकी भीरहै। सबहीपै मेघ बरषतहैं सुगा।लाधार सबही को छेदछाती करत समीर है। किधौं यह छोटोई अनो-खोढोटा मांगि आन्यौ याबोझिल पहाड़ तर कोमल शरीर है। नेकु याके हाथते गिरिलेउ क्यों न का।ऊ तुम जातिके अहीर पै न काहु हिय पीरहै २ सहश गोपिका प्रेम॥ कवित्त ॥ पीरी परिगई अरुणाई गई आननते कानन गईही सोसयान सुख भाग्यो है। चलि चलि कहै बैन फिरि फिरि जात नैन भईबिन चैनमैन अंगअंग राग्योहै। काशीराम औरको यतनुकोन गिनती में चण चण छीजै देहनेह रंगपाग्यो है। हरि अवधूत और हेत सों न नीकोहोति भूत नाहिं लाग्यौ याहि नंदपूत ला-ग्यो है ३॥ पद॥ अबजो यातनको फेरि बनावैं। तऊनंद नंदन बिन ऊधो औरन मनमें आवैं। जो या।तनकी त्वचा उचेले लैकरि दुंदुभि सजई। मधुरभतंग शब्द सुरसुनियत लाल लालई बजई। छूटैं प्राण मिलै तनमाटी द्रुमलागै तिहि ठाम। सुनि अवसूर फूलफल शाखा लेतउठे हरि-नाम ४ भक्ति निशान बजायकै॥ माझ॥ जिन दांवनि हम महलीह्रपे तिनदावनि तेनहिं जाने। पायं दाज न अंदर पहुंचे निंदाकरत खिसाने। कुंजमहल बासिंदा हमनिंदा अहिसानेमाने। वल्लभ रसिक चुनिन्दाह्रये बजि निंदा सहदाने ५॥

टीकामीराबाईजीकी। मेरतौजनमभूमिझूमिहितनैम लगेपगेगिरिधारीलालपिताहीकेधाममें। रानाकेसगाई भईकरीब्याहसामानईगईमतिबूड़िवारँगीलेघनश्याम में

भाँवरैपरतमनसाँवरेस्वरूपमांझ तामरैसीआवैचलिबेको पतिग्राममें। पूछैंपितुमातुपटआभरणलीजियेजू लोचन भरतनीरकहाकामदाममें ४६३ देवोगिरिधारीलालजो निहालकियोचाहौऔरुधनमालसबराखियेउठाइकै।बेटी अतिप्यारीप्रीतिरंगचढ्योभारी रोइमिलीमहतारीकही लीजियेलड़ाइकै। डोलापधराइदृगदृगसोंलगाइचली सुखनसमाइचाइप्राणपतिपाइकै। पहुंचीभवनसासुदेवी पैगमनकियोतियाअरुबरमठिजोरोकह्योभाइकै ४६४ देवीकेपुजाइबेकोकियोलैउपाइसासु वरपैपुजाइपुनिवधू पूजिभाषिये। बोलीजूबिकायोमाथोलालगिरिधारीहाथ औरकोननवैएकवहीअभिलाषिये। बढ़तसुहागयाकेपूजे तातेपूजाकरो मतहठकरोशीशपाइनिमेंराखिये।कहीबार बारतुमयहीनिरधारजानौ वहीसुकुमारजापैवारिफेरिना खिये ४६५॥

बिकायो माथो॥सवैया॥ पल काटौं दून नयननके गिरिधारी बिना पल अंत निहारै। जीभकटै न भजै नँद नंदन बुद्धिकटै हरिनाम बिसारै। मीरा कहै जरिजाऊ हियो पद पंकज बिनपल अंत न धारै। शीशनवै ब्रजराज बिना वह शीशहि काटि कुवांकिन डारै १॥ दोहा॥ रसनकटै आनहिं रटै फुटैं आन लखिनैन॥ श्रवणफुटैतेसुने बिन श्रीराधा यश बैन २ कहीबारबार॥ दोहा॥ यशुदा बारबार यौंभाषै। हैकोऊऐसो हितू हमारो चलतगोपा- लै राखै ३॥

तबतौखिसानीभईअतिजरिबरिगईगईपतिपासयहव धूनहींकामकी।अबहींजवाबदियोकियोअपमानमेरोआगे

क्योंप्रमाणकरैभरैश्वासचामकी। रानासुनिकोपकर्योध- र्योहियेमारिबोईदईठौरन्यारीदेखिरीझमतिबामकी। ला लनलड़ावैगुणगाइकैमल्हावैसाधु संगहीसुहावैजिन्हैंला गीचाहश्यामकी ४६६ आइकैननँदकहैगहैकिनचेतभाभी साधुनसोंहेतमैंकलंकलगैभारिये। रानादेशपतीलाजैबापु कुलरतीजातिमानिलीजैबातबेगिसंगनिरवारिये। लागे प्राणसाथसंतपावतअनंतसुख जाकोदुखहोयताकोनीकेक रिटारिये। सुनिकैकटोराभरिगरलपठायदियोलियोकरि पानरंगचढ़ेउयोंनिहारिये ४६७॥

लागेप्राणसाथ॥ कोऊकहो कुलटा कुलीन अकुलीन कहौ कोऊकहै अंकन कलंकनि कुनारीहौं। कैसेसुरलोक नरलोक परलोक सब कीनमैं अलोक लोक लोकनतेंन्यारीहौं। तनजाऊ मनजाऊ देव गुरुजनजाऊ जीभ क्योंन जाऊटेक टरत न टारीहौं। वृंदाबनवारी गिरिधारीके मुकुटपर पीतपटवारकी मैं मूरतिपै वारीहौं १॥ तारेक्यों नतजौं रैनि नयनशीघ्र क्योंनतजो जीवक्योंन जाऊ सोउ अबहीं यातनते। तनक्योंन नरिजाऊ जरिक्योंन छारहोऊ छार क्योंन उड़िजाऊ बिरह पवनते। सैनकहै वहचलनि चितवनि वनिमनबसीरी जबते आयेबनवारी बनेबनते। जानोह्व सुनाऊ अरुरहै सोतोरहो आली माधवजीकी प्रीति जनिजाऊ मेरेमनते २॥

गरलपठायोसोतौशीशपैचढ़ायोसंग त्यागविषभारी ताकीझारनसम्हारीहै। रानानेलगायोचरबैठेसाधुढिग ढरितबहींखबरिकरिमारोअहधारीहै। राजैगिरिधारीला लतिनहींसोंरंगजालबोलतसहतख्यालकानपरोप्यारीहै।

जाइकैसुनाईभईअतिचपलाईआयो लियेतरवारिदैकिवां
ड़खोलिन्यारीहै ४६८ ॥

गरल ॥ पद ॥ रानाजी जहरदियो हमजानी । जिन
हरि मेरोन्याव निबेरो छान्यो दूध अरुपानी । जबलगि
कंचन कासियतनाहीं होत न बारहबानी । अपनेकुलको
परदाकैले होंअबला बवरानी । श्वपचभक्तपरवारोंबिमुख
सब हौं हरिहाथ बिकानी । मीराप्रभु गिरिधरभजिबेको
संतचरण लपटानी १॥ दोहा ॥ बड़ीभक्तिमीरागहीराना
के बड़ीभूल । चरणामृतकहि बिषदियोभयोसजीवनिमूल
२ ॥ चपलाई ॥ चौपरिखेलौं पीवसों बाजीलावोंजीव । जो
हारों तौपीवकी जोजीतोंतौपीव ३ ॥ वेगिदै बताइये तर-
वारि हाथसे नांगीहै कोइहमिषयीनरकहांगयो ४दोहा॥
निकटवस्तु दीखैनहीं धृगजीवनहैजिंद । तुलसीऐसेजगत
को भयोमोतियाबिंद ५ सबैचतुर अरुबड़ हैं अपने अपने
ठौर । सबतजिकै हरिकोभजै सोइचतुर शिरमौर ६ ॥

जाकेसंगरंगभीजिकरतप्रसंग नानाकहांवहनरगयोवे
गिदैबताइये ।आगेहीबिराजैकछूतोसोंनहींलाजेअभूदेखि
सुखसाजेआंखिखोलिदरशाइये । भयोईखिसानोरानालि
ख्योचित्रभीतिमानोउलटिपयानोकियोनेकुमनआइये। दे
ख्योहूप्रभावऐपैभावमेंनभिद्योजाइ बिनहरिकृपाकहोंकै-
सेकरिपाइये ४६६ विषयीकुटिलएकभेषधरिसाधुलियो
कह्योयोंप्रसंगमोसोंअंगसंगकीजिये । आज्ञामोकोदईआप
लालगिरिधारीअहोशीशधरिलेईकछूभोजनहूकीजिये।सं
तनसमाजमेंबिछाइसेजबोलिलियोशंकअबकौनकीनिशंक
रसपीजिये । श्वेतमुखभयोबिषयभावसबगयोनयोपांयन
मेंजाइमोकोभक्तिदानदीजिये ४७० रूपकीनिकाईभूपअ

अकबरभाईहियेलियेसंगतानसेनदेखिबेकोआयोहै। निरखिनिहालभयोछबिगिरिधारीलाल पदसुखजालएकतब हीँचटायोहै। वृन्दावनआईजीवगुसाईजीसोंमिलिझिली तियामुखदेखिबेकोपनलैछुड़ायोहै । देखोकुंजकुंजलाल प्यारीसुखपुंजभरीधरीउरमांझआइदेशबनगायोहै४७१॥

भाई अकबरने तानसेनसों पूछी सांवरेपै सबरीझेहैं तहां मीराबाईपै तब दर्शनको आयो १॥ पदसुखजाल १ पद ॥ प्यारीके कचबिथुरे मानों धाराधरकी श्यामघटा उनही तामधि पुहुप छूटिपरे जैसे बड़ीबड़ीबूंदें। तामधि मुक्तबग पांति तरौना अलकबीच बिजुलतासी कौंधनिनैन खंजनरी पिक बोलनि बोलैंकूंदें । लालसारी पहरैहरी कोर मघवा धनुसी घूंघटकरि चलीपीठपाछे नैतरकेलाल मुनियांसी कंचुकीतनीकी फूंदें। मेहँदीसों आरक्तनखबीर बहूंटी ऐसी पावस बनितामिली मीरागिरिधरसुलेकाम प्रीतिकाम हारगूंदें २॥

रानाकीमलीनमतिदेखिबसीद्वारावति रतिगिरिधारी लालनित्यहीलड़ाइये । लागीचटपटीभूपभक्तिकोस्वरूप जानिअतिदुखमानिबिप्रश्रेणीलैपठाइये। बेगिलैकेआवो मोकोप्राणदैजिवावोअहोगयेद्वारधरनोदैबिनतीसुनाइये। सुनिबिदाहोनगईराइरनछोरजूपै छांड़ोराखोहीनलीनभ ईनहींपाइये ४७२ ॥ मूल ॥ आवैरअछिनकूमकेद्वारका नाथदर्शनदियो। श्रीकृष्णदासउपदेशपरमतत्त्वपरचोपा यो। निर्गुणसगुणस्वरूपतिमिरअज्ञाननशायो। काछबा छनिःकलंकमनोगांगेययुधिष्ठिर । हरिपूजाप्रहलादधर्म ध्वजधारीजगपर । पृथ्वीराजपरचौप्रगटतनशंखचक्रम

डितकियो । आवेरअछितकूर्मकोद्वारकानाथदर्शनदियो २१६ पृथ्वीराजराजाकीटीका॥ पृथ्वीराजराजाचल्योद्वारकाश्रीस्वामीसंगअतिरसरंगभर्योआज्ञाप्रभुपाइये । सुनिकैदिवानदुखमानिनिशिकानलग्योकहीपर्योसाधुसेवाभक्तिपुरछाइये। देखियेनिहारिकैबिचारकीजेईच्छाजोईली जेनहींसाथजावोबातलैदुराइये । आयोभोरभूपहाथजोरिकरिठाढ़ोरहेउकहोरहोदेशसोनिदेशनसुहाइये ४७३ ॥

बिदाहोनगई ॥ पद ॥ हरिकारो जनकीभीर । द्रौपदीकीलाजराखी तुमबढ़ायो चीर । भक्तकारण रूपनरहरि धर्योआपशरीर। हिरण्यकश्यप मारिलीनो धर्योनाहिंन धीर । बूड़ते गजराज तार्‍यो कियो बाहर नीर । दास मीरालालगिरिधर जहांदुख तहँपीर १ ॥ सजनसुधि ज्यों जानो त्योंलीजे।तुमबिनमेराऔरनकोईकृपारावरीकीजे। द्योसनभूखरैनि नहिंनिद्रा यहतन पलपलछीजे । मीरा प्रभुगिरिधर नागर अब मिलि बिछुरन नहिंकीजे २ ॥

द्वारावतिनाथदेखोगोमतीस्नानकरौं धरौंभुजछापअभ्यमनअभिलाखिये । चिन्ताजिनिकीजै तीनोंबातइहांलीजैअजूदीजैजोईआज्ञासोईशिरधरिराखिये । आयेपहुंचाइदूरिनैनजलपूरिबहेदहैउरभारीकहांसंगरसचाखिये । बीतेदिनदोइनिशिरहेहुतेसोइसोइ गईभक्तिगिराआइबाग्रीमध्यभाखिये ४७४ अहोपृथ्वीराजकहीस्वामीहीसोंबानोलहीआयोडठिदौरिवाहीठौरप्रभुदेखेहैं । धूम्योकह्योकानधरोगोमतीस्नानकरो सुनिकैअन्हायोपुनिवेनकहूंपेखेहैं।शंखचक्रआदिछापतनसबछ्यापिगई भईयोंअवाररानीआइअवरेखेहैं । बोलेरह्योनीरमेंशरीरलैसनाथकीजै

लीजैनाथहियेनिजभागकरिलेखेहैं ४७५ भयोजबभोर पुरबड़ोभक्तशोरपर्योकर्योआनिदरशनभईभीरभारीहै। आयेबहुसंतऔमहंतअड़ेबड़ेवाये अतिसुखपायेदेहरचना निहारीहै। नानाभेदआवैंहितमहिमासुनावैंराजा सुनत लजावैंजानीकृपाबनवारीहै। मंदिरकरायोप्रभुरूपपधरा योसबजगयशगायोकथामोकोलागीप्यारीहै ४७६ वि- प्रअंगहीनसोअनाथबैजनाथद्वार पर्योचपचाहैमासकेति कबिहानेहैं। आज्ञाबारदोइचारभईहैफेरिहौंहियाकोहाठ सारदेखिशिवपिघलानेहैं। पृथ्वीराजअंगकेअंगोछासों अगोंछोजाइआइकेसुनाईद्विजगौरबड़रानेहैं। नयोअंग वायोतनछाइदियोछायोनैन खुलेचैनभयोजनलखिसर सानेहैं ४७७॥

मधुभाषिये भगवान ने बिचारी कृष्णदासजी तीन बातें देनीकहि गयेहैं सो हेतुको पाछेकृष्णदास द्वारकाआवेंगे उनकी मनुहारि करनी होयगी स्वामी कीसी बाणी कही क्योंकि राजा को कृष्णदासजी की बाणी में प्रीति बहुतरही है॥

मूल॥ भक्तनकोआदरअधिकराजबंशमेंइनकियो। लघुमथुरामेंरताभक्तअतिजैमलपोषे। टोड़ेभजननिधान रामचन्द्रहरिजनतोषे। अभैरामइकरसनेमनीमाकेभारी। ईश्वर करमशीलसुरतानभगवानबीरभूपतिव्रतधारी। ईश्वर अछैराजराइमलकाहरमधुकरनृपसर्बसदियो। भक्तन कोआदरअधिकराजवंशमेंइनकियो २१७ टीका॥ मेरते वस्तुभूपभक्तिकोस्वरूपजानै जैमलअनूपताकीकथा क-

हिआयेहैं। करीसाधुसेवारीतिप्रीतिकीप्रतीतिभईनईए कसुनोहरिकैसैकैलड़ायेहैं। नाचेमानमन्दिरसोंसुन्दर बिचारीबात छातपरबँगलाकेचित्रलेबनायेहैं। बिबिधि बिछौनासेजराजतउठौनापान दानधरिसोनाजरीपरदा सिवायेहैं ४७८॥

नीचेमानमन्दिर॥ कवित्त॥ सीरेतहिखाने तामैंखासे खसखाने सोंचे अतर गुलाबन सों व्यालर पठतिहै। भूधर सुधारिहौद छुटत फुहारे अरु भारे भरतावदान धूपदपटतिहै। ऐसे में गवन कहि कैसे करि कीजै बलि सौंधकी तरंग आनि अंग लपटतिहै। चन्दन किंवारघनसारके पगारचारु तजआनि ग्रीषम की झार झपटति है १ बिछे हैं बिछौना घनसारके नवीने तामें कीनेछिरकाव तरअतरगँभीरके। गुलवे गुलाबके फुहारे छूटैं ठौर ठौर उठत झकोरतामें त्रिविधसमीरके। सेज अरबिंदन की चंदनकी चोली चारु श्री गोबिंद सुमन श्रृंगारहैं शरीरके। भमक मनक सोवनिका बनिबैठी आजु राधिका रवन संग भवन उसीरके २॥

ताकीदारुसीठोकररचनाउतारिधरे भरेदूरिचोकीआ यभावस्वच्छताइये। मानसीबिचारैलालसेजपगधारैं पानखातलैंउगारडारेपौढ़ेसुखदाइये। तियाहूनभेदजानै सोनसेनीचरीवानेदेखिकैकिशोरसोयोंफिरीभोरआइये। पतिकोसुनाईभईअतिमनभाईवाको खिजिडरपाईजानी भागअधिकाइये ४७९ टीकामधुकरशाहकी॥ मधुकर शाहनामकियोलैसफलयाते भेषगुणसारग्राहतजतअसा रहै। ओंडछेकोभूपभक्तभूपसुखरूपभयोलयोपनभारीजा

केऔरनबिचारहै। कंठीधरिआवैकोऊधोइपगपीवैसदाभा
ईदुखघरघरडार्योभालभारहै। पाइपरछालिकहीआजुजू
निहालकियेहियेद्रयेदुष्टपावगहेदगधारहै ४८० मूल ॥
खेमालरतनराठौरकेअटलभक्तिआईसदन। रैनापरगुण
रामभजनभागवतउजागर। प्रेमीप्रेमकिशोरउदरराजा
रतनाकर। हरिदासनिकेदासदशाऊंचीध्वजधारी। निर्भ
यअनन्यउदाररसिकयशरसनाभारी। दशधासंपतिसंत
बलसदारहतप्रफुलितबदन। खेमालरतनराठौरकेअट
लभक्तिआईसदन २१८॥

भेषगुणसारग्राही भवँरवत् सारग्राही मक्षिकावत्अ-
सारग्राही दोषीभाइनिनेखरको माला तिलकदैकै राजा
केभेज्यो राजाने वाही चरणोदक लियो राजा के गुरु
व्यासदेवजू वहींरहेहैं यहपदबनाय॥ पद ॥ भक्तबिनकिनअ
पराधसह्यो। कहा कहानि असाधनि कीनों हरिबलधर्म
रह्यो। अधमराज मदमाते लैरथ सोजड़ भरतनह्यो। पट
झपटत द्रौपदीन मटकी हरि को शरणचह्यो। मत्तसभा
कौरवन बिदुर ज्यों कहाकहानकह्यो। शरणागतआरत
गजपति को आपन चक्र गह्यो। हाहरिनाथ पुकारत
आरत कौन ओर निबह्यो। व्यास वचन सुनि मधुक-
रशाह भक्तिपथ सदागह्यो। करिमनसा कत को मुड़का
रो। साकत मोहिंनदेखेभावत कह बूढ़ो कहवारो। सा-
कतदेखतडरलागतहै नाहरहूतेभारो। भक्तनसों कुबचन
बोलतहैंनेकुडरैमब्यारो।आठैचौदशिकूडोपूजतअभागेको
ज्ञान अँध्यारो। व्यासदासयहसंगति तजियेभजियेश्याम
सवारो १॥ पद ॥ जो सुख होत भक्त घरआये। सो सुख
होत नहीं बहु संपति बांझहि बेटा जाये। जो सुखभक्तनि
को चरणोदक गातहि गात लगाये। सोसुख सपनेहूनहिं

पइयत कोटिक तीरथन्हाये। जोसुखभक्तनिको सुखदेखत उपजत दुख बिसराये। सो सुखकबहूं होत नहिंकामी कामिन उर लपटाये। जो सुख होत भक्तबचननसुनि नैन-निनीरबहाये। जो सुख कबहूं न पइयतुहै घर पूतको पूत खिलाये। जोसुखहोत मिलत साधुनके छणछण रंगबढ़ाये। सोसुखहोतनरंकब्यासको लंकसुमेरछिपाये ३ असार को लेहिंनहीं सारकोसंग्रहै साधुगुणहंसके ४ जैसेमधुकर शाहकासीछण क्रोधीन्द्रसिंह लोभीबामन मोहीरामचंद्र ऐसे अवगुणमेंगुणलेहिं हरिहीकीइच्छामानै नारदजीभ-क्तराजहैं पै उनहींने शाप दियो सनकादिक भगवानरूप हैं उनहूंने शाप दियो पैभलोही करो ऐसे साधु जोकरै सो भलोही करैं यह सार लै लेहिं ५ ॥ कवित्त॥ काठ की कठारी करि तपसी भरिवारिलेत काठको सँवारि धाम श्यामकोबैठावहीं। काठकीकमानशरकाठके बनाइ लेतकाठीकाठ चढ़ि शूररणजीतिआवहीं। काठकीसुमिर नीकै साधुरामनामलेत काठकोपषाणघिसि देवको चढ़ा वहीं। काठकी अवज्ञाको कहत बनिआवै नाहिंनावचढ़ि काठकीधौं तबै पार पावहीं ६ काठकी बस्तु महाअमोल गनिये काठ तरणतारण है॥

मूल॥कलियुगभक्तिकररीकमानरामरेणुकैंऋजुकरी। अजरधरयआचर्योलोकहितमनोंनीलकँठ। निंदकजगअ निराइकहामहिमाजानेगोभूशठ। बिदितगांधर्वीब्याहकि योदुइकुंतप्रवाने । भरनपुत्रभागवतसुमुखशुकदेवबखा ने । औरभूपकोउछ्वैसकैदृष्टिजाहिनाहिंनधरी । कलियु गभक्तिकररीकमानरामरेणुकैंऋजुकरी २१६ टीका॥ पू नोमेंप्रकाशभयोशरदसमाजरास बिबिधिबिलासनृत्यरा गरंगभारीहैं । बैठेरसभीजिदोऊबोल्योरामराजारीझिभे टकहाकीजेबिप्रकहीजोइप्यारीहैं।प्यारकोबिचारैनहिा

रैकहूंनेकुछटासुतारूपघटाआनरूपसेवाज्यारीहै । रहीस भाशोचआपनाइकैलिवाइलाये भेषसोंदिवायेकेरेसंपतिलै वारीहै ४८१ ॥

रूजुकरीमरमकरी ॥ कवित्त ॥ पनच पुरानी वहिपानी यों धनुषआयो छुवत छैटूकभयेताकोकहाकरिये । आलम अलप अपराध साधु जियजानि छमाकोजैचौखकोजैकित क्रोध मनधरिये । सूझतती ह्विजवर पूजियेन जूंठवर कठिन कुठारआनि कंठपर धरिये । गुरुमति लोपियेन पूजेपरको पियेन तासोपांय रोंपिये न ताकेपाइं परिये १ प्रकाश भयो॥रूपकी रीझसों प्रेमपग्यो कियौंप्रेमकीरीतिहिरूप सोंपागी । मनसा वशमें न जगीकविमंडन कैमनशा वशमैन केजागी । लाजहिलै कुलकान भगी औकिधों कुलकानि लै लाजहिभागी । नयनलगे वहि मूरतिसोंरी किधौंवहि मूरति नयननलागी २ ॥ नृत्यअरु गान वतरान सुनु कान देखि बिह्वल बिकलह्वैकै सकल बिकैचुके । बड़ेबड़े धर्मदास तेऊलयेमारि सों संभारिहनसकैहरिसबसुहृदेचुके । नीर भरी अँखियनकी अँखियन येभीरअति ऊरध अधीरगति मति बिसरैचुके । ऐसोऐस देखिकै श और ऐस देखेअब मनकेअवश नवन यहैपन लैचुके ३ ॥

मूल ॥ हरिगुरुहरिदासनिसोंरामघरनिसांचीरही । आरजकोउपदेशसुतोउरनीकेधार्यो । नवधादशधाप्री तिआनधर्मसबैबिसार्यो । अच्युतकुलअनुरागप्रगटपुरु पारथजान्यो । सारासारबिबेकबातनीनोंमनमान्यो । दा संतनिअनन्यउदारतासंतनमुखराजाकही । हरिगुरुहरि दासनसोंरामघरनिसाचीरही २२० टीका ॥ आयेमधुपु रीराजारामअभिरामदोऊदाम पैनराख्यो साधुबिप्रभुगता

येहैं। ऐसयउदाररा हखरचसँभारनाहिंचलिबोबिचारभ योचूरादीठआयेंहैं। मुद्रासतपांचमोलखोलितियाआगेधरे दीजेबेंचिगयेनाभाकरपहिरायेंहैं। पतिकोबुलाइकहीनी केदेखिरीझेभीजेकाटिकैकरजपुरआयेदैपठायेंहैं ४८२॥
मूल॥अभिलाषउभैखेमालकातेकिशोरपूराकिया।पांयननू पुरबांधिनृत्यनगधरिहितनाच्यो। रामकलसमनरलीसी सीतातेनहिंबांच्यो। बाणीबिमलउदारभक्तिमहिमाबि स्तारी। प्रेमपुंजशुठिशीलबिनयसंतनरुचिकारी। सृष्टिस राहैंरामसुचलघुयेसलक्षनआरजलिया। अभिलाषउभय खेमालकातेकिशोरपूराकिया २२१॥

हरिगुरु दासनसों सांचो होइ भक्तितबहीं सांची जैसे प्रवानेतौ सांचीभक्तिमैंतौ सबही कहै हैं आप वक्तमाल वस्त्रपहिरै हरिको थोड़ेमोल लाखजूको अथवाभजन क- रिकै फलचाहै सो सांचोनहीं और भजनकरतेकछु बिघन होइ तब हरिकोदेइ तौ सांचोही भजनकरिकै भक्तही चाहै सांचौकिशोर १॥ कुंडलिया॥ मारिवफाती खीचरी यहघर आजनकालि। यहघरआज न कालि धौलधरथूवां कैसो। तन बुसार को तार ताहि नर थिर करवैसो। स्वपने सोना पाइ छपणता कर धन जोरयो। पुनि जागते कहौ प्रातकाको स्वप्ण तोरयो। जापीसंतो फांकियो अगर सुउत्तम चालि। मारिवफाती खीचरी यहघर आजन कालि २३।४।५।६॥

टीका॥ खेमालरतनतनत्यागसमयअश्रुपातगातसुत पूछेअजूनीकेखोलिदीजिये। कीजेपुण्यदानबहुसंपतिअमा नभरीधरीहियेदोईसोईकहीसुनिलीजिये। बिबिधिबड़ाई

संसमाइमतिभईयेननितही विचारअबमनपरखीजिये। नीरभरिघटशीशधरिकैनलायोऔरुनूपुरिनिबांधिनृत्यकियोनाहिंछीजिये ४८३ रहेचुपचापसबैजानीकामआपहीकोबोल्योयोंकिशोरनातीआज्ञामोकोदीजिये। यहीनितकरोनहिंटरौजोलौंजीवैतन मनमेंहुलासउठिछातीलाइलीजिये। बहुसुखपायोपायेवैसेहीनिबहेपनगायेगुणलालप्यारीअतिमतिभीजिये। भक्तिबिस्तारकियोवैसउघुभीज्योहियोदियोसनमानसंतसभासबरीझियै४८४ मूल॥ खैमालरतनराठौरकेसुफलवेलिमीठीफली। हरीदासहरिभक्तिभक्तमंदिरकोकलसो। भजनभावपरिपक्कहदैभागीरथजलसो। त्रिधाभांतिअतिअनन्यरामकीरीतिनिबाही। हरिगुरुहरिबलभांतितिनहिंसेवादृढ़साई। पूरणइंदुप्रमुदितउदधित्योंदासदेखिबाढ़ैरली। खेमालरतनराठौरकी सुफलबेलिमीठीफली २२२॥

खीजिये॥ दोहा॥ जबलगि रँगहो विन रँग्योहरिरँग माहिंमजीठ। अबमूरखमाथौधुनै जबरँगदीनीपीठ १ ॥ मनबढ़द तनजानमर्गो तुलसी बरकमदान। प्रेमपलीतीदगगई निकसीआहि अवाज २॥ प्रेमबिना हरिनामिलैंकोटि यतनकरिकोइ। जैसेगुणबिनकूपजलआवैहायनसोइ॥

मूल॥ हरिबंशचरणबलचतुरभुजगौड़देशतीरथकियो गायोभक्तिप्रतापसबहिदासत्वदृढ़ायो। श्रीराधाबल्लभभजनअनन्यताबरगबढ़ायो। मुरलीधरकीछापकबित्तअतिहीनिर्दूषण। भक्तनकीअंघ्रिरेणुवहैधारीशिरभूषण। संत

संगमहाआनंदमेंप्रेमरहितभीज्योहियो । हरिवंशचरणब
लचतुरभुजगौड़देशतीरथकियो २२३ ॥

गायोभक्तिप्रताप दिखायोजैसेनिपटने ॥ छप्पै ॥ सुपच
पहिरि यज्ञोपवीत करिकाशन गहतनव। करमकरैअघपरै
डरैपुनि विप्रव चासतव । पुनिललाट पाटतिलकदेइ अरु
तुलसी मालधरि । हरिकेगुण उच्चरै पायकुलकर्म हि परि-
हरि। चतुर्भुजपुनीत अंत्यजभयो मुरलीधर भरयौ लियो।
तिहिपाछे कोनिलागिये जिनलोहपलटि कंचनकियो १॥

टीकास्वामीचतुर्भुजकी ॥ गौड़वानदेशभक्तिलेशहून
देख्योकहूंमानसकामारिइष्टदेवकोबढ़ायोहै । तहांजायदे
वताकोमंत्रलैसुनायोकानलियोउनमानिगावसुपनसुनाये
है । स्वामीचतुरभुजजूकेबंगितुमदासहोहुनातोहोहिनाश
सबगांवभज्योआयोहै।ऐसेशिष्यकियेमालाकंठीपाइजिये
पांवलियेमनदियेऔअनंतसुखपायोहै४८५॥

जहांजाय देवताको मंत्रले सुनायो ॥ कबित्त ॥ छलक-
ति छलतजि गोकुलकी गैलभर्जो कुंजा चुरैलपगी मनबत
कायहै। घायेहैं सुखारीहैंकरतहैं भिखारीप्रीतिपाछिली
बिसारी येहो यहकछून्यायहै। अहो घनश्याम यहनीति
ब्रजबामसन लहै न बिश्राम मरिरहीकौनज्यामहै। मरण
उपाइ यहै देखे सुखपाइजोई काहूकल पाइहै सोकैसेकलै
पाइहै ३॥

भोगलैलगावैंनानासंतनिलड़ावैं कथाभागवतगावैंभाव
भक्तिविस्तारियै। भज्योधनलैकेकोऊधनीपाछेपरयोसोऊ
आनिकैदबायोबैठिरह्योननिहारियै । निकसीपुराणवात
करैंनयोगातदिक्षाशिक्षासुनिशिष्यभयोगयोयोंपुकारियै।

कह्योयाजनममेंनलियोकछुदियोफारो हाथलैउबारोप्रभु रीतिलागीप्यारिये ४८६ राजारूठमानिकह्योकरोबिन प्राणप्राकोसाधुयेबिराजमानलैकलंकदियोहै । चलेठौर मारिबेकोधारिबकोसकैकेसे नैनभरिआयेनीरबोल्योवन लियोहै।कह्योनृपसांचोहवैकेझूठोजिनिहूजैसंतमहिमाअ नंतकहीस्वामीऐसोकियोहै।भूपसुनिआयोउपदेशमनभा योशिष्यभयोनयोतनपायोभीजगयोहियोहै ४८७पकि रह्योखेतसंतआयेकरितोरिलेत जितेरखवारेमुखसेतशोर कियोहै । कह्योस्वामीनामसुन्योकहीबड़ोकामभयोयहतो हमारोसोईआपुसुनिलियोहै । लैकैमिष्टान्नआपुसुमुखब खानकियोलियोअपनाइआजभीज्योमेरोहियोहै । लैगयो लिवाइनानाभोजनकराइभक्ति चरचाचलाइचाइहितरस पियोहै४८८ मूल॥ चालककीचरचरीचहुंदिशिउदधिअंत लोंअनुसरी ।शक्रकोपिशुठचरितप्रसिद्धिपुनिपंचाध्याई । कृष्णरुक्मिणीकेलिरुचिरभोजनबिधिगाई।गिरिराजधर णिकीछापगिशजलधरज्योंगाजै।संतशिखंडीखंडहृदयआ नंदकेकाजै । जाड़ाहरणजगिजाड़िताकृष्णदासदेहीधरी॥ चालककीचरचरीचहुंदिशिउदधिअंतलोंअनुसरी२२४॥

निकसीपुराणबात ॥भागवते ॥ शृण्वतांस्वकथाःकृष्णःपु- ण्यश्रवणकीर्त्तनः। हृद्यंतस्थोह्यभद्राणिविधुनोतिसुहृत्सतां दूसरोजन्म कैसेभयो ॥ आगमे ॥ कृष्णमन्त्रोपदेशेनसा यादूरमुपागतः । कृपयागुरुदेवस्यद्वितीयंजन्मकथ्यते २ नारदपंचरात्रे॥ श्लोकः ॥ पितृगोत्रीयथाकन्या स्वामी गोत्रेणगोत्रिका ॥ श्रीकृष्ण भक्तिमात्रे साऽच्युतगोत्रेण- गोत्रिका ३ दियोफारो॥ दोहा॥ सामनहुंघनसारहैजेठ

मास घनसार॥ बनकेमेंघनसारहै झूठेको घनसार ४॥

बिमलानंदप्रबोधबंशसंतदाससीवांधरम। गोपीनाथपदरागभोगछप्पनभुजाये। पृथुपद्धतिअनुसारदेवदंपतिदुलराये। भगवतभक्तसमानठौरद्वैकोबलगायो। कवित्तशूरसोंमिलतभेदकछुजातनपायो। जनमकरमलीलायुगतिरहसिभक्तिभेदीमरम। बिमलानंदप्रबोधबंशसंतदाससीवांधरम २२५ टीका॥ बसतनिमाईग्रामश्यामसोंलगाईमतिऐसीमनआईभोगछपनलगायेहैं। प्रीतिकीसँचाईयहजगमेंदिखाईसेवैंजगन्नाथदेवआपरुचिसोंजिमायेहैं। राजाकोस्वपनदियोनामलैप्रगटकियो संतहीकेगृहमेंतोजेवोंयोंरिझायेहैं। भक्तिकेअधीनसबजानतप्रवीनजनऐसेहैंरँगीनलालठौरठौरगायेहैं ४८६॥

युगत तापैचनागेकेंन्यायको दृष्टांत॥ प्रीतिकीसचान जगन्नाथ को छप्पन लगैहैं अपने ठाकुरको गोपीनाथ को मैंहूं लगाऊं घरको धन सब लगायो कर्ज हू काढ्यो तब बिचारो कैतो छप्पनहीं भोग लगाऊं नहींतो सबही उड़ाऊंसो भगवानने चोप करिकै राजा को स्वप्न दिखायो नामख्यात कियो भूंठापनहोतो छप्पनभोगी की नाईं चनाहू न मिलते १ भक्ति दियोपावै उद्यम क्यों कियो सो दृष्टान्त हमने न जान्यो २॥

मूल॥ मदनमोहनसूरदासकीनामशृंखलाजुरीअटल। गानकाव्यगुणराशिसुहृदसहचरिअवतारी। राधाकृष्णउपासिकरहसिसुखकेअधिकारी। नवरसमुख्यशृंगारबिबिधभांतिनकरिगायो।मदनउच्चरतबेरसहसपायनहूवै

धायो। अंगीकारकीअबवियहज्योंआख्याभ्राताजमल।
श्रीमदनमोहनसूरदासकीनामशृंखलाजुरीअटल २२६
टीकासूरदासमदनमोहनजूकी ॥ सूरदासनाममनैनकंज
अभिरामफूलेझूलेरंगपीकेनीकेजीकेओरज्यायेहैं। भयेसो
अमीनयोंसंडीलेकेनवीनरीति प्रीतिगुरुदेखिदामबीसगु
णालायेहैं। कहीपूवापावैंआपमदनगुपाललालपरेप्रेम
ख्याललादिछकरापठायेहैं। आयोनिशिभयोश्यामकियो
अज्ञायोगलैकैअबहींलगावोभोगजरिफिरिपाछेहैं ४६०
पयेदलबनायोभक्तिरूपदरशायोदूरिसंतनिकीपानहींको
रक्षककहाऊंमैं। काहूसीखिलयोसाधुलियोचाहैपरचेको
आयेद्वारमन्दिरकेखोलिकहीआऊंमैं। रह्योबैठिजाइजूजी
हाथमेंउठायलीनीपूरीआशमेरीनिशिदिनगाऊंमैं। भीतर
बुलावैंगुसाईंबारदोईचारि सेवासौंपीसारिकह्योजनपद
ध्याऊंमैं ४६१ ॥

शृंगार॥ कवित्त॥ लालभये लटूभट ठाढ़ेहैं अटाकेनीचे लालची रह्योलुभाइ टकीसी लगाइकै। गोकुलकीबधू बिधुमुखके अवलोकिबेको नीकीएकतान उठ्योबांसुरी बजाइकै। सुनिधुनि वाके श्रवण परीकाधीराम अतिअकुलाइकै झरोखनि झांकी आइकै। खोलिकैकिंवारी ब्रजनारीतहां देखैंझांकि गिरिपरयोहै गोपाल फिरिकीसी खाइकै १॥ प्रथकि निहेरि पियप्यारीरूप धारिदृग ऊरध कैवारी पानकरै लखे बनको। बिरल सुधारकारि अँगुरिन धारिपल गतिहि निवारि भावै अंतरन छिनको। त्योंहीं वहनारि प्रीतिरीति उरधारि छांड़ असुन तरवारि देखी प्रेम दुझनको। सरति निहारियह कीनो निरधारिछांड़ै बन तरवारि देखोप्रेम दुझयनको॥ पद॥ सखीके पाछे

ठाढ़ी बदन नीकोलागत मानोंकंचन गिरितें उदयराशिन वसितकिये। सोहतरीमाथेबिंदुला कुमकुमको दिये कर दीपलिये नीलांबर सजनी रजनी राजत कुरंगनयनी राकारी संगलिये। सूरदास मदन मोहनके लोचन आतुर चकोर नटम्रिहोतनाहिं मधुपानकिये ३॥ कवित्त॥ चरण चितायनखचंद्रिकापै आइपरै उछरति निहारनाभिचिवली झकोरहै। उरज उतंगपुनि पुनि पुनि रंगकरि ढरि कटिओर मुष छुवैनी छोरहै। पाइरंगभूमि रसभूमि रीझखेल रच्यो मच्योछवि पाइमनडारत मरोरहै। लाडिलीकोरूपअति लाड़िलोमैं देख्योआली लालदृगगेंदन सों खेलैंनिशि भोरहै ४ दृष्टांत पोस्तीकीरेवरीको पदलै बनायो॥पद॥ मेरेगति तुही अनेकतोषपाऊं। चरण कमल नखमणि परिबिषय सुखबहाऊं। घरघर जोड़ोलैं हरितौ तुम्हैंलजाऊं। तुम्हराकहाइकहो कौनकोकहाऊं। तुम सेप्रभुछांड़ि काहिदीननको धाऊं। शीशतुम्हैं नाइकैअब कौनको नवाऊं। कंचनउर हारछाड़ि कांचको बनाऊं। शोभासब हानिकरौं जगतको हँसाऊं। हाथीतें उतरि कहा गदहाचढ़ि धाऊं। कुमकुमको लेपछांड़ि काजर मुहंलाऊं। कामधेनु घरमेंतजि अजाको दुहाऊं। कनक महल छांड़िक्यों परमकुटीछाऊं। पाइनिजोपैलौप्रभुतौ नअनतजाऊं। सूरदास मदनमोहनलालगुणगाऊं। संतन को पान हीकी हीको रचक कहाऊं २॥

पृथ्वीपतिसंपतिलैसाधुनखवाइदईभईनहींशंकयोंनि शंकरंगपागेहैं। आयेसोखजानोलैनमानोंयहबातअहोपा थरलैभरेआपआधीनिशिभागेहैं। रुक्कालिखिडारेहामगट कैयेसंतननेयातेहमसटकेहैंचलेजबंजागेहैं। पहुंचे हुजूरभू पखोलिकैसंदूखदेखे पेखेआंककागदमें रीझिअनुरागेहैं ४९२ लैनकोपठायेकहीनिपटरिझायेहमें मनमेंनलायेलि

खीचनतनडार्योहै । टोडरदिवानकह्योयनकोविरानकियोलावोरेपकरिमूढ़केरिकैसेभार्योहै । लैगयेहुजूरनृपबोल्योमोसोंदूरिराखोऐसोमहाक्रूरसोंपिदुष्टकष्टधार्योहै । दोहालिखिदीनोअकबरदेखिरीझिलीनोजावोवाहीठौरतोपैद्रव्यसबवार्योहै ४६३ ॥

रुक्का ॥ दोहा ॥ तेरहलाख संडीलेउपजे सबसाधन मिलिगटके। सूरदास मदन मोहनजी आधीरातिकोसटके १॥ धनतनडार्याहै बड़ेबड़ेहीकी चाकरीकरें तब बादशाहकीकरैंअबकथ्या कीकरैं तापै चोरकोदृष्टांत ॥ दोहा ॥ इक तन अँधियारोकरैशून्यदई पुनिताहि। दशतमतेरचाकरी दिनमणिअकबरशाहि २ ॥ जावोवाहीठौर॥कवित्त॥सेइदेखेसाहबसँभारिदेखेबासलोनी।सोइदेखोभोरलौंसुगंधभूरिसोंभरे। खाइदेखे पान पकवान पुंजबारबार पौढ़िदेख्यो तिया संग निशिखलिकापरे।चढ़िदेख्यो हाथीहय हीरा उरधारि देख्यो भूषण विविधिभांति कीटमणिसोंजरे। मन न सिरानो किते विषय रससानो मंदताते बारबार क्यों न बोलतू हरेहरे ३ ॥

आयेवृन्दाबनमनमाधुरीमेंभीजिरह्यो कह्योसोईपदसुनोरूपरसरासहै । जादिनप्रकटभयोगयोसतयोजनपैजनपैसुनतभेदवाटीजगप्यासहै । सूरद्विजद्विजनिजमहलटहलपायचहलपहलहियेयुगुलप्रकासहै। मदनमोहनजूहेइष्टदष्टमहाप्रभुअचरजकहाकृपादृष्टिअनायासहै ४६४ मूल ॥ कात्याइनिकेप्रेमकीबातजातकापैकही । मारगजातअकेलगानरसनाजुउचारौ । तालमृदंगीवृक्षरीझिअंबरतहँडारौ। गोपनारिअनुसारिगिरागदगदआवेसी । जग

प्रपंचतेदूरिअजापरसेनहिंलेसी । भगवानरीतिअनुराग
कीसंतसाखिमेलीसही । कात्याइनिकेप्रेमकीबातजातका
पैकही२२७॥

उरझीनकबेसरिसोंपीतपटबनमाल बीचआइ उरझेहै
दोऊजन। नयननसों नैनबैन बैनन सों उरझिरहेचटकीली
छबिदेखे लपटात श्यामघन । छोड़ाछोड़ी नृत्यकरैं रीझ
रीझ अवाभरें ततथेई कहतहैं मगनमन। सूरदास मदन
मोहन रासमंडलमें प्यारीको अंचल ले पोंछतहै श्रमकन॥
१कात्यायनीगौड़देशकी राजकन्या॥ दशमे॥ कस्यांचित्स्व
भुजंन्यस्यचलत्याहापरानन्नु। कृष्णोहंपश्यतगतिंललितामि
तितन्मना: २ ॥ सवैया॥ खोइगईबुधि सोइगईसुधि रोइहँ
से उनमानजग्योहै । मौनगहैचकचौंकि रहै चलिबातकहै
तनदाहदग्योहै। जानिपरैनहिंजानितुम्हैंलखिताहिकहा
कछुआहिमग्योहैं। सोचतहीपगिये आनंदघनहेतलग्योकि
धौंप्रेत लग्योहै३॥पाचजोई॥ श्लोक॥ यानैर्वापादुकैर्वापि
गमनंभगवद्गृहे। देवोत्सवाद्यसेवाच अप्रणामस्तदग्रत:१॥

कृष्णबिरहकुंतीशरीरत्योंमुरारितनत्यागियो । बिदि
तविलोदागांवदेशमुरधरसबजाने। महामहोछोमध्यसंतप
रिषदपरवाने। पगनघूंघुरूबांधिरामकोचरितदिखायो ।
देशीशारँगपाणिहंसतासंगपठायो । उपमाऔरनजगतमें
पृथाबिनानानहिंबियो। कृष्णबिरहकुंतीशरीरत्योंमुरारि
तनत्यागियो २२८ टीकाश्रीमुरारिदासजीकी ॥ श्रीमुरा
रिदासरहैंराजगुरुभक्तदास आवतस्नानकियेकानधुनिकी
जिये। जातिकोचमारकरैसेवासोंउचारिकहैंप्रभुचरणामृ
तकोपात्रजोईलीजिये । गयेघरमांझवाकेदेखिउरकांपिउ
ठ्योबोदेवोहमैंअहोपानकरिजीजिये। कहीमैंतौनूनतुच्छ

बोलेहमहूतेसुच्छ जानेकोऊनाहिंतुम्हेंमेरीमतिभीजिये। ४९५ बहेदृगनीरकहैमेरीबड़ीपीरभई तुममतिधीरनहींमे रयोगताईहै। लियाईनिपटहठवड़ेपटसाधुतामेंश्यामैप्या रीभक्तिजातिपांतिलैबहाईहै। फैलगईगांववाकोनामलै चवावकरै भरैनृपकान सुनिवाहूनसुहाईहै। आयोप्रभु देखिबेको गयोवहरंगउड़ि जान्योसोप्रसंग सुनोवहैबात छाईहै ४९६॥

सच्चिन्दासतिनामवैभवकथा श्रीशेषयोभिन्नधीरश्रद्धा अतिशास्त्रदेशिकगिरानाम्न्यर्थवादभ्रमः। नामस्तीतिनि षिद्धवृत्तिविहितत्यागौचधर्मान्तरैः स्साम्यंनामनिशंकरस्य चहरेर्नामापराधादश १ तद्वर्मैनिरादराणांमितितनाम्नो पराधादश २॥ काशीखंडे॥ ब्राह्मणःक्षत्रियोवैश्यःशूद्रोवाय दिवेतरः। विष्णुभक्तिसमायुक्तोज्ञेयस्सर्वोत्तमोत्तमः ३॥

गयेसबत्यागिप्रभुसेवाहीसोंरागजिन्हें नृपदुखपागि गयोसुनीयहबातहै। होतहोसमाजसदाभूपकेबरषमांझद रशनकाहूहोतमानोंउतपातहै। चलेईलिवाइवेकोजहांश्री मुरारिदासकरीसाष्टांगराशिनयनअश्रुपातहै। मुखहूनदे खेयाकोबिमुखकेलेखेअहोपेखेलोगकहैंयहगुरुशिष्यख्या तहै ४९७ ठाढ़ोहाथजोरिमतिदीनतामेंबोरिकीजेदंडमोपै कोरियोंबहोरिमुखभाखिये। घटतीनमेरीआपकृपाहीकीघ टतीहै बढ़तीसीकरीतातेनूनताईराखिये। सुनकेप्रसन्नभये कहेलैप्रसंगनयेबालमीकिआदिदैनानाबिधिसाखिये। आयेनिजग्रामनामसुनिसबसाधुआयेभयोईसमाजवैसोदे खिअभिलाखिये ४९८ आयेबहुगुणीजननृत्यगानछाईधु

निऐपैसंतसभामनस्वामीगुणदेखिये । जानिकैप्रबीनउठे नूपुरनवीनबांधिसप्तसुरतीनग्रामलीनभयेपेखिये । गायो रघुनाथजूकोबनकोगमनसमय तासँगगमनप्राणचित्रसम लेखिये । भयोदुखराशिकहापैयेश्रीमुरारिदासगयेरामपा सयेतौहियेअवरेखिये ४६६ ॥

गयेसबत्यागि ॥ दोहा ॥ साधक सिद्धको एकमत जित चालैतितसिद्धि । हरिजनचिंता नाकरै सुखआगे नवनिद्धि १ गुरुशिष्यख्यातहै । गुरुनिर्मोही चाहियेशिष्यनछांड़ैप्रीति । स्वारथछोड़ै हरिमिलैं यहैभजनकीरीति २ ॥ फलटूटगो जलसेंपरगो खोजीमिटी न प्यास । गुरुतजिकै गोबिंदभजे निश्चयनरकनबास ३ ॥ सप्तसुर ॥ कबित्त ॥ केकीकीकुहक सोंखरिज सुरजानिलीजे चातकके बोलसोंऋषभसुरलेखि- ये । उभरत छागजानि लीजे गंधारसुर क्रौंचकेबोलसर मध्यमही पेखिये । कोकिलाके बैनसुर पंचमलखीजैये नहीं सततुरंग सुरधैवत बिशेषिये । घनकोगरजसोंनिषाद सुरजानिलीजे कहेशिरदार सुरसप्तयों बिशेषिये ४ ॥

मूल ॥ कलिकुटिलजीवनिस्तारहितबाल्मीकितुल सीभयो । त्रेताकाव्यनिबन्धकरिबसतकोटिरमायन । इकअक्षरउधरेब्रह्महत्यादिकजिनहोतपरायन । अबभक्त नसुखदेनबहुरिवपुधरिलीलाबिस्तारी । रामचरणरसमत्त रहतअहर्निशिब्रतधारी । संसारअपारकेपारकोसुगमरूप नौकालयो । कलिकुटिलजीवनिस्तारहितबाल्मीकितुल सीभयो २२६ ॥

एकअचर ॥ रामायणे ॥ चरितंरघुनाथस्य शतकोटिप्र विस्तरं ॥ एकैकमक्षरंपुंसांमहापातकनाशनं १ रामचरण

दोहा ॥ पलकनिमगमविध्यानधरिबरुणीजटाबनाय ॥ नैन दिगंबरह्वै रहे रूपभभूतिलगाय ॥

टीकातुलसीदासजूकी ॥ तियासोंसनेहबिनपूछेपिता ग्रेहगईभूलीसुधिदेहभजेवाहीठौरआयेहैं । बधूअतिलाज भईरिससोंनिकसगई प्रीतिरामनईतनहाड़चामछायेहैं । सुनीजबबातमानोंह्वैगयोप्रभात वहपाछेपछितायतजि काशीपुरीधायेहैं । कियोतहांबासप्रभुसेवालैप्रकाशकीनों लीनोंदृढ़भावनेमरूपकेतिसायेहैं ५०० ॥

तियासोंसनेह ॥दोहा॥ सकल लोकअपबशकियेअ-पनेहीबलवान ॥ सबलासोंअबलाकहैं मूरखलोगनजान ३ वाहीठौरआयेहैं ॥ दोहा ॥ तरसतहैंतुवमिलनबिन दर-शनबिनयेनैन॥ श्रुतितरसैंतुवबचनबिन सुनितरुणीरसपैन४ वड़ोनेहतुमसोंलग्योऔरनकछूसुहाइ ॥ तुलसीचन्दचको-रज्योंतरफतरैनिबिहाइ ५ कहांलग्योमनभावतो सदा रहैमनमाहि ॥ देख्योचाहैनैनभरिवातनिक्योंपतियाहि६ सेवा ॥ श्लोक ॥ गोप्य:कृष्णवनंयाते तमनुद्रुतचेतस: ॥ कृष्ण लीलांप्रगायन्त्योनिन्युर्दु:खेनवासरान् ७ ॥

शौचजलशेषपाइभूतहबिशेषकोऊ बोल्योसुखमानिह नूमानजूबतायेहैं । रामायणकथासोरसायनहैकाननको आवतप्रथमपाछेजातघृणाछायेहैं । जाइपहिंचानिसंगच लेउरआनिआयेबनमध्यजानिधाइपाइलपटायेहैं ।करैंसी तकारकहीसकोगेनटारिमैंतो जानेरससाररूपधर्योजैसे गायेहैं ५०१ मांगिलीजैबरकहीदीजैरामभूपरूपअतिही अनूपनितनैनअभिलाखिये । कियोलैसँकेतवाहीदिनहीं सोंलाग्योहेतआईसोईसमैचेतकविछबिचाखिये । आयेर

घुनाथसाथलक्ष्मणचढ़ेघोड़े पटरंगबोरेहरेकैसेमनराखिये । पाछेहनुमानआयेबोलेदेखेआणप्यारेनेकुननिहारमैं तोभलेफेरिभाखिये ५०२ ॥

शौचिजल ॥ श्रुतौ ॥ शौचांतेचपदांतेचतर्पणांतेतथैवच ॥ हस्ताद्धस्तेअधोहस्तेपंचतोयंसुरासमं १ भूतविशेषदेवतनमें नीचहैं २ निहारिमैंतो ॥ पद ॥ लोचन रहैवरीसोइ। जानिबूझिअकाजकीनोंदयोभुवमेंगोइ।अवगतिजुतेरीगतिनजानौरह्योयुगमेंसोइ। सबैरूपकीअवधिमेरेनिकसिगयाढिगहोइ। कर्महीनहिपाइहीरादयोपलमेंखोइ। तुलसीदासजुरामबिछुरैकहोकैसीहोइ ३ ॥

हत्याकरिबिप्रएकतीरथकरतआयोकहैमुखराममिक्षाडारियेहत्यारेको।सुनिअभिरामनामधाममेंबुलाइलियोदियोलैप्रसादकियोशुद्धगायोप्यारेको । भईद्विजसभाकहिबोलिकैपठायोआपकैसेगयोपापसंगलैकैजैयेन्यारेको । पोथीतुमबांचोहिये भावनहींसांचोअजूतातेमतिकाचोदूरिकरैनअँध्यारेको ५०३ देखीपोथीबांचनाममहिमाहूकहीसांचऐपैहत्याकरैकैसेतरैकहिदीजिये । आवैजोप्रतीतिकहीयाकेहाथजैवेशिवजूकैबैलतबपङ्गतिमेंलीजिये । थारमेंप्रसाददियोचलेजहांपानकियो बोलेआयनामकेप्रतापमतिभीजिये । जैसीतुमजानोतैसीकैसेकैबखानोअहो सुनिकैप्रसन्नपायोजैजैध्वनिरीझिये ५०४ ॥

सुनिअभिराम नाम ॥ श्लोक ॥ रामरामेतिरामेतिरमेरामेमनोरमे ॥ सहस्रनामतातुल्यंरामनामवरानने ४ अँध्यारेको ॥ पद ॥ पढ़त पढ़ावतसोमनमान्यो । कौनकाजगोविंदभक्तिबिनजोपुराणकहिजान्यो । घरघरभटकिफिरै

कामिनिलगेगालफटकि धनआन्यो । निशिदिन विषय स्वादरस लंपट तजि पांचनिको कान्यो । सपनेह्व हरि किये न अपने हेतहरिवंश बखान्यो । सुनेनवचनसाधुकेसुख के चरणपखारि न अचयपान्यो । सारासार विवेकनजान्यो मनसंदेह नमान्यो । दयादीनता दासभावबिन व्यासनह्वोंपहिंचान्यो१ ॥ न्याये॥ यस्यनास्तिस्वयंप्रज्ञाशा स्त्रंतस्यकरोतिकिं । नयनाभ्यांविहीनस्यदर्पणंकिंकरिष्यति २ नामकेप्रताप ॥ पद ॥ अद्भुत रामनाम हूँ अंक। धर्मांकुर केपावन द्वै दल मुक्तिवधूताटंक। मुनिमन धरकेपंखउभयवर नपउड़ि ऊरधजात । जनम मरण काटिनकोकांतोचणमें बितवतपात। अंधकार अज्ञान हरणको रवि शशि युगुल प्रभात । भक्तिज्ञान बीरनवर बोये प्रेम निरंतरभात ३ ॥

आयेनिशिचोरचोरीकरनहरनधन देखेश्यामघनहाथ चापशरलियेहैं । जबजबआवैबाणसाधडरपावैयेतोअति मड़रावैंऐपैबलीदूरिकियेहैं । भोरआयपूछेअजूसांवरोकि शोरकोनसुनिकरिमौनरहेआंसडारिदियेहैं । दईसबलुटा इजानिचौकीरामराइदई लईउन्होंदिक्षाशिक्षाशुद्धभयेहि येहैं ५०५ कियोतनबिप्रत्यागिलागचलीसंगतियादूरि हीतेदेखिकियाचरणप्रणामहै । बोलेयोंसुहागवतीमर्यो पतिहोहुसतीअबतोनिकसिगईजाहुसेवोरामहै । बोलिकै कुटुंबकहीजोपैभक्तिकरोसही गहीतबबातजीबदियोअभि रामहै।भयेसबसाधुव्याधिमेटीलैविमुखताकीजाकीबास रहैतौनसूझैश्यामधामहै ५०६ ॥

डरपावै मारेक्योंनहीं सङ्गति करगोचाहै ॥ श्लोक ॥ ये येहताचक्रधरेणराजन्त्रैलोक्यनाथेनजनार्दनेन । तेतेगताबि ष्णुपुरीनरेंद्राःक्रोधोपिदेवस्यवरेणतुल्यं १ ॥ गतिहोइजैसे

चनाचाबिकै पेटभरै एकमोहनभोग खाइकै सो तुलसी-
दासको उपदेश मोहनभोग भगवानको बाण अमोघ झूठो
क्योंपरयो सत्गुरुरूपै बाण झूठो न परयो मारवाड़मेंडारयो
फेरि कैसोइहां चोरनको अविद्याकोमारयो २ लुटाइये॥
कुंडलिया॥ सुखसोवैनींदकुम्हारिया चोरनमटियालेहि।
चोरनमटिमालेहि भजनसब हाथहोयमन। लगेनअहड़ो
तहांरहैसदीसंततजन। इंद्रीआराम नहोइसकलमिथ्या
करिजानै। हरिलीला रसपानमत्तनिर्भयगुण गावै। अगर
बसत जोराम पद जमहि चुनौतीदेहि। सुखसोवैनींद कु-
म्हारिया चोर न मटियालेहि ३॥

दिल्लीपतिबादशाहअहिदीपठायेलेनताकोसोसुनायो
सूवैविप्रज्यायोजानियो। देखिबेकोचाहेंनीकेसुखसोंनि
बाहेआइकहीबहुबिनयगहीचलेमनआनिये। पहुंचेनृपति
पासआदरप्रकाशकियो दियोउच्चआसनलैबोल्योमृदुबा
निये। दीजेकरामातिजगख्यातसबमातकिये कहीझूंठीबा
तएकरामपहिंचानिये ५०७ देखोंरामकैसोकहिकैदकिये
कियेहियेहूजियेकृपालहनुमानजूदयालहो। ताहीसमयफै
लिगयेकोटिकोटिकपिनयेलोंचैंतनखैंचैंचीरभयोयोंबिहाल
हो।फोरेकोटमारेचोटकियेडारैलोटपोटलीजेकौनओटजाइ
मानोप्रलयकालहो। भईतबआंखेदुखसागरकोचाखैंअब
वेईहमेंराखैंभाखैंवारोंधनमालहो ५०८आइपाइलियेतुम
दियेहमप्राणपावैंआपसमझावैंकरामातिनेकलीजिये।ला
जदबिगयोनृपतबराखिलियोकह्योभयोघररामजूकोबेगि
छोंड़िदीजिये। सुनितजिदियोऔरकरयोलैकैकोटिनयोअ
बहूंनरहैकोऊवामेंतनछीजिये। काशीजाइवृन्दावनआइमि
लेनाभाजूसोंसुन्योहोकबित्तनिजरीझमतिभीजिये ५०९॥

दियोउच्चआसन ॥ दोहा ॥ व्यासबड़ाई जगतकी कूकरकी पहिंचानि । प्यारकिये मुखचाटई वैरकिये तन हानि १ ॥ छप्पय पद ॥ ऐसीतुम्हैं न चाहिये हनुमान हठीले । साहब सीतारामसे तुमसे जु वसीले । तेरे देखत सिंहके शिशु मेडकलीले । जानतहूं कलितेरेऊ मनोगुण गणकीले । हांकसुनत दशकंधके बंधनभयेढीले । सोवलगयो किधौंभयो गहरगहीले । सेवकको परदाफटै तुमसमरथ शीले । अधिक आपते आपनो सनमानसहीले । यहगति तुलसीदासकी देखिसुयश तुहीले । तिहूं काल तिनको भलो जेरामरँगीले २ ॥

मदनगोपालजूकोदरशनकरिकहीसहीरामइष्टमेरेदृग भावपागीहै।वैसोईस्वरूपकियोदियोलैदिखाइरूपमनअ नुरूपछबिदेखिनीकीलागीहै । काहूकह्योकृष्णअवतारी जुप्रसंशमहारामअंशसुनिबोलेमतिअनुरागीहै । दशरथ सुतजानोसुंदरअनूपमानो ईशताबताईरतिकोटिगुणीजा गीहै ५१० ॥

रामइष्ट ॥ दोहा ॥ कहाकहौंछबिआजकी भलेबिराजे नाथ । तुलसीमस्तक जबनवै धनुषबाणलेउहाथ१॥ वैसोई ॥ किरीट मुकुट माथेधरयो धनुषबाण लियोहाथ। तुलसी जनके कारणे नाथभये रघुनाथ २ ॥

मूल॥ गोप्पकेलिरघुनाथकीश्रीमानदासपरगटकरी। करुणावीरशृँगारआदिउज्ज्वलरसगायो।परउपकारकधी रकबितकविजनमनभायो । कोशलेशपदकमलअनन्यदा सनव्रतलीनो । जानकीजीवनसुयशरहतनिशिदिनरँगभी नो। रामायणनाटककीरहिसिउक्तिभाषाधरी।गोप्यकेलि

रघुनाथकीश्रीमानदासपरगटकरी २३० श्रीबल्लभजूके वंशमेंसुरतरुगिरिधरभ्राजमान।अर्थधर्मकाममोक्षभक्तअनपायनीदाता।हस्तामलश्रुतिजानसबहीशास्त्रकेज्ञाता।परिचर्य्याव्रजराजकुंवरकेमनकोकर्षै।दरशनपरमपुनीतसभातनअमृतबर्षै। विट्ठलेशनंदनसुभावजगकोऊनहिंतासमान।श्रीबल्लभजूकेबंशमेंसुरतरुगिरिधरभ्राजमान२३१ श्रीबल्लभजूकेबंशमेंगुणनिधिगोकुलनाथअति।उदधिसदाअक्षोभसहजसुंदरमितभाषी। गुरुवत्तनगिरिराजभलपनसबजगसाखी। विट्ठलेशकीभक्तिभयोबेलादृढ़ताके। भगवततेजप्रतापनमितनरवरपदजाके। निर्व्यलीकआसैउदारभजनपुंजगिरिधरनरति। श्रीबल्लभजूकेबंशमेंगुणनिधिगोकुलनाथअति २३२॥

जानकीजीवन॥ कवित्त॥सखाढुरावैंचौंर छत्रवशीछड़ावै मोर सावित्री चरण सेवैं सहसी महेशकी। बरुणधनेशरान उडुरविराजगंधर्वीकन्यासुकवारीनागशेशकी। द्वारपैआइ सब ठाढ़ीहैं सखी तिनमें दामिनिसी दमकि रही अब जानरेशकी। सूरति किशोर रतिपति के समूहराज आस पास तिनबीच बैठी मिथिलेशकी ३॥ सवैया ॥ दूलहश्रीरघुनाथबन्यो दुलही सियसुन्दरि मंदिरमाहीं। गावतगीत सबैमिलिसुन्दरिवेदजुवाजुरिविप्रपढ़ाहीं। रामकोरूपनिहारति जानकि कंकणके नगकीपरिछाहीं। औरसबैसुधिभूलिगई करटेकिरही पलटारतिनाहीं ३ ॥ उक्तभाषा हनुमान्नाटके ॥ आकृष्टयुधिकार्मुकेरघुपतौवामोब्रवीह्र्ल्पियां। पुण्येकर्मणिभोजनेचभवतः प्रागल्भ्यमस्मिन्नकिं। वामान्यं पुनरब्रवीन्ममनभो दृष्टंनिजंस्वामिनं छिद्यांरावणवक्रपंक्तिमथवाप्येकैकमादिश्यतां १॥

टीका गोकुलनाथजूकी॥आयोकोऊशिष्यहोनलायोभें टलाखनकीभाषनकीचातुरीपैमेरीमतिरीझिये। कहूंहैसने हतेरोजाकेमिलेबिनादेह ब्याकुलताहोइजोपैतोपैदीक्षादी जिये।बोल्योअजूमेरोकाहूवस्तुसोंनहेतुनेकुनेतिनेतिकहीह मगुरुढूंढ़िलीजिये। प्रेमहीकीबातइहांकरहीपलटिजातग योदुखगातकहोकैसेरंगभीजिये ५११कान्हहोहलालखो रिघोरदियोननलैकैश्यामरससागरमेंनागररसालहै। नि शिकोस्वपनमांझ निपुणश्रीनाथजीनेआज्ञादईभीतिनईभ ईओटसालहै। गोकुलकेनाथजूसोंबेगिदैजताइदीजेकीजे याहीदूरिछबिपूरिदेखोख्यालहै। भोरजोबिचारैनहींचीर जकोधारैवहांजाऊंकोऊमारैपैड़ेपर्योयहुलालहै ५१२ ऐसेदिनतीनआज्ञादेतवेप्रबीननाथ हाथकहामेरेबिनागये नहींसरैगो। गयेद्वारद्वारपालबोलेजूबिचारिएक दीजैसु चिकानसुनखीजैबातकरैगो। काहूनेसुनाइदईलीजियेबु लाइअहोकहो औरदूरिकरोकरेंदुरिढरैगो। जाइवहीक हीलहीआपनीपिछानमिले सुनोमेरोनामश्यामकहोंनहीं टरैगो ५१३॥

कहूंहै सनेहतेरो॥ दोहा ॥ इहांकिया नहिंइष्टकका इस्लामाल संभार। सोसाहबसों इष्टकवइकरक्यासकैगँवा र२॥ रससागर॥मांझ॥लोना सांवरनागरसागरबरसुरली धुनिगरजै। बल्लभरसिकतानलहरै आवतगावतसुरपरजै। मोरपच्चकर डलै डुलै कलगीत पुतरीलौंबरजै। रूपकहर दरियाव आबजिन नावधर्मकी लरजै। प्रेमहीकी बातसो प्रेममोपै न बनै कलिपलटिदै जैसेनलको बरहा प्रेमहरि रूपै न बन्यो लहटू चकई डोरिलूटी छाछके स्वभावखट्टे

मीठेकोस्वाद सब बनाये जो सनेह छप्पनसों है तैसो पुनन सोंकियोसुतहित कियो सोबलदेवजाने २॥ ओटसाल है नाथजीको भीतिकी ओटको बड़ोदुख भयो अरुलरिका कान्हा देखे बिना हलाल औरसों भलीप्रीति करी ३॥ ख्यालहै तापैफकीरको अरु लरकाकी गुड़ीकोदृष्टांत॥

मूल॥ रसिकरँगीलोभजनपुंजशुठबनवारीश्यामको। बातकबित्तबढ़चतुरचोखचौकसअतिजानै। सारासारविवेकपरमहंसनिपरवानै। सदाचारसंतोषभूतसबकोहितकारी। आरजगुनतनअमितभक्तिदशधाव्रतधारी। दरशनपुनीतआशयउदारआलापरुचिरसुखधामको। रसिकरँगीलोभजनपुंजशुठबनवारीश्यामको २३३॥

बात॥ कबित्त॥ कीरतिको मूलएक रैनिदिन दानदेबो धर्मको मूल एक साधु पहिचानिबो। बढ़िबेको मूल एक ऊंचो मन राखिबोई जानिबे को मूल एक भली बात जानिबो। ब्याधि मूल भोजन उपाधि मूल हास्य जानो दारिदको मूल एक आरस बखानिबो। हारिबेको मूल एकआतुरी है रणमांभ चातुरी को मूलएक बात कहि जानिबो १॥ दोहा॥ बात न हाथी पाइये बातनि हाथीपाइ॥ बातनि सों बिष उतरै बातनि बिषह्वै जाइ २ तापै केशवदास को अरु बीरबल को दृष्टांत॥ कबित्त॥ आयो एक पंडित अखंडित बिचारवान वेद औ पुराण मंच यंचनि को गातुरी। ताने पुनिकही सही हाड़हू को सिंघकरौं लावो लाइदियो लियो अति ऊलसातुरी। आप द्रुम चढ्यो तिन पानी लैकै पढ्यो पुनि छिरकै तै जियो अति कियो जाको घातुरी। कीजिये विवेक एक चातुरीसों बच्यो याते एक ओर चारिवेद एक ओर चातुरी ३॥ दोहा॥ बात बिडारै भूत को बात बचावै

प्रान ॥ बात अधिक भगवान तेकही हंस अख्यान ४ हरि आवै पै बातन आवै जैसे ब्रह्माको सनकादिक पूछी चित्त विषयमें जाइ विषय चित्त में जाइ न्यारो कैसेहोय तब उत्तर न आयो तब हंस रूप धरिकै श्रीभगवान ने जुवाब दियो ५ कागाकाको धन हरै कोयलकाको देइ ॥ मीठी बाणी बोलिकै जग अपनो करि लेइ ६प्रस्तावे॥ हेजिह्वे रससारज्ञेमधुरंकिन्नभाषसे।मधुरंवदकल्याणिसर्वंदामधुर प्रिये ७ चतुराई बात कहा एक पंडित बीरबलपै आयो वासों पूछी कछू पढ़े हौ कही पढ़े हैं वेद शास्त्र पुराण कविस्त बात ८ कवित्त बड चतुर ॥ कवित्त ॥ मेह बरसाने तेरे नेह बरसाने देखएह बरसाने बर मुरली बजावेंगे। सांनि लाल सारीलाल करैलाल सारी देखि वेकी लालसारी लाल देखे सुख पावेंगे। तुही उरबसी उरबसी नाहिं आनतिय कोटि उरबसी तजि तोसों चित लावेंगे। सेन बनवारी बनवारीतन आभूषण गोरे तनवारी बनवारी आज आवेंगे १॥

भागवतभलीबिधिकथनकोधनजननीएकैजन्यो। नामनरायनमिश्रवंशनवलाजुउजागर। भक्तनकीअतिभीर भक्तिदशधाकोआगर। आगमनिगमपुराणसारशास्त्रनसबदेखे।सुरगुरुशुकसनकादिव्यासनारदजुबिशेखे।सुधाबोधमुखसुरधुनीजसबितानजगमेंतन्यो।भागवतभलीबिधि कथनकोधनजननीएकैजन्यो २३४॥

भागवत॥ छप्पै॥ निगम कलपतरु उदैसोई भागवत प्रमाना। द्वादश मोटी डार सोई घस्कंध बखाना। चिंप्रत पुनि पैंतीस ध्यायसो छोटीशाखा। सूक्ष्म कलीश्लोक सहस्रअष्टादशभाखा। यत्रअक्षरपुनिपंचलखसहस्रछिहत्तर औरगनि। तत्ववेत्तातिऊ लोक में ब्रह्मवीजभागवतपुनि२

भलीबिधि॥ कबित्त॥ भागवत कथन समुद्रको मथन हरि गुण नाम रूपजैसे अमृत उधारयोहै। मृत्युप्रायजीवजगभक्तिदान दैकैदुस्तरभवसागर कोपारलै उतारयोहै। प्रेम रंगराते कहै नेहभरी बातें सब जगतके नाते करि हातें उबारयोहै। करुणानिधान गुण रतननिकी खानिमानोते ज्ञान बिज्ञान युक्तिजीव बिस्तारयोहै ३ धनजननी जैसे माता एक पुत्रजनै तैसेएक इनहीं को श्री शुकदेवजीने भागवत दईहै औरनपै कैसे आइ सोपको फल सुवा डारै एकतौ कैसेहै सुखते गिरतेही ऊपरही लेलेहिं। एक जमीन मेंते लेहिं तिनको सवाद नहीं ऐसेसुवादनहीं ऐसे सुवारूपी शुक तिनके सुखते लई ४॥ नाम॥ दोहा॥ नामनरायणमिश्रसी नवलाबंशसुहात। कोटि जनमके तमहरै आतपलों बिख्यात। भक्तन की॥ दोहा॥ साधुतहांही संचरै जहांधर्मकोसीर। सरवरसूखे परशुराम हंसन बैठेतीर २॥ कबित्त॥ राजातहैंभक्तराज मानस समान प्रेम रसनीर भीर गंभीर सुखछायोहै। हरिगुणरूप जालि मानिकरसालमानों छायासों बिशाल जस सनूया सरसायोहै। श्रेनीकलहंस मानों भूमिरहे परमहंस अतिही प्रशंस रंगरूप बिरमायोहै। अलबेली अली आश बिश्वासहै रसिकनकी प्रेमहीकी राशिसो उच्छिष्ट शेष पायोहै ३॥ सारशास्त्र भागवते॥ मन्येसुरान्भागवतानथी शेसंभ्रमागीभिनिविष्टचित्तान्। येसंयुगेचाच्चतताच्चं पुत्रमंशे सुनाभायुधमापतंतं४सुधाबोध॥सवैया॥ भक्तिसुधारसज्ञान वचनसुख सहजहि बोलैं। परमप्रबीणबिचिचनवीन ग्रंथकी गूढ़ग्रंथको खोलैं। नारायण जगतारण कारण भूमंडलसुर सरिसँगडोलैं। जाकीजस शीतलछांह तरंगबिन अलबेली अलिहंस कलोलैं ५॥ कबित्त॥ मिश्र श्रीनारायणजु मधुपुरीबासकियो पुनि हरद्वारमें नृसिंहारनसों मिले। तिनों कीसुआज्ञापाइ बद्रिकाश्रमहिं जाइ मिलिशुकदेवजूसमहासुखमेंझिले। आयेफिरि काशी सुखराशी वेसन्यासी

पाये तिनसों जनमनिसुखमनमें मिले। पंडितप्रवीणजितेति नकीकथासोंतितेचितमोचितरहेमानोंमहाअहिकिले ६॥

कलिकालकठिनजगजीतियोराघवकीपूरीपरी। काम क्रोधमदमोहलोभकीलहरनलागी। सूरजज्योंजलग्रहेबहु रिताहीज्योंत्यागी। सुंदरशीलस्वभावसदासंतनसेवाव्रत। गुरुधर्मनिपकनिर्वह्योबिश्वमेंबिदितबड़ोभृत। अल्हुरामरा वलकृपाआदिअंतधुकतीधरी। कलिकालकठिनजगजी तियोराघवकीपूरीकरी२३५ हरिदासभलप्पनभजनबल बावनज्योंबढ़्योबावनो। अच्युतकुलसोंदोषस्वपनहूउर नहिंआन्यो। तिलकदामअनुरागसबनगुरुजनकरिमान्यो। सदनमाहिंबैराग्यबिदेहनिकीसीभांती। रामचरणमकरंद रहतिमनसामदमाती। योगानंदउजागरवंशकरिनिशिदि नहरिगुणगावनो। हरिदासभलप्पनभजनबलबावनज्यों बढ़्योबावनो २३६॥

अच्युत॥ दोहा॥ कामीसाधुहिकष्णकहिलोभीबामन जानि। क्रोधीकोनरसिंहकहि नहीभक्तकीहानि१ रामच रण॥ जिहिघट नौबतनामकी सोघटछीनीनाहिं। प्रकट देखिकवीरज्यों दीपकभीडलमाहिं२॥ जंगलीकह्योना- म नलियो सोनाभाजी एककुवांके मनखंडपै बैठेहैं तहां माथेतिलकधारेमालासारवाड़ीआइगये जबह्वांछप्पैबना- ईजंगली देशकेकहे तिनको आचार्यजी पूछेको दृष्टांत ३॥

जंगलीदेशकेलोगसबश्रीपरशुरामकियेपारषद। ज्योंचंद नकोपवननींबपुनिचंदनकरई। बहुतकालतमनिबिड़उदय

दीपकज्योंहरई । श्रीमटपुनिहरिब्याससंतमारगअनुसरई । कथाकीरतननेमरसनिहरिगुणउच्चरई । गोबिंदभक्तिगदरोगगतितिलकदामसदबैदहद । जंगलीदेशकेलोगसबश्रीपरशुरामकियेपारषद २३७ श्रीपरशुरामजीकीटीका ॥ राजसीमहंतदेखिगयोकोऊअंतलेनबोल्योजूअनंतहरिसगेमायाटारिये । चलेउठिसंगवाकेपहरिकोपीनअंगबैठिगिरिकंदरामेंलागीठौरप्यारिये । तहांबनजारोआइसंपतिचढ़ाइदईऔरसंगपालकीहूमहिमानिहारिये। जाइलपटाइयोंपाइभावमेंनजान्योकछु आन्योउरमांझआवैप्राणवारिडारिये५१४ ॥

गदरोगगतिसुजानसुंदर वैद्यलगैतौभारीरोगआइ४।५ तिलक दाम औषधि दई तिलक दाम इनको सद औषधिहै१ श्लोक ॥ तुलसीकाष्ठमालांतुप्रेतराजस्यदूतकाः। दृष्ट्वानश्यंतिदूरेण वातोद्धूतंयथादलं २ किरातहूणांध्रि ॥ छप्पै ॥ संत तिलक करतार तिलक शंकर सिरसोहै। ब्रह्माके शिरतिलक तिलक बिन जगमेंकोहै। तिलकबिना शिर अशुभ तिलक राजा पदपावै । तिलक संत सनमान तिलक सों महँत कहावै। जियेयुगति मूये मुकति सुरगण मुनि जन शिर धरैं। तुलसी तिलक सतगुरु कमल बसै भाव सागर तरै २ बैठि गुरुके पास तिलकलिललारहि कीजै। बिना तिलक जो अफल तिलक करि दिच्छादीनै। दान पुण्य तप धर्म तिलक बिन निष्फल जावै। तिलकधार कछु करौ अनत फल वेद बतावै। तिलक देखि यमहूं डरै तिलक बिनाकहि दीनजन । तत्ववेत्ता तिहुलोक में भौड़ो मुहड़ो तिलक बिन ३ तिलक है सत असनान तिलक ब्राह्मण शिर सोहै। तिलक बिनाकछुकरौ सबैफलनिष्फलजोहै । तिलकतिया शृंगार तिलक नृप शीश लगावै।

तिलक वेद परमाण तिलक त्रैलोक चढ़ावै। तिलक तत्व युगयुगसदा तिलक मिलैं सिधिपाइये। परशुराम ब्रह्मांड मेंसुयश तिलककोगाइये १ दोहा ॥ बानोंबड़ो दयालको तिलक छाप अरु माल। यम डरपै काकूक है भय मानै भूपाल २ आयाटारिये ॥ मायासगी न तनसगोसगो न यहसंसार ॥ परशुराम या जीवको सगोसुसिरजनहार ३ कहतेहैं करते नहीं मुहकेबड़े लवार ॥ कारो मुहड़ोहोइ गोसाईं के दरबार। भावमैंन जान्यों आप मैं आपभाव लायो आपु बोले तुम बड़े उपकारीहौ ॥ पद ॥ ऐसन संत बड़े उपकारी। यद्यपि सकल सिद्धि इनके सँग जीव नसों हितकारी। निर्मल जल बोलै अति निर्मल निर्मल कथा दृढ़ावै। निर्मल में मलदेखै कबहूं तो ततकाल छुड़ावै। मायामिलै महोच्छो माडै आनँदमेंदिन काटै। करि हरि भक्ति तरै भवसागर और न तारन माड़ै। त्यागैलेह देह पुनित्यागै चित लालच नहिं काई। चतुरदास इन भक्तनि को संग छांड़ि अनत नहिं जाई ५ आपतौ गुणग्राहीहौ तापैऊंट की नारि को दृष्टांत पै मैं अपराध कियो पै तुमताही न निंदा पहुंचै न अभाव पहुंचै ६ खकुण्डलिया ॥ आकाशै बिजुरी खिवैखरीचलावै लात। खरी चलावै लात बिमुखकृत भक्तनिनिंदा। उलटिपरैतिहि छार छार परसे नहिंचंदा। ज्यों छाया उपहार प्रहारन लागै तनको। त्योंजगकी उपहास कहा पहुंचै हरिजन को। आगर ग्रयामके भृत्यसन दुनी देत घिसि जात। आकाशै बिजुरी खिवै खरी चलावै लात ७ सतउपकारीपै शाहूकार कोसुई दीनी सो दृष्टांत ॥

मूल ॥ गुणनिकरगदाधरभट्टअतिसबहिनकोलागैसु खद। सज्जनसुहृदसुशीलबचनआरजप्रतिपालै। निरमत्सरनिष्कामकृपाकरुणाकोआलै। अनन्यभजनदृढ़करन धर्योबपुभक्तनकाजै। परमधरमकोसेतविदितवृन्दाब

नगाजै। भागवतसुधाबरषैबदनकाहूकोनाहिंनदुखद।गुणनिकरगदाधरभट्टअतिसबहिनकोलागैसुखद २३८॥

निर्मत्सर॥ दोहा॥ बातकहैंनिर्लोभकीभर्‌योहियेअतिलोभ। युगुल प्रेमरस रूपकी कैसे उपजै गोभ १ सो ऐसो वक्ता नहोइ। श्रोताऐसो चाहिये जाकेतनमनश्याम। बक्ताहू हरिको भगत जाकेलोभ न काम २ श्रोताऐसो न होइ॥ कथा सुनै नहिं कीरतन बकै आपनीवाइ। पापी मानुष परशुरामकै औंघे उठिजाइ ३श्याम ॥पद॥ सखीहौं श्यामरंगरँगी देखिबिकाइगईवहमूरतिसूरतिमाहिंपगी। संगहुतो अपनो सपनोसो सोइरहीरसखोई। जागेहू आगेदृष्टि परैसखीनेकुन न्यारोहोई।एकजुमेरी अंखियनि मेंनिशिद्यो रह्योकरिभौन। गाइचरावन जातसुनौसखी सोधौं कन्हैयाकौन। कासोंकहौकोपतिपाइरी कौनकरै वकवाद। कैसेके कह्योजात गदाधर गूंगेको गुरस्वाद॥ कवित्त॥ मोरपच्छ धरेपटपीत बन मालगरे सांवरीसी मूरति प्रबीन मोसोंपगी है। दरतन टारीपल त्रणहूं न होतिन्यारी जैतिकबिसारी बिसरति नाहिं खगीहै। चलतिहौं तौ चलतिहै बैठीहौं तौ बैठीहै सोईहौं तौ सोई हैरी जागीहौं तौ जगीहै। तुमसब मिलिमेरी आंखिनि को दोषदेत येऊतौमैं मूंदिराखी तऊतहां लगीहै ५ कानन करति सीख कानन फिरतिसुनि अतिही हठीली फिरिपाछे पछिताईहै। धामभूलि जैहैकाम अंगनि में ऐहै काम नैनघर लागै घूमिघूमि गिरिजाईहै। अमलौंन मानतीही मेरीकही बातसुनि पाछेजल जातनि के पातनि बिछाईहै। दीठिकहूं ऐहै मन मोहन मनोजछबि दौरि दौरि अटनिचढ़ेको फलपाई है १॥

टीकागदाधरभट्टजूकी॥ श्यामरंगरँगीपदसुनिकैगुसाईंजीपत्रदैपठायोउभयसाधुबेगिधायेहैं। रैनीबिनरंग

कैसेचढ्योअतिशोचबढ्योकागदमेंप्रेममढ़ेउतहांलैकैआयेहैं पुरढिगकूपतहांबैठेरसरूपलगे पूंछिवेकोतिनहींसोंनामलै बतायेहैं। रहोकौनठौरशिरमौरवृन्दावनधामनामसुनिमू र्छाह्वैकैगिरेप्राणपायेहैं ५१५ कान्हकहीभट्टश्रीगदाधर जीयेईजानोमानोउहिपातीचाहकेरीकैजिवायेहैं। दियोप त्रहाथलियोशीशसोंलगाइचाइ बांचतहीचलेबेगिवृंदावन आयेहैं। मिलीश्रीगुसाईंजीसोंआंखैंभरिआईनीरसुधनश रीरधीरेधीरवहीगायेहैं। पढ़ेसबग्रंथसंगनानाकृष्णकथा रंगरसकीउमंगअंगअंगभावछायेहैं ५१६ नामहोकल्यान सिंहजातिरजपूतपूतबैठोआइकथासोअभूतरंगलाग्योहै। निपटनिकटबासधोरहराप्रकाशगांव हासपरहासतज्यो तियादुखपाग्योहै। जानीभटसंगसोंअनंगबासदूरिभईक रौलैकैनईआनिहियेकामजाग्योहै।मांगतफिरतहुतीयुवती औगर्बवतीकहीलेरुपैयाबीशनेकुकहौराग्योहै ५१७॥

विषयमहा दुरतहोहै ब्रह्मापुत्रीके पाछेपर्यो चंद्रमा गुरुपत्नी के महादेवजू श्रीमोहनी के ब्रह्मा करोंगटाके फौंगटाकी मसीकीतुसी पै अभ्याससों काढ़िये २॥ कवित्त सूधेकहतू अबै नहिंमानत तूड़त फेरिननेकु चितेहै। भूमिमें आकबनावत मेटतपोथियै कांखलिये दिनजैहै। सांचोहौं भाषतिमोहिं ट्टदाकीसौं प्रीतमकीगतितेरिपैह्वैहै।मोसों कहा अठिलात अजासुत कैहौं ककाजूसों तोड्डं पढ़ैहै ३॥

गदाधरभट्टजीकीकथामेंप्रकाशकहौ अहोकृपाकरोअ बमेरीसुधिलीजिये। दईलौंडीसंगलोभगंगचितभंगकिये दियेलैबताइअबमेरोकाममकीजिये। बोलेआपबैठियेजूजाप

नितकरोहियेपापनहींमेरोगईदरशनदीजिये । श्रोतादुख पाइभापैझूंठीयहिमारिनापैसांचीकहिराखैसुनितनमनकी जिये ५१८ फाटिजाइभूमितौसमाइजाइश्रोताकहैंबहैहग नीरहृवैअधीरसुधिआईहै। राधिकाबल्लभदासप्रकटप्रका शभासभयोदुखराशितबसुनिसोबुलाईहै । सांचीकहिदी जैनाहींअभीजिवलीजैडरसबैकहिदईसुखलियोसंज्ञाभाई है। काढ़ितरवारितियामारिबेकल्यानगयोदयोसोप्रबोध हैमैकरीक्यानाईहै ५१९ ॥

मेरोकामकीजिये पद ॥ साधोजगमें कामिनि ऐसीरे राजारंक सबनिके घरमें बाघिनि ह्वैकै बैसीरे। बसती छोड़िरहै बनबासा चाबति सूखे पातारे। दांवपरै तिनहूं को मारै देखातीपर लातारे। ज्ञानीगुनी शूर वे पंडित येतो सबै सयानेरे। सूधेहोइ परैफांशीमें युवतीहाथ बिकानेरे। तीनिलोक में कोउ न छांड्यो दियेदाढ़ तरसारेरे। हरी दास हरिसुमिरण लागे तबभगवंत उबारेरे १ दियोपर बोधन्याय। कामांधायेनपस्यंति जन्मांधाष्चनपस्यति ॥ नपस्यंतिमदोन्मन्ता अर्थीदोषो न पस्यति २ ॥ दोहा ॥ बिषयचुगौ जिनि चुगैमन चुगतकछू सुखहोइ ॥ फिरिफांशी ऐसीपरै तिहिसम दुख:नकोइ ३ रेमन कबहूं जाइ जि निभूलि बिषै वनरंग। मनमथ ठगमारत तहां लियेबहुत ठगसंग ४ राधाबल्लभ लालबिन व्यासन पायोसु:ख ॥ डार डारमैहूंफिर्यो पातपात में दु:ख ५ ॥

रहैकाहूदेशमेंमहंतआयोकथामाहिं आगेलैबैठायेदेखि सबैसाधुभीजेहैं। मेरेअश्रुपातक्योंनहोतशोचसोतपरेकरलै उपाइदैलगाइमिर्चखीजेहैं । संतएकजानिकैजताइदईभट्ट जूकोगयेउपसबैजबमिलिअतिरीझेहैं । ऐसीचाहहोइमेरे

रोइकैपुकारकरी चलीजलधारनयन प्रेमआइयीजेहैं ५२० आयोएकचोरघरसंपतिबटोरिगांठिबांधीलैमरोरि क्योंहूं उठैनाहिंभारीहै। आइकैउठाइदईदेखीइनरीतिन ईपूछौंनामप्रीतिभईभूलमैंबिचारीहै। बोलेआपलैपधारो होतहीसवारीआवैऔरदशगुणीमेरेतेरेयहीप्यारीहै। प्राण नकोआगेधरोआनिकैउपाइकरोरहेसमुझाइभयोशिष्यचो रीढारीहै ५२१॥

जलधारि॥ दोहा॥ परसा हरियश सुनतहीं अवैन जल भरिआंखि॥भरिभरि मूठीधूरिकी तिनआंखिनमें नांखि १ हरियश सुनिकै नैनजो अवैनभरि भरिवारि॥ परसा मूठी धूरिकी तिनआंखिन में डारि २ फूटानयन फाटाहियो जरौ सुतनकि हिकाज॥ अवैद्रवै पुलकैनहीं तुलसी सुमि-रत राम ३॥ सोरठा॥ हरियश जीवनमूरि तुलसी सु-मिरतदृगस्रवैं॥तिननैननिमें धूरि भरिभरि मूठीलेलिये ४॥

प्रभुकीटहलनिजकरनकरतआप भक्तिकोप्रतापजानै भागवतगाईहै। देतहुतेचौकाकोऊशिष्यबहुभेटलायोदूरि हीतेदासदेखि आयोयोंजनाईहै। धोवोहाथबैठोआइसुनि कैरिसाइउठेसेवाहीमैंचाइयाकोखीजिसमुझाईहै। हियेहिं तरासजगआशकोबिनाशकियो पियोप्रेमरसताकीआशलै दिखाईहै ५२२ मूल॥ चरणशरणचारनभगतहरिगाइ कएताहुवा। चौमुखचौराचंडजगतइश्वरगुणजानैं। कर मानंदअरकोल्हअल्हूअक्षरपरवानैं। माधवमथुरामध्यसा धुजीवानँदसीवां। हूदानरायणदासनाममांडननतग्रीवां। चौरासीरूपकचतुर्वाणीबरनतजूजुवा। चरणशरणचारण

भगतहरिगायकयेताहुवा१३६।टीकाकरमानंदचारनकी॥ करमानंदचारनकी बाणीकोउचारनमें दारुणजेहियोहै।इ सोऊपिघिलाइयो। दियोग्रहत्यागिहरिसेवाअनुरागभरेवटु वासुग्रीवहाथछरीपधराइये । काहूठौरजाइगाडवेहीपध रायवापैलायेउरप्रभु भूलिआयेकहांपाइये । फेरिचाह भईवई श्यामकोजताइ वातलईमगवाइ देखिमतिलैभि जाइये५२३॥

निजकर॥हृषीकेन हृषीकेशं सेवनंभक्ति रुच्यते५ रामभक्ति ग्रयमैं नहिंदेखी॥ लोचनमोरपक्षकरलेखी॥ सोस कुलिश कठोर सुछाती॥ रघुपतिचरितनसुनि हरषाती ६ जगआश को बिनाश कियो सवैया॥ आसको दासरहै जबलौं तबलौं जगको नरदासकहावै॥ त्यागोगुनी कविपंडित कोऊहो आसलिये सबकोभरमावै॥ स्वर्गमही तलवा सकऊं करौआस जहांलगि नाचनचावै।तातेमहा सुखपाइ निराशमें आशतजै भगवान को पावै १ दिखाईहै॥कुंडलिया॥आपुनजाई सासुरै औरनको सिषदेइ।औरनको सिषदेइ हिया अपनो नहिंसोधै। नखसिख जटित अज्ञान मूढ़ जगको परमोधै। निजआंखिनके अंध गैलऔरनि उपदेशै। भवजल भरो अपार ताहितरि सकैनसेसै। अग्रकहै अपस्वारथी परमारथ पूजालेइ।आपुनजाई सासुरैं औरनको सिषदेइ २॥दोहा॥ सीताराम सुजानतजि करै औरको जाप। ताकेमुखमे दीजिये नौसादर को बाप ३ फेरिचाह भई॥हरिसेवा राखिलई गुरुको त्यागिदियो मातापिता पुत्रस्त्री आदिक क्योंकि सबको त्यागि हरिकी सेवा करनीनहीं तौधूरिलगाइकै धरिही फांकनी हरिसेवा घरहीमें क्योंनकरी एकांत बिनानहोइ ग्रहमेंदुख आइलगै १ वनमें काहूको दुखहोइ लेनाएकन देनादोइ २ तापै दृष्टांत डुकरिया कोहसुलीको॥श्लोक॥ अहंभक्तपराधीनः॥

कोल्हअल्हूभाईदोऊकथा सुखदाईसुनोंपहिलोविरक्त मदमांसनहिंखातहै । हरिहीकरूपगुणबानीमेंउचारकरै धरेभक्तिभावहियेताकीयहबातहै।दूसरोअनुजजानोंखाइ सबअनुमानोंनृपहीकोगावेंप्रभुकभूगाइजातहै । बड़ेकेअ धीनरहैजोई कहैसोईकरै ईशरुरिचाहै आपदीनता में मातहै ५२४ बड़आयकहीचलौंद्वारकानिहारिसही मि थ्याजगभोगयामेंआपुहीविहातहै । आज्ञाकेअधीनचल्यो आयेपुरलीनभयेनयेचोजमंदिरमेंसुनौकानवातहै। कोल्ह नेसुनायेसबजेजेनानाछंदगाये पाछेअल्हदोइचारकहैस कुचातहै । भर्योईहुंकारोप्रभुकही मालागरेंडारोलाय पहरावोकह्यो मेरोबड़ोभ्रातहै ५२५ दयोपैनयाहिदयो बड़ोअपमानभयोगयोबूडोसागरमेंदुखकोनपारहै । बूड़ तहीआमेंभूमिपाइचलोझूमिप्रीति सोंअनीतिभूलैनाहिमा नोंतरिवारहै ।सोईआयेलैनहरिजनमनचैनझिल्यो मिल्यो कृष्णजाइपायोअतिसुखसारहै।बैठेजबभोजनकोदईउभ यपातरिलैदूसरीजुकैसीकहीवहीभाईप्यारहै ५२६ ॥

आपुहीबिहातहै॥ पद॥ सुपनो सो धनआपनोप्रयाम ॥ आदि अंततासों न बिछुरिय परतकालसों काम। तनधन सुतदारागृहसर्बसुजाहि भजेलैनाम । देखिदेखिफूलजिनि भूलैजगनटवाको धाम। ज्योंबछराकेधोवैं गइयाचाटति है वहचाम। असेब्यास आगसव झूठी सांचोहै हरिनाम ४॥ कुंडलिया ॥गिलति कटोरी वारिको गिली आपही जाइ। गिली आपहीजाइ विषैभोगत अज्ञानी।ज्ञानीपरै न बात आपु क्षित जात बितानी पुनिजैसे जललैन घके दूरै जलबेली। असेही सबविषै मिटैगुरु चेलाचेली। एक

छेदकी यह दशा देहहिबने देखाइ । गिलति कटोरी वारि को गिली आपही जाइपाछेमलू ॥ सवैया ॥ देश विदेशके देखेनरेशन रीझिकैकोऊजो बूझकरैगो। यातेतनय तनजातगिरयो गुणसौगुणअवगुण गांठिपरैगो । बांसुरी-वारो बड़ोरिझवारहै श्यामजुनेक सोढारढरैगो । लाड़िलोछैल छबीलोअहीरको पीर हमारे हियेकी हरैगो ॥ नयेनयेचोज ॥ विरक्तकोआदरसत्कार मंदिरमें भगवान सदाकरैंहैं सोनकियोविषयीको कियो यहनयो चोज ॥

सबैविषभयोदुखगयोसोईहुवोनयोदियोपरमोध वाकी बातसुनिलीजिये। तेरोछोटोभाईमेरोभक्तसुखदाईताकीकथालैबलाईजामेंआपहीसोंदीजिये। प्रथमजनममांझबड़ो राजपुत्रभयोगयोग्रहत्यागिसदामोसोंमतिभीजिये । आयोबनकोऊभूपसंगरागरंगरूप देखिचाहभईदेहदईभोग कीजिये५२७तेरेईबियोगअन्नजलसबत्यागिदियोजियो नहींजातवापैवेगिसुधिलीजिये। हाथपैप्रसाददीनोआइघरचीन्हिलीनोसुपनोसोगयोबीतिप्रीतिवासोंकीजिये ।द्वारकाकोसंगसुनिआवतहीआगेचल्यो मिल्योभूमिपरिदृगभरिबहेदीजिये। कहीसबबातश्यामधामतज्योताहीक्षण करयोबनबासदोऊमतिअतिभीजिये ५२८ अल्हहीकेबंशमें प्रशंशयाहिजानिलेहुबड़ोऔरुभाईछोटोनारायणदासहै । दीरघकमाऊलघुउपज्योउड़ाऊभाभीदियोसीरोभोजनलै भयोदुखरासिहै। देवोमोकोतातेताकरिबोली वहक्रोधभरियहूजाहूकरोभरवावेकियोहासहै । गयोग्रहत्यागिहरियाग कर्योवैसेहीजुभक्तिबशश्यामकह्योप्रगटप्रकाशहै ५२९ ॥

दियोप्रबोध ॥ कुंडलिया ॥ परवतको कहदेखिये पाइन

तरकीदेखि। पाइनतरकी देखि बातजनि कहैपराई। आनिजरो कोजबरो राखिउर जरतौभाई। सारोराखत सती सुनोनहिं राखतयारो। अपनो पहरेजागि गांठितो सुतो उबारो। अगरअसत आलाप तजिहरिगुण हिरदे लेखि। परवतकोकह देखिये पाइन तरकीदेखि २॥ गयो ग्रहत्यागि॥ कबित्त॥ दूरैसेमीठीमीठी बातेंसो बनाइकहै अंतर कपट तासों पलनपतीजिये। बाणीबिनपंडित विवेक बिन भूपति औ ज्ञानहीनगुरु ताको दीक्षाहू न लीजिये। कहैहरिभक्त राजबिन कैसो रजपूत बिनासनमानताको दान कहाकीजिये। नदीबिनग्रास हरिसेवा बिनकाम कैसो जामेंनहींप्रीति सोई मित्र कहाकीजिये १॥ दोहा॥ याभवपारावारको उलँघि पारकोजाइ। तियछबि छाया ग्राहिनी बीचहि पकरैआइ २॥ रसन सिसन संयमकरै हरि चरणनतरबास। तबहीं निश्चै जानियेरामामिलनकी आस ३॥ तजबिलास जे विषयके जैान प्रेमसोंजाहिं। भानु उदय तमरहैतो वहैभानहींनाहिं॥

मूल॥ नरदेवउभैभाषानिपुणपृथ्वीराजकबिराजहुव। सवैयागीतश्लोकबेलिदोहागुणनवरस। पिंगलकाव्यप्रमाणविविधिबिधिगायोहरियश। परिदुखबिदुखसलाध्यवचनरचनाजुबिचारै। अर्थविचित्रनिमोलसबैसागरउद्धारै। रुक्मिणीलताबर्णनअनूपवागीशबदनकल्यानसुव। नरदेवउभैभाषानिपुणपृथ्वीराजकबिराजहुव १४०॥

उभयभाषानिपुण॥ पंडितह्वैकैभाषाकोप्रमाणनहींकरै जामें हरियशहोइजाइ भाषाको बिवेकीहैं तेमब प्रमाण करैहैं १॥ श्लोक॥ साधुभिर्ग्रस्तहृदयोभक्तैर्भक्तजनप्रिय:२॥ अज्ञानीनहीं प्रमाणकरैहैं तापैदृष्टांत वैष्णवको अरु पंडितको ३ हरियश॥ दोहा॥ हरियश रसनहिं कबित महिं सुनै कौनफलताहि। शठ कठपुतरी संगधरि सोयेको

फलकाहि ४ बचन रचना॥सुबरणको चाहतसदा कबि व्यभिचारीचोर। पांवधरतचिंता करैं श्रवणसुन्यातनशोर ५॥

टीकापृथ्वीराजराजाकी ॥ मारवारदेशबीकानेरकोनरेशबड़ोपृथ्वीराजनामभक्तिराजकबिराजहै। सेवाअनुरागअरुबिषयबैराग्यऐसोरानीपहिंचानीनाहिंमानोदेखीआजहै। गयोहोबिदेशतहांमानसीप्रवेशकियेहियेनहींछुवैकैसेसरैमनकाजहै। बीतेदिनतीनिप्रभुमंदिरनदीठिपरैपाछेहरिदेखिभयोसुखकोसमाजहै ५३० लिखिकैपठायोदेशसुंदरसँदेशयह मंदिरनदेखेहरिबीतेदिनतीनिहैं। लिख्योआयो सांचुबांचिअतिहीप्रसन्नभये लगेराजबैठेप्रभुबाहरप्रबीनहैं।सुनोऔरएकयोंप्रतिज्ञाकरीहियेधरीमथुराशरीरत्यागकरैरसलीनहैं। पृथ्वीपतिजानिकैमुहीमदईकाबिलकीबलअधिकाईनहींकालकेअधीनहैं ५३१ जीवनअवधि रहेनिपटअलपदिनकलपसमानबीतिपलनबिहातहै। आगमजनाइदियोवाहैइन्हैंसांचोकियो लियोभक्तिभावजाकेछायोगातगातहै। चल्योचढ़िसांड़िनीपैलईमधुपुरीआनिकरिकैस्नानप्राणतजेसुनीबातहै।जयजयधुनिभईब्यापिगईचहूंओरअहोभूपतिचकोरजसचंददिनरातिहै ५३२

मूल ॥ द्वारिकादेखिपालंटतीअचढ़िसीवैकीधीअटल । असुरअजीजअनीतिअगिनिमेंहरिपुरकीधें। सांगनसुतनैसादराइरनछोरैदीधों। धराधामधनकाजमरणबीज।हूमांडो। कमधुजकुटकेंहु वौचौकचतुरभुजनीचाड़ै। बाढ़ेलवाढ़िकीवीकटकचांदनामचाड़ैसबल। द्वारिकादेखिपालंटतीअचढ़िसीवैकीधीअटल १४१॥

विषयवैराग्य ॥ कबित्त ॥ हांसीमें विषाद बसै विद्यामें विवादबसै भोगमाहिं रोग पुनिसेवामाहिं दीनता। आदरमें मानबसै सुचिमें गिलानबसै आवनमें जानबसै रूप माहिंहीनता। योगमेंअभोग औसँयोगमें वियोगबसै पुण्य माहिं बंधन औ लोभमें अधीनता। निपट नवीनये प्रवीण नि सुबीनलीन हरिजुसोंप्रीति सबहीसों उदासीनता ६ सांचखाचि तो राजाने बाहर क्योंनदेखे बाहरकी भावना नहीं प्रतिज्ञा देखकी भक्तनिको उपेक्षा नहींहै २॥

टीका ॥ कावापतिसींवांसुतसांगनकोप्यारोहरिद्वारा वतिईशयोंपुकारैरक्षाकीजिये। सदाभगवानआयभक्तप्र तिपालकरैंकरोप्रतिपालमेरोसुनिलतिभीजिये। तुरकअ जीजनामधामकोलगाईआगि लईवागघोरकीआयेद्रक कीजिये। दुष्टसबमारेप्रभुकष्टतेउबारेनिजप्राणवारिडारे यहनयोरसपीजिये ५३३॥

करौ प्रतिपालमेरो ॥ दोहा ॥ करैनकरावैआपहीनाम न अपनोलेहि। साईंहाथ बढ़ाइयों जिहिभावै तिहि देहि ३॥ भक्तभूप बड़े बड़े राजा सबदिशानको जीतें पै इंद्री न जीतीजाहिं॥

मूल॥ प्रथवीराजनृपकुलबधूभक्तभूपरतनावती।कथाकी रतनप्रीतिभीरभक्तनिकीभावै।महामहोछौमुदितनित्यनँद लालड़ावै। मुकुंदचरणचितवनभक्तमहिमाधुजधारी। पतिपरलोभनकियाटेकअपनीनहिंटारी।भल्लपनसबैवि शेषहीआबैरसदनसुनखाजिती। पृथीराजनृपकुलबधूभ क्तभूपरतनावती १४२॥ टीका रतनावतीजीकी॥ मान सिंहराजाताकोछोटोभाईमाधोसिंह ताकीजानोंतियाता

कीबातलै बखानिये । ढिगनोषवासिनिसोश्वासनिभरत नामरटतिजटितप्रेमरानीउरआनिये । नवलकिशोरकभूंनंदकोकिशोरकभूंवृन्दाबनचंदकहिआंखैंभरिपानिये । सुनतविकलभइसुनिबेकीचाहभईरीतियहनईकछूप्रीति पहिंचानिये ५३४॥

भक्तिन होइ इन अबलाने इंद्रीजीति कै भक्तिकरी यातें भक्तिभूपकह्यो । १ कथा कीर्त्तन सांझ ॥ आइपावैंन निवाइ कसीदा असीतिसीराइह्यां । इस्क दिलादैना लेना लेस- हिं बूंदीगह्यां ॥ साहजुलफछल्लोंतिसछल्ले असीतिसी महल्ला तरसह्या । वल्लभ रसिकरमाल लालपर झूमइमे सांझह्यां १ चाहभई ॥ कवित्त ॥ जादिनते अवस परयो है कान्ह तादिनते लग्योई रहतरसनामें आठोयामहैं । चोवाचीर पानीपान चंदन चमेलीहार मांगतही सुखनिकसत घनश्यामहैं । शोचिकै सकोचनि विमोचन सकलदुख सुखको दिनेश जियको सोनिजधामहै । प्रीतिरीति तंचजग जीतिबेको यंच मनमोहनी को मंच मनमोहन को नाम है २ जाकोजासों मनलग्यो सोई जाकोराम । रोमरोम मैं रमरह्यो नहीं आनसों काम ॥ सुनिवेकी ॥

बारबारकहैकहाकहैउरगहैमेरोबहैदृगनीरहोशरीर सुधिगईहै । पूछोमतिबातसुखकरौदिनरातियहसहैनिज गातरागीसाधुकृपाभईहै । अतिउतकंठादेखिकहैसोबिशेषसबरसिकनरेशनुकीबानीकहिदईहै । टहलछुटाईऔसिरानैलैबैठाईवाहिगुरुबुधिआईयहजानोंरीतिनईहै५३५॥

बारबार ॥ कवित्त ॥ कबहुं अंग अंगराइ डारतहै अलिनपै मैरावै क्यौंहु कलन परतिहै । उत्तर सहेली लाई

तिनकी सँदेशसुनि करत प्रसिद्धकवि ऐसेही अरतिहै।कैसे कैसे गईकाऊ कैसीकैसी बातैंभईंकहांहैं ललनसुनि धीरन धरति है।एकबेर पूंछिफेरि पूछि फेरिफेरि पूछि बेरबेर वेई बातैं पूछिबो करतिहै १ पूछौंमति। हेरते वारहि बार उतैजू बावरी बालकहा धौंकरैगी। जोकबहूं रसखानिलखैफिरि क्योंऊन बीररी धीरधरैगी। मानिहैं काहूकी कानिनहीं जबरूप ठगीहरि रंगढरैगी। यातेकहूं शिषमानिभटूयह हेरनि तेरेई पैंडपरैगी २ प्रीतिकी रीति अनीतिहै प्रीतिकरौ जिनिकोइ।सबदीपक कैसेबरै बिरह नागजहँ होइ ३ बिद्या आदर लच्छिमीऔरज्ञानगुणगर्व। प्रेमपौरि पगधरतही गयेततच्छनसर्व ४ नेहनेह सबकोउ कहै नेहकरैमतिकोइ। मिलैदुखी बिछुरैदुखी नेहीसुखी न होइ ५ नेहस्वर्ग तेऊतर्यो भूपर कीनोंगौन। गलीगली ढूंढ़तफिरैं बिनघिर कोघरकौन ६ जरेजरे सो जरिबुझे बुझर जरेहू नाहिं।अहमद दाधेप्रेम के बुझिबुझि कै सुलगाहिं ७ प्रेमकठिन संसार में नाकीजैजगदीश। जोकी तौ दीजिये तनमनधन अरुशीश ८॥

निशिदिनसुन्योकरैंदेखिबेकोअरबरैंदेखेकैसेजातजल जातदृगभरेहैं। कछुकउपाइकीजैमोहनदिखाइदीजैतबहीं तौजीजैवेतौआनिउरअरेहैं। दरशनदुरिराज छोडैलोटैधूरिपैनपावैंछविपूरिएकप्रेमबशकरेहैं। करौहरिसेवाभरिभावधरिमेवापकवानरसखानदेवखानमनधरेहैं ५३६ इंद्रनीलमणिरूपप्रगटसरूपकियोलियोवहभावयो सुभावमिलिचलीहै। नानाविधिरागभोगलाड़कोप्रयोगयामेंयामिनीसुपनयोगभईरंगरलीहै। करतशिंगारछबिसागरनपारावाररहतनिहारियाहीमाधुरीसोंपलीहै।कोटिकउपाइकरियोगयज्ञपारपरैंऐपैनहींपावैंयहदूरिप्रेमगलीहै ५३७॥

सुपन ॥ दोहा ॥ सोयेढिग बातेंकरै जगेंउठत गहैबाट॥ कितहूं आवत जातकित पौरीलगे कपाट १ नखसिख रूपभरे खरेतक चहत मुसिकान। लोचनलोभीरूपको तजै न लोभीबानि २ ॥

देख्योईचहततऊकहतउपाइकहा अहाचाहबातकहौ कोनकोसुनाइये। कहीजूबनावोढिगमहलकेठौरएकचौकी लैबैठावोचहुंओरसमुझाइये । आवैंहरिप्यारेतिन्हैंआवैंवे लिवाइइहांरहेतेधुवाइपाइरुचिउपजाइये । नानाबिधिपा कसामाआगेआनिधरेआपडारिचिकदेख्योश्याम दृगनल खाइयें ५३८ ॥

चाहबात ॥ चौपाई ॥ कुवरि कहै सखिको विसवरहै। जहँवह सांवरो प्रीतमरहै ॥ सोदिश हाथसों सखिनि ब-ताई । सोदिश जीवनमूर सीमाई । कमल पत्रलै पत्र बनावै उड्योचहै सोक्यों उड़िआवै। मनसोंकहै कुटिल तू आइ। इकिलोईउठिपिय पैजाइ। नेकतौ नैननिहूं संगलै-रे। मोहनमुखको देखनदैरे ३॥

आवैंहरिप्यारेसाधुसेवाकरिटारेदिनकिहूंपावँधारेजि न्हैंब्रजभूमिप्यारिये। युगुलकिशोरगावैंनैननिबहावैंनीर ह्वैगईअधीररूपदृगनिनिहारिये। पूछीवाखवासिनिसों रानीकौनअंगजाकेइतनीअटकसंगभंगसुखभारिये। चली उठिहाथगह्योरह्योनहींजातअहोसहोदुखलाजबड़ीतनक नबिचारिये ५४० ॥

आवैं ॥ पद ॥ चलिमन ढूंढ़न जैये सतगुरुकेछोना। घि-रकसाटैं पाइयंयेराम खिलौना। प्रेमजँजीरजरायके गहि राखो भाई। इनसंतनि के मोहते मिलिहैं रघुराई। कष्णा

कृष्ण नितपढ़त हैं शुचिते चितलागे। पाइँटिके नहिंपाप
के दुखसबही भागे। कहिमलूका सबछांड़ि कै गहिलैयह
हाला। जोईजोईमूरति संतकी सोईदेखि गुपाला १ युगुल
॥ कवित्त ॥ वृन्दावनबास आश बढ़त ज्ञलाशरास बिबिधि
बिलाससदा सुखहरि दासके। भालपै तिलकश्यामबंदनी
औकंठमाल तुलसी रचत गुंजछापेदै प्रकाशके। युगुल कि-
शोरहियेमुखमें झकोर नाम नीरबौरभूमिकै सुसूचक
विलास के। सदासतसंगविनै अंग अंग पगे पुनिजगे जग
माहिंनीके लागे श्रास पासके॥

देख्योमैंबिचारिहरिरूपरससारताकोकीजिये अहार
लाजकानिनीकेटारिये। रोकतउतरिआईजहांसंतसुखदाई
आनिलपटाईपाइँबिनतीलैधारिये । संतनजिमाइबेकीनि
जकरअभिलाषलाषलाषभांतिनसोंकैसेकैउचारिये। आज्ञा
जोईदीजैसोईकीजैसुखवाहीमेंजुप्रीतिअवगाहीकरोलागी
अतिप्यारिये५४० प्रेममेंननेमहेमथारलैउमँगिचलीचली
दृगधारसोपरोसिकेंजिवायेहैं । भीजिगयोसाधुनेहसागर
अगाधदेखिनयननिमेषतजीभयेमनभायेहैं। चंदनलगाइ
आनिबीरीहूखवाइश्यामचरचाचलाइचषरूपसरसायेहैं ।
धूमपरीगावँझूमिआयेसबदेखिबेकोदेखिनृपपासलिखिमा
नसपठायेहैं ५४१ ह्वैकरिनिशंकरानीबंकगतिलईनईदई
तजिलाजबैठीमोड़नकीभीरमें। लिख्योलैदिवाननरआयेलै
बखानकियोबांचिसुनिआंचलागीनृपकेशरीरमें। प्रेमसिंह
सुतताहीकाल सोरसालआयोभालपैतिलकमालकंठीकंठ
तीरमें ।भूपकोसलामकियोनरनजताइदियोबोल्योआवमो
डीकेरेपर्योमनपीरमें ५४२ ॥

टारियै ॥मेरीकुल पूजितू श्रीमानी ठकुरानी करितोही नित आंखिनि में हियेमें धरतिहौं। तेरेई संतोषदेत द-खिणारसीलेगुन सनमानि आनिनिकी सीख निदरतहौं। आनिबन्यो योग अबमेरे बड़भागिनि तें ताहीते अधीनता कै दीनता करतिहौं। देखन दैनेक प्राण प्रीतम मुखारबिं-द हायलाज आजुतेरे पाइनि परतिहौं ३ ॥प्रेमसिंह ॥ कबित्त ॥ सदासाधु सेवारंग नितहीप्रसन्नसुनि श्रीजिजाइ हियो जान्योप्रीतिकोस्वरूपहै। प्रेमसिंहनामताको अर्थ अभिरामसुनो सिंहसम भक्तिबलहिये श्यामरूपहै। दोऊ मिलि नामआनों जानो नरसिंहवत रतिकी बड़ाई याते भयो भक्त भूपहै । हरदेवइष्ट मिष्टलागी संतसेवा याको सिष्टि गुणवेस लघु कीरति अनूप है १॥ प्रेम मैन मोर मुकुटपै प्रियादास गोबिंदसंगरहैं बरसानेते वाइएक मोह नंभोग प्रभातकरिलैगई पाटौ दांतुननहोंकरी यह क्योंन खावोलकड़ीभली २॥

कोपभरिराजागयोभीतरतेशोचनयोपाछेपूंछिलियोक-ह्योनरनिबखानिकै। तबतोबिचारीअहोमोड़ीहैहमारीजा तिभयोसुखगातभक्तिभावउरआनिकै। लिख्योपत्रमाजी कोतुप्रीतिहियेसाजीजोपैशीशपरबाजीआइराखोतजिप्रा नको।सभामध्यभूपकहीमोड़ीकोबिरूपभयोरहौअबमोडी केहीभूलोमतिजानिकै ५४३ लिख्योदैपठायोबेगिमान सलैआयेजहांरानीभक्तिसानीहाथदईपातीबांचियो। आयो चढ़िरंगबांचिसुतकोप्रसंगबारभी जेजेफुलेलदूरिकिये प्रे मसांचिये । आगेसेवापाकनिशिमहलबसतजाइलाईवा हीठौरप्रभुनीकेगाइनाचिये। अन्ननृपत्यागिदियोलिखिप त्रपुत्रदियो भाईमोडीआजतुमहितकरियांचिये ५४५ ॥

तजिप्राणको ॥दोहा॥ धनदै नीके राखितन तनदैराखो

लाज। लाजप्राक्ष तजिदीजिये एकग्र मकेकाज। नेहकरैंते बावरे करितारैते क्रूर। धुरनिरवाहैं जोकोऊ तेई प्रेमी शूर २॥ प्रेमकोचौपरिमढोहैताबेंबाजीशीश। कायरताकोसंगहै तौपावै वहखीश ३॥ दूरिकिये॥ जबलगिशिर पर शिर हुतो तबलगि फुलनहार। नाहिं सँभारोजातहै शिर उतरेकोभार ४॥ अन्नरूप त्यागिदयो ॥पाद्मे॥प्रार्थयेत्वैष्णवस्यान्नंप्रयत्नेन विचक्षणः। सर्वपाप विशुद्ध्यर्थंतदभावेजलं पिबेत् ५॥ मारकंडे॥ अवैष्णवेग्रहेभुक्तापीत्वावाज्ञानतोयदि॥ शुद्धिश्चांद्रायणेप्रोक्तोऋषिभिस्तत्वदर्शिभिः६॥ शुद्धं भागवतस्यान्नं शुद्धं भागीरथीजलं। शुद्धं विष्णुपरिच्छिन्नंशुद्धं एकादशीव्रतं ७॥

गयेनरपत्रदियोशीशसोंलगाइलियो बांचिकैमगनहि येरीझंबहुदईहै। नौबतिबजाईद्वारबांटतबधाईकाहूनृपति सुनाई कहीकहारीतिनईहै। पूछैंभूपलोककह्योमिटेसब शोकभयेमोड़ीके जुयोगस्वांगकियोबनगईहै। भूपतिसुन तबातअतिदुखभयोगातलयोबैरभावचढ्यो त्यारीइभईहै ५४५ नृपसमुझाइराख्योदेशमें चवावह्वैहैवुधिवंतजन आइसुतसों जनाईहै। बोल्योबिषैलागिकोटिकोटितनखो येएक भक्तिपरकामआवेयहैमनआईहै। पाइपरिमांगिल ईदईजूप्रसन्नतुमराजानिशि चल्योजाइकरोजियभाईहै। आयोनिजपुरढिगधरिनरसिले आनिकह्योसोबखानिसब चिंताउपजाईहै ५४६ भवनप्रवेशकियोमंत्रीजोबुलाइलि यो दियोकहिकटीनाकलोहूनिरवारिये। मारिबोकलंक हूनआवेयोंसुनाईभूपकाहूबुधवंतनविचारिलैउचारिये। नाहरजूपींजरामेंदीजैछोंड़िलीजैमारिपाछेतेंपकरिवहबात दाबिडारिये। सबनिसुहाईजाइकरीमनभाई आया

देखोवाखवासिकहीसिंहजूनिहारिये ५४७ करैहरिसेवा भरिरंगअनुरागदृग सुनीयहबातनेकनयनउतटारेहैं। भावहीसोंजानेंउठिअतिसनमानैअहो अजूमेरेभागश्रीनृसिंह जूपधारेहैं। भावनासचाईवहीशोभालैदिखाईफूलमाल पहराईरचटीकोलागेप्यारेहैं।भौनतेंनिकसिधायेमानोख म्भफारिआयेबिमुखसमूहततकालमारिडारेहैं ५४८॥

नृसिंहजू पधारेहैं॥तबपूछहूं लाईक्योंकि सूचमअलंकार १ श्लोक॥ कांतमायांतमालोक्यगताशुरुजनांतिकं। करे कलितमंभोजंसंकोचयतिसुंदरी २॥ कबित्त॥ बांसुरीके बीच एकभौंर डारिलाई सखी मूंद्यौ बज्र यत्नबलयबुधि बलभारीसों। भनत पुरान यासें आपही सों धुनि होति कानदेकै सुनो कह्यो धरिसुकुमारीसों। रीझिरिझिवार अति मनमें मगन भई आप तनचाह सुख ढांक्यो श्यामसारीसों। अंचलमें गांठिदै बिहंसिउठिचली सखीप्यारी हँसिकह्यो आजु बसिये हमारीसों ३॥

भूपकोखवासिभईरानीजूकीसुधिलई सुनीनीकीभांति आपनम्रह्वैकेआयेहैं। भूमिपरिशाष्टांगकरिकैऊहरीम तिभईदयाआपआइवाकेबचनसुनायेहैं। करतप्रणामराजाबोलीआजूलालजूको नेकफिरिदेखोएकठोरयेलगाये हैं। बोल्योनृपराजधनसबहीतिहारोधारोपतिपै नलोभक हींकरौसुखभायेहैं ५४९ राजामानसिंहमाधवसिंहउभैभाईचढ़ेनावपरकहूंतहांबूडिबेकोभईहै। बोल्योबड़ोभ्राताअब कीजियेयतनकौनभौनतियाभक्तकहीछोटेसुधिदईहै। नेकु ध्यानकियोतबेआनिकैकिनारोलियो हियाहुलशायोजेठ चाहनईलईहै। कह्योआनिदरशनबिनयकरिगयोराजा

अतिहीअनूपकथाहियेठ्यापिगईहै ५५० मूल ॥ पारीप प्रसिद्धकुलकांअड्याजगन्नाथसीवावरम।श्रीरामानुजकी रीतिप्रीतिपनहिरदहिधार्यो । संस्कारसमतत्वहंस ज्यों बुद्धिबिचार्यो । सदाचारमुनिवृत्तिइंदिरापधितउजागर। रामदाससुतसंतअनन्यदशधाकोआगर॥पुरुषोत्तमपरसा दतेउभैअंगपहर्योवरम । पारीपप्रसिद्धिकुल० १४३ ॥

मुनिवृत्ति॥राजधानीनलेहिंधारते॥ एकब्राह्मणसिलौक रैहौ तासों अज्ञानीने कही हमारे राजापै जाउतौ बहुत द्रव्य मिलै तबरोइउठ्यो कृष्णसों कही तेऊ रोइ उठे युधिष्ठिरसों कहीतेऊ रोइउठे कृष्णसों पूछी याको हेत कहातब कही ब्राह्मण याते रोयोऐसी निषिद्धधान्य बतायो कलियुगमें मांगेहून मिलैगो उभै अंग कवचपहि- र्यो प्रकट अंगमें तौ लोहको राजाके प्रोहित यातेयह हीरेके अंगमें ज्ञानको बचन वान काहूको न लगै १ ॥

कीरतनकरतकरस्वपनेहूमथुरादासनमंडियो । सदा चारसंतोषसुहृदसुठशीलसुभासै । हस्तकदीपकउदयमेटि तमवस्तुप्रकाशै । हरिकोहियविश्वासनंदनंदनबलभारी। कृष्णकलससोनेमजगतजानैशिरधारी । श्रीबर्द्धमानगु रुबचनरतिसोसंग्रहनहिंछांडियो । कीरतनकरतकरसुप नेहूमथुरादासनमंडियो १४४ टीका।।वासकैतिजारैमांझ भक्तिरसराशिकरीकरीएकबाततताकोप्रकटदिखाईहै । आ योभेषधारीकोउकरैशालिग्रामसेवा डोलैसिंहासनपैआ निभरिछाईहै । स्वामीकेजुशिष्यभयेतिनहूंकोभावदेखि वाहीकोप्रभावकह्योआपहियेभाईहै । नेकुआपचलौवह

रीतिकोबिलोकियेजूबड़ेसर्वज्ञकहीदूषैनहिंजाईहै ५५१ पाइंपरिगयोलैकैंजाइढिगठाढ़ेभये चाहतफिरायोपैनफिरै शोचपर्य्योहै । जानिगयेआपकछूयाहीकोप्रतापअोपैमा रोकरिजाययोंबिचारमनधर्य्योहै । मूठिलैचलाईभक्तिते जआगेपाईनाहिं वाईलपटाईभयोऐसोमानोमर्य्योहै । ह्वैकरिदयालजानिवायोसमझायो प्रीतिपंथदरशायोहि यभयोशिष्यकर्य्योहै ५५२॥

सुपनेहूं॥सुपनेहूंकौनमांगैहै प्रकटहीमांगैहैदृष्टांतकला- वतको अरु ब्राह्मणको विश्वास सुगलअरुवनियेको दृष्टांत १ ह्वैकरि दयाल॥ हरिजनहंस दिगनियो डोलै। मुक्ता फलबिनवों चनखोलै । मौनगहै कैहरि यशबोलै। असद अलापन कबहूं लोलै। मानसरोवरतटकेबासी। हरिसेवा रति औरउदासी। नीरखीरको करै निवेरा। कहैकबीर सोईगुरुमेरा २॥ वाहि यहउपदेशकर्य्यो चौरेहीमें ठा- कुरको बैठावनो ऐसीक्रिया न कीजै ३॥

मूल॥ नृतकनरायनदासकोप्रेमपुंजआगेबढ़ो । पद ढीनोप्रसिद्धप्रीतिजामेंदृढ़नातो। अक्षरतनमयभयोमदन मोहनरँगरातो । नाचतसबकोउआइकाहिपैवहबनिआ वै। चित्रलिखतसोरह्योत्रिभंगीदेशीजुदिखावै। हंढ़िया सराइदेखतदुनीहरिपुरपदवीकोचढ़ो। नृतकनरायणदा सकोप्रेमपुंजआगेबढ़ो १४५ टीका॥ हरिहीकेआगे नृत्यकरैहियेधरैयहीढरैदेशदेशनमेंजहांभक्तभीरहै। हंडि यासराइमध्यजाइकैनिवासलियो लियोसुनिनामसोमले च्छजानिमीरहै।बोलिकैपठायेमहाजनहरिजनसबैआयो

हैसदनगुनाळावोचाहपीरहै।आनिकैसुनाईभईअतिकठिनाईअबकीजैजोईभावैवहनिपटअधीरहै ५५३ ॥

दृढ़नातो पद ॥ सांचोएकप्रीतिकोनातो। कैजानै राधिका नागरी कै मदनमोहन रँगरातो। यह शृंखला अधिक बलवंतीजिनबांध्यो मनगजमातो। मीराप्रभुगिरिधर सँगहिलिमिलि सदा निकुंज बसातो १ ॥ दोहा ॥ हित चित चाहन चतुरई बोल न आवत गात। राधा मोहनप्रेमको कहतबनै नहिंबात २ ॥ आइकलाइकनगत हित जानि सुदेशबिदेश। परउपकारी साधुयेनहिंअधरम कोलेश ३ ॥ त्रिभंगदेशी सखीजोकुछउरगड़ैसोनिकसैदुख होइ। कुंवर त्रिभंगीजहँगड़ै सोदुख जानै सोइ ४ पंडित कबिता ढाढ़िया कहिवेहीकोंदौर ॥ कहि कान्हाजुभै नहीं जूझनवारे और ५ ॥ हंड़ियासराइ प्रागते छहकोश ६ ॥ हरिहीकेआगे ॥ दोहा ॥ मनमजूस गुणरतनहैं चुप करिदै हटतार। पारषि आगेखोलिये कूंचीबचन रसाल ७ तापैदृष्टांत अकबरशाहको तानसेन को हरिहीकेआगे गावै ८ ॥

बिनाप्रभुआगेनृत्यकरियेननेमयहैसेवावाकेआगेकहौ कैसेबिस्तारिये। कियोयोंबिचारऊंचेसिंहासनमालाधारितुलसीनिहारिहरिगानकर्योभारिये। एकओरबैठोमीरनिरखैननयनकोरमगनकिशोर रूपसुधिलैबिसारिये। चाहैंकछुवार्योपरेऔचकहीप्राणहाथरीझिसनमानकियोमीचलागीप्यारिये ५५४ मूल ॥ गुणगणबिशदगोपालकेयेतेजनभयेभूरिदा। बोहितरामगोपालकुंवरगोबिंदमांडिल। क्षीतस्वामिजसवंतगदाधरअनंतानंदभल। हरिनाभमिश्रदीनदासबछपालकन्हरयशगायन। गोसूराम

दास नारदश्यामपुनिहरिनारायन। कृष्णजीवनभगवान जनश्यामदासबिहारीअमृतदा। गुणगणविशदगोपाल केयेतेजनभयेभूरिदा १४६ निर्वृत्तभयेसंसारतेतेमेरेजिजमानसब। उद्धवरामरेणुपरशुरामगंगाधू षेतनिवासी। अच्युतकुलकृष्णदासबिश्रामशेषसाहीकेबासी। किंकर कुंडाकृष्णदासखेमसोंठागोपानंद। जयदेवराघवबिदुर दयालदामोदरमोहनपरमानंद। उद्धवरघुनाथीचतुरोनगनकुंजओकजेबसतअब। निर्वर्त्तभयेसंसारतेतेमेरेजिजमानसब १४७॥

भूरिदा॥ दशमे॥ तवकथामृतंतप्तजीवनंकविभिरीडितं। कल्मषापहंश्रवणं मंगलंश्रीमदाततंभुविगृणंतिते भूरिदा जना १॥ संतजनबड़ेदाता भक्ति संपतिके देनहारे जनतो सामान्य मनुष्यनको कहेहैंसोनहीं॥ श्लोक॥ सालोक्य सार्ष्टसामीप्यसारूप्यैकत्वमप्युत:॥ दीयमानंनगृह्णंतिबिनामत्सेवनंजना: २॥ जेऐसेजनतौनहींघुटकीटूकमांगतडोलैं दोहा॥ रामअमल माते फिरै पीवैप्रेमनिशंक। आठगांठिका.पीनमेंकहैइंद्रसोंरंक ३॥

टीका॥ झीथडैटिगहीमेंजैतारनबिदुरभयोभयोहरिभक्तसाधुसेवामतिपागीहै। वरषानभईसबखेतीसूखिगई चिंतानईप्रभुआज्ञादईबड़ोबड़भागीहै। खेतकोकटावोओगहावोलैउड़ावोपावोदोहजारमनअन्नसुनीप्रीतिजागीहै। करीवहरीतिलोगदेखैनप्रतीति होतिगायेहरिमीतराशिलागिअनुरागीहै ५५५ मूल॥ श्रीस्वामीचतुरोनगनमगनरे निदिनभजनहित। सदायुक्तअनुरक्तभक्तिमंडलक

पोषत। पुरमथुराब्रजभूमिरमतसबहीकोतोषत। परमध
रमदृढ़करनदेवश्रीगुरुआराध्यो। मधुरवैनसुनिठौरठौर
हरिजनसुखसाध्यो। संतमहंतअनंतजनयशविस्तारेजा
सुनित। श्रीस्वामीचतुरीनगनमगनरैनिदिनभजनहि
त १४८ आवैंगुरुग्रेहयोंसनेहसोंलैसेवाकरैघरैहियेसांच
भावअतिमतिभीजिये। टहललगाइदईनईरूपवतीतिय
दियोवासोंकहीस्वामीकहैंसोईकीजिये। सेवाकैरिझायेय
तेप्रेमउरनितनयोदयोघरघरबधूकृपाकरिलीजिये। धा
मपधराइसुखपाइकैप्रणामकरि धरींब्रजभूमिउरबसेरस
पीजिये ५५६॥

खेतीसूखिगई॥भेषहराभयो बढ़तचढ़िगयो भगवान
भेषबढ़ायो चाहै तौअकालपरै सोपरयोतबविचारी कहूं
उठिजाइये १ मगनरैनिदिन सतोगुण इतिति रजोगुणतम
की निर्वर्त भक्तमंडलको पोषत द्वारपैरमत॥ सवैया॥ डो-
लतहैं इकतीरथ एकनिबार हजार पुराण बकेहैं। एकलगे
जपमें तपमें यक सिद्धिसमाधिनमेंअटकेहैं। इभि जोदेखत
हौरसखानिन मूढ़महा सिगरे भटकेहैं। सांचहैवे जिन
आपनज्यो इहिसांवरे ग्वालपैवारिछकेहैं २॥ टहललगा
ई लाहौरमें कान्हाफकीर तुलसी खचानी सेवाकरै ३॥

श्रीगुबिंदचंदजूकोभोरही दरशकरिकेशवशिंगारराज
भोगनंदग्राममें। गोबर्द्धनराजाकुंडह्वैकैआवैवृन्दाबनम
नमेंहुलाशनितकरैंचारियाममें। रहैंपुनिपावनपैभूखदिन
तीनिबीतेआयेदूधलैप्रवीणयेऊरँगेश्याममें। मांग्योनेकु
पानीलावोंफेरिवहप्रानीकहां दुखमतिसानीनिशिकह्यो
कियोकाममें ५५७॥

मांग्यो नेकुपानी॥ दोहा॥ सबसोंबुरोजुमांगिबो मागत निकसै जीव॥ पानिपचाहैं आपनी तो मांगिन पानीपीउ १ मांगन जापै जाइये जाकेसुखमें लाज॥ आगेते जु प्रसन्नह्वै पूजै मन के काज २ आवत देखेसाध के पुलकि उठैसब अंग॥ तुलसी ताके जाइये कीजैतासोंसंग ३॥

पानीसोंनकाजब्रजभूमिमेंविराजदूधपियोघरघरआज्ञाप्रभुजूनेदईहै। येतौब्रजबासीसदाक्षीरकेउपाशीकैसे मोकोलैनदेहैकहीदेहैसुनीनईहै।डोलैधामश्यामकह्योजोई मानिलियोदियालैपरचौहूप्रतीतितबभईहै। जहांजाछिपावैपात्रवेगिढूढ़िआपलावैअतिसुखपावैकीनी लीलारसमईहै५५८ मूल॥ मधुकरीमांगिसेवैभगततिनपरहौंबलिहार कियो। गोमापरमानंदप्रधानद्वारिकामथुराखोरा॥ कालषसांगानेरभलौभगवानकोजोरा। बीटलटोडेपेमपंडागूंनौरेगाजै। श्यामसेनकेवंशवीधरपीपारबिराजै। जैतारनगोपालकोकेवलकूवैमोललियो। मधुकरीमांगिसेवैभगततिनपरहौंबलिहारकियो १५१॥

चीरकेउपासी॥ माता अशोदाने तुमको डारिदूधउफ़नातो राख्यो॥ सवैया॥ जपयज्ञ सुदान सुमौन करै बज्ञकूप वापी तड़ागबनावैं। करैंबतनेम सुइंद्रिय निग्रह उग्रह योगसमाधि लगावैं॥ कहै रसखानिहूदै जिनको कबहूं नहिं सो सुपने मैंनआवैं। ताहि अहीर की छोहरिया छछिया भरिछांछि को नाच नचावैं ४ लछिमीसी जहां मालिनिडोलै बंदनवारैं बांधति पूनापै दृष्टांत रुक्मिनीजी के बेटाको ६॥

टीका॥ कहतकुम्भारजगकुल निस्तारकियोकेवल सुनामसाधुसेवाअभिरामहै। आवैबहुसंतप्रीतिकरीलैअ

नंतजाकोअंतकोनपावैअपैसीधोनहींधामहै । बड़ीपैगरज चलेकरजनिकासिबेकोबनियानदेतकुवाखोदौकीजो काम हैं । कियोबोलिकहीतोलिलियोनीकेरोलिकरिहितसोंजि मायेजिन्हेंप्यारौएकश्यामहैं ५५६ गयेकुवाँखोदिबेकोसू वाज्योंउचारैनामहुवाकामबानैजानीभयोसुखभारीहै । आईरेतभूमिझूमिझूमिमाटीदबिरहेवामेंकेतक हजारमन होतकैसेन्यारीहै।शोककरिआयेधामरामनामधुनिकाहूका नपरीबीत्योमासकहीबातप्यारीहै। चलेवाहीठौरसुरसुनि प्रीतिभौरपरेरीतिकछुऔरसुधिबुधिअतिटारीहै ५६० ॥

करजा।एकादशी।सद्भक्त पूज्यभयदिका वैश्नवोबंधु सत्कथा १ सनबंधी को उधारयो लाइकै सबकोई सत्कार करैहै यहधर्म साधुसेवा धर्म २ आदिपुराणे ॥ योमेभक्त जनापार्थ ३ न्यारीहै।कूवाजो माटीमेंरहै जैसेतिवारी महरावसैपै एकहाथ ऊचोजल प्रसाद पहुंचै माटीकोंन दूरि करीसिधाई लगैयातें तोमहरावकोंन ऊंचोराखी॥ कूवां देखि कै यहबात यादि रहै जैसे सिद्ध को गुफामें बैठारै सिद्धाइको रंगद्वार खानपानपहुंचै असेहरिने करी ४ ॥

माटीदूरिकरीसबपहुंचेनिकटतबबोलिकैसुनायो ह रैबानीलागीप्यारिये ।दरशनभयो जाइपाईलपटाइरहे महरावसीहवैकूवहूंनिहारिये। धर्योजलपात्रएकदेखिब ड़ेपात्रजानेआनिनिजथेहपूजालागीअतिमारिये। भईभी रद्वारनरउमड़िअपारआयेमहिमाअपारबहुसंपतिलैवारि ये ५६१ सुंदरसरूपश्यामलायेपधराइबेकोसाधुनिज धामआइकुवांजूकेबसेहैं ।रूपकोनिहारिमनमेंबिचारकि

योआपकरैंकृपामोपैप्रभुअचलह्वैबसेहैं। करतउपाइसंतटरतननेकुकहूंकहीजूअनंतहरिरीझेस्वामीऐसेहैं। घर्योजानराइनामजानिलईहियेबात अंगमेंनमातसदासेवासुखरसेहैं ५६२ चलेद्वारावतिछापलावैयहमतिभईआज्ञाप्रभुदईफिरिघरहीकोआयेहैं। करौसाधुसेवाधरौभावहियेदृढ़मांझटारौजिनिकहूंकीजैजेजेमनभाये हैं। ग्रेहहीमेंशंखचक्रआदिनिजदेहभयेनयेन्यकौतुकप्रगटजगगाये हैं। गोमतीसोंसागरकोसंगमहोरह्योसुन्योसुमिरनीपठाइके योदोऊलैमिलायेहैं ५६३ भयेशिष्यशाषाअभिलाषासाधुसेवाहीकीमहिमाअगाधजगप्रगटदेखाईहै। आयेघरसंततियाकरतिरसोईकोईआयोवाकोभाईताकोखीरलै बनाईहै। कुवाजूनिहारिजानीवाकोहितसादरसोकीजियेविचारएकसुमतिउपाईहै। कहोभरिल्यावोजलगइडरकलपैनलईतसमईसबभक्तनिजिमाईहै ५६४॥

कुवहूं निहारिये॥ महीनाभरि भूमिमें दबेरहेसो कूवा भयो रघुपति ने रच्छाकियो सो प्रसंग गोमतीसों सागर को संगम रह्यो सुमरनीदै पठाई॥ संगम भयोसो प्रसंग१ भयेशिष्य साषाद्वै प्रकारकेफरसाफूकी कानफूका२।३।४।५॥

बेगिजललाईदेखिआगिसीबराईहियेझांकेमुखभईदुखसागरबुडाईहै। बिमुखविचारितियाकुवाजूनिकारिदईगईपतिकियोऔरऐसीमनआईहै। पर्योईअकालबेटाबेटीसोनपालिसकेतकैकोऊठौरमतिअतिअकुलाईहै। लियेसंगकर्योजोईपुत्रपतिभूषभोई आइपरीझोंथडामेंस्वामीकोसुनाईहै ५६५॥

विमुख ॥ पद ॥ जिनकेप्रिय नरामवैदेही ॥ सोत्यागिये कोटि वैरीलौं यद्यपि परम सनेही ॥ तज्योपिता प्रह्लाद विभीषण वंधुभरत महतारी ॥ बलिगुरु व्रजयुवतिन पति-त्याग्यो जगभये मंगलकारी ॥ नातौनेह रामसों सांचौ हृदैसुशील जहालौं। अंजनकहा आंखिजो फूटै बहुतौ कहौ कहालौं॥ तुलसी सोईहितबन्धुन प्रीतमपूजि प्राणते प्यारो ॥ जासँगबाढ़ै नेहराम सों सोई निजहितू हमारो १ ॥ दोहा ॥ साधाआया अनमनो भाया आयासूरि ॥ केवल कूवायों कहैं तू निकसि वाहरी पूरि ॥ पहिलेतौ मूरख को संगहोइ पाछेतै सतसंग सो ज्ञानपाइ कै त्याग करै ॥ भर्तरी ॥ यांचिंतयामिसततं मयिसाबिरक्तासा-प्यऽन्यमिच्छति जनो स्वजनोन्य सक्तः ॥ अस्मत्कृतेच परितु-ष्यति काचिदन्या धिक्ताांचतं च मदनं चइमां चमांच ॥

नानाबिधिपाकहोतआवैसंतजैसेसोतसुखअधिकाईरी तिकैसेजातिगाईहै । सुनतबचनवाकेदीनदुखलीनमहानि पटप्रबीनमनमांझदयाआईहै। देखिपतिमेरोऔरतेरोपति देखियाहिकैसेकैनिवाहिसकैपरीकठिनाईहै । रहौद्वार झारोकरौपहुचैअहारतुम्हें महिमानिहारिदृगधारलैबहा ईहै ५६६ कियोप्रतिपालतियापूरीकोअकालमास भयो जबसमैबिदाकीनीउठिगईहै । अतिपछितातिवहबातअ बपावैकहां जहांसाधुसंगरंगसभारसमईहै । करैंजाको शिष्यसंतसेवाहीबतावैं करौजोअनंतरूपगुणचाहमनभ ईहै । नाभाजूबखानकियोमोकोइनमोलड़ियो दियोदर शाइअतिलीलानितनईहै ५६७॥

दयाआईहै॥ साधवो दीनवत्सला३ ॥ दोहा॥ कबीरा॥ साधुमिलैतौ हरिमिलै अंतररहीनरेष॥रामदुहाईसतक-

हा साधूआय अलेपषु हरितेअरुहरि जननितें रंचकअंतर नाहिं॥ येईबाहिं पायनकरै चितवतहीछिनमाहिंपू॥

मूल॥ श्रीअग्रअनुग्रहतेभये शिष्यसबैधर्मकीधुजा। जङ्गीप्रसिद्धिप्रयागबिनोदीपूरनबनवारी। भलनृसिंहभगवानदिवाकरदृढ़ब्रतधारी। कोमलहृदयकिशोर जगतजगनाथसलूधौ। औरौअनुगउदार खेमखीचीधर्मधीलधुऊधौ॥त्रिविधितापमोचनसबै सौरभप्रभुजिनशिरभुजा। श्रीअग्रअनुग्रहतेभयेशिष्यसबैधर्मकीधुजा १५२ भरतखंडभूधरसुमेरटीलालाहाकीपद्धति प्रगटाअंगदपरमानंददासयोगीजगजागे। खरतंरखेमउदारध्यानकेशवहरिजनअनुरागे। स्फुटत्योलाशब्दलोहकरबंशउजागर। हरीदासकबिप्रेमसबैनवधाकेआगर। अच्युतकुलेसबैसदादासंतनदसधाअघट। भरतखंडभूधरसुमेरटीलालाहाकीपद्धति प्रगट १५३ मधुपुरीमहोछौमंगलरूपकान्हरकोसोकोकारै। चारिबरनआश्रमरंकराजाअन्नपावै। भक्तनिकोबहुमनबिमुखकोऊनहिंजावै। बीरीचंदनबसनकृष्णकीरंतनवरषै।प्रभुकेभूषणदेइ महामनअतिशयहरषै। वीठलसुतविमल्योंफरैदासचरणरजशिरधरै। मधुपुरीमहोछौमंगलरूपकान्हरकोसोकोकरै १५४ भक्तनिसोंकलियुगभलेनिवाहीनिंवाखेतसी। आवहिदासअनेकउठिवआदरहरिलीजै। चरणधोइदंडौतसदनमेंडेरादीजै। ठौरठौरकरिकथाहरै अतिहरिजनभावै। मधुरवचनमहुलाइबिबिधिभांतिनिजलडावै। सावधानसेवाकरैनिर्दूषणरतिचेतस भक्तनि सों कलियुगभले निवाहीनिबाखेतसी १५५॥

त्रिविध॥ तृतीये॥ शारीरामानुषा दिव्यावैश्यये चमानुषा॥ भौतिकाश्च कथंक्लेशा बाधन्ते हरिसंश्रयान् १ कोऊ कहै दूरि कैसे होइँगे शरीर सो लगे हैं सतसंगतें आत्मज्ञान आत्मज्ञान ते मिटे २ अच्युत:॥ दोहा॥ पिंडुसुपीडा परशराम हितकारी कोउ एक। और नगरकी शोभता आवैं जाहिं अनेक २ आवैं जाहिं सुकौतुकी पूछै मनकी बात। परसाप्रीतम वाहरी कोपूछैकुशलात३॥

बसनबढ़ेकुंतीवधूत्योंत्योंवरभगवानकेयहअचिरजभयो एकपांड़पतनेदावरपै। रजतरुकमकीरेलसृष्टिसबहीमन हरषै। भोजनरासबिलासकृष्णकीरतनकीनों। भक्तनिको बहुमानदानसबहीकोदीनों। कीरतिकीनीभीमसुतसुनि भूपमनोरथआनिकै। बसनबढ़ेकुंतीवधूत्योंत्योंवरभगवान कै १५६॥ टीका॥ बीततबरपचासआवैमधुपुरीनेमप्रेम सोंमहाक्षोराशिहेमहीलुटाइये। संतनिजिमाइनानापट पहराइपाछेद्विजनिबुलाइकछूपूजैपैनभाइये। आयोकोऊ कालधनमालजाबिहालभयेचाहैपनपारबोआये अलपक राइये। रहेबिप्रदूखसुनिभयोसुखभूखबढ़ीआयोयोसमाज करौधारीमनआइये ५६६॥

बसनबढ़े॥ कबित्त॥ ऐसी भीरपरे पर पीरको हरन हार गिरिको धरन हार सोई धीर धरिहै। दीननिको बंधव बिरद ताको सदा रह्यो दावानल पानकियो सोई पीर हरिहै। पंडमिकी पतनी कहत ठाढ़ी पंचनिमें लप ट्योहै चीर सोतो कैसेके निवरिहै। खैंचौ क्यों न आनि दूशासन सेठमूक और मोर पच्छ धरिहै सो मेरी पच्छ करिहै १ पांडवकी रानी गहिरावर सों आनी सिरो- मणिबिलखानी बिललानोपैन चेतहै। घटत घटाये पटन

घटत ऐंचेपटदुशासन बार बार ढेरकैकै लेतहै। पांचतन छित आंचतनकन लागो तन लखि कै विपति यदुपति की नोइतहै।गोपिनके चोरि चोरि राखे पट कोरि कोरि तेईआनौजोरि जोरि द्रौपदी कोदेतहैं २ आनि कुल बंशकोअकरम उदय होत बाढ्यो छल दुहूं और बंधुनके ग्रह में। पंडवनको तौ मान खंडन सभा के बीच द्रौपदी पुकारि कह्यो गोबिंद सनेह में। अंबरके ह्वैगये अंटबर आकाश लगि खैंचि खैंचि हारी खल पावत न छेह में। भक्तनिके काजबज राजलाज राखनको आपह्वै बजाज बैठे द्रौपदी कीदेहमें ३होमही॥ कबित्त ॥ जिनजिन करनाई तिनतिन करआई करनही नाईतिनिकरनहीआईहै॥का गदलिखाई जिनकागरैलिखाई पाई धरामें धराई तिनध राधूरिखाईहै॥ दैदैलबराई जिनलईहैपराइअवताह्लपा- सनै कह्लन रहति रहाईहै॥ जिनजिन खाई जिनउदर समाती खाई जिनन खवाई तिनखाई बकुताईहै१॥दोहा॥ वांसचढी नटिनीकहै सतिकोउ नटनी होइ ३ मैंनटकैं न टिनीभई नटैसु नटिनी होइ २ दीवानगत अनूपहै दिया करौ सब कोइ।घरको धरोन पाइयै जो करदियान होइ ३ नारदतैं बरपाइकै प्रथम सुंदरी होइ ॥ पतिबरते सूरी भईसुतबरते पुनिसोइ ४ तापै नारदजी को अरु ब्राह्मण को दृष्टांत॥

अतिसनमानकियोलायेजोईसौंपिदियोलियोगांठिबां धितबबिनतीसुनाइये। संतनिजिमावोभावैरासलैकरावो भावैजैवौंसुखपावौकीजैबातमनभाइये । सीधोलाइकोठै धरयोरोकहीसोथीलीभर्योद्विजनिबुलाइदेतक्योंहूं निघ टाइये। जितनोंनिकासैंतातेसोंगुनोबढ़तऔरएकएकठौर वीशगुनोदैपठाइये ५६७॥

निघटाइये॥ दोहा॥ बुरोबिचारैं दुष्टजन चाहैंकियो

बिगार॥ जिनकोकामन वीगरै रघुकनंदकुँआर १ जैमाल
दूनको बडोभइयासोवडो भक्त हो ॥ सोरठा॥ बेटाबापत
नेहजोपै चौल्है चालनी॥ जननी काहि गनेह भांड़मुख
भोंडो तनहिं २ ॥

मूल॥जसवंतभक्तिजैमालकीरूडाराखीराठवडाभक्तन
सोंअतिभावनिरंतरअंतरनाहीं। करजोरैंइकपाइमुदितम
नआज्ञामाहीं। श्रीवृन्दावनदृढ़वासकुंजक्रीडारुचिभावै।
श्रीराधबल्लभलालनित्यप्रतिताहिलड़ावै। परमधरम
नवधाप्रधानसदनसांचनिधिप्रेमजड़। जसवंतभक्तिजैमा
लकीरूडाराखोराठवड़ १५७ हरीदासभक्तनहितधनिज
ननीएकैजन्यो॥अमितमहागुनगोप्यसारचितसोईजानै।
देखतकौतुलावारदूरिआसैंउनमानैं। देइदमान्योपैजवि-
दितवृन्दावनपायो। राधावल्लभभजनप्रगटपरतापदि-
खायो। परमधरमसाधनसुदृढ़कलियुगकामधेनुमेंगन्यो।
हरीदासभक्तनिहितधनिजननीएकैजन्यो १५८ ॥टीका॥
हरीदासबनिकसोकाशीढिगवासजाको ताकोयहपनतन
त्यागोब्रजभूमिहीं। भयोजुरनारीछीवछोड़िगयेवैदतीनि
बोल्योयोंप्रबीनवृन्दावनरसझूमिही। बेटीचारिसंतनिको
दईअंगीकारकरौधरोडोलीमांझमोकोध्यानदृढ़ झूमिही।
चलेसावधानराधाबल्लभकोगानकरैं करैंअचिरजलोगप
रोगामधूमिही ५६८ आवतहीमगमांझछूटिगयोतनपन
सांचोकियोश्यामवनप्रगटदिखायोहै।आइदर्शनकियोइष्ट
गुरुप्रेमभरिपर्योभावपूरोजाइचीरघाटन्हायोहै। पाछे
आयेलोगशोगकरतभरतनैन वैनसबकहीकहीतादिनही

आयोहै। भक्तिकोप्रभावयामेंभावऔरआनौंजिनिविनह रिकृपायहकैसेजातपायोहै ५६९ ॥

श्रीवृन्दाबन दृढ़वास॥अरिल्ल॥ चिंतामखिकीराशिबि- पिनतजि पाइये। अंतमिलैहरिआपु तजनहिंनाइये॥श्री वृन्दाबनकी धूरिसु धूसर तनरहै। अरिहांयह आसार है चित्तकहूं को नाचहै ३ राठवड ॥ दोहा॥ साधनमेटे भरिभुजा पदरज धरीन शीश॥ बडीबडी करनीकरी सो सबहै गइषीस ४ वांधैसो बांधामिलै कबहूं छोड़ैनाहिं॥ मिलै आनिनिर्वर्त्तसो छुटैजु पलकै माहिं ५ येसेभक्त ज- नापार्थ नसेभक्ता स्तुतेजना: ६ ॥

मूल॥भक्तभारजूड़ैयुगुलधर्मधुरंधरजगविदित। बावो लीगोपालगणनिगंभीरगुनारट। दक्षिणदिशविश्नुदास गांवकासीरभजनभट। भक्तनिसोंयहभावभजैगुरुगोबि- न्दजैसे। तिलकदासआधीनसुवरसंतनिप्रतिजैसे। अच्यु तकुलपनएकरसनिवह्योज्योंश्रीमुखगदित। भक्तभारजूढे युगुलधर्मधुरंधरजगविदित १५६॥ टीका॥ रहैगुरुभाई दोऊभाईसाधुसेवाहियेऐसेसुखदाईनईरीतिलैचलाईहै। जाइजामहोछमेंबुलायेहुलसायेअंगसंग गाड़ीसामासोभँ डारीदैमिलाईहै। याकोतातपर्यसंतघटतीनसहीजातिबा तवेनजानैसुखमानैंमनभाईहै। बड़ेगुरुसिद्धजगमहिमा प्रसिद्धिबोलबिनैंकैउचारीसोईकहिकैसुनाईहै ५७० ॥

जूड़ैयुगुल॥ दोहा॥ हरदी तौ जरदीतजै चनातजै सु- पेत॥ प्रीतिजु ऐसीचाहिये दोउमिलि एकैहेत १ दोऊ एकमन ह्वै भक्ति को बोझउठावै तौ उठतौ गुरुगोविंद

वैष्णवसब एकरूपहै १ भक्तभक्ति भगवंतगुरु चतुर नामवपु एक २ ॥

चाहतमहोछौकियोहुलसतहियोनितलियोसुनिबोलेकरौवेगिदैतियारिये। चहूंदिशिडारयोनीरकसौन्यौंतौऐसेधीरआवैबहुभीरसेतठौरनिसवारिये । आयेहरिप्यारेचारोंखूंटतेनिहारेनैनजाइपगधारेशीशबिनैलैउचारिये । भोजनकराइदिनपांचलगिछायरह्योपटपहराइसुख दियोअतिभारिये ५७१ आज्ञागुरुदईभोरआवौफिरिआसपासमहासुखराशिनामदेवजूनिहारिये । उज्ज्वलबसनतनएकलेप्रसन्नमनचलेजातवेगिशीशपाइनिमंधारिये । वेईदेबताइश्रीकबीरअतिधीरसाधु चलेदोऊभाईपरदक्षिणाविचारिये । प्रथमनिरखिनामहरषिलपटिपगलगिरहेछोडतनबोलेसुनोधारिये ५७२ सावअपराधजहांहोततहांआवतनहोइसनमानसबसंततहींआइये। देखीसोप्रतीतिहमनिपटप्रसन्नभयेलयेउरलाइजावोश्रीकबीरपाइये। आगेजोनिहारेभक्तराजटगवारैचली बोलेहँसिआपकोईमिल्योसुखदाइये । कह्योहांजूमानिदईभईकृपापूरणयोंरे वाकोप्रतापकहौकहांलगिगाइये ५७३ ॥

बिनैलै उचारिये॥ महाराज संततौ बहुत आयेसामाकहांयेती ॥ गुरुबोले मनमानौं जितौ देतजावो घटैगीनहीं देनहारो समर्थहै १ आसपास प्रदच्छिणा अश्वमेधीयज्ञैको भोगको फेरिजन्म धरै दंडौत सों नन्मकटैगो २॥

मूल ॥ कील्हकृपाकीरतिविशदपरमपारषदशिष्यप्रगट। आशकरनऋषिराजरूपभगवानभक्तगुरु । चतुरदा

सजगअभयछापछीतरजुचतुरबर। लाषाअद्भुतराइमलषे ममनसाक्रमबाचा। रसिकराइमलगौंदुदेवादामोदरहरि रँगराचा। सबैसुमंगलदासदृढ़धर्मधुरंधरभजनभट। कील्हकृपाकीरतिविसदपरमपारषदशिषप्रगट १६० रसुराशिउपासिकभक्तराजनाथभद्रनिर्मलवैन। आगमनिगमपुराणशास्त्रजुविचार्यो। ज्योंपारोदैपुटहिसबहिकोसारउधार्यो। श्रीरूपसनातनजीवभट्टनारायणभाष्यो। सोसर्वसुउरसांचयतनकरिनीकेराख्यो। फनीबंशगोपालसुवरागाअनुगाकौअैन। रसराशिउपासिकभक्तराजनाथभट्टनिर्मलबैन १६१॥

रसराशि उपासिक॥ कवित्त॥ रसराशि शिंगारताके उपाशिक नाथभट्टहैं शिंगार रसमें चारौरसहैं सांतमन की लगन निश्चय दासस्वामी के आधीन सख्यमित्रता समता विश्वास स्वभाव विपर्ययनहोइ॥ वातसल्य पुत्रवत लडाये॥ शिंगार कांतकांता समप्रीति आशक्ति सो अशक्तिमै चारौरसरहैं जैसेपृथ्वी को गुणसुगंध अरुतत्वसें नमिलै चारौतत्व प्रथवीमेंमिलें अपतेज वायु आकाश अैसेही रसराशि शिंगार रसकहावै१ भागवते॥मन्येसुरान् भागवतान्अधीशे संरंभमार्गाभि निविष्टचित्तान्॥ येसंयुगचक्षताक्षपुत्र मंसेसुनाभायुधांमापतंतं २ फनीबंशगोपालदासके पुत्रनारायण दासऊंचेगांववाले के पुत्र ३॥

कठिनकालकलियुगमेंकरमैतीनिहिकलंकरही। न स्वरपतिरतित्यागिकृष्णपदसोंरतिजोरी। सबैजगतकी फांसतरकितिनुकाज्योंतोरी। निर्मलकुलकांथडाधन्य परसाजिहिजाई। विदितवृंदाबनवाससंतमुखकरतब

ड़ाई। संसारस्वादसुखबातकरिफेरिनहींतिनतनंचही।
कठिनकालकलियुगमंकरमैंतीनिहिकलंकरही १६२॥

कठिनकाल॥ अस्थोचन को दियो है बाहर तौरहै स्वानखावै॥ भीतर रहैतौ सूसोखावै अस्थीकी भलीकथा कथाकही हो याकठिन कालमें करमैंतीही निष्कलंक रही सतयुगमें विषै में ब्रह्मा महादेव तपस्वी ऋषीश्वर इंद्रिचाल होतभये बड़े राजा दिशाजीतिपै इंद्रीनजीती जाहिं याअबलाने सबइंद्रीजीति कै मनबश करि बैराग्य कियो १॥

टीका॥ सेखावतनृपकेपुराहितकीबेटीजानौंबासहै। पडेलाकरमैंतीसोबखानिये। बस्योउरश्यामअभिरामको टिकामहूंते भूलैधामकामसेवामानसीपिछानिये। बीति जातियामतनबामअनकूलभयोफूलअंगगतिमानोमतिछ-बिसानिये। आयोपतिगौनोलैनभायोपितमातहियेलिये चितचावपटआभरणआनिये ५७४॥

वस्यौउरश्याम॥ संग न ध्यान श्यामकेसेवस्यौभागवती॥ तत्स्यात्सर्वत्र सर्वदा॥ ज्ञानवैराग्य भक्ति सबत्र सब देशमें है सबके हृदैमें हैं घटिबढ़ि क्यों गिन्योहै सोसुनों श्रीभ-गवान को नाम बासुदेवहै शुद्धहृदैमें झलकैहै दर्पन मोर-चाहोइ तौ नझलकै सज्यौहोइ तौ आइझलकै सो हृ-दय दर्पनविषै बासना मोरचे सो करमैती को हृदै उज्वल हरि आइझलके सतसंगबिना हृदैकैसेउज्वल भयोकही पूर्वजन्म की भक्ति अन्तररही सो उदैभई॥ ऐसेअंधेरी कोठरीमें वस्तु धरि के बिदेशको गयो॥ आवतही तुरत उठाइ लीनी ऐसेपछिले जन्मकी भक्ति सिद्धकरी जानौ तौसंगकी उपेच्छानहीं ३ मानिये॥ कवित्त॥ अबहोंगई

खरिकागाइ को दुहाइबे को बावरी ह्वै आइडारि दोहनी औपानकी। कोऊकहै छरीकोऊ श्रौनपरी डरीकहै कोऊकहै मरीगलि हरीअयानि की॥ सासुव्रत ठानै नंदबोलति सयानैधाइ दौरिदौरि आनैमानौ खोरि देवतानि की। सर्व सबहूँसै मुरझानि पहिंचानी कहूं देखी लुसिकानि वारँगीलै रसखानिकी १॥

परयोशोचभारीकहाकीजिये विचारीहाडचामसाँस वारीदेहरतिनकेनकामकी। तातैंदेवोत्यागिमनसोवैजि निजागिअरंमिटैउरदागएकसांचीप्रीतिश्यामकी। लाज कोनकाजजौपैचाहैव्रजराजसुतबड़ोईअकाजजौपैकरै सु धिधामकी। जानीभोरगौनोहोतसानीअनुरागरंगसंग एकवहीचलीभीजोमतिवामकी ५७५॥

हाडचाम सौस्तनौ मांसग्रंथी देहतौ मलीनमन॥ सवैया योवनजोर मनीललिता सबदेखि थकीयहअगमअथा है। बातचलै बऊ ओरऊतै सु यहै मनमें अतिशोच महाहै। खेवनहार पुकारकरै आलोमांझ कीधारलखी परहाहै। नेहकीनाव कुदावपरी मनमेरे मलाह सलाह कहाहै २ जोवन की सलितागहिरी अरुनैननिनीरनदी उमही है। पीतम को पतियाजु लिख्यो बिनपेवटियाकऊंपारभईहै। मानको रानमहा झकझोरत प्रेमकीडोरि सो लागिरहीहै। मनमेरेमलाह मिलैतौबचौ नहिबोरि अथाह सलाह यही है १ सोवैनिनि॥ कुंडलिया॥ ससाअंधेरी छाडिदै हरिभजि लाहौलेहु॥ हरिभजि लाहौलेहि देहजिनि राचीतेरी॥ नातरयमकेद्वार मूढ़पैठैजुपवेरी। नादुपटै अतिचेत चालैजो भाइ॥ भूलैयम पुरजाइ समभि भुवलोक वसाई अगर आलकसजिनिकरौ दुर्लभ मानुष देहससा अँधेरी छाडिदै हरिभजि लाहौलेह २ जोदिन

जाहि अनंदमें जीवनको फलसोइ। जीवनको फलसोइ नंदनंदन उरधारै॥ संचीज्ञान विवेक असुर अज्ञान निवारै॥ पदम पचज्योंरहै कालसम विषैपिछानै जगप्रपंचते दूरि सत्यसीता पतिजानै॥ अगर अजाके स्वादतै चपितन देख्यो कोइ॥ जोदिन जाइ अनंदमें जीवनको फलसोइ ३ पानीको धननी कर्यो जरनभयो गुवाल॥ जरनभयो गुवाल प्रभुहि मानुष तनदीयो। भक्ति सुधारस छांड़ि नहर विषयारसपीयो॥श्रवण घ्रान सुख प्रान वरणहग उसगी आपी। तिनको दीनों पीठि निलज्ज कृतघी पापी अगर श्याम उपकार निधिभज्योनहीं गोपाल। पोनीको धननीकर्यो जरनभया गुवाल ४॥

आयीनिशिनिकसीयेंबसीहियेमूरतिसोपूरतसनेहतनसुधिबिसराईहै। भोरभयेशोरपर्योपितामातशोचकर्यो। करिकैयतनठौरठौरढूंढ़िआईहै। चारोंओरदौरेनरआयेढिगटरिजानी ऊंटकेकरंकमध्यदेहजादुराईहै। जगदुरगंधकोऊऐसीबुरीलागीजामें बहुदुरगंधसोसुगंधलौसराहीहै ५७६॥

सुधि बिसराई है। कवित्त। बैदनि बुलाइ लावो स्यान नि अनेक भांति यपंति यतन रूप लागतिहै नेरमें। योगी जती नोइ सो उपासिक देव भैरौंके कामरूके बासीपचि सीडोहाथ हेरमें। लोटि लोटि जाइ वीरबोलै न अनाज खाइ पनियांको निकसीआजु अधिक अँधेरमें। बावरीअनाहकयहभूतनबधायेफिरैआईब्रजबालनंदलालजूकेफेरमें ५॥ चारौंओरबातरस ठौरठौर ढूंढ़िआयेहैं। कुयागिनिको आत्मा अप्राप्त तैसेनमिली जगदुर्गंध कोऊऐसोनु रोगा गी जगत दुर्गंधहू तैडरी। ऊंट कोकरंक की सुगंधमानी जगदुर्वासना करंकहूते बड़ी मानी १॥

बीतेदिनतीनिवाकरंकहीमेंशंकनहीं बंकप्रीतिरीतियह कैसेकरिगाइये । आयोकोऊसंगताहीसंगगंगातीरआई तहांसोअन्हाईहैभूषणावनआइये । ढूंढ़तपरसरामपिता मधुपुरीआये पतेलैबतायेजाइमाथुरमिलाइये । सघन बिपिनब्रह्मकुंडपरबरएकचढ़िकरिदेखीभूमिअँशुवाभिजा- इये ५७७ उतरिकैआइरोइपाइँलपटाइगयो कटीमेरी नाकजगमुखनदिखाइये । चलौगृहबेगिसबलोकउपहास मिटै सासुघरजावोमतिसेवाचितलाइये । कोऊसिंहव्या- घ्रअजुबपुकोबिनाशकरैत्रासलेरेहोइकिरिमृतकजिवाइये । बोलीकहीसांचबिनभक्तनऐसोजानौ जोपैजियोचाहौ करौप्रीतियशगाइये ५७८ ॥

वैभूषणावनआईहै॥ रजोगिनीको बानोकरिकैवृन्दाबन कहांजाहि ॥ जैसेबिदुरजी दुर्योधन की पौरिपै धनक ध- रिकै निकसे श्रीधरजीने लिख्यो है डरै नहीं। चक्रवर्ती लिख्यो बधिकको बानोतीर्थ याचासे कहाकरैं यहश्रीवृ- न्दाबन धामहै बैकुंठहूते सर्वोपरि है १ बरपर चढ़िकरि देखो शरीरमें पिंडोलमाटी लगायेहैं २ मृतक जिवाइये तुमसांची कही भक्तिबिना तौ प्रानी मृतकही तुल्यजानौं ३ नागलोक स्वर्गलोक मेंहूं भक्तिनहीं ॥

कहीतुमकटीनाककटैजोपैहोइकहूं नाकएकभक्तिना कलोकमेंनपाइये । बरषपचाशलगिविषैहीमेंबासकियो तऊनउदासभयेचनेकोचबाइये। देखेसबभोगमेंनदेखेएक श्यामताते कामतजिधामतनसेवामेंलगाइये। राततेज्यों प्रातहोतऐसेतमजातभयो दयोलैसरूपप्रभुगयोहिये आइये ५७९ ॥

क्योंकि चारिकौड़ी की भांगसों बावरो ह्वै जाइहै॥ तापैपास्ती को दृष्टांत अरुभंगी को जहां रागरंग अमृत भोगकैसे न बावरो होइ ताते बिद्या धनराज्य पाइकै मत्तहोइ है जैसेचौषो धनको पाइकै बावरो भयो॥ आपुको आपहीधिरकार है १ बरषपचास॥ सप्तमे॥ मतिर्न कृष्णोपरतः स्वतोवामिथोभिपद्येतगृहव्रतानां अदांतगोभिर्विसतां तमिस्रं पुनःपुनश्चर्वित चर्वणानां २॥ कवित्त धनदियो धामदियो भामसुत नामदियो दियोजग यश ताके तचरयौन रूपमें। नरदेही दीनी सबसुरति सपूरी कीनी कामिनीनवीनीनहीं जानदीनों दुखमें। दामनको रोवैनिशि बासर बनमखोवै हरिनो बिसारैगीदी असेतैने सुखमें। धूरिपरीकुलमें बड़ाईमें अंगारपरे भारपरो बुद्धिकार परोतेरे सुखमें ३ पुत्रकलत्र सों चौरासी सों छुटैगो सोनही ४॥ कुंडलिया॥ हाहाकरै न छूटिहैबैरीवश परिजाइ॥ बैरीबश परिजाइ कालयमकी संगहैगो। तात मातसुतबाम धीरकोउ नाहिंधरैगो॥ दानपुण्य औषधी तिनहुते काजनसरहीं। होनहारसोबड़ी उलटघटको अनुसरहीं॥ अगरउबारै रामपद कैसंतनि कीबांह। हाहाकरै न छूटही बैरीबश परिजाहि ५॥ कुंडलिया॥ बहुतगई थोरीरही थोरीहूमेंचेत॥ थोरीहूमेंचेत असल घटथोरैथोरै। मारग बिषैबिसार श्रीमदै सियपतिओरै॥ द्वैघटिकामेंअंग भूपगोविंद पदपायो। दुर्मतितजिकैपिंगलाश्यामहठ सेजबसायो॥ अगरआलकमजिनकरौ हरिभजबेकेहेत। बहुतगई थोरीरहो थोरीहूमेंचेत १ दयोलै सरूप॥पंचमे॥ कर्मकारन उपजनिपुनिनाश। सुखदुखशोक मोहनितत्रास॥ इनकेहेत दियोहरिनेतन। ताहिअन्यथा करैकौनजन १ जासवेदबानी बड़दाम। दृढ़गलबंधा कर्म गुणनाम॥ तामेंबँधे हरिहिहमऐसे। बहतहैबैल धनीको जैसे २ गुणकर्मनकरि दुखसुखजोजो। देतहैहरि हमलेत हैंसोसो॥ ताहीकेबश रहतहैंऐसे। अंधसनाथ कैवशजैसे ३

सुतहूनितन धारैतौलौं। गर्वत्यागि प्रारब्धहैजौलौं॥ औरदेह पुनिधरैनऐसे। सुतकोतन जाग्योजनजैसे ४ अहिबनहूंमें भययाते। संगहैंछह इंद्रीरिपुजाते॥ आतमाराम जितेंद्रीमहा। ताबुधको गृहदूषणकहा ५ पढ़लैछह इंद्रीवैरीजे। घरमेंरहि ऐसेजीतैते॥ ज्यौंगढ़मेंरहि रिपुनिजीतजन। फिरतहांरहै जहांमानैमन ६॥ श्रीशुकउवाच॥ त्रिभुवनगुरुकी यहआज्ञासुनि। अपनीहैहलिकई जदिय पुनि॥ अतिभागवत तऊप्रियव्रतजो। आदरसो शिरनाय लईसो ७ विधिहूमनुकी पूजालैपुनि। लखि सनमानप्रियव्रतनारदसुनि॥ मनबानी ब्यवहार अगोचर। ताब्रह्महि सुमिरत गमनेघर ८पायमनोरथ विधितेमनुजो। नारदको सम्मतलैकैसो॥ सुतहिराजदै अपुत्यागोघर। अतिहीविषमबिषैविषकोभर ९ यौंनिर्मल मानदप्रियव्रतजो। हरिइच्छाते पायराज्यसो॥ जिहिप्रभाव जगबंधनहरै। तिह हरिपदमें नितचितधरै १०॥

आयेनिशिघरहरिसेवापधरायअतिमनकोलगायवही टहलसुहाईहै। कहूंजातआवतनभावतमिलापकहूं आय नृपपूछैद्विजकहांसुधिआईहै। बोल्योकोऊतनधामश्याम संगपागेसुनि अतिअनुरागेबेगिखबरमँगाईहै। कहोतुम जायईशईहांईअशीशकरो कहीभूपआयोहियचाहिउपजा ईहै ५८० देखीनृपप्रीतिरीतिपूंछीसबबातकही नैनअश्रुपातवहरंगीश्यामरंगमें। बरजतआयोभूपजायकैलिवाय ल्याऊं पाऊंजोपैभागमेरेवहीचाहअंगमें। कालिंद्रीकेतीर ठाढ़ीभीरदृगभूपलखी रूपकछुऔरैकहाकहैंवैउमंगमें। कियोमनैंलाखबेरअयेअभिलाषराजा कीनीकुटीआयेदेश भीजेसोप्रसंगमें ५८१॥

भपआयो ॥ बनवारीदाससुन्योअरु दारासिकोहशाह जादो ताकोप्रसंग राजाको आशीर्वाद नकियो तापै फकीरअरु बादशाहको प्रसंग पावँ फइलायदिये १ दोहा ॥ जबलगयोगीजगतगुरु तबलगआशनिराश। तुल-सीआशाकरतही जगगुरुयोमीदास १ ॥ कवित्त ॥ दुरित बिदारनी सकलजगत।रनीयह नहिंप्रतिपारिनीहै।प्या. रीनाहकी। वृन्दाबन रसकेलि कारिनीहो हरिनीहो सबनिकेनीकीभांति तनमनदाहकी । सू.ति सुकबिरबि नंदिनीकृपाकैदीजै लाड़िलीऔलालकी सुभक्तिउतसाह को। औरजितीकामना।ते सबैप्रवाहदेउ रहैपरवाहएक तेरेप्रवाहको १ छप्पै ॥ प्राणजाउतौजाउ जाउयशसकल बड़ाई। हाउधर्मकोनाश अमहिमनगहोजड़ाई ॥ आधि व्याधिकेदुखकरैंजतनको।जीरन।करोनहींउपचारिकोहो नानापोरन॥बहुविधिबचन कठोरकहि सबैनिरादरकरो किन।श्रीवृन्दावनको छांड़िदेयहआवोमन भूलिजिन २॥

मूल॥ गोविंदचंदगुणग्रथनकोखडगसेनबाणीबिसद॥ गोपीग्वालपितुमातनामनिर्णयकियोभारी । दानकेलि दीपकप्रचुरअतिबुद्धिउचारी ॥ सखासखीगोपालकाल लीलामेंबितयो॥ कायथकुलउद्धारभक्तदृढ़अनतनचितयो॥ गौतमीतंत्रउरध्यानधरतनत्यागोमंडलरसद । श्रीगोविंद चंदगुणग्रथनकोषड्ग० १६३टीका॥ग्वालियरवाससदा रासकोसमाजकरै शरदउज्यारीअतिरंगबढ्योभारीहै । भावकीबढ़निदृगरूपकीचढ़नितत्ताथेईकीरढनिजोरीसुंदर निहारीहै। खेलतमेंजायमिलेत्यागितनभावनासों झेलत अपारसुखरीझिदेहिवारीहै । प्रेमकीसचाईताकीरीतिलै दिखाईभई भावकनिसरसाईबातलागीप्यारीहै ५८२॥

बाणीविसद ॥ पद ॥ है गोपिन बिचबिच नँदलाला। श्यामसेवकी दुहुं ओर राजतनवदामिनिवाला। करत नृत्यसंगीत भेदगति गरजत मोरमराला। फहरत अंचल चंचल कुंडलयहररहै उरमाला। मध्यमिलीमुरलीमोहन धुनि गानवितान छयोतिहिंकाला। चलियेभ्रमकि भ्रां-कभ्रंकरि वलयमिलि नूपुरकिंकिनीजाला। देवविमाननि कौतकमोहे लखिभयो मदनबिहाला। खगसेनप्रभु रैनिश दैकौ बाढ्योरंगरसाला १ ॥ पदपद गावतगावतहो प्राण त्यागे देहवारीहै। देहछोड़िकै ताहीभावको प्राप्तभयो। सनेहकोइहै जातिएक बिछुरनि पूरसनेहो तन मिलिनि-हुंमेंछोड़े बिछुरनहुंमेंछोड़े १ ॥ दोहा ॥ चढ़िकैमैन तुरंग परचलबो पावकमाहिं। प्रेमपंथ ऐसोकठिन सबकोउ निवहतनाहिं २ ॥

मूल ॥ सखाश्यामभनभावतोगंगाग्वालगँभीरमत ॥ श्यामाजूकीसखीनामआगमविधपायो। ग्वालगायब्रज गावँ पृथकनीकेकरिगायो ॥ कृष्णकेलिसुखझिलिअघट उरअंतरधरई। तारसमेंनितमगनअसदआलापनकरई ॥ ब्रजवासआशब्रजनाथगुरु भक्तचरणरजअनन्यगति। सखाश्याममनभावतो० १६४ टीका ॥ पृथ्वीपतिआयोवृंदा वनमनचाहभईसारंगसुनावेकोऊजोरावरिल्यायेहै। व-ल्लभहूसंगस्वरभरतहीछायोरंग अतिहीरिझायोदृगअँशु वावहायेहैं। ठाढ़ोकरजोरिबिनैकरीपैनधरीहिये जियेब्रज भूमिहीसोंबचनसुनायेहैं। कैदकरिसाथलियेदिल्लीतेछु-टायदिये हरिदासतोंवरनैंआयेप्राणपायेहैं ५८३ ॥

ब्रजबासआस ॥ कवित्त ॥ निकुंजकोचंद अरविंदरस सिंधु कोलाड़िली कुंवरिसोहिं यहैदीजै। आनंदकोधाम

अभिराम याविपिनको जनलपरजनम कोऊ जीवकीजै॥ रहूं अतिधूरिधूसर सदाप्रेम मय सुनतबरवानी कलकी- लिनीजै। नवलनवकुंजमें फिरौं अलबेलीदिन निरखिबन रूपभरि हगनपीजै १ परजे पतौवासूके भूख मेंपीयूष जैसे खाऊंरूषरूषतरे असीतोको जीवको। प्यासतिबढैजु पीर तरनि तनैयातीर अंजुलिको भरिधीर छीरनीरपीवको। केलिकल जोहतविमोहत सुहै है कविहंदावन कुंजपंकज अमर असीवको। आनंदमें रूमिघूमि बसोंगाविलासभू- मि आरतीको दूमिजैसे सुखपावैजीवको २ व्रजभूमिको लालजूने स्वादअपने सुखसोंलियो ब्रह्मांडघाटपै १ दग अँसुवा ॥ दोहा॥ रूपचोजकीबात पुनि औरकटीलीतान रसिकप्रवीनन कोहदे छेदनकरैबेवान १ बतरसनीरगँभीर अतिकोउन पावतयाहि। सीनलीन रसरसकजो सोईपा वतताहि २॥

मूल॥ सोतीशिलाघसंतनिसभादुतियदिवाकरजानि यो ॥ परमभक्तिपरतापधर्मधुजनेजाधारी। सीतापतिको सुयशबदनशोभितअतिभारी॥ जानकीजीवनिचरणशरण थातीथिरपाई। नरहरिगुरूप्रसादपूतपूतेंचलिआई ॥राम उपासिकछापदृढ़औरनकछुउरआनियो । सोतीशिलाघसं तनिसभादुतियदिवाकरजानियो १६५ जीवतयशपुनि परमपदलालदासदोनोंलही॥हदैहरिगुणखानिसदासंत सँगअनुरागी । पद्मपत्रज्योंरह्योलोभकीलहरनलागी ॥ विष्णुरातसमरीतिविधैरैंसोतनत्याज्यो। भक्तबरातीवृंदम ध्यदूलहज्योंराज्यो ॥ खरीभक्तिहरिपांपुरैंगुरुप्रतापगाढ़ी गही।जीवतयशपुनपरमपदलालदासदोनोंलही १६६॥ सुयशबदनशोभितदोहा॥ तुलसीरसनाजोभलीनिशदिन

नसुमिरैराम॥ नहींतोखैंचिनिकारियेमुखमेंभलोनचाम१ छापहढ़॥ सवैया॥ आगमबेदपुराणबखानत कोटिकनिर गुणजाहिनजाने। जेसुनितेपुनिआपहिआपको ईशकहा-वतसिद्धसयाने। धर्मसबैकलिकालग्रसेजपयोगबैरागलैजीव पराने। कोकरिशोकमरैतुलसी हमजानुकीनाथकेहाथ बिकाने १ जीवतयश॥कुंडलिया॥ इकहैहै अरुचौपरीपुनि लाइदुऊंहाथ॥ पुनिलाइदुइहाथकथाहरिजनमिलिगावै। जीवतयशजगमाहिंबहुरसदगतिकोपावै॥ देवपितरविधि अवधिकोजबाधानईकरई। अनन्यभजनगुरुगदितनित्य गोविंदअनुसरई॥ अगरउभैताकीबनैह्वैसंतनिकेसाथ। इकहैहै० १कायाकसोकैनबसोहँसोरहौगहिमौन। तु-लसीमनजीतेबिना मिटैनहींदुखजौन॥ त्रिष्णुरातेवघेरेमें पारायनकरवाई पूरीभईजबशरीरत्यागिदियो १॥

भक्तनिहितभगवानरचीदेहीमाधौग्वालकी॥ निशि दिनयहैबिचारदासजिहिविधिसुखपावें। तिलकदाससों प्रीतिहृदैअतिहरिजनभावें॥ परमारथसोंकाजहियेस्वारथ नहिंजानें। दशधामत्तमरालसदालीलागुनगानें। आ रतहरिगुणशीलसमप्रीतिरीतिप्रतिपालकी। भक्तनहित० १६७ अगरसुगुरपरतापतेपूरीपरीप्रयागकी॥ मानस बाचककायरामचरणनचितदीनों। भक्तनसोंअतिप्रेमभा वनाकरिशिरलीनों॥ रासमध्यनिर्जानिदेहद्युतिदशादि खाई। आड़ौचलियोअंकमहोछैपूरीपाई॥ क्यारेकलशऔ लीध्वजाविदुषश्लाघाभागकी। श्रीअगरसुगुर० १६८ प्रगटअमितगुणप्रेमनिधिधन्यबिप्रजिननामधर्‌यो॥ सुं दरशीलसुभावमधुरबाणीमंगलकरु। भक्तनकोसुखदैन फल्योबहुधादशधातरु॥ सदनबसतनिर्वेदसारभुक्जगत

असंगी। सदाचारउदारनेमहरिदासप्रसंगी॥ दयादृष्टि बशआगरैंकथालोकपावनकर्यो। प्रगटअमितगुणप्रेम निधिधन्यविप्र० १६६॥

दयादृष्टिकरिकैजगतकोपारउतारै। यातैंवृंदाबननिकटताहिछोड़िकैआगरेरहैकघातोसबहीकहैं। पैक्रिया बानजनकीसुनिकैपारलगैं॥ कवित्त॥ जैसेशशिनिशिकोअकाशमेंप्रकाशपावै औसिराबैतापतनकी। तैसेरसिकाई औअननताईबातसुख शोभितहैक्रियाबानजानकी। जैसे धनधामश्यामजुकेलागेकाम होतअभिरामदुखग्राम नाशैमनकी। ऐसेहरिगुणकोजपुखननखानकरैतीपैकान प्राणहरैगुणगनकी १ आगरेवृंदाबनकेघाटकोजलआवत दूरबाट। तातियहहैआगरोऔरगांवसबघाट १॥

टीका॥ प्रेमनिधिनामकरैसेवाअभिरामश्यामआग रो शहरनिशिशेशजलल्याइये। वरषासुऋतुजिततित अतिकीचभई भईचितचिंताकैसेअपरसआइये। जोपै अंधकारहीमेंचल्योतौबिगारहोतचलेयोंबिचारिनीचक्षुवैन सुहाइये। निकसतद्वारजबदेख्योशुकवारएकहाथमेंमसा ल्याकेपाछेचलेजाइये ५८४ जानीयहैबातपहुंचायेकहूं जातयहअबहींबिलातभलेचैनकोऊधरीहै। यमुनालौंआ योअचिरजसोलगायो मनतनअन्हवायोमतिवाहीरूपह रीहै॥ घटभरिधर्योशीशपटवहआयगयोआयगयोघरन हींदेखकहाकरीहै। लागिचटपटीअटपटीनसमझिपरैभट भटिभईनईनैनहीरझरीहैं॥ ५८५॥

सकुवार॥ एकमसालमेंकूपीतेतेलडारिकिकीशोभाहो न्यारी॥ कवित्त॥ लालबज्रचहीपागबांधीअनुरागहीसों

तापैभुकिरह्योतुरी अतिहीविशालहै। भँगाघेरदारफेंटा
बांध्याअतिचातुरीसों गरेगुंजमालशोभादेतप्रेमजालहै।
बाऊंऊंचोकैचढ़ायचूड़ाचमकायअति-औचकहीआयेजिस
हायमेंमसालहै। आगेआगेचल्योजायमनकोलगायलियो
सुधिबिसरायचितकरतनिहालहै १ सोरठा॥ जामुखसों
जोनाम निकसतसोप्रगटतभयो। बड़रंगीवहश्याम ह्वैस
रूपअँखियनलग्यौ २ दोहा॥ पुतरीकारीआंखिकीरूप
श्यामकोमानि॥ वासोसबजगदेखियेवाबिनअंधोजानि ३
कारीदृगकीपूतरी कारोहरिकोअंग॥ जिनसोंसबजगदे-
खिये जिनबिनरूपनरंग ४ प्रेमकोनिधिअतिप्रेमनिधि भ-
रयौप्र मउरज़ाल॥ सोईमूरतिधारकैप्रगटभयोतिहिकाल
प्रेमप्यारेमेंअंतरनहीं १ प्रेमप्रीतिमेंअंतरयेतो। बीसीतीन
साठहैतेतो २कहाकरीहै औरतौअंधेरेकेचोर। यानेमसा
लबरायकै चितचुरायो भजनभूलिगयो मसालहीको
ध्यानरहै ६॥

कथाऐसीकहैंजामेंगहैंमनभावभरेकरैंकृपादृष्टिदुहुजन
दुखपायोहै। जायकेसिखायोबादशाहउरदाहभयो कही
तियाभलीकोसमूहघरछायोहै। आयेचोबदारकहेचलौय
हीबारबार झारीधर्योप्रभुआगेचाहैशोरलायोहै। चले
तबसंगगयेपूछेंन्टपरंगकहा तियनिप्रसंगकरौकहिकैसुना
योहै ५९६ काहूभगवानहीकीबातसोबखानकहौंआनि
बैठेनारीनरलागिकथाप्यारीहै। कहूकोविडारैझिझकारे
नैकुटाविषे दृष्टिकेनिहारैताकोलागैदोषभारीहै। कहीतुम
भलीतेरीगलीहीकेलोगमोको आनिकैजताईवहबातकछू
न्यारीहै। बोल्योयाकोराख्योसबकरौनिरधारनीके चले
चोबदारलैकेरोकैप्रभुधारीहै ५९७ सोयोबादशाहनिशि

आयकैसुपनदियो कियोवाकोइष्टभेषकहीप्यासलागीहै। पीवोजलकहाआबखानेलेबखानेतब अतिहीरिसानेको पिवावैकोउरागीहै । फिरिमारीलातअरेसुनीनहींबातमे रीआयफुरमावोज्योईप्यावैबड़भागीहै । सोतौतैलैकैदक र्योसुनिअरबर्योडर्यो भर्योहियेभावमतिसोवततेंजा गीहै ५८८ बोरेनरताहीसमैबेगिदेलिवायल्याये देखल पटायेपायनृपद्दगभीजेहैं । साहिवतिसायेजायअवहींपि वावोनीरऔरपैनपीवैंएकतुमहीपैरीझेहैं । लेवोदेशगावँस दापावहींसोंलग्योरहौं गहोनहीनेकुधनपायबहुछीजेहैं । संगदैमसालताहीकालमेंपठाये योकपाटजालखुलेलाल प्यायोजलधीजेहैं ५८९ ॥

कथाऐसीकहै॥दोहा॥ नातोनेहरसरंगभरिकहैंकथा निर्वेद॥ जैसेचिठीविदेशकी बाचनहीमेंभेद १ गहौनही नेकु॥ दोहा॥ जबलगिभक्तिसकामता तबलगिकच्चीसेव॥ कहिकबीरवेक्योंमिलैं निहकामीनिजदेव २ ॥

मूल॥दूबरोजाहिदुनियाकहैसोभक्तभजनमोटोमहंत। सदाचारगुरुशिष्यत्यागिविधिप्रगटदिखाई। बाहरिभीतर बिसदलगीनहिंकलियुगकाई ॥ राघवरुचिरसुभावअसद आलापनभावैं । कथाकीरतननेममिलैसंतनिगुणगावैं ॥ तापनोलिपूरोनषकज्यों घनअहरनहीरोसहंत । दूबलो जाहि० १७० दासनिकेदासंतकोचौकसचौकीयेमंडी॥ह रिनारायननृपतिपदमवेरछैंविराजै । गावँहुशंगाबादअट लऊधौभलछाजै॥ भलैतुलसीदासभटख्यावदेवकल्याने।

वोहिथविगरामदाससुहेलैपरमसुजाने ॥ ओलीपरमानंद कैंधुजासबलधर्मकोगंडी। दासनिकेदास०७११अबलाश रीरसाधनसबलायेवईहरिभजनबल।दमाप्रगटसबदुनी रामवाईबीराहीरामनि । लालीनारालक्ष्युगुलपारवती जगतधनखीचनि ॥ केसिधनागोमतीभक्तउपासिनि । बादररानीविदितगंगायमुनारैदासनि ॥ जेवाहरषाजोप सिनिकुंवररायकीरतिअमल। अवलाशरीरसाधन० १७२ कन्हरदाससंतनिकृपाहरिहदैलावोलह्यो ॥ श्रीगुरुशरनै आयभक्तिमारगसतजान्यो।संसारीधर्महिछांड़िझूठिअरु सांचिपिछान्यो ॥ ज्योंशाखाद्रुमचंदजगततेइहिविधि न्यारो।सर्बभूतसमदृष्टिगुणगंभीरअतिभारो॥भक्तभला ईवदननितकुवचनकबहूंनहिंकह्यो। कन्हर० १७३॥

भजनबल॥ हरिके भजन सोंकलियुग में साधन सबल किये॥ छप्पै॥ महाकठिन कलिकाल में कहोलाज कैसे- रहै॥ जनम करम नितनेम प्रेमसों हरिगुण गावै॥ ताहि कहत पाषंड काहितू जगभरमावै॥ लाबरलौंड लबार ताहि आदर करिलीजै॥ शीलवंत गुणवंत साधु पकरि ताहि धक्कादीजै॥ चतुरदासइक आशहरि सोई दृतपन नाहिनगहै॥ महाकठिन० १ सहनशील संतोष मनमें न- हिंलावै॥ निस्प्रेही हरिशरण प्रेमसों हरिगुण गावै॥ रागद्वेष सों रहत रुचिर सतसंगत कीजै॥ हरिगुरु सा- धुप्रसाद सोई हिरदै धरिलीजै॥ चतुरदास राधारवन निशि वासर इहिविध कहै॥ महाकठिनकलिकाल में० २॥ कवित्त॥ आजु कलिकाल ऐसो आयो है कराल अ- तिराखै जो गुपालटेक तौतौद्वन्द्व जीजिये॥ बोलिये न चालियेजुवैठिपिंड पालिये जु आंखि कान मूंददोयमौन

व्रत कीजिये ॥ देखी अनदेखी जानिसुनी अनसुनी मानिमाला गहिपानिहान लाभनचितदीजिये ॥ कीजि- ये न रोषजोपै कहैकोऊ बीससीष लीजैधरि शीश जग- दीश साषि कीजिये ३ यहभक्ति को सरूप है लांचो लख्यो एकतौ देखत को बड़ा एकगुण में बडो जैसे गोरष की डीबीसी इनको हृदय गुनमें बड़ो दधिअगुल को तापैदश हजार गारीसमाय नाहिं जमासों १ सबहीते धरनीबडी जापैनव खंडवसैं तातें वडे सिन्धु तापै टापू दिखरात है। तातें बड़े कुंभतातें तीनही चुलूमें किये ऐसेङ्ग अकाशमें अलेषै जात हैं ॥ दीरघ गगन अनी परम पगनभयो माप्यो ब्रह्मांड गयो वामन को गात है। होतो तुम बड़े तुमहूं ते वडेसंत जाकेहृदय में जग- नाथ अमसि समातहै १॥ दोहा ॥ सबही घटमें हरिबसे ज्यों गिरिसुत में ज्योति ॥ ज्ञानगुरू चकमकबिना कैसे परगटहोति २ झूठि अरुसांचि सो संगसो ज्ञानहोय जब पिछाने जैसेगुमास्ते के संगसों साहूकार के बेटेने झूठो सराफ पिछान्यो तबफारि डार्यो ॥ ऐसे सतसंग सों ज्ञानह्वै जबसंसार झूठोजानै जबछोंडिदे १ कुबचनकब' हूं ॥ दोहा ॥ संतननिंदा अतिबुरीभूलिकरोजिनकोय। कि येसुकृत सबजनम के छणमें डारैखोय २ ॥

लट्योलटेराआनिबिधिपरमधरमअतिपीनतनि। क हिनीरहिनीएकएकप्रभुपदअनुरागी। यशबितानजगत न्योसंतसंमतबड़भागी। तैसोईपूतसपूतनूतफलजैसोप रसा। हरिहरिदासनिटहलकवितरचनापुनिसरसा। सु रसुरानंदसंपुटायदृढ़केशवअधिकउदारमन। लट्योलटे राआनिबिधि परमधरमअतिपीनतन १७४ केवलरा मकलियुगकेपतितजीवपावनकिया। भगतभागवतबिमु

खजगतगुरुनामनजाने । ऐसेलोगअनेकऐचिसनमारग आने। निरमलरतिनिष्कामअजातेंसदाउदासी। तत्वद रशीतमहरणशीलकरुणाकीरासी । तिलकदासनवधार तनकृष्णकृपाकरिदृढ़दिया। केवलरामकलियुगकेपतित जीवपावनकिया १७५ टीका ॥ घरघरजायकहैंयहैदान दीजैमोकोकृष्णसेवाकीजैनामलीजैचितलायकै । देखेभे षधारीदशबीशकहुअनाचारीदिये प्रभुसेवनकेरीतिहिसि खायकै । करुणानिधानकोऊसुनैनहींकानकहूं बैलकेल गायोसांटोलोटेदयाआयकै । उपर्योप्रगटतनमनकीस चाईअहोभयेतदाकारकहोकैसेसमुझायकै ५६० ॥

लघोलटेरा ॥ दोहा ॥ कबिरा हरिके भावता दूरहि ते दीखंत ॥ तनछीने मनउनमने जगरूढड़े फिरंत ॥ सो- रठा ॥ कहाचीकने गात रस पूछत खिसले परैं। सरस न आवै वातराखउड़ैरूखे हिये २ और अनुमान करैजैसे मनावर औक्राजीने लँगरीभेड़ को अनुमान कियो तत्व- दरशी तापैदृष्टांत बादशाह अरुसुघरा को घरघरजायक हैक्योंकि करुणासिंधुहैं ॥ जैसेकोऊ बेरीहयकरी वालेको नायकै छुटावै क्योंकि वहतो आपसकै नहीं ॥ आपनहीं नायकै छुटावै साधुओ दीनवत्सला: जैसे चंद्रा सुघराने घरबैठेही बादशाह को तत्त्वदरशाये रीति दिखायके भोगलगाय के खायो १ ॥

मूल ॥ श्रीमोहनमिश्रितपदकमलआशकरनयशवि स्तर्यो। धर्मशीलगुणसींवमहाभागवतराजऋषि। पृथ्वी राजकुलदीपभीमसुतविदितकील्हशिषि । सदाचारअति चतुरबिमलबाणिरचनापद । शूरधीरउदारबिनयभल

पनभक्तनिहद। सीतापतिपदराधासुबरभजननेमकूरमध र्‌यो। श्रीमोहनमिश्रतपदकमल आशकरनयशविस्त र्‌यो १७६ ॥ टीका ॥ नरवरपुरताकोराजानरवरजानौं मोहनजूधरिहियेसेवानीकीकरीहै। घरीदशमंदिरमेंरहै रहैचौकद्वारपावतनजानकोऊऐसीमतिहरीहै। पर्‌योको ऊकामआयअबहींलिवायल्यावोकहै पृथ्वीपतिलोगका नमेंनधरीहै। आईफौजभारीसुधिदीजियेहमारी सुनिव हूबातटरीअतिपरीखरवरीहै ५६१ कहिकैपठाईकहौकी जियेलराईसुनिरुचिउपजाईचलिपृथ्वीपतिआयोहै। प र्‌योशोचभारीतबबातयोबिचारी कहीआयएकजावोग योअचिरजपायोहै। सेवाकरिसिद्धिशाष्टांगहवैकेभूमिपरे देखिबडीवेरिपावँखडगलगायोहै। कहिगईऐड़ीऐंपैटेढ़ी हूनभौंहकरीकरिनितनेमरीतिधीरजदिखायोहै ५६२ उ ठिचिकडारितबपाछेसोनिहारिकियोमुजराबिचारि बाद शाहअतिरीझेहैं। हितकीसचाईयहैनेकुनकचाईहोतचर चाचलाईभावसुनिसुनिभीजेहैं। बीतेदिनकोऊनृपभक्त सोसमायोपृथ्वीपतिदुखपायोसुनीभोगहरिछीजेहैं। करै विप्रसेवातिन्हैगावँलिखिन्यारेदिये वाकेप्राणप्यारेलाड करीकरौकहिधीजेहैं ५६३ ॥

पावत न जानकोऊ षटकेमें मनचट जाय १ चित्तमें प्र- बीन चित्तमाया में २ पैअठाली मनन रहै मनलगाइट बांशकी गांठकी नाई साधनकरिये मनवश करिबेको जैसे ठाटी हरीने साधन किया सो उलीचोही धीरज फ- कीर प्रहलादे को दृष्टांत १ ॥

मूल ॥ निहकंचनभक्तनिभजै हरिप्रतीतिहरिबंशके॥ कथाकीरतनप्रीतिसंतसेवाअनुरागी। खरियाखुरपारीति ताहिज्योंसर्बसुत्यागी। संतोषीशुठिशीलअसदआलापन भावै। कालवृथानहिंजायनिरंतरगोविंदगावै॥ शिष सपूतश्रीरंगकोउदितपारषदअंशके। निहकंचनभक्तनभजै हरिप्रतीतिहरिवंशके १७७॥

खरियाखुरपारिति॥ भारतकोइतिहासखरियाखुरपा सर्बसदान दीये। सो बदरिया वाही के शिरपररही। बड़े बड़े राजनने बड़ो बड़ो दान दियो। पै खरियाखुर-पा की बरोबर न भयो सर्बसुदियो॥

हरिभक्तिभलाईगुणगंभीरबांटैपरीकल्यानके॥नवल किशोरदृढ़व्रतअनन्यमारगइयकधारा। मधुरबचनमनहर णसुखदजानतसंसारा॥परउपकारबिचारिसदाकरुणाकी रासी। मनबचसर्बसुरूपभक्तपदरैनिउपासी॥ धर्मदास सुतशीलशुठिमनमान्योकृष्णसुजानके। हरिभक्तभलाईगु नगँभीरबांटेपरीकल्यानके १७८ बीठलदासहरिभक्तको दुहूंहाथलाडुलिया॥ आदिअंतनिरवाहभक्तपदरजव्रतधा री। रह्योजगतसोंऐंड़तुच्छजानैसंसारी॥ प्रभुतापतिकी पधितप्रगटकुलदीपप्रकासी। महतसभामेंमानजगतजा नैरैदासी।पदपढ़तभईपरलोकगतिगुरगोविंदयुगफलदि या। बीठलदासहरिभक्तकोदुहूंहाथलाडुलिया१७९॥

हरिभक्त भलाई॥ छप्पै॥ गुरुभक्ता गुणवंत ज्ञान बि-ज्ञान बिचारै। परउपकारी पिंडप्रान परद्रोह निवारै। परिधन को परित्याग रहै परनारि उदासा। सर्बात्मा

सर्बज्ञ सर्बउरमें नितबासा। तहँ वेत्ता तिऊंलोकमें ऐसी धरनी ओ धरै। ईकोतरसै आपनै पुरुषपुरातन उद्धरै १ सुच्छगाने॥ दोहा॥ चाख्योचाहै प्रेमरस राख्यो चाहै घोश। इक है द्वै अरु खोपरी देत सुनौ नहिं कान२॥

भगवन्तरचेभारीभगतभक्तनकेसनमानको।काहवश्री रंगसुमनिसदानंदसर्बसुत्यागी। श्यामदासलघुवअनन्य लापाअनुरागी। मारुमुदितकल्याणपरसबंशीनारायन। चेताग्वालगुपालशंकरलीलापारायन। संतसेयकारजकि यातोषतश्यामसुजानको। भगवंतरचेभारिभगतभक्तन केसनमानको १८० तिलकदासपरकामकोहरीदासह रिनिर्मयो। शरणागतकोसिवरदानदधीचटेकबलि। प रमधरमप्रहलादशीशजगदेवदेनकलि। बीकावतवानैत भक्तिपनधर्मधुरंधर। तूबरकुलदीपकसंतसेवानितअनु- सर। पारथपीठअचरजकौनसकलजगमेंयशलियो। तिलकदासपरकामकोहरिदासहरिनिर्मयो१८१टीका॥ प्रहलादआदिभक्तिगायेगुणभागवतसबैइकठौरे आयदे खेहरिदासमें। रीझजगदेवसोंयोंकहिकैबखानकियो जा नतनकोऊसुनोंकरैलैप्रकासमें। रहैएकनटीशक्तिरूपगुण जटीगावैलागैचटपटीमोहयाचैमृदुहासमें। राजारिझवा रकरैदेवेकोबिचारिपैनपावैसार काट्योशीशराख्योतेरेपा समें ५६४ दियोकरदाहनोमैंयासोंनहींयाच्योकाहूसुनि एकराजाभेदभावसोंबुलाईहै। नृत्यकरिगाईरीझलेवोक हींआयदेऊओट्योबायोंहाथरिसभरिकैसुनाईहै। येता अपमानपानदक्षिणलैदियोयेहो नृपजगदेवजूकोऐसेकहां

पाईहै। तासोंदशगुणीलीजैमोकोसोदिखाइदीजैदईनहीं जायकाहूमोहीकोसुहाईहै ५६५ ॥

तोषत श्याम॥श्लोक॥भक्तेतुष्टेहरिस्तुष्टो हरौतुष्टेचदेवता॥भवंतिसिक्ताशाखाश्चतरोर्मूलनिसेचने। रहैएकनटीसो कालीको अवतार रहैसो वह नटीरूप गुणगान। राई चिरोषतामें आयके कौन भई सो जगदेव पँवार भोलो सोमरप्रोही है १

कितौसमुझावैल्यावोकहैयहैजकलागीगइबड़भागी पासवस्तुमेरीदीजिये। काटिदियोशीशतनरहैईशशक्ति लखोल्याईबकशीशथारढांपिदेखिलीजिये। खोलिकैदि खायोनृपमूर्छागिरायो तनवनकीनबातअबयाकोकहाकी जिये। मैंजुदीनोहाथजानिआनिग्रीव जोरिदईलईवहीरी झपदतानसुनिलीजिये ५६६ सुनीजगदेवरीतिप्रीतिनृ पराजसुतापितासोंबखानिकहीवाहीकोलैदीजिये। तब तोबुलायेसमुझायेबहुभांतिखोलिबचनसुनाये अजूबेटीमें रीलीजिये। नट्योसतवारजबकहीडारोमारिबेलैमारिबे कोबोलीवहमरोमतिभीजिये। दृष्टिसोंनदेखेकहील्यावोका टिमूड़ल्यायेचहेंशीशआंखिनिकोगयोफिररीझिये५६७॥

रीझपद॥कवित्त॥नृत्यगान अभिनय रूपरीझि रचि करि विधिद्ध को शीश परयो नेही कैसे बचैंगे। लाष लाष लोगन के घाट घर कैसे कहूं पांच सात बनिआवे तेऊयामें मचेंगे। करत बिचार शोच सागरन वारापार वेई करतार कछु बुद्धिबल रचैंगे। हियेहीमें आय कहो मति पछिताहि तब वाहि वाहि रोयवो बनाय औरसबै

गे ॥ सोरठा ॥ नेही अक्षर दोययेतौ विधना ना रचे। को पावैगो और नेह पंथ नेही बिन। १ प्रीत नृप राजसुताकै भई वाके रूप पै रीझि पादशाह को बेटी जाति पांति न विचारी ॥ दोहा ॥ नृप विद्या अरु बेलि तिययेन गनै कुल जाति। जो इनके नियरेवसै ताही को लपटाति २ याको कहा कीजिये रीझके पचायबेको बाह्न बाड़कारहै १ शाहजहां को दृष्टांत ३॥

निष्ठारिझवाररीतिकीनीबिस्तारियह सुनोसाधुसेवा हरीदासजूनेकरीहै । परदानसंतसोहैदेतहैंअनन्तसुखर ह्योसुखजानिभक्तसुताचितधरीहै । दोऊमिलिसोवैंऋतु ग्रीषमकीछातपरगातपरिगातमोयेसुधिनहींपरीहै । दा तनकेकरबेकोचढ़ोनिशिशेषआप चादरउठायनीचेआये ध्यानहरीहै ५६८ जागिपरेदोऊअरबरदेखिचादरको पेखिपहिंचानिसुतापिताहीकीजानीहै।सन्तढगनयेचलेवै ठेमगपगलयेगयेएकांतमेंयोंबिनतीवखानीहै । नेकुसाव धानहवैकेकीजियेनिशंककाज दुष्टराजछिईपाय कहैकटु बानीहै । तुमकोजुनावभूरेजरैसुनिहियामेरोडरैनिंदाआप नीनहोतसुखदानीहै ५६६ इतनीजतावनीमेंभक्तिकोक लंकलगेऐपैशंकवहीसाधुघटतीनभाइये। भईलाजभारी विषयवासधोयडारीनीकेजीकेदुखराशिचहै कहूंउठिजाइ ये। निपटमगनकियेनानाबिधिसुखदियेदियेपैनजानिमि ललालनिलड़ाइये। गोबिँदअनुजजाकेबांसुरीको सांचो पनमनमेंनल्यायोनृपइहिबिधिगाइये ६०० ॥

बांसुरी को सांचो पन ॥ छप्पै ॥ टेक एकवंशी तनी जन गोबिंद की निर्वही। युगुल चंद किरपाल तास को दास

कहावै। पादशाह सों पैज हुकुमनहीबैनु बजावै। वोकावत बानेत भक्त बंशपांडव अवतारी। कपिज्यों बीरालियो उठाय शीश अंबर कै झारी। पीठपरीच्छत सार का सभा शापसंतन कही। टेक एकवंशीतनीजन गोविंदकीनिर्वही १ दोहा॥ गोविंदा गाढ़ी गही हुकुम किया बादशाह। कैसुरली कीटेरदैकै अंबर चपुपैवाह २ अंबरचपुपै वाहसी सुरलीबाजै नाह।सुरलीबाजैनाह देहएकैसाधवकेमाहँ ३॥

मूल॥ नंदकुवँरकृष्णदासकोनिजपदतेनूपुरदियो॥ तानमानसुरतालसुलयसुंदरशुठसोहै। सुघाअंगभ्रू भंग गान उपमाकोकोहै। रत्नाकरसंगीतरागमालारँगरासी। रीझेराधालालभक्तपदरैनिउपासी।स्वर्णकारपडगूसुवन भक्तभजनपनदृढ़लियो। नंदकुवँरकृष्णदासकोनिजपद तेनूपुरदियो १८२ टीका॥ कृष्णदासयेसुनारराधाकृष्णसुखसारलियोसेवाकरिपाछैनृत्यगानविस्तारिये। ह्वैकरिमगनकाहूदिनतनसुधिभूली एकपगनूपुरसोगिरयोनसँभारिये। लालअतिरंगभरेजानियतभंगभईपायँ निजखोलिआपबांध्योसुखभारिये। फेरसुधिआईदेखि धारालैबहाईनयनकीरतियों छाईजगभक्तिलागीप्यारिये ६०१मूल॥परमधरमप्रतिपोषिकैसंन्यासीयेमुकुटमनि। चित्तसुखटीकाकारभक्तिसर्बोपरराषी। दामोदरतीरथरामअर्चनविधिभाषी।चन्द्रोदयहरिभक्तनरसिंहारनकीनी। माधोमधुसूदनसरस्वतीपरमहंसकीरतिलीनी। प्रबोधनंदरामभद्रजगदानंदकलियुगधनि। परमधरम०१८३ प्रबोधानंदसरस्वतीकीटीका॥ श्रीप्रबोधानंदबड़ेरसिकआनंदकन्दश्रीचैतन्य चंद्रजूकेपारषदप्यारेहैं। राधाकृष्णकुं

जकेलनिपटिनचवेलिकहीझेलरसरूपदोऊ कियेदृगतारे हैं। वृन्दाबनबासकाहुलासलैप्रकाशकियोदियो सुखसिंधुकर्मधर्मसबटारेहैं। ताहीसुनिसुनिकोटिकोटिजनरँगपायोबिपिनसुहायोबसेतनमनवारेहैं ६०२ ॥ मूल ॥ अष्टांगयोगतनत्यागियोद्वारकादासजानेदुनी।सरिताकूकसगांवसलिलमेंध्यानधर्योमन । रामचरणअनुरागसुदृढ़ जाकेसांचोपन । सुतकलत्रधनधामताहिसोंसदाउदासी। कठिनमोहकोफंदतरकितोरीकुलफांसी । कीन्हिकृपाबलिभजनकेज्ञानखड्गमायाहनी । आष्टांगयोगतनत्यागियोद्वारकादासजानेदुनी १८४॥

रागमाला ॥ कवित्त ॥ भैरोविलावल मिलावत ललितमांझ गूजरी देव गंधार प्रातही विभासरी । प्रथम मेघ मलार राम कली टोड़ी मलार आसावरी जैतश्रिरीअरघनाश्रिरी । हिंडोल सारंग नटअड़ानो उपावें घटि कालिंगड़ीखंभायची सोहै चतुर मासरी। श्रिरी राग सिंध गौरी मालव बसंत टोढ़ी सोरठ सदारहत उदासरी१ दीपकसूहो कल्यान केदारोगान बखतबिहागरेको गावत बिलासरी। पंचम बड़े अपान जंगली काफी सयानो माल गौड़मालको सराग को निवासरी । कंहतदया लपै भुपाल के छत्तीसोंराग ऐसी बिधि मोहन बनाईबन बांसुरी। सोई तो सुजान हरिके गुणगाय जाने बाकीको बकत ज्यों भुवंग लेत सांसरी २ रागज्ञान ॥ सुखिनिसुख निवासोदुःखिता नांबिनोद श्रवनहृदयहारी मन्मथस्याग्रदूतः । रतिरभसबिधाता वल्लभःकामिनीनां जगतिजयति नादः पंचमश्चोपभेदः १ भैरवोपंचमोनाश्चो मल्लारोगौड़ मालवाः। ललितोगुजरीदेशी बराड़ीरामक्रन्तथा॥सतारागार्णवेरागयः पंचैतेपंचमाश्रताः २ नटनारायणःपूर्वोगंधारः

सारंगस्तथा। तत्केदारकर्णाटौ पंचैतेपंचमाश्रया। मेघोम
ल्लारकामाल कौशक:प्रतिमंजरी। आसावरीपंचैतेराग: म
ल्लारसंश्रया: ४ हिंडोलश्रीगुलाधारी गौरीकोलाहलस्त
था। पंचैतेगौरनामानं रागमाश्रितसंस्थिता ५ श्रीपालो
हरिपालश्च कामोदाघोरणीस्तथा। वेलावलीपंचैतेरागा
देशाकश्रिता ६ अन्येचबहवोरागा जातादेशविशेषत:।
मारूप्रभृतयोलोके पंचभद्रासिकास्मृता ७ स्वस्वरंसरसंचैव
स्वरागंमधुरस्वरं। सालंकारप्रमाणंच षड्विधंगीतलक्षणं ८
स्वरेणपदसंयुक्तंछंदसाचसुसंयुत। समाकृतसुतालंचसुगीतं
तेनभण्यते ९ वृंदाबन बासको हुलास ॥ कवित्त ॥ परेजे
पतौवा सूके भूख में पियूष जैसे खाऊं रूख रूख तरे ऐसी
तोको जीविका। प्यास ते बढ़े जुबार तरन तनैया तीर
अंकौ भरि भरि धीर नीर पीवका। कोलिकल जोहतस
हृहै कबिवृंदाबन कुंज पुंजभ्रमर भ्रमरजीवका। आनंद
मेंभूमि घूमि बसौंगो बिलास भूमि आरत को द्रुम जैसे
सुखपावै हीवका २ ॥ छप्पै ॥ प्राण जाऊ तौ जाऊ होहि
यश सकल बड़ाई। होऊ धर्मको नाश भरममनगहैजड़ाई।
आधि व्याधिके दुःखकरै जेतन को जीरन। करौ नहींउप
चार कोटि होनाना पीरन। भगवान दूहि बिधि बचन
कठोर कहि सबैनिरादर करौ किन। श्री वृंदाबनकोछा
ड़िये यहआवौ मन भूलिजिन २॥

पूरणप्रगटमहिमाअनंतकरिहैकौनबखान। उदयअ
स्तपरबतगहरुमध्यसरिताभारी। योगयुगतिबिश्वास
तहांदृढ़आसनधारी। व्याघ्रसिंहगुंजेंखराकछुशंकनमाने।
अर्द्धनजातेपवनउलटऊरधकोआनें। शाखिशब्दनिर्मल
कहाकथियापदनिर्बान। पूरणप्रगटमहिमाअनंतकरिहैकौ
नबखान १८५ श्रीरामानुजपद्धतिप्रतापभटलक्ष्मण अ
नुसर्यो। सदाचारमुनिवृत्तिभजनभागवतउजागर।

भक्तनसोंअतिप्रीतिभक्तिदशधाकोआगर। संतोषीशुठि शीलहृदयस्वारथनहिंलेशी। परमधरमप्रतिपालसंतमारगउपदेशी। श्रीभागवतबखानिकैनीरक्षीरव्यवरणाकयो। श्रीरामानुजपद्धति प्रतापभटलक्ष्मणअनुसर्‌यो १८६ दधीचपाछेदूसरीकरीकृष्णदासकलिजीति।कृष्णदासकलिजीतिन्योतिनाहरपलदीयो। अतिथधरमप्रतिपालप्रगटयशजगमेंलीयो॥ उदासीनताकीअवधिकनककामिननहींरात्यो। रामचरणमकरंदरहतनिशिदिनमदमात्यो॥ गलितैगलितअमितगुणसदाचारशुठिनीति। दधीचपाछेदूसरीकरीकृष्णदासकलिजीति १८७टीका॥ बैठेहोगुफामेंदेखेसिंहद्वारआयगयो लयोयोंबिचारहोअतिथआजुआयोहै। दईजांघकाटिडारिकीजियेअहारअजूमहिमाअपारधर्मकठिनबतायोहै। दियोदरशनआयसांचमेंरह्योनजायनिपटसचाईदुखजान्योनबिलायोहै। अन्नजलदेवेहीकोझीखतजगतनरकरिकौन सकैजनमनभरमायोहै ६०३॥

योगयुक्तिविश्वास॥ कबित्त॥ एंड़ीवामेपांवकीलगावै दूसीवनके बीचवाही जौनठौर ताहि नीके तारियानिये। तैसेहीयुगतिकरिविधिसौंप्रकार मेंढमेढहदेखपर दच्छिण पावँ आनिये। सरलशरीर दृढ़ इन्द्रियसंजम करि चपल ऊर्धहृदयभ्रूकेमध्यठानिये। मोक्षके कपाट दोऊ खोलत स-वथयमेव सुन्दर कहत सिद्ध आसन बखानिये १॥ छन्द॥ बायें ऊरु दच्छिण ऊरू ऊपरप्रथमबामहिंपगआनिये। बायें ऊरु ऊपरतबहिंदच्छिण पग ठानहिं। दोऊकरिपुनि फेर दृष्टि पीछेकर आवय। दृढ़कैगहे अंगुष्टचिबुक वक्षस्थल लावय।

इहि भांतिदृष्टि उनमेष करि अग्रनाशिका राखिये। सब व्याधि हरण योगीनकौपद्मासन पहिंचानिये २ प्रथम अंग यमकहो दूसरो नेम बताऊं । त्रिबिधसुआसन भेद सुतो अबतो हिंसुनाऊं। चतुर्थप्राणायाम पंचमप्रत्याहारं। षष्टंसु-नायधीरधरध्यानसप्तंबिस्तारं। पुनिअष्टंग समाधि कैसोसब तोहिंसुनाइहौं। सावधानह्वै शिष्य सुनि भिन्न भिन्न स-मुझाइहौं ३ प्रथम अहिंसा सत्य जानि पुस्तेपंत्यागे। ब्रह्म चर्यदृढ़ गहै छमाधत सो अनुरागे। दया बड़ो गुण होय ओजब हृदय आनै। प्रत्याहारपुनि करै शोचनीके बिधि जानै। ये इश प्रकार के यम कहे हठ प्रदीप का ग्रंथ में। जोपहिलेइनको ग्रहै सो चलत योगके पंथ में। तप संतोष गहै बुधि आस्तिक सोआनै। दान समझि करि देयमानि पूजान। बचन सिद्धांतसु सुनो लाज मतिदृढ़ करि राखै। जायक सुखसों असद आलापनभाखै। पुनिहोम करै इहि बिधि तहां जैसी बिधि तहांतैसी बिधि सतगुरुकहै। दश प्रकार के यमकहै ज्ञान बिन कैसे कहै १॥

मूल॥ भलीभांतिनिबहीभगतिसदागदाधरदासकी। लालबिहारीजपतरहतनितबासरफूल्यो। सेवासहजस नेहसदाआनँदरसझूल्यो। भक्तनिसोंअतिप्रीतिरीतिसब हीमनभाई। ऐसीअधिकउदाररसमहरिकीरतिगाई। ह रिबिश्वासहियआनिकै सपनेहूआननआशकी।भलीभांति निबहीभगति सदागदाधरदासकी १८८ टीका॥ बुदान पुरढिगबागतामेंबैठेआयकरिअनुराग गृहत्यागपागश्या मसों। गावँमेंनजातलोगकितेहाहाखातसुखमानलियोगा तनहींकामअरुकामसों। पर्योअतिमेहदेहबसनभिजाय डारेतबहरिप्यारेबोलेस्वरअभिरामसों। रहेएकशाहभक्त कहीजायल्यावोउन्हेंमन्दिरकरावोतेरो भर्योघरदामसों

६०४ नीठिनीठिल्यायेहरिबचनसुनाये जबतबकरबायो ऊंचोमन्दिरसँवारिकै। प्रभुपधरायेनामलालओौबिहारी श्यामअतिअभिरामरूपरहतनिहारिकै। करैसाधुसेवाजामेंनिपटप्रसन्नहोतबासीनरहतअन्नसोवैपात्रझारिकै। करतरसोईसोईराखीहीछिपायसामा आयेघरसंतकहीआयज्यांयेप्यारिकै ६०५ बोल्योप्रभुभूखेरहैंताकेलियेराख्यो कछूभाष्योतबआपकाढ़ोभोरओरआवैगो। करिकैप्रसाद दियोलियोसुखपायोतबसेवारीतिदेखिकहीजगयश गावैगो। प्रातभयेभूखेहरिगयेतीनयामटरिरहे क्रोधभरिकहैं कबधौंछुटावैगो। आयोकोऊताहीसमयद्वैशतरुपैयाधरेवो लेगुरुशीशलैकैनारोकितोपावैगो ६०६ ॥

भलीभांति निबही॥ नबातहै इनको निर्वाह भयो॥ निष्काम भक्ति सरूपकी है सहजही मन की वृत्तिलगै १ सोवैपात्र झारि॥ दोहा॥ सबतत्त्वनि को तत्त्वहै सो चम्र गट संसार॥लगैन अहिंडो चोरको ज्यों माटीतत्त्व कुम्हार॥सबको सारभजन १

डरयोवहशाहमतिमोपैकछुकोपकियोकियोसमाधान सबबातसमुझाईहै। तबतोप्रसन्नभयोअन्नलगैजितोदेय सेवासुखलेतशाहरुचिउपजाइये। रहेकोऊदिनपुनिप्रभु पुरीबासलियोपियोब्रजरसलीलाअतिसुखदाईहै। लाल लैलड़ायेसंतनिकेभुगताये गुणजानेजितेगायेमतिसुन्दर लगाईहै ६०७॥ मूल॥ हरिभजनसींवस्वामीसिरसश्री नारायणदासअति।भक्तियोगयुतसुदृढ़देहनिजबलकरिरा खी। हियेस्वरूपानंदलालयशरसनाभाखी। परचैप्रचुर

प्रतापजानमनरहसिसहायक । श्रीनारायणप्रगटमनो लोगनसुखदायक। नितसेचबसंतनिसहितदाताउत्तरदे शगति। हरिभजनसींवस्वामीसरसश्रीनारायणदासअ ति १६६ टीका॥ आयेबद्रीनाथजूतेमथुरानिहारिनयन चैनभयोरहैजहांकेशवजूकोद्वारहै । आवेंदरशनलोगजू- तिनकोशोगहियेरूपकोनभोगहोतकियोयोंबिचारहै। क रैरखवारीसुखपावतहैंभारीकोऊजानैनप्रभावउरभाव सो अपारहै। आयोएकदुष्टपोटपुष्टसोतोशीशदईलईचले मग ऐसोधीरजहीसारहै ६०८॥

रहेकोऊ दिन ॥ सवैया॥ कालकराल गयो सुगयो अनहूंसुनि जो छिनही छिनछीजै ॥ श्रीमथुरा यमुना तटवास कै जीवत जीवन को फलजीजै॥ नाथनिरंतर केश व सुंदर लालको भागवता मृतपीजै॥ छांड़ि सबै नतिया अँखिया भरिकै सबकोमुख देखिबो कीजै १ जूतिन को शोग॥ दोहा॥ हरिके मंदिर जात हैं हरिदरशन की आश ॥ औंधोहोय पायँनिपरै, चित्तपरहै यमपास २ लै चलै॥ दोहा॥ कायाकोठी लोहको पिय पारषतिहमा ह॥ रजवंतन सुखसों मढ़ेकंचन होती नाहिं २॥

कोऊबड़ोनरदेखिमगपहिंचानिलियोकियोपरनामभू मिपरिभूरिनेहको। जानिकैप्रभावलियेपावमहा दुष्टहूने कष्टअतिपायोछूट्योअभिमानदेहको। बोलेआपचिंताजि नकरोतेरोकामहोत नैननीरसोतमुखदेखोनहींग्रेहको । भयोउपदेशभक्तिदेशउनजान्यों साधशक्तकोविशेष यही जान्योभावमेहको ६०६ ॥ मूल ॥ भगवानदासश्रीस हितनितसुहृदशीलसज्जनसरस। भजनभावआरूढ़गूढ़

गुणावलितललितयश । श्रोताश्रीभागवतरहस्यज्ञाता अक्षररस । मथुरापुरीनिवासआशपदसंतनिइकचित । श्रीयुतखोजीश्यामधामसुखकरिअनुचरहित । अतिगंभीरसुधीरमतिहुलशतमनजाकेदरश । भगवानदासश्रीसहितनितसुहृदशीलसज्जनसरिश १६० ॥

धीरज कोसारहै ॥ बिचार्‌यो हरिहीने यहपोटि धरीहै यहकौनहै ॥ श्रुते ॥ सर्वंखल्विदं ब्रह्म ऐसो ज्ञान आवैतब सुखीहोय नहींतौ दुखपावै जैसेचल्यो नायकाहू कहीबैल मारैगो ॥ कहीब्रह्म सबमेंहै ॥ बैलने मार्‌यो कहने वालोभी तौ ब्रह्महै अवश्यमेवभोक्तव्यंकृतंकर्म शुभाशुभं ॥ हरिकी सेवामें कहालाभ है जो कर्मभोगै ॥ कर्मक्षीण होयहै सेवाते १ भावमेह को ॥ पद ॥ मुंडमुडाये की लाज निवहियो ॥ माला तिलक स्वांगधरि हरिको मारिगारि सबही की सहियो ॥ बिधिब्योहार जारसों कलियुग हरिभरतार गाढ़ोकरि गहियो ॥ अनन्य व्रत धरि सतनिन छांडो बिमद संतकी संगति गहियो ॥ अगिन खाहि बिषको लै पीवो बिषयनि को मुखभूलि न चहियो ॥ व्यास आशकरि राधापति की वृन्दाबन को बेगि उमहियो १ ॥

टीका ॥ जानिबेकोपनपृथ्वीपतिमनआईयों दुहाईलै दिवाईमालातिलकनधारिये। मानिआनिप्राणलोभकेति कनित्यागिदियेछिपेनहींजातजानिबेगमारिडारिये । भगवानदासउरभक्तिसुखराशिभर्‌योकर्‌योलैसुदेशवेष रीतिलागीप्यारिये। रीझ्योनृपदेखिरीझिमथुरानिवासपायोमन्दिरकरायोहरिदेवसोनिहारिये ६१० ॥ मूल ॥ भक्तपक्षउद्दारतायहनिबहीकल्यानकी । जगन्नाथकोदा

सनिपुणअतिप्रभुमनभायो। परमपारपदसमझिजानिप्रि यनिकटबुलायो। प्राणपयानोकरतनेहरघुपतिसोंजो र्यो। सुतदाराधनधाममोहतिनकाज्योंतोर्यो। कोधनी ध्यानउरमेंबस्योरामनाममुखजानकी। भक्तपक्षउदारता यहनिबहीकल्यानकी १६१॥

जानिबे को पतिसो भगवान दासको संगसो रसखान मीरमाधव आदिभक्त बहुत होतभयेरसखानि के कंठमें हैसेकामालार है तिनसों जहांगीर कही कंठीमाला सबकोऊ पहिरै तुमएती को पहिरी तब रसखानबोले॥ दोहा॥ तनपाहन जलअगम को तनका काठ करैपार॥ बड़ेकाठ ऊपरतरैं जबतन पाहिन भार १ अरुमीर माधो कृष्णनाम प्रेमसो जु लेयसुनिबेको सकै रामलोग फिरो करै तिनसों बादशाहकहीनाम तोसबकोऊ लेहै तिहारे होपाछे क्योंफिरोकरैहै तबमीर माधवकही॥ दोहा॥ मधुर बचन सुनिसुवा के काहुन अचरज होय॥ बोलिनि कागाकी मधुर सुनिधावै सबकोय १ तबपन देखिबे को दुहाई फिराई॥ मालाकंठी न धारै करोलेसुदेश देश श्लोक॥ यदिवातादिदोषेणमद्भक्तोमांचबिस्मरेत्॥ त हिस्मराम्यहंभक्तंसयातिपरमांगतिं १ हरिको काहेको निहोरा कीजिये कंठीमाल पै शरीर छोड़िये १ कंठीमाला सुमिरणी पहिरत सबसंसार॥ पनधीरी कोउ एकहै और बिकियो शिंगार २॥

सोदरशोभूरामकेसुनौसंततिनकीकथा।संतदाससदब्र तजरातछोईकरिडार्यो।महिमामहाप्रबीणभक्तिवितधर्म बिचार्यो। बहुरोमाधवदासभजनबलपरचोदीनो। करि योगिनिसोंबादबसनपावकप्रतिलीनो। परमधर्मबिस्ता रिहितप्रकटभयेनाहिनतथा। सोदरशोभूरामकेसुनौसंत

तिनकीकथा १६२ बूड़ियेबिदितकन्हरकृपालआत्मारा मआगमदरशि। कृष्णभक्तिकोथंभब्रह्मकुलपरमउजागर। क्षमाशीलगंभीरसर्बलक्षणकोआगर। सर्बसुहरिजनिजा निहृदयअनुरागप्रकाशै। अशनबसनसनमानकरतअति उज्ज्वलआशै। शोभूरामप्रसादतेकृपादृष्टिसबपरबसी। बू ड़ियेबिदितकन्हरकृपालआत्मारामआगमदरशि १६३॥

योगीबोले तुमतौ मालाकंठी अंगनमेंधरो हमश्रृंगीमु-द्रासाधवदासबोले अचला कोपीनधरैंगे॥ दोहा॥ कंठी माला सुमिरणी पहिरत सबसंसार। पनधारी कोउएक है औरन कियो श्रृंगार। शोभूमाला शोभकी मनकी माला नाहिं। एँड़ेकासो तडगडो पाल रह्यो गलमाहिं २॥ अचला कोपीन बचगये॥ श्रृंगी मुद्रानलगये पारषकै छमाशील॥ दोहा॥ छमाबड़ेन को चाहिये ओछेनको उतपात। कहा बिष्णु को घटिगयो जोभृगु मारीलात १ ऐसे छमावानहैं सो नारायणही हैं शील गंभीर स्वभाव गंभीर समुद्र सोघटै बढ़ैनहीं सर्बलच्छणको आगर सो भगवानदास पारायण उज्वल आशै निष्कपट बिषय बासनाकीचाहै सोसमान नाहींकरैहैयहउज्वलआशै३॥

भक्तरत्नमालासुधनगोबिंदकंठबिकाशकिय। रुचिर शीलघननीललीलरुचिसुमतिसरितपति। बिबिधभक्तअ नुरक्तब्यक्तबहुचरितचतुरअति। लघुदीरघसुरशुद्धबचन अवरुद्धउचारन। बिश्वाबासबिश्वासदासपरचैबिस्तारन। जानजगतहितसबगुणनिसुसमनरायणदासदिय। भक्त रत्नमालासुधनगोबिंदकंठबिकाशकिय १६४ भक्तेशभ क्तभवतोषकरिसंतनृपतिबासोकुंवर। श्रीयुतनृपमणिज गतसिंहदृढ़भक्तिपरायण। परमप्रीतिकियसुबशशीलल

क्ष्मीनारायण। जासुसुयशसहजहिकुटिलकलिकल्पजुधायक। अज्ञाअटलसुप्रगटसुभटकटकनिसुखदायक। अतिहीप्रचंडमारतंडसमतमखंडनदोर्दंडबर। भक्तेशभक्तभवतोषकरिसंतनृपतिबासोकुंवर १६५ टीका॥ जगताकोपनमनसेवाश्रीनारायणजूभयो ऐसोपारायनरहैडोलासंगही। लरबेकोचलैआगेआगेसदापाछेरहैल्यावैजलशीशईशभरयोहियेरंगही। सुनियशवंतजयसिंहकेहुलाशभयोदेख्योदिल्लीमांझनीरल्यावतअभंगही। भूमिपरिबिनयकरीधरीदेहतुमहींनेजातेपायोनेह भीजिगयोयोंप्रसंगही ६११॥

बिबिधभक्त अनुरक्त पंचरसकी भक्ति सबहीं में अनुराग कोऊदासा कोऊ श्रृंगारके उपासिक १॥ धरीदेह॥ कबित्त॥ जिनहरिगढ़िगढ़ि एतक बनायोताहि तुलसी कोदल काहेते चढ़ायोनाहिं। खान प्रधान सब रचेतेरे भावतेपै ऐसोमन भावतो जुतेरे मनभायोनाहिं। गाढ़ी करिगह्यो ब्रत प्रभुको नमान्योकत प्रभुने रिझायो औ प्रभुते रिझायोनाहिं। लच्छ जगजीवनिके नेहबिनदेहधरी जावो जगमाहिं ऐसेमेरेजानि आयोनाहिं १॥

नृपतिजयसिंहजूसोंबोल्योकहानेहमेरेतेरीजुबहिनताकीगंधकोनपाऊंमैं। नामदीपकुंवरिसोबड़ीभक्तिमानजातवहरसखानिऐपैकछुकलड़ाऊंमैं॥ सुनिसुखभयोभारीहुतीरिसवासोंटारीलियेगावकाटिफेरिदियेहरिध्याऊंमैं। लिखिकैपठाईवाईकरैसोईकरनदीजे लीजेसाधुसेवाकरिनिशिदिनगाऊंमैं ६१२॥ मूल॥ गिरिधरनग्वालगोपालकोसखासांचलोसंगको। प्रेमीभक्तप्रसिद्धगानअति

गद्गदबानी। अंतरप्रभुसोंप्रीतिप्रगटरहैनाहिनछानी। नृत्यकरतआमोदबिपिनतनबसनबिसारै । हाटकपटहितदानरीझिततकालउतारै । मालपुरैमंगलकरनरासरच्योरसरंगको। गिरिधरनग्वालगोपालकोसखासांचलोसंगको १६६ ॥टीका॥ गिरिधरनग्वालसाधुसेवाहीसोंख्यालजाकेदेखियोनिहालहोतप्रीतिसांचीपाईहै। संततनछूटहूतेलेतचरणामृतजोऔरअबरीतिकहौंकापैजातिगाईहै॥ भयेद्विजपंचइकठौरेसोऊपंचमानो आन्योसभामांझकहैछांडोनसुहाईहै। जाकेहोअभावमतिलैवीमेंप्रभावजान्योमृतकयोंबुद्धिताकोबारोसुनिभाईहै ६१३॥

गद्गद ॥ एकादशे ॥ वाग्गद्गदाद्रवतेयस्यचित्तं हसत्यभीक्ष्णंरुदतिक्वचिच्च ॥ विलज्जउद्गायतिनृत्यतेच मद्भक्तियुक्तोभुवनंपुनाति। सखासांसमतानित्यं सख्यत्वंभावउच्यते॥ हैमित्रनको दृष्टांत॥ ऐसे विश्वासहोय तौहरि सदासंगहीरहैं ऐसे पांडवनके ॥ दोहा॥ समता शिष्य सुमित्रता हिये सुदृढ़बिश्वास । पांडव द्रौपदी गजसमय प्रगटभये अनियास । सुईहाथीनकरे दृष्टांत ॥ याबचनसों सत्यव्रत राजाको संदेहभयो बाजीगरको दृष्टांत ३ ॥

मूल ॥ गोपालीजनपोषकोजगतयशोदाअवतरी। प्रगटअंगमेंप्रेमनेमसोंमोहनसेवा । कलियुगकलुषनलग्योदासतेंकबहुंनछेवा। बाणीशीतलसुखदसहजगोविंदधुनिलागी। लक्षणकलागंभीरधीरसंतनअनुरागी। अंतरशुद्धसदारहैरसिकभक्तिनिजउरधरी । गोपालीजनपोषकोजगतयशोदाअवतरी १६० श्रीरामदासरसरीतिसोंभलीभांतिसेवतभगत। शीतलपरमसुशीलबचनकोमलमुखनि

कसे। भक्तउदितरबिदेखिउदौबारिजजिमिबिगसै। अतिआनंदमनउमँगिसंतपरिचर्य्याकरई। चरणधोयदंडवतबिबिधिभोजनबिस्तरई। बछ्वननिबासबिश्वासहरियुगुलचरणउरजगमगत। श्रीरामदासरससरीतिसोंभलीभांतिसेवतभगत १६८॥ टीका॥ सुनिएकसाधुआयोभक्तिभावदेखिबेकोबैठेरामदासपूंछैरामदासकौनहैं। उठेआपधोयेपांवआवैरामदासअबरामदासकहांमेरे चाहिऔरगौनहैं। चलौजूप्रसादडीजैदीजैरामदासआनियहीरामदासपगधारोनिजमौनहैं। लपटानोपायँनसोंचायनिसमातनाहिंभायनिसोंभर्योहियोछाईयशजौनहैं ६१४॥

जनपोषकों॥मद्भिलंगमद्भक्तजनादर्शनस्पर्शनार्चनं॥परिचर्य्यास्तुतिप्रह्वगुणकर्मानुकीर्त्तनं॥ सोभगवानकोयशोदाजीनेलड़ायोसाधनोंकेलड़ायबेकोमनमें अभिलाषरहीसोगोपालीरूप धरिकै पूरणकरी १ भलीभांति॥ एकादशे॥ मद्भक्तपूजाभ्यधिका०१चाहैअभिमानतोजातछूरहैपैजातिअभिमान न जाय जनमते मरणताईंरहै चितामें धरोतऊ कहै ब्राह्मण हाथलगावै और न लगावै यह सनौढिया ब्राह्मण साधुइष्टमाने बड़ोआश्चर्यहै॥

बेटीकोबिवाहघरबडोउतसाहभयो कियेपकवानसबकोठेमांझधरेहैं। करैरखवारीसुतनातीदियेतारोरहैंऔरहीलगाइतारीखोल्योनहींडरेहैं। आयेगृहसंततिन्हैंपोटनिबँधायदईपायोयोंअनंतसुखऐसेभावभरेहैं। सेवाश्रीबिहारीलालगाईपाकस्वच्छताई मेरेमनभाईसबसाधुउरहरेहैं ११५॥ मूल॥ बिप्रसारसुतघरजनमरामरायहरिरतिकरी। भक्तिज्ञानबैराग्ययोगअंतरगतिपाग्यो। कामक्रो

धमदमोहलोभमत्सरसबत्याग्यो । कथाकीरतनमगनस दाआनँदरसझूल्यो । संतनिरखिमनमुदितउदितरबिपंक जफूल्यो । वैरभावजिनद्रोहकियतासुपागिपिसभैपरी । बिप्रसारसुतघरजनमराम० १६६ भगवंतमुदितउद्दारय शरसरसनाअस्वादकिय । कुंजविहारीकेलिसदाअभ्यंतर भाशै । दंपतिसहजसनेहप्रीतिपरमितपरकाशै । अनन्य भजनरसरीतिपुष्टमारगकरदेषी । बिधनिषेधबलत्यागिपा गिरतिहृदयबिशेषी । माधवसुतसम्मतरसिकतिलकदाम धरसेवलिय । भगवंतमुदितउद्दारयशरस० २०० ॥

रामराय ॥ भगवानदासजी के गुरु रहैं ॥ गोकुलस्त गोसाईंजीकोअरु भगवानदासजी को प्रसंग॥दोहा ॥ सुत हित सुधिता हंसमें ताकेअचरज नाहिं ॥ कामदेव को हंसकरि त्यहि देखनसबजाहिं २ औराको निजगतिचलै ता को अचिरज नाहिं॥ पुनिखर ताकी गतिचले त्यहि देखन सब जाहिं२तबगुसांईजी सुनिकै बहुत प्रसन्नभये ॥ साधुन के येलक्षण हैं क्यों न आदर होय १ बैरभाव ॥ दोहा ॥ कमलहृदै कोमलमिल्यो नंदनकाटततहि ॥ काठकठोर हृदैमिल्यो मधुकर काटत ताहि २ ॥

टीका ॥ सुजाकेदिवानभगवंतरसवंतभयेवृन्दाबनबा सनिकीसेवाऐसीकरीहै । विप्रकेगुसाईंसाधुकोऊब्रज बासीजाहुदेतबहुधनएकप्रीतिमतिहरीहै । सुनिगुरुदेवअ धिकारीश्रीगोविंददेवनामहरिदासजाथदेखैचितधरीहै । योगताईसीवाप्रभुदूधभातमांगिलियो कियोउतसाहत ऊपेपैंअरवरीहै ६१६ सुनोगुरुआवतअमावतनकिहूंअं गरंगभरितियासोयोकहीकहाकीजिये । बोलीघरवारपट

संपतिभँडारसबभेटकरिदीजैएकधोतीधारिलीजिये। री-
झसुनिबानीसांचीभक्तितेहीजानीमेरे अतिमनमानीकहि
आंखैंजलभींजिये ।यहीबातपरीकानश्रीगुसांईलईजानि
आयेफिरिवृन्दाबनपनमतिधींजिये ६१७ रह्योउतसाह
उरदाहकोनपारावार कियोलैबिचारआज्ञामांगिबनआये
हैं। रहेसुखलहैनानापदरचिकहैंएकरसनिरवहै ब्रजवासी
जाछुटायेहैं। कीनीयरचेरीतऊनेकुनाशामोरीनाहिंबोरीम
तिरंगलालप्यारीदृगछायेहैं। बड़बड़भागीअनुरागीरति
जागीजगमाधवरसिकबातसुनौपितापायेहैं ६१८॥

नेकुनासा मोरीनाहिं॥कवित्त॥ धनलेऊ जनलेऊ अ-
रधंगी हरिलेऊ सांगतेन देऊं जोपै उन्नट गासीहै॥ सु-
तहू को मारोतन टूकटूककरिडारौं दूखहू न निवारों ब-
ड़ेमति ठासीहैं। ऐसेब्रजबासी ताकी जगकरै उपहासी
मेरेतौ अभासी येतौसुकृत सुधासीहैं। पूनिहोतौ ध्यानौ
भगवंतइष्ट करिमानौ इनमें जो दोषआनौं बड़ीजियषा-
सीहै १॥ दोहा॥ बांदर कांटेडी मदुख ब्रजवासी अरुचोर॥
षटकलेश याकुंजमेंपै आशा युगुल किशोर २॥

आयोअंतकालजानिबेसुधि पिछानिसबआगरेतेलैकै
चलेवृन्दाबनजाइये। आयेआधीदूरिसुधिआईबोलेचूरह्वै
कैकहांलियेजातकूरकहीजोईध्याइये । कह्योफेरोतनबन
जायबेकोपात्रनहींजरैबासआवैप्रिया पियकोनभाइये ।
जानहारोहोइसोईजायगोयुगुलपास ऐसेभावराशिचलि
ताहीठौरआइये २२ ॥ मूल ॥ दुर्लभमानुषदेहकोलाल
मतीलाहोलियो । गौरश्यामसोंप्रीतिप्रीतियमुनाकुंजन
सों। बंशीबटसोंप्रीतिप्रीतिब्रजरजपुंजनिसों। गोकुलगु

रजनप्रीतिप्रीतिघनबारहबनसों । पुरमथुरासोंप्रीति प्रीतिगिरिगोबर्द्धनसों। बासअटलवृन्दाबिपिनदृढ़करि सोनगरीकियो । दुर्लभमानुषदेहकोलालमतीलाहोलि यो २०१ ॥

दुर्लभ॥ दोहा ॥ कहुं कटनकटप्रेम कीसीखोलाल बिवेक ॥ जैसेनौलख कामकू पैदरवानो एक १ एकादशे॥ दुर्लभोमानुषोदेहोदेहीनांक्षणभंगुरः २ गौरश्यामसों॥ तस्माज्ज्योतिरभूद्द्वेधराधामाधवरूपकं॥ तस्मादिदंमहादेवि गोपालेनैवभाषितं २ सब्रह्महासुरापीचस्वर्णस्तेयीचपंचमः ऐसेदोषैविलप्यंतेतेजोभेदान्महेश्वरी ३ सोलाड़िलीलाल लडायेजातिनहींलाहोलह्यो ४ यमुना॥ कवित्त॥ सांवल बरण गातन्हात जाकोकरैगौर आपजल रूपवाको करैकलि रूपहै। आपनो प्रवाहवाहिकरै थिरवृन्दावन आप घटै बढ़ैवह एकही स्वरूपहै॥ आपरज राखैबाकेखोवै रजतमतीनो कीनों और ठाढ़यह कौतुक अनूपहै॥ कृष्णपटरानी ऐसी यमुना बखानी कहिसकत न बानीनी के जानैभक्तभूप है ५ बास अटल॥ छांडिस्वाद सुखदेह के औरजगत कोलाज॥ मनहिं मारत न हारिकैवृन्दावनमें गाज ६ ॥

कबिजनकरतबिचारबड़ोकोउताहिमनीजे । कोउक हैअवनीबड़ीजगतआधारफनीजे। सोधारीशिरशेषशेषशि वभूषणकीनो । शिवआसनकैलाशभुजनभरिरावणलीनो रावणजीत्योबालिबालिराघौइकशायगडे । अगरकहेत्रै लोकधमेंहरिउरधारेतेबड़े २०२ हरिसुयशप्रीतिहरिदा सकेत्योंभावैहरिदासयश। नेहपरस्परअघटनिबहिचारों युगआयो। अनुचरकोउत्कर्षश्यामअपनेमुखगायो। ओ

तप्रोतअनुरागप्रीतिवोहीजगजानै । पुरप्रवेशरघुबीरभृत्यकीरतिजुबखानै । अगरअनुगगुणबरणतेसीतापतितिनहोयबश । हरिसुयशप्रीतिहरिदासकेत्योंभावैहरिदासयश २०३ ॥

बिचार करिकही ॥अवनि बडीजैसे नारायण भृगुआदिक यज्ञकरकै कहे॥ समर्चन कोनकूं करै जो बड़ोहोय सो भृगुने नारायणकी परीक्षा करीसो क्षमाकरिकैनारायणहीं बड़े ॥ ऐसेक्षमामें प्रथ्वी बड़ी १ हरिउर धारै॥ कवित्त॥ सबहीतेबडी क्षितिक्षितिहूतें सिंधुबड़े सिंधुहूतें वडेमुनि वारिधिअचैरहै॥ तिनहूंते बड़ेनभतामेंमुनिसेअनेक जाकेबीचतारागनचारौं ओर छैरहे। नभहूंते बड़ेपग बावनबढ़ाये जबतिनकीउचाई देख तीनौ लोक नैरहे। तिनहूंते बड़ेसंत साहिब अगमगति ऐसेहरि बड़ेजाके हृदैघर करिरहे १ भागवते॥ निरपेक्षं मुनिंशांतं निर्वैरंसम दर्शनं १ जिनकी चरणनि की रजहरिनें चाही यातेवही बड़े२हरिसुयशनबसे॥साधवोहृदयंमह्यं साधूनांहृदयंत्वहं॥ मदन्यंतेनजानंतिनाहंतेभ्योमनागपि ॥ मनुष्य पांग पलटै हरिने हृदै पलटै हरिसाधन के गुण कहै अरुसुनै जैसे साधुहरि के गुणकहै अरुसुनै पुरप्रवेश करत कहै तो भरत सो हनुमान आदिक के सुनेनारदजी सों पांडवनि के संतहू अनन्यहैं जैसेप्रह्लाद ऐसेही हरिअनन्यहैं ५॥

उत्कर्षसुनतसंतनकोअचरजकोऊजनिकरौ । दुर्बासाप्रतिश्यामदासबसताहरिभाषी । ध्रुवगजपुनिप्रह्लादरामसवरीफलसाखी । राजसुयशयदुनाथचरनधोयजूंठउठाई । बहुपांडवबिपतिनिवारिदियोबिषबिषियापाई । कलिविशेषपरचौप्रगटआस्तीकह्वैकैचितधरौ । उत्कर्षसुनतसंतनकोकोऊअचरजजनिकरौ२०४॥ फलश्रुतिसा

र ॥ दोहा ॥ पादपयेइहिसींचतेपावैंअँगअँगपोष। पूरब जाज्योंबरनतेसबमानियोसँतोष २०५ भक्तजितेभूलोकमेंकथेकौनपैजाय। समुदपानश्रद्धाकरैकहचिरियापेटसमाय २०६ श्रीमूरतिसबैष्णवलघुदीरघगुननअगाध। आगेपाछेबरेतैंजिनमानोअपराध २०७ फलकोशोभालाभतरतरुशोभाफलहोय। गुरूशिष्यकीकीर्तिमेंअचरजनाहींकोय। चारियुगनमेंजेभगततिनकेपगकीधूरि। सर्वसुशिरधरिराखिहौंमेरीजीवनमूरि २०८॥

कर्मानंद चारनकीछरीप्रभु लायदई यहहम न मानेंगे दुर्वासाप्रतिहरिनेंबस्तुतःकही ॥ नवमे ॥ अहंभक्तपराधीन: ह्यस्वतंत्रइवद्विज: १ ॥ पृथ्वीराजको प्रभुने द्वारकासोंआयकै दरशन दीनो हम न मानेंगे ध्रुवमधोर्वनेंद्दत्तिन्यागत:कौधी प्रेमनिधिको प्रभु मसाल लैकै आये यह हम न मानेंगे जैसेगजको प्रतिमाकूनाम देवने दूधपिवायो वा दूनके बोलते हरिआयगये यह हम नमानेंगे जैंप्रहलाद कर्माके खीचरी खातेते त्रिलोचनके घरमें चौदहमहीना प्रसादपायो सो हमं नमानेंगे जैसे सिवरीसेनको स्वरूप धरिकै राजाके तेललगायो यह हम नमानेंगे राजसूययज्ञ में कबीरकी जागेनागे रच्चाप्रभुनेकरी सोहमनमानेंगेवरु पांडव बिपत्ति निवार अंगदको बहनने बिषदियो और प्रभाव न भयो मीराकोबिष ननदनेदियो सोप्रभाव न भयो सो हम नमानेंगे जैसे चन्द्रहासके अच्चरऐसेप्रभाव १ कलि बिशेष तीनियुगनमेंतो परचेहो यहीहै परकलियुगमें बिशेषआस्तिकपै दृष्टांतमहापुरुषको अरुअंटको २॥

जगकीरतिमंगलउदयतीनोतापनशाय। हरिजनको गुणबरनतेहरिहदअटलबसाय २१० हरिजनकोगुणब

रणातेजोजनकरैअसूय । इहांउदरबाढ़ैव्यथाअरुपरलोक नशाय २११ जोहरिप्राप्तकीआशहैतौहरिकोयशगाय। नातरुसुकृतभुजेबीजज्योंजनमजनमपछिताय २१२॥

जगकीरति॥ एकादशे॥ मल्लिंगमद्भक्तजनदर्शनस्पर्शनार्चनं॥परिचर्य्यास्तुति प्रान्हगुण कर्मानुकीर्तनं १ मेरो अरु मेरेभक्तको गुणसामान्यहै भक्त भगवन्तमें भेदनहीं वैष्णवी ममदेहस्तु तस्मात्पूज्योमहामुने॥ अन्ययत्नंपरित्यज्यवैष्णवान्भज सास्वतं १ तृतीयेमैत्रेयवाक्य॥ शारीरामानसादिव्यावैपासेयेचमानुषाः॥भौतिकाश्चकथंक्लेशबाधन्तेहरिसंश्रयं२॥हरिजनको॥मारकंडेयवाक्यं॥ योहिभागवतांलोके उपहास्यंद्विजोतम॥करोतितस्यानश्यंतिधर्मार्थोयशःसुताः३॥ निंदांकुर्वंतियेमूढ़ावैष्णवानांमहात्मनां ।पतंतिपितृभिःसार्द्धं महारौरवसंज्ञिका ४ आदिपुराणे॥ ममभक्तजनान् दृष्टानिंदांकुर्वंतियेनराः तेषांसर्वाणिनश्यंति सत्यंसत्यंधनंजय ५ दशमे भगवद्वाक्यं॥ राजसाघोरसंकल्पाःक्रामकाअहिमन्यवः।दांभिकामानिनप्रायाविहसंत्युच्यतप्रियान् ६ असूया पद॥ श्रीपति दुखित भक्तअपराधे। संतनद्वेषद्रोहताकरिनित आरति सहितमोहिंआराधै। सबैसुनोबैकुंठकेबासी सत्यकहत मानौजिनखेदै॥ तिनपरक्रपाकैसेकैकरिहौं पूजतपावं कंठकोछेदै। संतन द्रोह प्रीतिमोह्न सौं मेरोनाम निरंतर लेहै। अग्रदास मागौंतवदतहै मोहिं भजत परंयमपुर जैहै १॥इहांउदर बाढ़ै व्यथा जालंधरकारोग होय अथवा अनेक योनिनकी व्यथाहोय१॥

भक्तदाससंग्रहकरैकथनश्रवणअनुमोद । सोप्रभुको प्यारोपुत्रजोबैठेहरिकेगोद २१३ अच्युतकुलजसएकबैरहूजाकीमतिअनुरागी। उनकीभक्तभजनसुकृतकोनिश्चयहोयविभागी २१४ भक्तदासजिनजिनकथीतिनकीजूं

जूठनपाय। सोमतिसारुअक्षरद्वैकीनोसिलौंबनाय २१५ काहूकेबलयोगयज्ञकुलकरनीकीआश। भक्तनाममालाअ गरउरबसोनरायणदास २१६ ॥

इतिश्रीभक्तमालमूलश्रीनारायणदासजी
कृतसमाप्तम् ॥

टीकाकर्त्ताके इष्टगुरुदेववर्णनं ॥ कवित्त ॥ रसिकाई कविताईजाहिदीनीतिनपाईभईसरसाईहियेनवनवचाहि ये। उररंगभवनमेंराधिकारमणबसेलसैंज्योंमुकुरमध्य प्रतिबिंबभाईहै। रसिकसमाजमेंबिराजरसराजाकहैंच हैंमुखसबैफूलेसुखसमुदाईहै। जनमनहरिलालमनोहर नामपायोउनहूंकोमनहरिलीनोयातेराईहै ६२० ॥

भक्तिदाससंग्रहकरै ॥ नारदगीतायां॥ तिष्टतेवैष्णवंशा-स्त्रंलिखितं यस्यमंदिरे। तत्रनारायणोदेवस्वयंवसतिनारद १ बिभागो ॥ एकबापकेचारिपुत्रकोऊ बरषको कोऊपांच बरषको कोऊ एकबरषकोकोऊ आजकोबांटोबरोबरि पावै १ माला श्रीनाभानभउदित ग्रंथि भक्तमालसोजान रसिक अनन्य चकोरहुस पानकरौ रसखान २ ॥ आगम निगम अरु स्मृति सबपुराण मतसार॥ भक्तमाल जैसाखभ-रि संतभये भवपार २ ॥

इनहींकेदासदासदासप्रियादासजानो तिनलैबखानो मानोटीकासुखदाईहै। गोबर्द्धननाथजूकेहाथमनपर्योजा कोकर्योबासवृंदाबनलीलामिलिगाईहै। मतिअनुसार कह्योलह्योसुखसंतनकेअंतकोनपावैजोईगावैहियआईहै।

घटबढ़िजानिअपराधमेरोक्षमाकीजै साधुगुणग्राहीयहमा
नकैसुनाईहै ६२१ कीनाभक्तमालसुरसालनाभास्वामी
जीनेतरेजीवजालजगजनमनपोहनी । भक्तरसबोधनीसु
टीकामतसोधनीहैबांचतकहतअर्थलागैअतिसोहनी । जो
पैप्रेमलक्षनाकीचाहअवगाहियाहि मिटैउरदाहनेकुनयन
नहूजोहनी। टीकाअरुमूलनामभूलिजायसुनैजबरसिकअ
नन्यमुखहोतबिश्वमोहनी ६२२ ॥

वृन्दाबन ॥ कबित्त ॥ लगीअति प्यारीभूमिजहांप्रिया
प्रीतमजू प्रीतिसु बिहारकरै तेईगुणगाइबो । रसिकअन-
न्यनिकैलखिये सुखारबिंद गुणननिहारिये कृजियकुलभा
इबो। मधुर रसालकथा लाल अभिराम नाम यहीआठो
यामनिश श्रवण सुनाइबो । वृन्दाबन रसबस ह्वैकै सब
छाड़ी मेंहगही एक ऐंड तजिपैंडहू न जाइबो १ बिश्व
मोहनी ॥ कबित्त ॥ घरहू छुटाये काम पूरेनपरनपायेमन
कुलभाये कूपमति अतिलालकी । असन बसन भूलेलोचन
सरोजफूले मनरसझूले सुनिबाणी सुरसालकी । लोककुल
धर्मटारे धीरज बिदारि डारे रगभरिभरि शोभाअंबर
बिशालकी । प्रेमसुखजालरहो काहूना सँभालरही कि-
धौंभक्तमाल किधौं बांसुरी गोपालकी १ राधारमणकी
गुसांइन कथामें उतावलीचली घरमें ढहवी मूंददई एक
खो उतावलीचली पाइजेवगिरी एक स्त्रीनेअपनेहाथकी
चूरी वैष्णवको फोरदीनी १॥

नाभाजूकोअभिलाषपूरणलैकियांमैंतौ ताकीसाखीप्र
थमसुनाईनीकेंगाइकै । भक्तिबिश्वासजाकेताहीकोप्रका
शकीजैभीजैरंगहियालीजैसंतनलड़ायकै ।संबतप्रसिद्ध
दशसातसतउनहत्तरफालगुणमासबदीसप्तमीबिताइकै।

नारायणदाससुखराशिभक्तमाललैके प्रियादासदासउर
बसौरहौंकाइके ६२३ ॥

भक्तिविश्वासजाके होय ताहीकोसुनाइये। अविश्वासीको न सुनावै। क्योंकि नामापराध होयहै १ प्राध ह्यपि २ नामाश्च २ सतांनिंदानाम्न: परममपराधं वितनुते यत: ख्यातियातंकथमुसहतेतद्विगर्हं। शिवस्यश्रीविष्णोर्हिगुण: नामादि सकलं धयाभिन्नंपश्येत्सयखलुहरिनामा हितकर गुरोरविज्ञाश्रुतिशास्त्रनिंदनं यथार्थ वादोहरिनामकल्पनं॥ नाम्नोबलातस्यहिपापबुद्धिर्न विद्यतेतस्यहियमैर्हिशुद्धि: ४॥ श्रुत्वापिनाम माहात्म्यंयप्रीतिरहितोनर:। अहंममादिपरमोनाम्नि सोप्यपराधकृत् कवित्त॥ वेदहूकी निंदाऔर साधनहूकी निंदाकरै गुरुकीअविज्ञा विष्णु शिव भेदमानिये। नामहीके आसरेसौंकरैबहुपाप और अश्रद्धावानहीं सो उपदेशलै बखानिये। एक अर्थवाद अरु बारबार कुतर्ककरै महिमा सुनतहिये श्रद्धानहिं आनिये। नामकी समान और धर्मसब समानफलत अपराध दशजानिये १॥ पंचाध्यायी॥ हीन अश्रद्धा नास्तिक हरिधर्मवहिर्मुख। तिनसों कबहूं न कहै कहैतो नहीं लहै सुख भक्तजननसों कहैजिनकेसदा भागवतधर्मभल। ज्योंयमुनाकीमीन लीनदिनरहत यमुनजल। यद्यपिसप्तनिधि भेद भेदनी यमुना निगमबखानै। ततहों वारिद्वौधार रमत छवितनहीं जलआवै १ गीतायां॥ श्रद्धावाननसूयश्चशृणुयादपियोनरं। सोपिमुक्त:शुभाल्लोकान् प्राप्नुयात्पुण्यकर्मणा ९ श्रद्धावान्श्रोतासुन्योकरै चिंतानहीं ६॥

अगिनिजरावोलैकैजलमेंबुड़ावोभावै॰॰॰पचढ़ावोघो
रिगरलपिवायवी। बीछूकटवावो॰॰॰टसांपलपटावोहाथी

आगेडरवावोईतिभीतिउपजाइवी । सिंहपैखवावोचाहौ भूमिगड़वावोतीषीअनीबिधवावोमोहिंदुःखनहींपायवी । ब्रजजनप्राणकान्हबातयहकानकरौ भक्तसोंबिमुखताको मुखनदिखाइवी ६२७ ॥

इतिश्रीभक्तमालटीकाभक्तिरसबोधनीसमाप्तम् ॥

अगिनिजरावो ॥पद॥ जोदुखहोयबिमुखघरआये। ज्यों कारो कारीलागै निशि कोटिक बीछूखाये। दुपहरि जेठ परतबाढूमें घायनिलोनलगाये। कांटनमांझफिरै बिनप नहींमूड़भेटोलाखाये। टूटत चाबुक कोटिपीठिपर तरवर बांधि उठाये। जोदुखहोय अगिनिके दाहे सर्वसु धनहिं हेराये। ज्योंबांझहि दुखहोत सौति के सुंदर बेटाजाये। देखतही सुखहोत जितावह बिसरत नहिंबिसराये। भटकतफिरत निलज बरजतही कूकरज्यों भहराये। गारी देतबिलग नहिं मानत फूलत दमरीपाये। अतिदुख दुष्ट जगतमें जेते नेकु न मेरेभाये। वाके दरश परश मिलबतही कहत व्यास यों न्याये॥ दोहा ॥ दागजु लाग्योनीलको सोमन साबनधोय । कोटिन यतन प्रबोधिये कौवा हंस न होय १ संगतिभई तौ कहभयो हिरदो भयोकठोर। नौनेजे पानीचढ़ो तऊ न भीजीकोर॥ ऐसेशठकथामें क्यों आवैहैं॥ श्लोक ॥ देवोजातक्षमावंतो गंधर्वोमधुरःसुरः। मानुषं मतिचातुर्यं पिशाचोमतिनिर्गुणः । यक्षयंचभयं नास्तिराक्षसोउग्रतामसः । खरप्रचवाक्भृटंचमृगप्रचमति कातरः। मर्कटंमतिचांचल्यां सर्वभक्षीचवायसी। एवंजाति मनुष्ये दशप्रकारंउच्यते १ तर्ककरवेकोआवैहैं तर्ककहाव- राकहै प्रह्लादकी अगिनिते रक्षाकरी बिमुखबोल्योब- ताहूके ... रिदेऊ बचैतौ सांचोसांचो नहींझूठोबक्ताकहै रामनामसों ५... तरे बिमुखकहै अबतरावोतो सांचि नहींतौ झूठ बक्ताकहै ...गाजलसों स्नानकरावो बिमुख

कहैमतिकरावो पादोदकौहै बक्ताकहै सूर्यको यमुना जलसों जल दानकरै विमुख कहै मतिकरौ पुत्री है पुत्री को जल कैसे लेगो बक्ताकहै तुलसा चरणामृत प्रसाद लेऊ विमुखकहै मतिलेऊ उदरमें बिगरै यातें इनसों न कहिये २ ॥ ब्रजजनप्राण ॥ सवैया ॥ चंदन खोरिये बिंदल-गाइकै कुंजनतें निकस्यो मुसक्यातो। रागतिहै बनमाल गरे और मोरपखा शिरपै फहरातो। जबतें रसखानि बिलोकतहौं तबतें कछु और न मोहिंसुहातो। प्रीतिकी रीतिमें लाजकहा कछुहैसोबड़ो यहनेहको नातो २ ॥ एकसमय बंशीधुनिमें रसखानिलियो कहनाम हमारो। ताछणतें वहवैरिन सासु कितौकियो झांकन देतिन द्वारो। होतचवाइ बलायसों आलीरी जोभरिअंक उर लीजत प्यारो। बाटचलत तबहीं ठटक्यो हियरे अटक्यो पियरे पटवारों २ ॥ यालकुटी अरु कामरियापर राज्य तिहूंपुरको तजिडारो। आठोसिद्धि नवोनिधिकोसुख नंदकिगाय चरायबिसारों। कोटिकिये कलिधौतकेधाम करीरके कुंजन ऊपरवारों। रसखानि कहैं इन नयनन सों ब्रजके बनबाग तड़ाग निहारों ३ अहोभाग्य १ स्कं-दपुराणको इतिहास कृष्णकेपास एईगईवेनआये १ ॥ सोरठा ॥ जिन भक्तनकी माल पहिरादैजिमि दिनसदा॥ तेई रसिक रसाल बसो सो वृंदाविपिननित २ ॥

इतिश्रीभक्तमालसटीकसंपूर्णम् ॥

नामकिताब

वेदान्त

योगवाशिष्ठ
आनन्दाऽमृतवर्षिणी
सांख्यतत्वकौमुदी

काव्य.

सूरसागर
कृष्णसागर
बिश्रामसागर
प्रेमसागर
ब्रजबिलासबड़ा वाछोटा
कृष्णप्रिया
बिजयमुक्तावली
अनेकार्थछन्दोर्णवपिङ्गल
कविकुलकल्पतरु
रसराज
सत्सई मूल तथा सटीक
सभाबिलास
तुलसीशब्दार्थ
भजनावली
प्रेमरत्न
युगुलबिलास
चित्रचन्द्रिका
बारहमासाबलदेवप्रसाद
मनोहरलहरी
गंगालहरी
यमुनालहरी
जगद्विनोद
सिङ्गारबत्तीसी
पद्मावत

राग

रागप्रकाश

नामकिताब

लावनी

किस्सावगैरह

नानार्थनीसंग्रहावली
ब्रह्मसार
शिवसिंहसरोज
भक्तमाल
इन्द्रसभा
बिक्रमबिलास
बैतालपच्चीसी
पद्मावतीखण्ड
शुकबहत्तरी
बकावलीसुमन
चहारदरवेश
किस्साहातिमताई
अपूर्व्वकथा
किस्सागुलसनोवर
सहस्ररजनीचरित्र
सिंहासनबत्तीसी
राविन्सन्‌काइतिहास
सीताहरण
सतीबिलास

मुतफर्कात

शनिश्चर की कथा
ज्ञानमाला
गोपीचन्दभरतरी
कथाश्रीगंगाजीकी
अवधयात्रा
भरतरीगीत
दानलीला नागलीला
रासलीला द्वा० प्र० कृत
दोहावली रत्नावली

नामकिताब

मिश्रितमाहात्म्य
गोकर्णमाहात्म्य
श्रीगोपालसहस्रनाम
कथासत्यनारायण
हनुमान बाहुक
जनकपच्चीसी
हरिहरसगुणनि० प०
बनयात्रा
कायस्थवर्णनिर्णय
बिहारवृन्दाबन
समरबिहारवृन्दाबन
कल्पभाष्य

दरसी

अक्षरावली
स्वयम्बोध
ज्ञानचालीसी
दोहावली
बालाबोध
बिद्यार्थीकीप्रथमपुस्तक
किताबजंत्री
गणितकामधेनु
लीलावती
पटवारीकीपुस्तकें४ भाग

ज्योतिषभाषा

जातकचन्द्रिका
जातकालंकार
दैवज्ञाभरण
ज्ञानस्वरोदय
रमलसार
इन्द्रजाल

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
संस्कृतकीपुस्तकें	**संस्कृतउर्दूटीका**	प्रतापबिनोद
लघुकौमुदी	मनुस्मृति	मनमौजचरित्र
सिद्धान्तचंद्रिका	विष्णुहारीत	भविष्योत्तरपुराण
अमरकोषतीनोंकांडस०	महिम्नस्तोत्र	स्कन्दपु०कासितुव...
पञ्चमहायज्ञ	व्रतार्क	मनोहरकहानी
निर्णयसिंधु	याज्ञबल्क्यस्मृति	भ्रमजालकनाटक
संग्रहशिरोमणि	**संस्कृतभाषाटीका सहित**	सीतावनबास
भगवद्गीतासटीक		किस्सामर्द औरत
दुर्गापाठमूल	अमरकोष	नवीनसंग्रह
दुर्गापाठसटीक	याज्ञबल्क्यस्मृति	सुदामाचरित्र
विष्णुभागवत	संध्यापद्धति	ज्ञानतरंग
अपराधभंजनस्तोत्र	व्रतार्क	सप्तशतिका
दुर्गास्तोत्रसटीक	भगवद्गीताटीकाह०बं०	बिजयचंद्रिका
कायस्थकुलभास्कर	भगवद्गीताटीकाआ०गि०	रामायणबाल्मीकीय
कायस्थधर्मनिरूपण	गीतगोबिन्द	भुवनेशभूषण
तत्वाकोटा	कथासत्यनारायण	महाभारतभाषा...
मथुरासभा	परमार्थसार	हचौहानवृ...
तुलसीतत्वभास्कर	शार्ङ्गधरसंहिता	सुन्दरबिलास
रामबिवाहोत्सव	पाराशरीसटीक	गीतरसिका
ज्योतिष	शीघ्रबोधसटीक	कवितावलीरामायण भ०
मुहूर्त्तगणपति	लघुजातक	इलाजुलगुरबा भाषा
मुहूर्तचक्रदीपिका	षट्पञ्चाशिका	रसायनप्रकाश
मुहूर्त्तचिन्तामणिसटीक	सामुद्रिक	रामचंद्रिका सटीक
मुहूर्त्तमार्त्तण्डसटीक	**नवीनकिताबें**	वाराह पुराण
मुहूर्त्तदीपक	कालिंजरमाहात्म्य	सौदागरलीला
वृहज्जातकसटीक	सुधामन्दाकिनी	रीडर नम्बर १
जातकालंकार	रामबिनयशतक	रीडर नम्बर २
जातकाभरण	नारीबोध	संक्षेल
होरामकरंद		